श्रीराधासरसविहारिणे नमः ॥

मुक्तिमार्ग

श्रीयुत श्यामचरणदासाचार्यमहाराज के परम प्रिय
शिरोमणि शिष्य श्रीमद्गुरुभक्तानन्द महाराज
स्वामी रामरूपजी रचित

जिसको

श्रीमान् पंडित शिवदयालु गौड़ हरिसम्बन्धी
नाम सरसमाधुरीशरण जयपुरनिवासी ने
स्वरचित जीवनचरित्र श्रीस्वामी
रामरूपजी महाराज सहित प्रेमी
भक्तों के परमानन्द हितार्थ

प्रथमवार

लखनऊ

बाबू मनोहरलाल भार्गव, बी. ए., सुपरिंटेंडेंट के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपा
सन् १९१९ ई०

मूल्य मुजल्लद १।=) बिला जिल्द १=)



श्रीयुत गुरुभक्तानन्द स्वामी रामरूपजी महाराज ।

श्रीकृष्णाय नमः ॥

श्रीमतमुक्तिमार्गग्रन्थ की महिमा तथा माहात्म्य के वर्णन में ।

दोहा ।

श्रीयुत शुकमुनिराज के, चरणन शीश नवाय ॥
श्यामचरण के दास को, मनमें ध्यान लगाय १
श्रीगुरु भक्तानन्दजी, स्वामी रामहि रूप ॥
कर जोरूं बंदन करूं, तिन पदपद्म अनूप २
मुक्तिसुमारग ग्रंथ की, महिमा करूं बखान ॥
सरसमाधुरी शरण को, देहु बुद्धि अरु ज्ञान ३
यह जो मुक्तिमारग सरस, वेद शास्त्र को सार ॥
संत महंतन को यहै, निश्चय प्राण अधार ४
भक्तन को सर्वस्व धन, रसिकन को रसखान ॥
साधुन को सिरमौर यह, सत्संगिन को प्रान ५
जितने मारग मुक्ति के, शास्त्रन में दरसाहिं ॥
सो सब कर्ताग्रंथ ने, कहि दीने या माहिं ६
कोई कर्म कोइ ज्ञान से, कोई भक्ति से जान ॥
मारगमुक्ति अनेक विधि, संतन किये बखान ७
सब को सारोद्धार यह, मुक्तिमार्ग लो मान ॥
पढ़ो तबहिं जानो भलैं, या सम ग्रंथ न आन ८

सालोकरु सामीपता, अरु सारूप सुनाम ॥
पुनि कहियत सायुज्यही, अति सुंदर अभिराम ६
जीवनमुक्ति सुजानिये, मुक्तिवदेह अनूप ॥
सबको मारग अति सुलभ, दरसायो रसरूप १०
उक्ति ज़ुक्ति सब मुक्तिकी, यामें भरी अपार ॥
सरसमाधुरी पाठ कर, समझो भली प्रकार ११
षट बिधि मारगमुक्ति के, औरहु रीति अनेक ॥
सबकी सूक्षम गति कही, अधिक एकते एक १२
सर्व उपनिषद् बेद की, तिनको यामें सार ॥
श्रवन मनन अनुभव करो, पढ़ो प्रेम उरधार १३
तत्त्वज्ञान विज्ञान को, योग ध्यान को सार ॥
भक्ति मुक्ति को मूल यह, प्रेमपरा भंडार १४
अगुन सगुन यामें कहे, निराकार साकार ॥
सर्वोपरि निजधाम को, बरनो नित्य विहार १५
सर्वव्यापी सर्वमय, घट मठ में भरपूर ॥
दरसायो दीदार को, अद्भुत नूर जुहूर १६
तेजपुंज अरु ज्योतिकी, कही बात सब खोल ॥
स्वयंप्रकाशी अमरपुर, अनुपम कह्यो अडोल१७
तत्त्वस्वरूपी धाम जो, सतचिद आनँदरूप ॥
शब्दब्रह्म परिब्रह्म को, बरनो स्वयं स्वरूप १८
आतम परमातम सकल, जीव सीव को ज्ञान ॥
आतम पूजा करन को, बरनो सबहि विधान १९

दया क्षमा अरु दीनता, और शील को अंग ॥
इन्द्रिय निग्रह करन के, अनगिन कथे प्रसंग २०
द्वैत और अद्वैत को, कह्यो यथारथ भेद ॥
प्रकृति पुरुष बरणन किये, अरु कीनो भ्रम छेद २१
नाम रूप संसार के, मिथ्या किये बखान ॥
नाम रूप श्रीकृष्ण के, सत्य कहे भ्रम भान २२
नामरूप लीला ललित, अरु उपासना धाम ॥
चारो साधन मुक्ति के, बरने अति अभिराम२३
अजपा गायत्री कही, ताके जप की रीति ॥
सहजहि सुमरन सारकी, पढ़ सुन होत प्रतीति २४
परा पश्यन्ती मध्यमा, और वैखरी चार ॥
चारों बानी को भजन, बरनो सहित प्रकार २५
पदस्थ अरु पिंडस्थही, रूपस्थ रूपातीत ॥
चार तरह के ध्यान की, कही यथारथ नीत २६
वानी सुगम सुहावनी, मनभावनी अपार ॥
प्रेम रंग प्रगटावनी, रसिकन हियको हार२७
इश्क हक़ीक़ी कृष्ण का, हृदय प्रगट हो जाय ॥
मुक्तिसुमारग ग्रंथ को, जो पढ़ि है चितलाय २८
रहै लगन हरि में मगन, भजनभाव गलतान ॥
जो वांचे नित नेम सों, प्रेम सहित धर ध्यान२९
सहज समाधि लगी रहै, निजानन्द लयलीन ॥
परमानन्द समुद्र में, मगन रहै मन मीन ३०

श्री कृष्ण परमातमा, दृष्टि परें सब ठौर ॥
उनबिन किंचितमात्र कुछ, दरशे नाहीं और ३१
गीता भारत भागवत, रामायण को सार ॥
सरसमाधुरी सुधासम, पियो श्रवण पुट धार३२

इति श्रीमतमुक्तिमार्गमहिमाबत्तीसी समाप्ता शुभम्
श्रीराधाकृष्णार्पणमस्तु ॥



मुक्तिमार्ग के अंगों की सूची।

दोहा चौपाई में प्रथम भाग

शब्द रागरागिनियों में दूसरा भाग

श्रीमते राधासरसविहारिणे नमः ॥

❁ श्रीमत् गुरुभक्तानंद स्वामी रामरूपजी महाराज का ❁

[जीवनचरित्र]

सरसमाधुरीरचित

दोहा ।

श्री शुकमुनि महाराज बर, श्याम चरण के दास ॥
पद वंदन कर प्रेम सों, आनँद मंगल रास १
श्रीस्वामी महाराज जी, राम रूप रस खान ॥
रचत सरस जीवन चरित, संतन को सुखदान २

चौपाई ।

स्वामी रामरूप सुखदाई । उनके चरणन शीश नवाई ॥
वेही मम उर राजें आई । जीवन चरित सुदेहिं बनाई ॥

दोहा ।

इन्द्रप्रस्थ जासों कहैं, दिल्ली वाको नाम ॥
जैसिंह पुरे समीप शुचि, तहां द्विजन के धाम ३

चौपाई ।

महा राम राजें वहि ठौरी । गौड़ वंश द्विज सब शिरमौरी ॥
धन सम्पन्न सुशील महाई । वृत्ति नौकरी करत सदाई ॥

दोहा ।

महा राम के सुत प्रगट, भए स्वामी महाराज ॥
अठारह सौ अरु एक शुचि, सम्वत बिक्रम साज ४

चौपाई ।

पुत्र जन्मकी करी बधाई । कुल युवतिन मिल मंगल गाई ॥
श्राद्ध कियो नान्दीमुख हितसों । शास्त्र विधियुतबहुहित चितसों॥
यथा योग्य दीने बहुदाना । कियो याचकन को सन्माना ॥
सुत दुलरावत अति महतारी । पय प्यावत पुलकावंत भारी ॥

दोहा ।

गोद मोद सों लेत कभु, पलना ललन झुलाय ॥
निशि दिन मन मंगल करे, आनँद उर न समाय ५

चौपाई ।

तीन मास पीछे महतारी । सुतको तजि स्वरलोक सिधारी॥
दियो धायके पितुने बाला । पलवावन के हेत दयाला ॥

दोहा ।

पिता गए पूरब दिशा, करन नौकरी आप ॥
घोड़े पर जु सवार हो, अतुलित तेज प्रताप ६

चौपाई ।

करी नौकरी पूरब जाके । इक उमराव रहै घर वाके ॥
दोय बरष लगि द्रव्य पठायो । धाय जासु सुतनिज पलवायो॥
फेरि पिताकी खबर न आई । कहां भये कुछ सुधि नहिं पाई ॥
धाउ धायके नहिं संतान । उन्हने लियो अपन सुत मान ॥
परम प्यारकर बालक पाला । जानें निजकर अपना बाला ॥
भये बरस दसके जब प्यारे । धाउ धाय दोउ स्वर्ग सिधारे ॥
बालकके मन ऐसी आई । करों भक्ति हरि हेत लगाई ॥

ध्यान धरूं हरिपद दिनरैना। जक्त जालमें चित्त लगैना॥

दोहा।

इक भाई था धाय का, जो था वैष्णव संत॥
अति प्रेमी परमारथी, सतोगुनी बुधिवंत ७

चौपाई।

तासों बालक मिले जु आई। व्यथा आपनी वाहि सुनाई॥
सुनकर वह वैष्णव हुलसाया। बालक अपने संग लगाया॥

दोहा।

दिल्ली आ आनन्द से, महाराज ढिग जाय॥
भेंट किया बालक तबहि, चरणन शीश नवाय ८

चौपाई।

भक्तिराज अतिशय हित कीना। कंठी बांध तिलक सिर दीना॥
गुरु मंत्र दिया श्रवण सुनाई। बालक वैष्णव लिया बनाई॥
हरि सेवा नित नेम बताया। भजन भावना रंग लगाया॥
विद्या वेगि पढ़ाई सारी। करी कृपा बालक पर भारी॥
योगन दीने सधवाई। सब समाधि की युक्ति बताई॥
ज्ञानध्यान बिधि समझाया। नौधा भक्ति करन सिखलाया॥
प्रेम भक्ति में रँग दीना। पराभक्ति का महरम कीना॥
भूले देह गेह धि सारी। नेह लगा हरिसों अति भारी॥

दोहा।

लगन लगा श्रीकृष्ण में, छविमें दिये छकाय॥
प्रेम दिवाने कर दि विरह विथा गइ छाय ९

चौपाई ।

कृष्ण दरस हित हिय अकुलावैं । सुबकी लै दृग नीर बहावैं ॥
हाय हाय हरिले सुधि मेरी । दर्शनकी मोहिं चाह घनेरी ॥
ज्यों चकोर चंदा हित तरसे । दुखी पतंग दीप बिन दरसे ॥
जल बिन मीन मलीन दुखारी । स्वाति बिना चातक दुखभारी ॥

दोहा ।

ऐसी गति लखि सत गुरु, शिष्यपर हुये कृपाल ॥
दरस कराये दयाकर, श्री बंकबिहारी लाल १०
नट बर छबि अति सोहनी, मन मोहनि अभिराम ॥
मोर मुकुट मस्तक सजे, जगमग जोति ललाम ११
मकराकृत कुंडल श्रवण, घुँघरारे सिर बार ॥
अलक कपोलन पर छुटी, नासा मुक्त सुढार १२
मंद हसनि मन की फसनि, चंचल नैन विशाल ॥
कटि किंकिनि रुन भुन बजै, कछनी कसी रसाल १३
कौस्तुभ मणि शुचि कंठ में, हिय मणि माणिकार ॥
कर माहीं वंशी लसे, अँगुरिन छाप [illegible]दार १४
पाजामा पांयन सजो, जाकी [illegible] बहार ॥
युगुल चरण नूपुर बजै, छुम छुम [illegible]तं मनहार १५

चौपाई ।

हँसि हरि रामरूप रँग भीने । [illegible] लगाय प्रेम बहु कीने ॥
अरस परसरस बचनबिलास [illegible]रन करी दास निज आसा ॥

प्रीतम छबि लखि रामहि रूपा। पायो परमानन्द अनूपा॥
मनहु रंक चिंतामणि पाई। बैद्य मिले ज्यों बेदनि जाई॥
तन मन नैनन में छबि छाई। अपनी सुधि बुधि सब बिसराई॥
भीतर बाहर कृष्ण निहारे। पल छिन होहिं नेक नहिं न्यारे॥
श्रीमत सुंदर श्याम बिहारी। दशहुँ दिशा दरसें हितकारी॥
सतगुरु श्यामचरनके दासा। तिनकी कृपाबिरहदुख नासा॥

दोहा।

पूरन परमानन्द में, राम रूप भये लीन॥
गावन लागे प्रेम सों, यह पद परम प्रवीन १६

(पद)

हुइ घर आशिक़ांशादी सनम का लख नज़ारा है॥
कमल दल खिलगये सारे नज़र आई बहारा है॥ १॥
कभी की इन्तज़ारी थी बिरह की पुरख़ुमारी थी॥
निहायत बेक़रारी थी दयाकर ग़म निवारा है॥ २॥
दरश का सुख हुवा भारी तपत जो मिटगई सारी॥
[illegible]व सर्व बलिहारी दुइ दुख दूर डारा है॥ ३॥
दिये [illegible] दने जो यह सुख कहीं ढूंढ़ा न पाया दुख॥
लखा [illegible] ो सन्मुख हुये आनँद अपाराहै॥ ४॥
नसी कुल्फ़े [illegible] र दूरा बसी उल्फ़त हिये पूरा॥
समाया नूर [illegible] सोई रामरूप प्यारा है॥ ५॥

[illegible] चौपाई।

श्रीसतगुरु सेवा हि[illegible]। अष्ट पहर रहैं टहल मँझारी॥

उरमें गुरुसेवा को भाव । परम प्रीति अति चितमें चाव ॥
प्रात उठैं श्रीगुरु गुन गावैं । जयजय कहि चरणन शिरनावैं ॥
साष्टांग दंडवत कर हितसों । विनय करें कर जोरें चितसों ॥
देह कृत्यकर गुरु जब आवैं । मुख प्रक्षाल दांतोन करावैं ॥
पुनि चौकी पर गुरु पधरावैं । जमुना जल असनान करावैं ॥

दोहा ।

अंग पोंछ पट प्रेम सों, पीताम्बर पहराय ॥
चरणपादुका निकट धर, विनय करें सिर नाय १७
मंदिर में श्रीगुरु चले, पहन खड़ाऊं पांय ॥
सिंहासन राजे रसिक, हिय माहीं हरखाय १८

चौपाई ।

स्वामी रामरूप तेहि वारी । सतगुरु पूजन करें तयारी ॥
केसर चंदन घस तेहि ठौरी । चांदी की भर धरें कटोरी ॥
फूलन की माला रँगभीनी । थाल माहिं साजि धरें नवीनी ॥
धूप दीप नैवेद्यहु लेवैं । श्रीगुरु सेवा में चित देवैं ॥

दोहा । थाके ॥

श्रीगुरु मस्तक श्री तिलक, सुंदर रचैं पलवायो ॥
औरहु द्वादश अंग प्रति, करें तिलक कुधि नहिं पाई ॥

चौपाई । ो अपन सुत मान ॥

फूलन की गलमाल सजावैं । छवि लजकर अपना बाला ॥
अतर रमा गुरु अंगन माहीं । पु धाय दोउ स्वर्ग सिधारे ॥
कंचन थार भोग धर तामें । करों भक्ति हरि हेत लगाई ॥

श्रीगुरु सन्मुख धर शिर नावैं। पावन बिनय करें बलिजावैं॥
जेंवैं श्रीगुरु कृपा निधान। लखि शिष्य वारें तन मन प्रान॥
पुनि अचवाइ देहिं रचि पान। हों प्रसन्नमन गुरु भगवान॥
चौमुख दीपक जोर सुधार। धरें थाल मधि सुकर सँवार॥
करें आरती गुरु अँगवार। दरश करन आवें नरनार॥

दोहा।

फूलन की बरषा करें, जै जै कहि बलिहार॥
कर दंडवत प्रनाम पुनि, मूंदे महल किंवार २०

चौपाई।

ध्यान मानसी में गुरु लागें। जुगल भावना में अनुरागें॥
स्वस्वरूप कर अनुसंधान। पररवरूप सेवा गलतान॥
राजभोगकी समय पिछान। खोलें पट मंदिर शिष्य आन॥
सजिकर सामग्री को थाल। खटरस बिंजन विविधि रसाल॥
सतगुरु कर मनुहार जिमावें। बचे सीत परसादी पावें॥

दोहा।

रचे बीरा दें गुरुन को, सैया सुकर सँवार॥
पौढ़ावे रँगमहल में, सतगुरु प्रानाधार २१

चौपाई।

पहर एकदिन समय पिछान। उत्थापनकर गुरु भगवान॥
मुख धुवाय जमुनाजल प्याय। ऋतुफल भोग धरें हरखाय॥
पावें श्री गुरु शिष्य लखभाव। बत्सलता मन सहज सुभाव॥
पुनि कुरसी राजैं महाराजा। सतसंगत दरबार सुकाजा॥

साधुसंत सेवक चलिआवैं । कर प्रणाम बहु विनय सुनावैं ॥
हरि गुरु सब उर भाव दृढ़ावैं । प्रश्नोत्तर दे भर्म मिटावैं ॥
लीला नाम रूप अरु धाम । चरचा करें गुरू अभिराम ॥
संध्या गौरी राग सुगान । करे संतजन हिल मिल आन ॥
होय आरती युगुल बिहारी । दरस करें दम्पति नर नारी ॥
करें समाज कीरतन गान । हरियश गावें संत सुजान ॥
सारंगी तवला अरु ताल । बजें तमूरा परम रसाल ॥
सुनें कीरतन श्री गुरु गान । होवें प्रेम सिंधु गलतान ॥

दोहा ।

सभा बिसर्जन होय पुनि, आवत ब्यारू भोग ॥
जेंवैं जुगल किशोर रुचि, अरस परस संजोग २२
सेन आरती साधु कर, पौढ़ावें युग लाल ॥
पंगत पनवारा रचें, श्रीगुरु ब्यारू थाल २३

चौपाई ।

श्रीगुरु सुरुचि बियारू पावें । शिष्य सीत ले मन मगनावें ॥
पुनि सतगुरु पलिका पौढ़ावें । चरन पलोट परम सुख पावें ॥

दोहा ।

प्रात मंगला आरती, करें गान मिल संत ॥
प्रेम पगें हरि रस छकें, हिल मिल साधु महंत २४

चौपाई ।

अष्टयाम सेवा गुरुलीना । स्वामी रामरूप रँगभीना ॥
गुरु सेवा में रहैं सुभागे । टहल करन में अतिअनुरागे ॥

सिवकाई को अति चित चाव। मनमें रखें प्रेम अरु भाव॥
ज्यों धन कृपन लगै अति प्यारो। यों गुरु सेवा से हित भारो॥
श्रीगुरुचंद्रबदन नित निरखें। चितचकोर ज्यों लखिमनहरखें॥
चातक स्वातिहेत ललचावे। यों श्रीगुरुसेवा मन भावे॥

दोहा।

सेवा गुन लखि शिष्य के, श्रीसतगुरु गुनधाम॥
दियो प्रेम करके प्रभो, गुरु भक्तानंद नाम २५
श्याम चरन के दास प्रभु, सतगुरु कृपानिधान॥
सेवा शोधन ग्रंथ दे, अपने किये दीवान २६

चौपाई।

गुरु सेवाकर सिद्धि सुपाई। गुरु समान गुन प्रकटे आई॥
भृंग संगकर कीटहु भृंगा। होत सहज सुंदर सम अंगा॥
गुरु समान गुन शिष्य में आये। महाराज लख हिय हरषाये॥
गुरु भक्तानंद निकट बुलाये। परम प्यार कर बचन सुनाये॥
अमरलोक से हम चलि आये। भक्ति प्रचारन जुगल पठाये॥
करनो हमें यही निजकाम। निशिदिन जपैं जपावैं नाम॥
बिमुख जीव हरि सन्मुख कीजे। परमारथ फल जगमें लीजे॥
शिष्य शाखा कर धर्म चलावो। हरि भक्ती जगमें फैलावो॥
तारन तरन टेक उर धारो। निश्चय मानो बचन हमारो॥
मंदर रचि सेवा पधरावो। नवधा भक्ति करो करवावो॥

दोहा।

सतगुरु आज्ञा शिर धरी, लिए बचन गुरु मान॥

मंदिर रचो सुहावनो, अति शुचि शोभावान २७

चौपाई ।

श्रीसत राधा रसिक बिहारी । गौर सांवरी जोरी प्यारी ॥
पधराये कर हर्ष अपारी । सेवा सुख सरसायो भारी ॥

दोहा ।

राग भोग बहु विधि करें, सहित भाव अरु प्रीत ॥
प्रेम पगे छवि में छकें, सरसमाधुरी रीत २८

चौपाई ।

दरश करन आवें नर नारी । छवि दम्पति लख होवें वारी ॥
बोलें मुख जै जै बलिहारी । भीर होत नित सांझ सँवारी ॥
होत कीरतन सुन्दर गान । राग रागनी सहित विधान ॥
कथा कीरतन अरु सतसंग । निशि दिन वरसे नौधा रंग ॥
सेवक शिष्य भये बहुतेरे । श्रीगुरु भगतानन्द के चेरे ॥
नेमी प्रेमी ज्ञानी ध्यानी । परम सुशील सन्त सुखदानी ॥

दोहा ।

सिद्ध राम सब से बड़े, पुनि शिष्य राम कृपाल ॥
अजपादास पिछानियें, सतवादी रामदयाल २९
अस्सी अरु द्वै जानियें, स्वामी जू के संत ॥
सबही किये महंत गुरु, सतोगुनी बुधवंत ३०
शिष्यन की नामावली, लिखत ग्रंथ बढ़ जाय ॥
याही ते सूक्षम कहै, सुन समझो हरषाय ३१

चौपाई ।

श्रीमहाराजा आज्ञा दीनी । बानी सुन्दर रचो नवीनी ॥
श्रीगुरु श्रीहरिके गुन गावो । पद रचना कर प्रेम बढ़ावो ॥
बानी प्रेमभक्ति की दानी । पढ़ें सुने चेतें जग प्रानी ॥
श्रीमहाराज कृपा उर धारी । अनुभव उदय भई अतिप्यारी ॥

दोहा ।

श्री सतगुरुपद ध्यान धर, रचन लगे सद्ग्रंथ ॥
नाम मुक्तिमारगसरस, प्रेमपरा को पंथ ३२
बानी स्वामी जी सरस, सब बानी सिरताज ॥
मैं मिथ्या बरनूं नहीं, साक्षी श्रीमहाराज ३३

चौपाई ।

जो बांचैं सोई जन जानें । बिना पढ़े नहिं मर्म पिछानें ॥
जाके पढ़े पढ़न सब छूटे । निशिदिन प्रेमामृतरस घूंटे ॥
जैमनि अश्वमेध की कथा । भाषा रचना की जिमि जथा ॥
संस्कृत सों भाषा कीनी । दोहा चौपाई रँग भीनी ॥

दोहा ।

स्वामी जी महाराज की, बानी भई प्रचार ॥
बांचें संत महंत सब, सुन हुलसें नर नार ३४

चौपाई ।

श्रीगुरु महिमा अनुपम गाई । सुन गुन साधू करें बड़ाई ॥
हरि सुमरन को बरनो अंग । नानाभांति न कहै प्रसंग ॥
अजपा गायत्री पुनि गाई । सोहम् सुरति रीति समुझाई ॥

साधू महिमा सब मनहरनी । अतिविचित्रअनुपमसोईबरनी ॥
सूरातन को अंगहु गायो । सन्त महन्तन के मन भायो ॥
बिरह अंग पुनि बरनन कीनों । सुन प्रगटत हरि प्रेम नवीनों ॥
पतिव्रता अंग प्रभुता भाखी । अति अनन्यता रीति सुराखी ॥
सतगुरु कृपा अंग अति पावन । बरनो भक्तन के मनभावन ॥

दोहा ।

पुनि बैराग चितावनी, बरनी महा अनूप ॥
पढ़ै सुनै समुझै सोई, परै न फिर भवकूप ३५
भक्ति ज्ञान के अंग की, अद्भुत बरनी रीत ॥
अगुन सगुन दोउ रूप में, प्रकटे प्रेम प्रतीत ३६
बारहमासा में कह्यो, बिरह अवस्था अंग ॥
श्री गुरु कृपा दयालुता, अनगिन कथे प्रसंग ३७
पारख को अँग सोहनो, रच्यो रहस्य दरसाय ॥
गुरु शिष्य लक्षन कथे, समझ भूल भ्रमजाय ३८
श्री शुक मुनि के जन्मकी, लीला ललित अनूप ॥
भारत में जा बिधि लिखी, सो बरनी सुखरूप ३९

चौपाई ।

साधु अंग समझावन भाखो । जांव न धाम छिपो नहिं राखो ॥
तिथि अरु सम्बत मास बतायो । देह तजन पहिलेही गायो ॥
आमिष निरवारन को अंग । शास्त्रयुक्ति सब कहे प्रसंग ॥
हिंसा त्याग परम तप बरनो । सो अवस्य सन्तन को करनो ॥

दोहा ।

शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, पयोव्रत जाको नाम ॥
वरनो करनो बिधि सहित, सब मनपूरन काम ४०

चौपाई ।

शब्द अनेकन भांति बनाये । नाना रागन में सोइ गाये ॥
त्याग विराग योग अरु ज्ञान । सबमें बरनों प्रेम प्रधान ॥

दोहा ।

श्यामचरन के दास गुरु, महाराज रस खान ॥
सभा मध्य बैठै मुदित, संतन के सुख दान ४१
श्री गुरु भक्तानंद को, निकट बुलाकर प्यार ॥
निज कर टोपी शिष्य के, मस्तक धरी सुधार ४२
स्वामी रामहि रूप शुचि, सुंदरबख्शा नाम ॥
संतन के जु महंत कर, कहै बचन अभिराम ४३
साधुमंडली संग ले, रामत कीजे जाय ॥
जग जीवन उपदेश दे, श्रीहरि ओर लगाय ४४
करनो संतन को सदा, जग जीवन उद्धार ॥
याही हित हरि करत है, प्रकट साधु अवतार ४५
स्वामी रामहि रूप तुम, हो निज मेरे रूप ॥
मैंने तुम को करदिये, सब संतन के भूप ४६

चौपाई ।

स्वामी रामरूप तेहि वारी । सतगुरु आज्ञा निज शिरधारी ॥
साष्टांग कर बारम्बारी । गुरु स्तुति निजमुख उच्चारी ॥

आज्ञा ले निज मन्दिर आये । सब सन्तन को निकट बुलाये ॥
साधुमण्डली हिलमिल सारी । रामत की करिलेहु तयारी ॥

दोहा ।

श्री हरि सिंहासन सजो, श्रीगुपाल पधराय ॥
शालिग्रामहु संग ले, चलो संत हरषाय ४७
सजि बिमान अतिसोहनो, पधराये गोपाल ॥
झांकी बांकी मोहनी, मानहु छवि को जाल ४८
चार साधु निज कंधपै, लियो विमान उठाय ॥
जै जै श्री महाराज मुख, बोल उठे हरषाय ४६
बहु बाजे बाजन लगे, भेरी शंख मृदंग ॥
रनसिंघा की धुनि सरस, सुन मन उठत उमंग ॥
झांझ झालरी मंजीरा, अरु वाजत मुहचंग ५०

चौपाई ।

मन्दिर से साजि चली सवारी । संग सन्त पीताम्बरधारी ॥
ध्वजा पताका और निशान । फहरत लहरत शोभाखान ॥
गावत भजन चले संग सन्त । ज्ञानी ध्यानी गुनी महन्त ॥
चढ़े पालकी मध्य बिराज । स्वामी रामरूप महाराज ॥
चमर मोरछल लीने साथ । छरी लिये कोउ साधू हाथ ॥
साधुन की साजि चली जमात । ज्यों दूलह सँग बनी बरात ॥
दिल्ली के बाजार मँझारी । स्वामीजी की गई सवारी ॥
निरखन आये बहु नर नारी । भीरभार अतिशय भइ भारी ॥
श्रीफल फूल लियें सब आवैं । पान बतारो भेट चढ़ावैं ॥

फूलन की बरषा बरसावैं । जै जै कहि मनमोद बढ़ावैं ॥

दोहा ।

भक्तन को आनंद दै, भये शहर के पार ॥
चले चाव सों संत जन, हिय में हर्ष अपार ५१
पहर रहे दिन के समय, लखि शुचि ठौर सुथान ॥
रचि तम्बू डेरा करैं, साधु संत सुख दान ५२
जहँ ठहरैं ता नग्र के, दरश करन नर नार ॥
आवैं अनगिन सत पुरुष, प्रेमी भक्त अपार ५३

चौपाई ।

हरि दरशन कर हिय हरषावें । श्रीस्वामी लख मन मगनावें ॥
सत्संगत कर सुख सरसावें । गद गद स्वर दृग नीर बहावें ॥
हरि चरचा सुन चित्त लगावें । सत उपदेश सुने सुख पावें ॥
न्योता कर निज घर पधरावें । सेवा करें सनेह बढ़ावें ॥
नाना व्यंजन पाक बनावें । श्रीहरि के शुचि भोग धरावें ॥
राज भोगपद साधू गावैं । ताल मृदंग तमूर बजावैं ॥

दोहा ।

भोग सराकर आरती, प्रभु देवैं पौढ़ाय ॥
पंगत पनवारा रचें, प्रेम मगन पुलकाय ५४
गावैं धुनि पुनि भोगकी, हिल मिल संत महंत ॥
जै जै हरि गुर बोल मुख, जेंवत साधु अनंत ५५
परुसें सामग्री सरस, जो चाहैं हरिदास ॥
रुचि सों पात प्रसाद सब, प्रकटत प्रेम विलास ५६

चौपाई ।

पाय प्रसादी साधु अघावें । अचमन कर बीरी पुनि पावें ॥
निजनिज आसनपर सब जावें । कर आराम कृष्ण गुण गावें ॥

दोहा ।

पहर पीछले दिन रहे, देह कृत्य कर संत ॥
उत्थापन कर प्रभू को, बैठें साधु महंत ५७

चौपाई ।

कथा भागवत करें सन्तजन । सुन समझे हों मुदित भक्त मन ॥
भक्त समूह जुरें जित आई । हरियश सुने हृदय हरषाई ॥
ज्ञानभक्ति के सुन दृष्टान्त । मिटें सकल मन संशयभ्रान्त ॥
उपजै प्रेमभक्ति उर आई । जक्त वासना जात विलाई ॥
कोऊ भक्त कर माला फेरें । हरे कृष्ण कहि कोऊ टेरें ॥
हरि छवि ध्यान होहिं लवलीन । प्रेम सिन्धु में कर मन मीन ॥

दोहा ।

कथा समापति होत ही, श्री तुलसीदल पान ॥
भक्त लेहिं बहु भावकर, बांटत संत सुजान ५८
होहिं वार्ता परस्पर, प्रश्नोत्तर रसखान ॥
सुन समुझें मन होहिं दृढ़, भक्ति भजन भगवान ५९
करें नाम धुनि कीरतन, रसना सों उच्चार ॥
मगन होंय मन प्रेम में, भूले जग व्यवहार ६०

चौपाई ।

नौधा भक्ति भाव रंग बरसै । प्रेमानन्द हृदय में सरसै ॥

परामक्ति प्रगटे उर आई । हरि छवि नैनन रहै समाई ॥

दोहा ।

श्री स्वामी महाराज पुनि, करैं समाज विधान ॥
बैठे जुरमिल संत सब, सुंदर परम सुजान ६१
साज बाज सुरसों मिला, संध्या समय पिछान ॥
गावैं गौरी राग धुनि, हृदय धरैं हरि ध्यान ६२

चौपाई ।

करैं आरती श्रीहरि प्यारी । जगमग ज्योति जोर कर बारी ॥
शंखोदक अर्घा भरि वारैं । बार बार जावैं बलिहारैं ॥

दोहा ।

परिक्रमा दंडवत करैं, स्तुति करैं सप्रीत ॥
व्यारू भोग धरैं बहुर, भाव भक्ति की रीत ६३

चौपाई ।

व्यारू भोग उसारत सन्त । कर आरति पौढ़ा भगवन्त ॥
भोग प्रसादी साधू पावैं । अचमन कर आनन्द बढ़ावैं ॥

दोहा ।

अप अपने अस्थान जा, सैन करैं सब संत ॥
उठैं प्रात आनन्द सों, हिलमिल साधु महंत ६४
झांझ मृदंग बजाय के, मंगल आरति गाय ॥
करैं कीरतन हो मगन, हरष न हृदय समाय ६५
मंगल आरति कृष्ण कर, होत जमात बहीर ॥
बाजैं नौबत नगारे, सहनाई मंजीर ६६

चौपाई ।

मारग माहिं ग्राम बहु आवैं । दरश करन नर नारी धावैं ॥
साष्टांग करि विनय सुनावैं । रहो यहां तुम्हरे बलि जावैं ॥

दोहा ।

ठहरे जहां जमात जा, धन पुर धन सो ग्राम ॥
धन नर नारी वहां के, भक्ति करें निष्काम ६७

चौपाई ।

दूध दही कोइ माखन लावे । कोइ घृत लाकर भेट चढ़ावे ॥
आटा दाल लाय कोइ धरें । कोइ मिष्टान्न भेट ला करें ॥
छाना लकड़ी कोइला देवैं । कोइ टहल कर सन्तन सेवैं ॥
साधु रसोई कर हुलसावैं । भोग लगा प्रभु भोजन पावैं ॥

दोहा ।

बानी श्रीमहाराज की, वांचैं प्रेम बढ़ाय ॥
नर नारी हितकर सुनैं, समझ अर्थ सुखपाय ६८
हरि यश गावें संत मिल, सुने भक्त भगवान ॥
उदय होय अनुराग उर, करें प्रेम रसपान ६९

चौपाई ।

शिष्य हुये बहुतक नर नारी । बैष्णव रीति हिये निज धारी ॥
कंठी तिलक मन्त्र गुरु लीनो । तन मन धन गुरु अर्पन कीनो ॥
देश बिदेश जमात सिधारी । जीव चिता हरिभक्ति प्रचारी ॥
स्वामी यश जग छायो भारी । जीवनमुक्त किये नर नारी ॥

प्रथम प्रसंग।

दोहा।

श्रोता सुनहु प्रसंग इक, रामत ही की वात॥
नागा स्वामिन की मिली, बिचरत एक जमात ७०
श्रीस्वामीजी मिलनहित, आये सन्त महन्त॥
आदर कर आसन दिये, हिलमिलके सब सन्त ७१

चौपाई।

कोन संप्रदा द्वारा कोन। हमैं बतावो जाविधि जोन॥
अरु उपासना धाम बतावो। कहा धर्म है हमें सुनावो॥
तीरथ कोन वर्त को धारो। इनको भेद बतावो सारो॥
मुक्ति कोनसी नाम बखानो। कहो खोल सब जो तुम जानो॥

दोहा।

श्रीस्वामीजी जोर कर, या विधि बोले बैन॥
कहों सकल सिद्धान्त अब, सुन समुझो सुख दैन ७२

छप्पै।

राधाकृष्ण उपास्य धर्म भागवत हमारो।
निज वृन्दावन धाम मुक्ति सामीप निहारो॥
तीरथ गंगा नान व्रत ग्यारस को धारो।
क्षमाशील संतोष दया नित हिये विचारो॥
सम्प्रदाय शुकदेव मुनि आचार्य श्याम चरनदास।
रामरूप तिन पद शरण नवधा भक्ति निवास॥

दोहा ।

सम्प्रदाय शुकदेव मुनि, आचार्य श्याम चरनदास ॥
द्वारे निकस अनेक ही, भक्ति सु करन प्रकास ७२

छप्पै ।

जै जै श्रीशुकदेव सम्प्रदा तासु कहाई ।
भगवतधर्म बखान जक्त में भक्ति चलाई ॥
चरणदास किये शिष्य सर्व गति ईश अचारज ।
भये अभय वहु जीव सर्व के सारे कारज ॥
सम्प्रदाय यह पांचवीं द्वारे हैं वहु भांति ही ।
रामरूप लागो शरण जब मन आई शांति ही ॥

स्वामी महंतवचन ।

दोहा ।

श्याम चरणदासीय की, पद्धति कहा प्रमान ॥
बिन समझाये भेद यह, हम न करें अनुमान ७४

श्रीस्वामीजीबचन ॥

दोहा ।

नाक कान मुख आँख के, दास कहात न कोय ॥
चरणकमल हरिदास सब, सुन समझो भ्रम खोय ७५

पद राग कड़खा

साधो चरणही दास को इष्ट मेरे ।
बिना चरणदास कोइ और मानू नहीं
पड़ी यह बान सो कहूँ टेरे ।

मूलप्रकृति चरणदास महालक्ष्मी
चरणहीदास सुर आदि सबही ॥
गरुड़ चरणदास गणेश चरणदास है
चरणही दास हैं सूर ससिही।
बिरंचि चरणदास महादेव चरणदास है
चरणही दास नारद गुसाईं ॥
व्यास सनकादि अरु मुनी चरणदास है
चरणही दास है शेष ताईं।
ध्रुव प्रह्लाद चरणदास परगट सदा
चरणही दास जो प्रेम धारें ॥
चरणहीदास हैं भक्त जितने भये
चरणही दास आपा सँभारें।
नामदेव धना कबीर चरणदासही
नरसिया और जयदेव नामी ॥
चार युगमांहि जिन जिन करी भक्तिही
चरणही दास से भये स्वामी ॥
चरणही दास को ध्यान हियमें रहे
रामही रूप दोउ हाथ जोरे।
चरणही दास के साथ नितही रहूं
यही है टेक उर आस मोरे ॥

दोहा।

हर्ष उठे सिद्धांत सुन, सावी संत महंत ॥

स्तुति करि कर जोर के, बंदन करी अनंत ७६
जै जै जै शुकदेव मुनि, जैति श्याम चरणदास ॥
चरणदासि पद्धति समझि, भयो सकल भ्रम नास ७७
हम तुम वैष्णव भ्रातृगण, नहीं भेद को काम ॥
जैसे गंगा एक ही, घाटन के बहु नाम ७८

चौपाई ।

मिल महंत पूजै पुजवाये । अरसपरस मिल आनंद पाये ॥
करी रसोई हिलमिल सारे । धर प्रभु भोग रचे पनवारे ॥
मिल महंत स्वामी ढिग राजै । आसपास सब संत विराजै ॥
परुसन लगे पाक पनवारे । पटरस, व्यंजन न्यारे न्यारे ॥
संप्रदाय आचारज नाम । जै जै धुनि बोलें अभिराम ॥
हरे प्रेम सो बोल सुभागे । साधुसंत मिल जेमन लागे ॥
नाम बोल परसादी पुरसें । सादर संत लेहिं हिय सरसें ॥
पूरन भये बचन उच्चारे । अचवन करन इकंत पधारे ॥

दोहा ।

साधु बिदा होकर गये, कर बहु दण्ड प्रणाम ॥
स्वामी जी संतन सहित, मिल कीनो आराम ७९

दूसरा प्रसंग ॥

दोहा ।

रामत करते इक समय, मिले अनेक फ़क़ीर ॥
करी कोरनिश नम्र हो, मुख बोले कहि पीर ८०

इश्क़ शग़ल अल्लाह की, कहिये मुरशद बात॥
अरु बरनन कुछ कीजिये, उसकी ज़ात सिफ़ात ८१

श्रीस्वामीजीबचन।

राग रेखता।

आशिक़ हुवा हूं उसका जो नज़रों से दूर है।
साया जिसी का यह जग जो कुछ ज़ुहूर है॥
जोहे खियाल वहम फ़हम से परे सनम।
मुरशद की सेंन वेंन से हाज़िर हुज़ूर है॥
औसाफ़ उसकी ज़ात का क्यों कर करें बयाँ।
क्या ताव है किसी में अक़ल क्या शऊर है॥
तिस बेचगून यार पे में सब हुवा निसार।
दिल जान उस सनमपे मेरा चूर चूर है॥
यह आशकी का काम सुनो रामरूप से।
पहले फ़ना जो होय तो फिर वह भी नूर है॥

फ़क़ीरोंका बचन।

दोहा।

सैयाई चारों तरफ़, करते रहैं हमेश॥
हमें मिला नहिं आपसा, कोइ हिन्दू दरवेश ८२
तारीफ़ें करने लगों, होके दिल में शाद॥
सिज्दाकर सबही चले, मनकी पाय मुराद ८३

चौपाई ।

संत अनंत लिये सँगस्वामी । विचरत फिरे विश्व निज धामी ॥
शहर ग्राम मारग मैं आवैं । भक्त भाव करके ठहरावैं ॥
करें रसोई कृष्ण निमंत । भोग लगा भुगतावें संत ॥
दिनमें हो सत्संग समाज । सन्मुख श्रीस्वामी महाराज ॥
रैनहि मांहि करें पद गान । साज बाज लै संत सुजान ॥
सुनें भक्त मन उपजे ज्ञान । नाम जपैं हरि को धर ध्यान ॥

दोहा ।

प्रेम मगन होके कोई, नृत्य करत तत्काल ॥
हो व्याकुल हरि विरह में, तनकी नांहि सँभाल ८४

चौपाई ।

सत्संगति महिमा लखभारी । अनगिन शिष्य हुये नर नारी ॥
श्रीस्वामी को शरणों लीनों । तन मन धन गुरु अर्पण कीनों ॥
श्रीस्वामीजू हुवे दयाला । गुरू मंत्र दै किये निहाला ॥
ज्ञान ध्यान की जुक्ति बताई । प्रेम भक्ति सब उर प्रगटाई ॥
भये अनन्य भक्त नर नारी । श्रीहरि सेवा के अधिकारी ॥
श्रीहरि गुरू संत कर सेवा । तजे जक्त के देवी देवा ॥

दोहा ।

श्रीहरि गुरु सेवा गही, दृढ़ मत कर विश्वास ॥
निश्चल चित हरि भक्ति मैं, तजी जक्त की आस ८५

तीसरा प्रसंग ।

दोहा ।

पश्चिम दिशि रामत करी, श्री स्वामी जू जाय ॥
संत मंडली के सहित, परमारथ चित लाय ८६
मारग में इक नग्र शुचि, तहां कियो विश्राम ॥
चार वरण विख्यात जग, जहां बसैं सुखधाम ८७

चौपाई ।

साधुमंडली ठहरी जितही । होतकथा श्रीहरि तहँ नितही ॥
चार मनुष्य तहां चलिआये । स्वामी दरशन कर सुख पाये ॥
चरचा करन लगे मिल सारे । निजमुख बोले न्यारे न्यारे ॥
एक कहत धन सम नहिं कोई । याही सों प्राप्ती हरि होई ॥
दूजो कहत मुख्य आचारा । श्रीहरि यही मिलावनहारा ॥
तीजा फिर बोला हरपाई । रूप देखि हरिवश होजाई ॥
चौथै विद्या वड़ी वताई । विद्या पढ़ै प्रभु मिल जाई ॥
आपस में मिल बाद बढ़ावें । हार जीत कोऊ नहिं पावें ॥

दोहा ।

हाथ जोर कर नम्रता, चारों बोले बैंन ॥
न्याय करो हमरो तुमहिं, श्री स्वामी सुखदेन ८८
हरि प्राप्ती इन चार मैं, निश्चय कासूं होय ॥
कहो वचन सिद्धांत मुख, हम चित भ्रम दो खोय ८९

श्रीस्वामीजीवचन ।

चौपाई ।

स्वामी कहैं सुनहु चितलाई । कहौं सिद्धांत श्रुतिन समझाई ॥
श्रीगीता हरि निज मुख गाई । सर्वोपरि श्रीभक्ति बताई ॥
भक्ति किये भगवत को पावे । निश्चय परमधाम को जावे ॥
भक्तहेत हरि लें अवतारा । धर्म स्थाप हरें भुवभारा ॥

दोहा ।

भक्ति बराबर योग नहिं, नहीं ज्ञान विज्ञान ॥
भक्ति मिलावे पुरुष को, पावे पद निरवान ६०
इक पद रचि गायो तबहिं, श्रीस्वामी महाराज ॥
सुनतहि चारों नरन को, गयो भर्म सब भाज ६१

पद ।

राग भैरवी तथा सोरठ ।

श्रीकृष्ण को भक्ति पियारी है ।

धन आचार रूप विद्या सों रीझैं नाहिं मुरारी है ।
विप्र सुदामा अतिही निरधन ताहि द्रव्य दियो भारी है ॥
बधिक क्रिया कुछ समझत नाहीं प्रगट मिलो गिरिधारी है ।
कहो बेद गजने कब पढ़िया ग्राह सों लियो उबारी है ॥
पांच बरस की उमर ध्रुवकी ताहि कियो हितकारी है ।
तीन कूब कुबजातन माँही सो कीनी प्रभु प्यारी है ॥
दास बिदुरघर शाक अरोगो रीझन की गति न्यारी है ।

उग्रसेन को राजा कीनों डारो कंस पछारी है ॥
जहां तहां संतन की रक्षा करी जु आप बिहारी है ।
प्रेम प्रीति के वस हैं हरिजी कहैं चरनदास बिचारी है ॥
रामरूप गुरुभक्ता होके भक्ति हिये में धारी है ॥

दोहा ।

पद सुनकर प्रमुदित भये, भयो सकल भ्रम नास ॥
चारों चरनन में परे, कहि हम तुमरे दास ६२
श्रीस्वामी के शिष्य भये, मंत्र लियो हरखाय ॥
बिदा होय निज घर गये, भक्ति कृष्ण की पाय ६३

चौथा प्रसंग ।

चौपाई ।

सज्जन सुनो कथा इक प्यारी । निश्चय प्रेम बढ़ावनवारी ॥
राम कृष्ण के भक्त पियारे । अनुरागी सतसंगी भारे ॥
स्वामी जू के ढिग चलि आये । करी दण्डवत हिय हरखाये ॥
भक्त समूह निरखके स्वामी । हुए मगन मन अंतरयामी ॥
परम प्यार कर बोले बानी । प्रीति रीति तिनकी पहिचानी ॥
धन्य धन्य मुख कहने लागे । तुम सब भक्त परम बड़ भागे ॥
प्रीति करे गुरु संतन सेती । हरिपद पावत कुटुम्ब समेती ॥
हरि गुरुसेवा सें चित लावें । निश्चय उन्हैं कृष्ण अपनावें ॥

दोहा ।

बोले प्रेमी जोर कर, बचन आपके खूब ॥

हमैं मिलैये करि कृपा, राम कृष्ण महबूब ६४

चौपाई ।

श्री स्वामी सुनकर हरषाये । भक्तन बचन महा मन भाये ॥
लियो तान पूरा कर स्वामी । लगे बजावन अंतरयामी ॥
पद नवीन इक तबहिं बनायो । परम प्रेम कर तिन्हैं सुनायो ॥
भक्तन के मन में अति भायो । परमानंद हृदय में छायो ॥

श्रीस्वामीजी बचन ।

पद रेखता ।

सुनो तुम प्रेमियो यारो इश्क के खेत को भारो ।
कि अपना शीश ह्वां डारो यही महबूब का पाना ॥
जैसे मन्सूर हूवा था सूली पे जाय मूवा था ।
गया वह जीत जूवाथा सभी जग लोग ने जाना ॥
लगन की बाट ऐसी है पतंग अरु दीप तैसी है ।
बिछोह जलमीन जैसी है सबहिंविधि देख मरजाना ॥
कि पहिले सीख लीजेजी कि पीछे प्रेम कीजेजी ॥
कि आपा वार दीजेजी दुई का नाहिं ठहराना ।
कहा चरनदास मुरशदने पाया जो भेद यह मैंने ॥
लिया सोइ रामरूपाने इसी के बीच गल जाना ॥

दोहा ।

पद सुनके प्रेमी पुरुष, भये प्रेम गलतान ॥
जै जै जै स्वामी तुम्हैं, मुख से करत बखान ६५

हो प्रसन्न निज घर गये, भये प्रेम प्रभु लीन ॥
जैसे सिंधु अगाध में, गोता मारत मीन ९६

पांचवां प्रसंग ।

चौपाई ।

स्वामी रामरूप सुखदाई । रामत में तिन के मन आई ॥
सतगुरु जीवनचरित बनाऊं । संतन सों जो आज्ञा पाऊं ॥
संग साथ थे जो गुरुभाई । उन को यह अभिलाष सुनाई ॥
सुनकर सब बोले यह बानी । सतगुरुचरित रचो सुखदानी ॥

दोहा ।

श्याम चरन के दास गुरु, तिन को उर धर ध्यान ॥
चरितामृत अद्भुत रचो, गुरुमुखियन को प्रान ९७
ज्ञान योग बैराग निधि, प्रेम भक्ति की खान ॥
पढ़ै सुनै कर प्रीति जो, पावै पद निर्बान ९८
नाम चरित गुरुदेव को, श्री गुरु भक्ति प्रकास ॥
जन्म कर्म गुन गुरु कहै, अनुपम आनँद रास ९९

चौपाई ।

रामत करत संत सँगलीनें । स्वामी रामरूप रँग भीनें ॥
चलत चलत इक बन दरशाया । हरा भरा अतिही मन भाया ॥
नाना फूल लगे फल जामें । ऋतु बसंत छबि छाई तामें ॥
तहां सुहावन लघु इक गिरिवर । झरना झरत भरा तहँ सरवर ॥
कमल खिले तहँ रंग बिरंगा । सौरभ मत्त गुंज रहै भृंगा ॥

शीतल मंद सुगंध सुहाई । चलत पवन सुंदर सुखदाई ॥

दोहा ।

ठहरे साधू संत तहँ, लखि रमनीक सुठौर ॥
ता समीप इक ग्राम के, नर बहु आये दौर १००
संतमंडली दरश कर, हुए अतिहि खुश हाल ॥
सीधा सामग्री सकल, लाय धरी तत काल १०१
करी रसोई संत मिल, भोग धरा गोपाल ॥
पा प्रसाद प्रमुदित भये, स्वामी परम दयाल १०२
रहै तहां आनंद सों, रैन कियो बिश्राम ॥
भजन कियो भक्तन सहित, सुमिरे श्यामा श्याम १०३

चौपाई ।

रैन समय शुकदेव गोसाईं । स्वप्न दियो स्वामी के ताईं ॥
गिरिवर गुफ़ा तासु के माहीं । है स्वरूप हमरो तेहि ठाहीं ॥
प्रात भये संतन सँग आवो । हमरी मूरति को तुम लावो ॥
पंचामृत करके पधरावो । सेवा करो सनेह बढ़ावो ॥
हम प्रसन्न हैं तुम पर भारी । आज्ञा मानो सत्य हमारी ॥
जागे स्वामी पलक उघारी । उठे प्रात आनंद मँझारी ॥

दोहा ।

स्वप्न भयो जो रैनमें, संतन दियो सुनाय ॥
शुक मुनि मूरति लेनको, स्वामि चले हरषाय १०४
पूजा सामग्री सकल, सजि के सुंदर थाल ॥

धूप दीप नैवेद्य धर, अरु फूलन की माल १०५
दूध दही अरु शरकरा, घृत अरु शहद अनूप।
पंचामृत हित ले चले, शुकमुनि श्यामस्वरूप १०६

चौपाई।

आगे स्वामी संग संत सिधारे। पहुँचे जाय गुफाके द्वारे॥
कियो प्रवेश गुफा में जाई। सुंदर ठौर दृष्टि में आई॥
शिला एक पर मूरति श्यामा। शुक मुनिकी अतिही अभिरामा॥
दृष्टि परी अति ललित ललामा। जै जै कहि करि दंडप्रणामा॥

दोहा।

श्री मूरति शुक को करा, पंचामृत असनान॥
पटसों पोंछ अंगोछ पुनि, हरपे संत सुजान १०७
केसर चंदन तिलक कर, फूल माल पहराय॥
भोग धरो पुनि प्रेम सों, धूपरु दीप कराय १०८

चौपाई।

ताल मृदंग तमूर बजाई। गावन लगे संत समुदाई॥
गान तान धुनि सुंदर छाई। गूंजत गुफा गरज सरसाई॥
भोग उसार आरती कीनी। पुष्पांजलि अर्पी रँगभीनी॥
मध्य विमान मूर्ति पधराई। संतन झालर झांझ बजाई॥
जहां जमात तहां चलि आये। श्रीस्वामी हिय में हरपाये॥
मतो कियो संतन मिल सारें। उठे तहां तें अंत पधारे॥

दोहा ।

श्री स्वामी महाराज ने, कहे संतन सों बैन ॥
श्री महाराज प्रताप सों, रामत करी सुखेन १०६
अब दिल्ली चल कर करें, दर्शन श्रीमहाराज ॥
पहुँचें निज अस्थान में, हिल मिल संतसमाज ११०

चौपाई ।

चली जमात संत मिल सारे । बाजन लागे शंख नगारे ॥
मग में ग्राम शहर जो आवें । सेवा करें जन्म फल पावें ॥
चलत चलत दिल्ली में आये । समाचार भक्तन सुन पाये ॥
अगवानी लेने को धाये । नर नारी अनगिन उमगाये ॥
लेले भेट चले सब आगे । दर्शन करन सकल अनुरागे ॥
श्री स्वामी अरु संत निहारे । लखि लोचन सब भये सुखारे ॥
भेट धरी चरनों के आगे । कर दण्डवत कहन यों लागे ॥
भले भाग हम दर्शन पाये । रामत करके प्रभु तुम आये ॥

दोहा ।

बाजे बहु बाजन लगे, फहरत ध्वजा निशान ॥
शहर माहिं दाखिल हुये, स्वामी संत सुजान १११
हरि बिमान आगे चलत, पीछे स्वामी संग ॥
साधुमंडली साथ में, बाजत ताल मृदंग ११२

चौपाई ।

गली बजार भीर भइ भारी । अटा चढ़े निरखें नर नारी ॥

करें आरती उत्सव भारी। जै जै धुनि मुख से उच्चारी ॥

दोहा।

पहुँचे निज अस्थान में, श्रीस्वामी जी आय ॥
श्री शुक अरु गोपाल जू, दिये मन्दिर पधराय ११३

चौपाई।

जग मोहन में शुक मुनि राजैं। मन्दिर मैं श्री युगुल बिराजैं ॥
दोऊ झांकी अनुपम मनहरनी। निरखत बनें जाय नहिं बरनी ॥

दोहा।

श्री स्वामी अस्थान में, श्रीमंदिर मनहार ॥
जुगलबिहारी लाल की, जोरी अति सुकुमार ११४
दरशन जो कोई करे, साधु संत नर नार ॥
मगन होंय लखि छवि छटा, बोलत मुख बलिहार ११५
श्याम घटा छवि की छटा, ऐसी मूरति श्याम ॥
तड़ित बरन मनकी हरन, मूरति प्रिया अभिराम ११६
मंदहसनि मनकी फसनि, नेह भरे अति नैन ॥
दरशन करता पुरुष से, मनु बोलें मृदु बैन ११७
छवि अवलोकत छकत नहिं, नयना रहैं लुभाय ॥
ललचि लगैं लोभी महा, महिमा कही न जाय ११८
गौर श्याम सुन्दर सरस, छवि बरनी नहिं जाय ॥
अमर लोक निज धाम ते, मनहुँ बिराजे आय ११९
एक बेर दरशन किये, छवि मनमें बस जाय ॥
झलके नित प्रति नैन में, हिय में रहैं समाय १२०

कहीं न देखी अरु सुनी, ऐसी झांकी नैन ॥
छबि हिरदे छावे तुरत, बरन सके नहिं बैन १२१
दिल्ली जाकर कीजिये, दरशन हिय हुलसाय ॥
जानि परे तब माधुरी, निश्चय मनमें आय १२२
छबिमें अटके मन मधुप, मगन रहै निशि भोर ॥
नैन लगे युग ध्यान में, जैसे चन्द चकोर १२३
भूलें ना पल छिन घरी, वह रंगभरी चितोन ॥
आकर्षण चित को करें, बरन सकै कवि कोन १२४
श्री स्वामी महाराज के, लड़कीले युग लाल ॥
सरसमाधुरी मन वसो, करके कृपा कृपाल १२५

चौपाई ।

श्री स्वामी संतन सँग लीने । श्री महाराज दरश जा कीने ॥
दण्डप्रणाम चरण गहि कीनी । उठ अस्तुति बरनी रँगभीनी ॥
श्री महाराज महा मगनाये । रामरूप निज हृदय लगाये ॥
कर शिरधर करुणानिधि प्यारे । अमृत सम मुख बचन उचारे ॥
अरु पूछी सब बिधि कुशलात । रामत की सारी सब बात ॥
कर प्रणाम निज मन्दिर आये । स्वामी जी हिय में हरषाये ॥

दोहा ।

आनंद से रहने लगे, स्वामी निज अस्थान ॥
सेवा सुमरन कीरतन, हृदय धरें हरिध्यान १२६

चौपाई ।

जो जन संगति में चल आवें । तिन को हरिकी ओर लगावें ॥

ज्ञानी जन को ज्ञान सिखावें । ध्यानी जन को ध्यान बतावें ॥
जोग जुक्ति काहू को दीनी । भक्तन को दई भक्ति नबीनी ॥
काहू को प्रेमामृत प्याया । पराभक्ति में कोइ छकाया ॥
जैसी जाके चाह निहारी । स्वामी पूरन कीनी सारी ॥
जगके जीव अनंत जगाये । भवसागर से पार लगाये ॥
जीवनमुक्त अनेक बनाये । भर्म भगा हरिपद पहुँचाये ॥
कोऊ हरि छबि माहिं छकाये । प्रेम दिवाने कर दिखलाये ॥
हरि छबि छक मत वारे डोलें । मुख से अकबक बानी बोलें ॥
तन जग में मन प्रभु के पासा । लोक भोग से सदा उदासा ॥

दोहा ।

रीति स्वरोदय की सबहि, काहू दई बताय ॥
कोउ विराट के ध्यान में, निशि दिन दिये लगाय १२७
रिद्धि सिद्धि दे किसी को, कीनो तुरत निहाल ॥
पुत्रार्थी को पुत्र दे, करी सबन प्रतपाल १२८
रोगी आये जिन्हों के, दीने रोग मिटाय ॥
सुख संयोगी सब किये, स्वामी सहज सुभाय १२९

छठा प्रसंग ।

चौपाई ।

अजपादास अनूपम चेला । श्रीस्वामी का शिष्य नवेला ॥
विनय करी हरिदरश करावो । महारास लीला दरशावो ॥
पूरन कर स्वामी मम आसा । जान आपनो मोहिं निजदासा ॥
तुम समर्थ सब विधि गुरु मेरे । मैं शरणागति हौं प्रभु तेरे ॥

दोहा ।

शिष्य की पूरण प्रीति लखि, स्वामी हुए दयाल ॥
नयन मूंद लखि हृदय निज, रास विलास रसाल १३०
गुरुआज्ञा सुनि शिष्यने, मूंदलिये निज नयन ॥
अभ्यन्तर रस रास लखि, तन मन पायो चैन १३१
जो कुछ दरशो ध्यान में, सो दीनो मुख गाय ॥
काफ़ी राग रसाल तव, गायो तुरत वनाय १३२

अजपादास वचन ।

पद राग काफ़ी ।

करलेआशिकांदीदार ।

वहुत दिननसों लगी उमंगा
हिलमिल के सुख ले पिय संगा ॥
तन मनकी सव तप्त मिटाले
सन्मुख प्रीतम अजव वहार ॥
विरह वियोग कियो सव दूरा
ढिगही पाये जीवन मूरा ॥
प्यारेकी छविको कहा वरनूं
अद्भुत सुन्दर तेज अपार ॥
झिलमिल ज्योति अनन्त गुलज़ारी
चहूं दिशा चमके उजियारी ॥
अनगिन रूप धरे अति वांके
रास अखण्डा नित्त विहार ॥

यह लीला लखि बुद्धि थकाई
अजर अमर अलबेला साई
राम रूप कहै देख झलकको
जन अजपा दै शिर बलिहार॥

दोहा।

स्वामी ने पूरन करी, अपने शिष्य की आस॥
सतगुरु पूरन कला निधि, श्याम चरन के दास १२३

सातवां प्रसंग।

दोहा।

श्री स्वामी महाराज के, शिष्य सतबादीराम॥
चौदह बिद्या में निपुन, अतिसुंदर अभिराम १२४

चौपाई।

ज्ञानी ध्यानी योगी पूरे। त्यागी बैरागी अति सूरे॥
कबिता करनी नीकी जाने। नाना छंद प्रबंध बखाने॥
प्रेम भक्ति की मूरति सोई। ध्यान मानसी सुरति समोई॥
जैसी बिद्या सीखे कोई। तैसी ताहि बतावें जोई॥

दोहा।

जो कोई चाहे जिसे, बानी देहिं बनाय॥
अपनी छाप धरें नहीं, वाको भोग लगाय १२५
दिल्ली में नामी हुये, हरफन के उस्ताद॥
जो कुछ चाहा जिसीकी, पूरन करी मुराद १२६

चौपाई ।

गावन विद्या सीखे कोई । लै सुर ताल बतावें सोई ॥
सातों स्वर अरु तीनों ग्राम । सब सिखलाय बतावें नाम ॥
नृत्य करन की बिद्या न्यारी । सीखे ताहि सिखावें सारी ॥
सारंगी तबला तम्बूरा । सिखलावें फन सबको पूरा ॥

दोहा ।

संस्कृत बिद्या सकल, अरबी तुरकी आद ॥
उर्दू बोली फारसी, सिखा करें दिल शाद १३७
मुसलमान सबही कहैं, उन्हैं वली अल्लाह ॥
हिन्दू गुरु माने जिन्हें, दोउ दीन के शाह १३८

चौपाई ।

निशि दिन रहैं प्रेम मतवारे । स्वामी रामरूप के प्यारे ॥
इक दिन मन्दिर माहिं बिराजे । गावैं संत बजावैं वाजे ॥
निजकर आप सितार बजाया । तान तरंग रंग बरसाया ॥
नूपुर निज पद बांध सुभागे । हरिके सन्मुख नृत्तन लागे ॥
गावन लगे बिरह पद जबहीं । गद गद कंठ भये पुनि तबहीं ॥
दशम द्वार हो प्राण निकारे । अमर लोक में आप पधारे ॥
बिजुरी की ज्यों भयो प्रकाशा । अनहद धुनि छाई आकाशा ॥
जाय परम पद कीनो बासा । जुगुलबिहारी जी के पासा ॥

दोहा ।

श्री सतबादीराम ने, या बिधि तज निज देह ॥
सरसमाधुरी धाम जा, हरि सों कियो सनेह १३९

आठवां प्रसंग।

दोहा।

सम्वत अठारहसो गिनो, ऊपर अट्ठाईस॥
श्री गुरु शिष्य सम्वाद तब, हुवाजु बिशवा बीस १४०

चौपाई।

लेटे पलँग श्याम चरनदासा। रामरूप बैठे गुरु पासा॥
सेवा चरन करें हरषाई। मनहु रंकनें नवनिधि पाई॥

दोहा।

तहां अचानक नाग इक, प्रगट हुवा ता बार॥
परिक्रमा कर गुरुन की, सनमुख रहा निहार १४१
फिर थोरी सी देर में, हुवाजु अंतरधान॥
रामरूप कहि भेद क्या, कहिये गुरु भगवान १४२

चौपाई।

श्रीमहाराज बचन मुख भाखा। शिष्य से छिपा नहीं कुछ राखा॥
ईश्वर दूत नाग बनि आया। हम को इस ने आन चिताया॥
परमेश्वर ने हमें बुलाया। धाम जायँगे तज निज काया॥
बारह वर्ष व्यतीते जबहीं। जग तज धाम पधारें तबहीं॥

दोहा।

सुनत बात बिसमित भये, कहैं न मुख कुछ बैन॥
गद गद स्वर हक धक हृदय, आंसू टपके नयन १४३

चौपाई।

रामरूप चिंता चित छाई। रोय उठे दृग नीर बहाई॥

श्रीगुरुचरण शीश रख दीना । तरफरात जल बिन ज्यों मीना ॥
कर गहि श्री महाराज उठाये । रामरूप निज हृदय लगाये ॥
धीरज दै मृदु बचन उचारे । कहन लगे सुन मेरे प्यारे ॥
हम को जुदा हुवा मत जानो । सदा आपने हिय में मानो ॥
हरिगुरु व्यापक हैं जग सारे । होहिं नहीं जिय सों छिन न्यारे ॥
भक्ति प्रचारन युगल पठाये । सो सब काज किये मन भाये ॥
जगके जीव अनंत चिताये । परमारथ जग में प्रगटाये ॥
ज्ञान जोग बैराग बताया । प्रेम भक्ति मारग प्रगटाया ॥
परापरम पद सब पावेंगे । धाम जाय जग नहिं आवेंगे ॥

दोहा ।

दृढ़ता निज शिष्य को दई, बीते बारह साल ॥
धाम जान इच्छा करी, श्रीचरनदास दयाल १४४
समाधान कर शिष्य को, श्रीगुरु कृपानिधान ॥
दशम द्वार होकर गये, अमरलोक अस्थान १४५
मंगशिर कृष्णा सप्तमी, बुद्ध पिछानो बार ॥
सम्बत अष्टादशशतक, उन्तालीस विचार १४६

नवां प्रसंग ।

चौपाई ।

स्वामी रामरूप सुखदाई । गुरु आज्ञा दृढ़ता उर छाई ॥
रहैं भजन मैं आठों यामा । निशि दिन रटैं जुगुल सुखनामा ॥
नवधा भक्ति करें करवावें । संतन में मिल हरिगुन गावें ॥
दिल्ली ढिग ग्रामन में जावें । रामत कर जग जीव चितावें ॥

दोहा ।

पहिले वह रामत करी, देश विदेशन जाय ॥
भरतखंड की भूमि मैं, भक्ति दई फैलाय १४७

चौपाई ।

फिर स्वामी दिल्ली कियो वासा । निज मंदिर राजें सुखरासा ॥
ध्यान माहिं हरि दर्शन दीने । बोले कृष्णकुँवर रँग भीने ॥
रामरूप तुम मेरे प्यारे । बल्लभ जीवन प्रान हमारे ॥
अंश हमारे नर वपु धारे । धर्म सनातन जक्त प्रचारे ॥
विमुख जीव जगमाहिं चिताये । परमारथ की ओर लगाये ॥
जग मैं प्रेमा भक्ति प्रचारी । भजन करें अनगिन नर नारी ॥

दोहा ।

मैं प्रसन्न तुम पर महा, सुनहु वचन अभिराम ॥
पंच तत्त्व की देह तज, आवो प्रिय मम धाम १४८
श्रीस्वामी महाराज ने, लिये सब संत बुलाय ॥
अति आदर अरु प्यार कर, कहै वचन समझाय १४९

चौपाई ।

सुनो संत सबही चित लाई । बात कहों हित की समझाई ॥
प्रभु मोको निजधाम बुलाया । भेद आपना तुम्हें सुनाया ॥
परमधाम को अब हम जावैं । तुम को सद उपदेश सुनावैं ॥
जुदे भये हम को मत जानों । निकट आपने नितही मानों ॥
गुरु दृढटेक भक्ति में रहियो । प्रेमपरा भक्ती मग गहियो ॥

जग में भक्तिभाव बिस्तारन । नर शरीर हम कीनो धारन ॥
सो सब कारज पूरन कीने । अभय दान जीवन को दीने ॥
लोभ मोह हम को कुछ नाहीं । जावें परमधाम के माहीं ॥
दशम द्वार हो हरिपुर जावैं । अमरलोक बस आनँद पावैं ॥
उत्रायन सूरज जब आवैं । तजैं शरीर तुम्हैं समझावैं ॥

दोहा ।

सम्बत अष्टादशशतक, सैंतालीस बिचार ॥
जेठ सुदी जो द्वादशी, और बुद्ध ही वार १५०

चौपाई ।

चाहूं योग समाधि लगाऊं । बहुत बर्ष निज तन ठहराऊं ॥
सहित शरीर धाम में जाऊं । चहूं रूप निज रूप मिलाऊं ॥
गुरु दियो भेद यही मन भायो । जोग जुक्ति तन तजन बतायो ॥
गुरु आज्ञा हिय माहीं धारी । यही बात हमको अतिप्यारी ॥

दोहा ।

सोई करिहों निश्चिन्त हो, यामें नहिं संदेह ॥
जोग जुक्ति की रीति सों, तजिहों यह निज देह १५१

चौपाई ।

और सुनों सब ध्यान लगाई । मम आज्ञा मानो हरखाई ॥
सिद्धराम शिष्य मेरे चीनों । निज अधिकार याहिमें दीनों ॥
याकी आज्ञा में सब रहियो । परमपरा गुरुमारग गहियो ॥
बड़ गुरु भाई गुरु सम जानो । पूजा कर इनको सब मानो ॥

दोहा।

कई वर्ष पहिले कह्यो, परमधाम निज जान॥
त्रिकालज्ञ ज्ञाता गुनी, श्रीस्वामी सुखदान १५२

चौपाई।

एक समय सँग ले बहु संत। सिद्धराम ले साथ महंत॥
श्रीस्वामी दिल्ली से आये। कुछ दिन बेरीग्राम रहाये॥
निशि दिन रहै ध्यान लौलाई। जुगल रूप में सुरति समाई॥
मगन मानसी सेवा माहीं। देह गेह की सुधि बुधि नाहीं॥
तन जग में मन हरिपद दीने। स्वामी रामरूप रँग भीने॥
तदाकार हरिछबि भये लीना। जल अगाधमें जिमि रहैं मीना॥
अठारह सौ अरु सैंतालीसा। सम्बत विक्रम बिश्वेबीसा॥
जेठ सुदी बारस तिथि जानी। बुद्धवार दिन लिया पिछानी॥
देह तजन स्वामी मन आई। सिद्धराम शिष्य निकट बुलाई॥
शीश हाथ धर दई अशीशा। कृपा रहै तुम पर जगदीशा॥
अब हम परमधाम निज जावें। कुछ दिन बीते तुम्हैं बुलावें॥
सबको जय महाराज हमारी। सेवक संत सकल नर नारी॥

दोहा।

पद्मासन सो बैठके, श्रीस्वामी महाराज॥
सुखमन मारग प्राण तब, चढें गगन में गाज १५३
दशम द्वार टूटा तभी, तड़दे भई अवाज॥
बिजली सी चमकी तभी, बाजे अनहद बाज १५४

चौपाई ।

स्वामी सिद्धराम तेहि बारी । गुरु बियोग दुख माना भारी ॥
पुनि बिचार मन धीरज धारी । देहकृत्य मनमाहिं बिचारी ॥
गुरुभाई अरु साधू संत । सेवक बेरी ग्राम अनंत ॥
आये सिमट सकलतेहिवारी । संज बिमान सुन्दर अतिभारी ॥

दोहा ।

श्री स्वामी की देह को, दइ बिमान बैठाय ॥
कन्धे धर साधू चले, भजन करत हरषाय १५५

चौपाई ।

लखि शुचि ठौर बिमान उतारा । चंदन काष्ठ मँगा तेहि वारा ॥
सुंदर चिता सुधार बनाई । देहि अग्नि में दाह कराई ॥

दोहा ।

निगमबोध शुभ क्षेत्र जहँ, श्रीजमुना जल धार ॥
दिल्ली में लेजाय तहँ, भस्म दई जित डार १५६

चौपाई ।

स्वामी सिद्धराम महाराजा । करन सत्रवीं आरंभ साजा ॥
देश बिदेश पत्र पहुँचाये । चार सम्प्रदा साधु बुलाये ॥
सम्प्रदाय शुक सब गुरु भाई । पत्र पठाय लिये बुलवाई ॥
नाना व्यंजन पाक बनाये । भोग लगाय सब साधु जिमाये ॥
पांच दिनातक पंगति साजी । सहनाई नौबत धुनि बाजी ॥
रैनमाहिं हो गान समाजा । हरियश गाय बजावें बाजा ॥

दोहा ।

संप्रदाय साधू सकल, गुरुभाई गुनवंत ॥
सिद्धरामजी को दई, पदवी सकल महंत १५७

चौपाई ।

चादर गुरुभ्रातान उढ़ाई । रचि शिर तिलक सुभेंट चढ़ाई ॥
चमर मोरछल छत्र सु कीने । दान द्विजन को बहुबिधि दीने ॥
संत महंत बिदा सब कीने । कर सतकार द्रव्य पट दीने ॥
सिद्धराम स्वामी बड़ भागे । निज मंदिर में रहने लागे ॥
गुरुभाई चेले समुदाई । साधुमंडली बनी सुहाई ॥
जुगलबिहारी सेवैं हितसों । राग भोग बिधि करैं सुचितसों ॥
चार सम्प्रदा साधू आवें । संत सेव कर तन पुलकावें ॥
नित नव सेवक देहिं रसोई । जैसी रुचि संतन की होई ॥
कथाकीरतन नितप्रति गान । हरियश गावें संत सुजान ॥
सुन मन मगन मानसीध्यान । प्रेम सिंधु माहीं गलतान ॥

दोहा ।

रिद्धि सिद्धि ठाढ़ी रहैं, सिद्धराम दरबार ॥
रामरूप स्वामी कृपा, करैं संत सतकार १५८
सिद्धराम नामी भये, दशहु दिशा चहुँ ओर ॥
दिल्ली में शोभा भई, सब संतन शिरमोर १५९

चौपाई ।

देश विदेशन रामत कीनी । प्रगट करी हरिभक्ति नबीनी ॥
चार धाम तीरथ सब कीने । ब्रजबृंदावन रम सुख लीने ॥

अनगिन शिष्य किये नर नारी । प्रेम भक्ति जग माहिं प्रचारी ॥
शिष्य शाखा बहु जग बिस्तारी । संप्रदाय शुक बढ़ी अपारी ॥

दोहा ।

रचो ग्रंथ अनुपम महा, शब्द बावनी नाम ॥
नाम रूप लीला ललित, अरु महिमा हरिधाम १६०
ज्ञान योग बैराग निधि, प्रेम भक्ति की खान ॥
पढ़े सुने जो प्रेम कर, पावै पद निरबान १६१

चौपाई ।

पुनि सागर सिद्धान्त बनाया । मत बेदान्त खोल समझाया ॥
ज्ञान भान सम जग प्रगटाया । सोवत सब संसार जगाया ॥

दोहा ।

सुंदर ग्राम सुहावनो, बेरी जाको नाम ॥
श्री स्वामी राम रूप प्रभु, देह तजी जा ठाम १६२
स्वामी सिद्धहिराम जू, छत्री तहां बनाय ॥
चरनपादुका गुरुन की, दई तहां पधराय १६३
साधू जन पूजन करें, धरें भोग हरषाय ॥
जल झारी भर कर धरें, हिय में प्रेम बढ़ाय १६४

चौपाई ।

अठारहसौ अरु एकहि जानो । बिक्रम सम्बत को पहिचानो ॥
प्रगटे रामरूप महाराजा । भगवत धर्म प्रचारन काजा ॥
अठारहसौ अरु सैंतालीसा । सम्बत जानो बिस्वा बीसा ॥

तन तजके निज धाम पधारे । श्रीमत रामरूप प्रभु प्यारे ॥

दोहा ।

छयालीस वर्ष भूतल रहे, राम रूप महाराज ॥
भक्ति प्रचारी जगत में, परमारथ के काज १६५

दशवां प्रसंग ।

चौपाई ।

स्वामी सिद्धराम गुरुभाई । राम कृपालु परम सुखदाई ॥
ककरोई दिल्ली के पासा । तहाँ जाय तिन कियो निबासा ॥
आस पास ग्रामन के बासी । सेवक संत किये सुखरासी ॥
कृष्ण भक्त कीने सब कोई । दुबिधा दुरमति तिन मन खोई ॥
धर्म सनातन रीति दृढ़ाई । प्रेमा परा प्रगट भइ आई ॥
कलियुग सतयुग कर दरशाया । कृष्ण भजन सब के मन भाया ॥
श्री गोपाल सेवा चित लावें । आस पास रामत कर आवें ॥
इष्टदेव गोपाल पियारे । पूरन करें मनोरथ सारे ॥
वचन सिद्ध सिद्धी तिन पाई । यश प्रताप महिमा जग छाई ॥
सेवा सुमरन भजन करें नित । युगुल ध्यानमें राखेनिज चित ॥

दोहा ।

बिहारीदास तिन के भये, शिष्य महासुखरास ॥
निशिदिन विलसैं भजनसुख, अनुपम प्रेम बिलास १६६
जुगलबिहार उपासना, कुंज केलि आनंद ॥
दिव्यदृष्टि देखें सदा, बिलसें परमानंद १६७

जुगल भजन अरु भावना, तामें नित लवलीन ॥
प्रेम पयोनिधि के तिन्हें, निश्चय समझो मीन १६८
तिन शिष्य ठाकुर दास जी, ज्ञानी ध्यानी संत ॥
बसे लूकसर नग्र में, मंदिर रचा इकंत १६९
रिद्धि सिद्धि दाता बड़े, गुन ग्राही गुनवंत ॥
सरनामी भय भेष में, मन के हरन महंत १७०
बचन सिद्ध जिन के भये, जानत सेवक साध ॥
जग आशा पूरन करन, जिन का मता अगाध १७१

चौपाई ।

निशि दिन रहैं ध्यान मदमाते । श्रीहरि प्रेमभक्ति रँगराते ॥
साधु सन्त गुरुभाई आवैं । सेवा करें सनेह बढ़ावें ॥
ध्यान मानसी सिद्धि सुपाई । हरिछबि छटा हृदय में छाई ॥
छके दरश दम्पति में नयना । कोमल मधुर कहैं मुख बयना ॥
आसपास ग्रामन के बासी । सेवक शिष्य भरा सुखरासी ॥
उनतीसों लक्षण अँगधारे । त्रिकालज्ञ तिरगुन तैं न्यारे ॥

दोहा ।

श्रीबलदेवजु दासजी, तिन के शिष्य गुन धाम ॥
त्यागी बैरागी परम, अतिअनन्य निष्काम १७२

चौपाई ।

गुरुद्वारे श्रीगुरु सिवकाई । करी भावकर प्रेम लगाई ॥
गुरुमुख लक्षण लख गुरदेवा । भये प्रसन्न मान निज सेवा ॥
प्यार प्रीत कर शिष्य पढ़ाया । पूजा पाठ नेम बतलाया ॥

संजम प्राणायाम सिखाया। ध्यान मानसी माहिं पगाया ॥
नौधा प्रेमा रंग लगाया। पराभक्त पद में पहुँचाया ॥
शिष्य को तारन तरन बनाया। जीवनमुक्त किया कर दाया ॥

दोहा।

उन्नीसे अरु तीस का, संबत बिक्रम नाम ॥
आश्विन कृष्णा द्वादशी, ग्राम लूकसर ठाम १७३
श्रीमत ठाकुरदास जी, निज इच्छा तन त्याग ॥
बसे अमरपुरधाम में, सहित प्रेम अनुराग १७४

चौपाई।

सतगुरु गये धाम निज जबहीं। कियो बिचार शिष्य मन तबहीं॥
अब जग रामत चाहिये करनी। सो अवश्य संतन को बरनी ॥
ले संग संत रमें गुरुदेवा। श्रीमत स्वामिदास बलदेवा ॥
पहलैं चारों धाम पधारे। तीरथ जग के कीने सारे ॥

दोहा।

ब्रज चौरासी जातरा, कीनी सहित हुलास ॥
बन उपवन निरखे सकल, बृंदाबन रसरास १७५

चौपाई।

सम्प्रदाय आचारज बानी। नौधा प्रेम परारस दानी ॥
नेम सहित नित पढ़ हरषावें। रसिकन को कर हेत सुनावें ॥
श्रीभागवत पाठ को प्रेम। गीता पढ़ैं सहित नित नेम ॥
गावैं सुकर सितार बजावें। हरियश सुन हरिजन हरखावें॥
पहर एक रजनी रहे जागें। श्री हरि सुमर प्रेमरस पागें ॥

मंगल समैं आरती गावैं । श्यामा श्याम लड़ाय जगावैं ॥

दोहा ।

राग भोग विधि सों करें, दम्पति भोग धराय ॥
करें आरती प्रेम सों, प्रभु देवें पौढ़ाय १७६
संतमंडली संग लै, पावें महा प्रसाद ॥
समय अनोसर सैन कर, भरें हृदय आह्लाद १७७

चौपाई ।

रासत करत एक बर स्वामी । अधम उधारन अंतरयामी ॥
पतित उधारन के हित आये । गोकुलदास संत सँग लाये ॥
बहादरपुर अलवर के पासा । मन्दिर में प्रभु किया निवासा ॥
दरशन कर हरिजन हरखाये । विनय करी कुछ दिन ठहराये ॥
सतसंगी सबही भये राजी । हरखें संत महंत समाजी ॥
हरिजन सब हितचित करि सेवैं । जन्म पायवेको फल लेवैं ॥

पद राग खंमाच ।

सतगुरु देव दयानिधि आये ।

भक्ति प्रकाशन प्यारी प्रीतम जग माहीं कर प्रीति पठाये ॥
रसिकन के हित रसनिकुंज को करुणा कर अपने संग लाये ॥
तारन तरन हरन दुख दारुन अनगिन पापी पार लगाये ॥
शरन चरन की लीनी जिनने निश्चय जुगलबिहारी पाये ॥
सरसमाधुरी अधम अनेकन परमधाम माहीं पहुँचाये ॥

चौपाई ।

करी बिनय मैंने शिर नाई । दे दीक्षा लीजे अपनाई ॥

दीन जान प्रभु किरपा कीनी। मंत्र सुना गुरदीक्षा दीनी॥
श्री तिलक मस्तक रचदीना। कंठी बांध दास निज कीना॥
सीत प्रसाद दियो हरखाय। चरनामृत दीनों प्रभु प्याय॥

पद राग कल्यान।

श्रीगुरुचरण शरण जब आया।
अभय हस्त मम मस्तक धरके कृपा करी अपनाया॥
संस्कार कर पंच महा प्रभु बैष्णव धर्म दृढ़ाया॥
शरणागति पट विधि समझाई सुनकर मन मगनाया॥
स्वस्वरूप अरु पर स्वरूप का भेद मोहिं दरशाया॥
ईश जीव माया तीनों का तत्त्व अनूप लखाया॥
सेवक सेव्यभाव दै स्वामी अतिविश्वास बढ़ाया॥
सेवा दई मानसी सुंदर सहचरिरूप बताया॥
श्री बृन्दावन रंगमहल में अविचल बास बसाया॥
सरसमाधुरी दंपति छवि में अति ही मोहिं छकाया॥

श्रीगुरु ध्यान।

पद राग ठुमरी॥

गुरुन की सुंदर सूरत प्यारी।
गौर बरन शोभा मन लोभा पीत बसन तन धारी॥
श्रीमुख शरदचंद छवि निंदित त्रिबिधि ताप जग हारी॥
मस्तक श्रीतिलक राजत है भृकुटी अति सुखकारी॥
जुगल ध्यान नयना रँगराते छाई प्रेम खुमारी॥
मंद हसनि मन को मोहत है चमकत चौंप उजारी॥

हस्त कमल माला तुलसी की रसना नाम उचारी ॥
चरनकमल कोमल अति अद्भुत प्रेम भक्ति दातारी ॥
शरणागति संश्रति दुख टारन कहा पुरुष कहा नारी ॥
सरसमाधुरी मंगल मूरति निशिदिन नयन निहारी ॥

श्रीगुरु महिमा।

पद राग विहाग।

हमारे गुरु दम्पति रसिक अनन्य ॥
जुगल लाड़ली लालन के बिन मानत नाहीं अन्य ॥
रसनिधान गलतान प्रेम में अतुलित गुन सौजन्य ॥
सरसमाधुरी ऐसे गुरु की शरण भये जे धन्य ॥

पद राग ठुमरी।

मिले हमें श्रीगुरु आनँदरासी।
जुगल लगनमें मगन महा प्रभु प्रेमानंदविलासी ॥
कुंजमहल में नित्त निरंतर दम्पति करत खवासी ॥
रुचिलखि सेवा करत कृपा निधि अतुलित प्रीति प्रकासी ॥
मोपर मया करी निज जन गन दरशाये रसरासी ॥
सरसमाधुरी रसिक शिरोमणि अमरलोक के वासी ॥

दोहा।

बहादरपुर में आजिके, कियो बहुत उपकार ॥
गुरुदीक्षा दई जियन को, वैष्णव धर्म प्रचार १७८

चौपाई।

जयपुर में स्वामी चलि आवैं। कइ इक संत संग निज लावैं ॥

गलता तीरथ ही में न्हावैं। श्रीगोविंद दरश पुनि पावें॥
निज सेवक मोहिं जान दयाला। कुछ दिन आजें परम कृपाला॥
बहुत जीव हरिभक्त बनाये। दीक्षा दै गुरुमंत्र सुनाये॥

दोहा।

हरिभक्तन की भीर बहु, जुरी रहै दिन रैन॥
कथा कीरतन होत नित, सुन उपजत चित चैन १७६

चौपाई।

रास विलास परम आनंद। बिलसत हरिजन प्रेमानंद॥
दीनानाथ भक्त नित आवैं। सेवा करें सनेह बढ़ावैं॥
झूमरलाल सेठ सुखदाई। श्रीहरि कथा सुनें मन लाई॥
प्रिय उमरावसिंह गुरुभाई। भार्गव कुलभूषण सुखदाई॥

दोहा।

और अनेकन सत पुरुष, नेमी प्रेमी लोग॥
देहिं रसोई हेत हरि, संत लगावें भोग १८०
सरसमाधुरी रंग मैं, मगन महाआनंद॥
जपें नाम अभिराम मुख, श्रीराधा ब्रजचंद १८१

एकादश प्रसंग वर्णन।

चौपाई।

एक दिवस श्रीगुरुमहाराजा। राज रहै है रह्यो समाजा॥
मैं कर जोरि विनय उच्चारी। जयपुर रहिये कृपा बिचारी॥
गुरुमुख जग जीवन को कीजे। परमारथ यश जग में लीजे॥
जो प्रतिवर्ष आप प्रभु आवें। बहुतक जीव भक्त बन जावें॥

संप्रदाय शुक हो बढ़वारी। श्रीतिलक पीताम्बरधारी॥
हँसि बोले श्रीगुरु बलदेवा। मैं जानो तुम मन का भेवा॥

दोहा।

सरसमाधुरी तुम सुनो, कहूं बात समझाय॥
शिष्य शाखा अब तुम करो, हमरी आज्ञा पाय १८२
गौड़ विप्र द्विज बंश तुम, सब बरणन शिरमौर॥
भूसुर भाषत शास्त्र सब, ब्राह्मण सम नहिं और १८३

चौपाई।

बैष्णव धर्म लई तुम दीक्षा। अब तुम सुनो हमारी सिक्षा॥
भजन करे सोइ भगवतप्यारा। करे जीव जग के उद्धारा॥
कहा गृही और कहा बैरागी। भजन करे सोइ जन बड़भागी॥
एकसौ पीढ़ी अपनी तारें। और बहुत जग जीव उधारे॥

दोहा।

वेदव्यासजी जक्त गुरु, गृहस्थ आश्रम माहिं॥
आचारज शिरमौर प्रभु, तिन सम कोऊ नाहिं १८४

चौपाई।

श्रीशुकदेव जनक गुरु मानें। तिनको सब सुर नर मुनि जानें॥
श्रीनारद भीवर गुरु कीनें। चौरासी छुट हरिरँगभीनें॥
श्रीमत श्यामचरन के दासा। तिन को सुनो रुचिर इतिहासा॥
इक घनश्यामदास जो बाला। कुल कायस्थ जु बुद्धि बिशाला॥
दूसर बाल गुपाल सुजानों। कश्मीरी पंडित पहिचानों॥
बालक दोउ शिष्य प्रभु कीने। मंत्र सुनाय शरण निज लीनें॥

कंठी बांधी तिलक सजाये । दोऊ बैष्णवरूप बनाये ॥
परम प्यार कर ढिग बैठाये । कर उपदेश दोउ समझाये ॥

दोहा ।

गृहस्थधर्म दोउ साधियो, मन में रख बैराग ॥
शिष्य शाखाहू कीजियो, सांची हरिसों लाग १८५

चौपाई ।

गुरु आज्ञा दोउन शिर धारी । बसें प्रयाग परम हितकारी ॥
शाहन्शाह नौकरी भारी । करी हकूमत मुल्क मँझारी ॥
ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य मन भाये । दै गुरुमंत्र तिन्हैं अपनाये ॥
शिष्य किये बहु संत बनाये । भजन भाव हरिरंग रँगाये ॥
बावन द्वारे श्रीमहाराजा । भये प्रसिद्ध तिनमें सुख साजा ॥
यह गृहस्थगादी गुरुद्वारा । जग में भगवत धर्म प्रचारा ॥

दोहा ।

लीलासागर ग्रंथ जो, परचावलि शुभ नाम ॥
जोगजीत जी रचित है, अतिसुंदर अभिराम १८६

चौपाई ।

तामें कथा लिखी यह प्यारी । संशय सकल मिटावनहारी ॥
चौरासी नम्बर को परचा । तामैं गुरु शिष्यन की चरचा ॥

दोहा ।

ताहि समझि मन दृढ़ धरो, करो शिष्य उपदेश ॥
सत्संगति गुरु धर्म को, करो प्रचार हमेश १८७

चौपाई ।

श्रीसतगुरु आज्ञा उर धारी । श्रीहरि इक्षा हिये विचारी ॥
जो जिज्ञासी हित कर आये । तिन को श्री हरि ओर लगाये ॥
दीक्षा दे गुरुमंत्र सुनाये । हरिगुरु भक्त अनेक बनाये ॥
भज़न करें बहुतक नर नारी । साधुसेव सबने हिय धारी ॥

दोहा ।

श्री सत गुरु प्रसाद सें, सेवक भये अनेक ॥
सबही के हिय में जमी, भक्ति करन दृढ़ टेक १८८
श्री शुक मुनि महाराज को, धरें दिवस निशि ध्यान ॥
श्यामचरन के दास के, भजनमाहिं लगतान १८९

चौपाई ।

कई साल गुरु जयपुर आये । भक्तमंडली देख सिहाये ॥
कृपादृष्टि कर प्रेमी पोपें । भाव भक्ति दे सब संतोषे ॥
उत्सव सरसबसंत बनाया । राग रंग सुंदर सरसाया ॥
नाना व्यंजन पाक बनाये । भोगलगा हरिजन तृपताये ॥
जयपुर से चल श्रीबनजावें । व्याससमाधि माहिं ठहरावें ॥
श्रीगोविंददास महाराजा । साधूसेवी धर्मजहाजा ॥
परम प्यार कर गुरु ठहरावें । निशिदिन सरस सनेह बढ़ावें ॥
संतन में मिल हरिगुनगावें । सेवा कर मनमें मगनावें ॥

दोहा ।

बृन्दाबन सों चल कभी, श्री सतगुरु शिरमौर ॥
सोरौं गंगातट जहां, भजन करें निशि भोर १९०

चौपाई ।

तहां सों चल गुरुद्वारे जावें । ग्राम लूकसर में ठहरावें ॥
भजन करें गोविंद गुन गावें । भक्तन को भागवत सुनावें ॥
साधु संत गुरुभाई आवैं । सेवा कर संतन ठहरावैं ॥
करें मानसी निशिदिन ध्यान । रहें प्रेम माहीं गलतान ॥
आतम पूजा करें पिछान । सब में निरखें श्रीभगवान ॥
गुरुद्वारे श्रीठाकुर सेवा । करें प्रेम सों श्रीगुरु देवा ॥

दोहा ।

एक समय श्रीगुरु प्रभो, मम उर प्रीति बिचार ॥
अंतरयामी दास लखि, कृपा करी बड़भार १६१

चौपाई ।

श्री गुरु द्वारे मोहिं बुलाया । पत्र पठाय करी प्रभु दाया ॥
जयपुर सें चलि मैं हुलसाया । पहुँच लूकसर तन पुलकाया ॥
गुरुदरशन कर हिय भरिआया । गदगद कंठ नयन जल छाया ॥
करी दंडवत चरन पराया । श्रीगुरु मोको हृदय लगाया ॥
हाथ शीश पर मेरे फेरा । कृपा प्यार कीना बहुतेरा ॥
श्रीमुख कही भले तुम आये । बत्सलता बहु बचन सुनाये ॥

दोहा ।

इसेपुर अरु सौलधा, संत महंत बुलाय ॥
करी रसोई प्रीति सों, श्रीहरि भोग लगाय १६२
कीनी पंगति प्रेम सों, साधू संत जिमाय ॥
कियो जागरन रैन में, हरियश गाय लड़ाय १६३

चौपाई।

दिन में हो सत्संग समाज। गुरु संतन संग रहे बिराज॥
नौधा प्रेमपरा रँग बरसें। सत्संगी सुन सुख हिय सरसें॥
संग दास को ले गुरु प्यारे। दिल्ली बहुतकबार पधारे॥
उत्सव सरस बसंत दिखाया। परम प्रेम में मोहिं छकाया॥

दोहा।

श्रीमनमोहन दासजी, रसिक संत गुनवंत॥
शिष्य श्रीबीबादास के, मनके हरन महंत १६४

चौपाई।

तिनका दर्शन गुरू कराया। जिनसे मिल मैं अति हरखाया॥
सत्संगति कर अतिहुलसाया। प्रेमरंग तन मन मम छाया॥
अतिअनन्य अनुरागी बांके। जुगुलबिहारी छबि में छाके॥
अष्ट याम सेवा सुख पागे। राग भोग दम्पति अनुरागे॥
प्रेमपयोनिधि अनुभव बानी। रचना की अनुपम सुखदानी॥
पदरचना निज मोहिं सुनाई। सुन समुझी मेरे मनभाई॥

दोहा।

हस्त लिखित निज आपनी, बानी मोकों दीन॥
भाग्य आपने बड़ समझ, निज मस्तक धर लीन १६५

चौपाई।

वह बानी मोहिं लागी प्यारी। निश्चय प्रेम पगावनहारी॥
कृपण द्रव्य सम मोमन भावे। ताके पढ़े प्रेम सरसावे॥
जुगुल भजनहिय भाव बढ़ावे। दम्पति छबि में मन छक जावे॥

ऐसी बानी सुनी न देखी। मनमाहीं निश्चय कर लेखी॥

दोहा।

जब जब मैं दिल्ली गयो, कर बहु प्रेम हुलास॥
रह्यो निरंतर रैन दिन, श्रीस्वामी के पास १९६

सोरठा।

मोकों कियो निहाल, मोहन दास दयाल ने।
कीनी कृपा कृपाल, रसिकनकी रहनी बता॥

चौपाई।

श्री गुरु आज्ञा ले हरखाया। दिल्ली सों चलि जयपुर आया॥
श्रीगुरु देव चरन चितलाया। भावभक्ति बढ़ आनँद पाया॥

दोहा।

श्रीसतगुरु उर में बढ़ी, उत्कंठा अति भार॥
तन तजि के निज धाम जा, मिलूं युगुल सरकार १९७
रैन दिवस रह बिरह में, बहे नयन जलधार॥
लोग जक्त समझें नहीं, गुरुहि गिनें बीमार १९८
पांच सात दिन उनमने, रहै मौन मन धार॥
निज मन की जो कुछ बिथा, गुप्त रखी सरकार १९९
गुरुद्वारा निज लूकसर, तहां रहै गुरु देव॥
तन त्यागन इच्छा करी, किनहुँ लह्यो नहिंभेव २००

चौपाई।

स्वप्न माहिं मोहिं दर्शन दीया। प्रीतिप्यार बहुतक कुछकीया॥
कहि अब परम धाम हम जावें। सत्य बचन हम तुम्हें सुनावें॥

आनँद मंगल में नित रहियो । हरिगुरु भक्ति टेक दृढ़ गहियो ॥
सत्संगति सुमिरन हरि करियो । श्रीहरिचरणध्यानहियधरियो ॥
बिछुरन दुख मनमें मत करियो । ध्यानहमारो हियनितधरियो ॥
ऐसे कहि मुख श्रीगुरु देवा । अंतरधान भये कहि भेवा ॥
प्रात भये सोवत में जागा । श्रीहरि सुमिरन करने लागा ॥
रैन स्वप्नकी सुधि हिय आई । गुरु बियोग प्रगटा दुखदाई ॥
कंठ रुके मुख बोल न आया । दोउ नयनन ते नीर बहाया ॥
घर के जन पूछन सब लागे । कहा बात कहिये हम आगे ॥
मैं धीरज धर उत्तर दीना । गुरुबियोग मन भया मलीना ॥
श्रीगुरु तन तजि धाम पधारे । स्वप्न माहिं दे दरश सिधारे ॥

दोहा ।

सज्जन सुनि धीरज दई, कही स्वप्न जंजाल ॥
मिथ्या भ्रम संशय तजो, हरो शोक तत्काल २०१

चौपाई ।

तीजे दिन इक चिट्ठी आई । गुरुद्वारे से संत पठाई ॥
आषाढ़ सुदी नौमी को जानो । बार सुमंगल वार पिछानो ॥
समयदुपहर परम अति पावन । सम्बत उन्नीसे अट्ठावन ॥
श्रीसतगुरु बलदेव तुम्हारे । तन तजिके निजधाम पधारे ॥

दोहा ।

चिट्ठी पढ़ सांची लखी, स्वप्ने की सब बात ॥
मन धीरज तजि बिरहवश, अकुलानो दिन रात २०२
जयपुर से चल लूकसर, मैं तब पहुँचो जाय ॥

आस पास के संत सब, लीने सकल बुलाय २०३
दिना सत्रवें सत्रवीं, करी हृदय हरखाय ॥
व्यंजन कर हरि भोग धर, साधू दिये जिमाय २०४
सेवक सगरे ग्राम के, सब दीने तृपताय ॥
नंदराम साधू तहां, गुरुद्वारे बैठाय २०५
मंदिर में सेवा करन, दीनों तहां रखाय ॥
मैं पुनि चल कर तहां तें, जयपुर पहुँचो आय २०६

चौपाई ।

ध्यान माहिं गुरु दर्शन देवें । स्वप्न माहिं कबहूं सुधि लेवें ॥
हँसिके धरें शीश मम हाता । कहैं मधुर श्रीमुख से बाता ॥
नितनव लीला ललित दिखावें । मम उर दृढ़ बिश्वास बढ़ावें ॥
नयनन में नित गुरू बिराजें । अंतर बाहर श्री गुरु राजें ॥
रैन दिना नित करें सहाई । दास जान दुख मेटें आई ॥
पूरन करें मनोरथ सारे । श्री सतगुरु प्रानन ते प्यारे ॥
सर्वमई श्रीगुरू निहारे । घट घट व्यापक पूरन सारे ॥
पल पल श्रीगुरु ध्यान लगाऊं । नाम जपूं मुख बलि बलि जाऊं ॥
श्री सतगुरु बलदेव जु नामी । अधम उधारन अंतरयामी ॥
निष्कामी निज धामी स्वामी । तिन चरनन में मोर नमामी ॥

दोहा ।

लोक और परलोक में, सतगुरु करें सहाय ॥
सरसमाधुरी गुरुन की, मूरति पे बलि जाय २०७
लज्जा मेरी गुरुन कों, उनहीं को आधार ॥

सरसमाधुरी गुरु शरण, सोवत पाय पसार २०८

बारहवां प्रसङ्ग प्रारभ्यते।

दिल्ली स्थान श्रीयुत स्वामी रामरूपजी महाराज से गुरुपरम्परा प्रणालिका।

चौपाई।

श्रीयुत स्वामी जी महाराजा। सर्वमहंतन के सिरताजा॥
रामरूप शुभ नाम सुहावन। जो जन जपै होइ सोइ पावन॥

दोहा।

श्री स्वामी महाराज के, शिष्य श्री सिद्धराम॥
दिल्ली अरु सब जक्त में, भये अधिक सरनाम २०९
सम्प्रदाय शुक चंद्र भा, पूरन कियो प्रकाश॥
गुरुमुखियन को सुख दियो, कियो अधर्म को नाश २१०
ऋद्धि सिद्धि नव निद्धि के, दाता श्री महाराज॥
लोक और परलोकके, पूरन करता काज २११
स्वामी मलूकदास जी, तिन के शिष्य गुनवंत॥
समदृष्टी सज्जन बड़े, सतोगुनी बुधवंत २१२
तिन शिष्य सेवादास जी, जानें सबही संत॥
दयावान दाता बड़े, मन के हरन महंत २१३
जिन के सालिग्राम जी, चेले परम उदार॥
भाग्यवान भारी भये, संतन के सरदार २१४
तिन के शिष्य सतोगुनी, श्री हरिनारायण नाम॥
रूपवंत गुनवंत बहु, क्षमाशील गुणग्राम २१५

तिन के पीछे जो भये, महंत दाता राम ॥
दिल्ली के अस्थान में, तिन कीनों विश्राम २१६
श्री स्वामी महाराज अब, भोलादास महंत ॥
अति सज्जन सुंदर सरस, गुनग्राही गुनवंत २१७
चतुर शिरोमणि बुद्धिमत, अरु सूरत सरदार ॥
सब विद्या संपन्न हैं, बड़े मुआफीदार २१८
जो जन जा उन सों मिलें, करें बहुत सत्कार ॥
तन कर मन कर वचन कर, करें प्रीति अरु प्यार २१९
प्रारब्धी पुरुषारथी, राज योग्य लवलीन ॥
तत्त्वदर्शी ज्ञाता बड़े, अति ही परम प्रवीन २२०
अपने निज अस्थान की, शोभा करी अपार ॥
बिजली पंखा रोशनी, नलजलबिबिध बहार २२१

श्रीमंदिर महिमा शोभा।

दोहा।

ठाकुरद्वारा सोहना, झांकी बांकी खूब ॥
कनकबरण श्रीराधिका, श्याम कृष्ण महबूब २२२
जगमोहन में मोहनी, मूरति शुक मुनि राज ॥
श्याम वरण सुंदर सरस, अद्भुत रही बिराज २२३
श्री मंदिर के चौक में, दो छत्री अभिराम ॥
चरणपादुका हैं जहाँ, श्रीरामरूप सिद्धराम २२४
रुचिर कचहरी सोहनी, अति उत्तम मनहार ॥
जहां वसंत को होत है, हरहमेश दरबार २२५

सेवक आवें शहर के, अनगिन नर अरु नार ॥
भेट धरें चरनन परें, करें आरती वार २२६
गादीपर राजें तहां, भोलादास महंत ॥
चमर करें अति चाव सों, खड़े सेव में संत २२७
छरी लिये सनमुख खड़े, साधू परम उदार ॥
जयजय धुनि हिलमिल करें, मुख बोलें वलिहार २२८
सनमुख गावें गुनीजन, अनुपम राग वसंत ॥
नोछावर करदें तिन्हैं, सेवक संत अनंत २२९
रनसिंहा बाजैं जहां, झालर शंख मृदंग ॥
सारंगी सुन्दर बजैं, बरषैं आनँद रंग २३०

चौपाई।

श्री महाराज धाम पुनि जावें। थाल भोग धर कर पद गावें ॥
भोग उसार आरती साजें। घंटा झालर बाजे बाजें ॥
फाग बसंत खेल सुख पावें। हिलमिलअबिरगुलालउड़ावें ॥
पुनि निज अस्थल में चल आवें। पंगत करें परम सुख पावें ॥
जै धुनि बोल प्रसादी पावें। अचवन कर आनंद मनावें ॥
स्वामी रामरूप गुरुद्वारा। जहां आनंद को वार न पारा ॥

दोहा।

निगम बोध शुभ क्षेत्र है, जमुना तीरथ जान ॥
इन्द्रप्रस्थ अस्थान जो, दिल्ली ताको मान २३१
पुरा परिक्षित नाम है, जहां स्थल महाराज ॥
श्यामचरन के दास प्रभु, तहां राजे सुखसाज २३२

चौपाई।

स्वामी रामरूप सुखदाई। चरितामृत-शुचि रचो बनाई॥
प्रेम सहित जो जन यह गावैं। निश्चय चारपदारथ पावैं॥
जगमें सुख संपति सरसावैं। परमधाम तन तज के जावैं॥
आचारज गुरु वपु हरि धारैं। मेट अधर्म धर्म बिस्तारैं॥
जीवनचरित पढ़े जो कोई। श्रीगुरु भक्ति हृदय दृढ़ होई॥
गोविंद ते गुरु की अधिकाई। प्रगट पुरानन बेदन गाई॥

दोहा।

जयपुर शहर पुनीत अति: जानत सब संसार॥
धर्म सनातन को जहां, पूरन परम प्रचार २३३
श्रीमन राजराजेंद्र मणि, माधवेश भूपाल॥
परम भक्त पुण्यात्मा, सेवक श्रीगोपाल २३४
सिरे ड्योढ़ी के संनिकट, जहां दरीबा पान॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यजित, रहत तहां सुखमान २३५

चौपाई।

वास दरीबाही में मेरो। संत भक्त चरनन को चेरो॥
शिवदयाल मम नाम पिछानों। गौड़वंश द्विजकुल प्रगटानों॥
सरसमाधुरी शरण सुनाम। श्रीगुरु दियो परम अभिराम॥
संप्रदाय शुक आश्रित जानो। चरणदास गुरुद्वारा मानो॥
सेवक गादी रामहि रूप। संत महन्तन के जो भूप॥
जिनको जीवनचरित बनायो। अतिसूक्ष्मकर बरन सुनायो॥
संतन के मुख सों सुनि पाये। सोइसोइ चरित प्रीतिकरगाये॥

कबिताई कुछ कर नहिं जानों । महामंद मति मोहिं पिछानों ॥

दोहा ।

उन्नीसे अरु तिहत्तर, सम्वत विक्रम जान ॥
आषाढ़ वदी चौदश तिथि, शुभ गुरु वार पिछान २३६
पूरन भयो चरित्र यह, अति सुंदर सुखखान ॥
सरसमाधुरी ने रचो, गुरुमुखियन को प्रान २३७

इति श्रीयुत ईश्वरावतार सद्गुणागार श्रीमत महाप्रभु श्यामचरण-
दासाचार्य के परमप्रिय शिष्यशिरोमणि गुरुभक्तानंद-
स्वामी रामरूपजीवनचरितसम्पूर्णम् शुभम् ।
श्रीराधाकृष्णार्पणमस्तु ॥

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः।



अथ मुक्तिमार्ग।

श्रीगुरुदेव अंग।

इस श्रीगुरुदेव अंग में ग्रंथकर्ता ने नमस्कारात्मक श्रीगुरुदेव का मंगलाचरण ग्रंथ की निर्विघ्नता से समाप्ति होने के अर्थ वर्णन करके श्रीगुरु स्वरूप का लक्ष्य कराके श्रीगुरु के लक्षण वर्णन करके उन्होंकी शरण होने से श्रीभगवत्प्राप्ति का और मनुष्यजन्म के साफल्य होने को अनेक उक्ति युक्तियों और शास्त्र प्रमाणों से भली भांति सिद्ध करके

दिखाया है और श्रीगुरु शरणागत होने सेही परम लाभ और श्रीगुरुसेवा का फल और गुरुकृपा से लौकिक अलौकिक मनोरथों की सिद्धि कही है इस अंग के पाठ करने से गुरु-महिमा और गुरुशरणागति में रुचि उत्पन्न होकर जीव कृतार्थ होजाता है ॥

दोहा ।

नमो श्री महाराज जी, चरणदास गुरुदेव ॥
रामरूप नित चहत है, तुम चरणन की सेव १
तुमही दाता मुक्ति के, देत ज्ञान विज्ञान ॥
अर्थ धर्म अरु कामना, गुरु सेवत परवान २

चौपाई ।

नमो नमो गुरु आतमज्ञानी । योगी सिद्ध समाधी ध्यानी ॥
नमो नमो गुरु भक्तिप्रकासी । चौथे पद के हो तुम बासी ॥
नमो नमो गुरु हौ बैरागी । राग द्वेष अरु माया त्यागी ॥
नमो नमो गुरु इन्द्रीजीता । सभीभांति सूं मन वशकीता ॥
नमो नमो गुरु परउपकारी । बहुत जीव कीनो भवपारी ॥
नमो नमो गुरु मंगलकरना । भर्म निवारण संशयहरना ॥
नमो नमो गुरु जगबिख्याता । बेपरवाह मुक्ति के दाता ॥
नमो नमो गुरु परम दयाला । रामरूप कूं कियो निहाला ॥

दोहा।

चरणदास की सैन सूं, सूझा सिरजनहार ॥
चींटी ब्रह्मा आदि लौं, रामरूप यकसार २
चरणदास की दया सूं, दरसा दीनदयाल ॥
रामरूप मन की गई, बिरह बिथा ततकाल ४
चरणदास के ज्ञान सूं, देखा दीरघ राम ॥
रामरूप शीतल भये, पाया मन विश्राम ५
चरणदास गुरुदेव की, गति है अगम अपार ॥
रामरूप बड़ भाग सो, लागै चरणों लार ६
चरणदास गुरुदेव का, गरुवा पन्थ निशंक ॥
रामरूप नहिं चौर भय, नाशै कष्ट कलंक ७
चरणदास के पन्थ में, प्रकटै हरि दीदार ॥
रामरूप जीवनमुकति, रहै न शोच बिचार ८
चरणदास गुरु की दया, भया परम आनन्द ॥
रामरूप किये आपसम, ज्यों सरिता अरु सिन्धु ९
चरणदास गुरुदेव का, दरश रूप कल्यान ॥
रामरूप कह बचन सुनि, उपजे आतम ज्ञान १०
चरणदास गुरुदेव का, गरुवा ज्ञान गँभीर ॥
रामरूप तो सुनि भयो, तन मन आतमधीर ११
चरणदास के हस्त का, ऐसा है परताप ॥
ज्ञान उदय अनुभव खुलै, मिलै निरञ्जन आप १२
चरणदासका शब्दसुनि, फाटै पर्वत पाप ॥

रामरूप रस्ता खुला, जीवनकी गइ ताप १३
तिमिर भरा तन जीवमें, तीनलोक अँधघोर ॥
रामरूप गुरु भानु लखि, सूझिपरा सब ठौर १४
रामरूप कह देखिया, तीन लोक में शोध ॥
सतगुरु बिन संदेह भनि, कौन लखावै बोध १५
पहिले शिष्य सरबस दिया, पाछे सतगुरुज्ञान ॥
ऐसे सांचे बणिज के, रामरूप क़ुरबान १६
पाप हरण निर्मल करण, सतगुरु परउपकार ॥
रामरूप कह जीव कूं, करदें भवजल पार १७
अमृत बचन सुनाय के, दुर्मति डारैं खोय ॥
या जगमें परमारथी, सतगुरु सा नहिं कोय १८
रामरूप गुरु पारखू, सब घट परखनहार ॥
बुधि देखैं जा भांतिकी, करैं उसी विधि पार १९
योग भक्ति अरु ज्ञान की, जैसी जाके चाह ॥
रामरूप पूरण करै, सो सतगुरू अथाह २०
जो आवै परतीति करि, सतगुरु चरणों माँहिं ॥
रामरूप वा जीव कूं, तारैं गहि करि बाहिं २१

चौपाई ।

गुरु की शरण भक्ति उपजावै । गुरु की शरण मुक्तिगति पावै ॥
गुरु की शरण ज्ञान उजियारा । गुरु की शरण जाहिं भ्रमभारा ॥
गुरु की शरण मिटै चौरासी । गुरु की शरण परमसुखरासी ॥
गुरु की शरण कटै कर्मफांसी । गुरुकी शरण मिलै अबिनासी ॥

गुरु की शरण शूरमा लेवैं। जो कोइ शीश लोभ तजि देवैं॥
गुरु की शरण नहीं यमकाभय। रामरूप गुरु का शरणालय॥

दोहा।

रामरूप गुरु की शरण, भावसहित जो लेय॥
निश्चय पहुँचै धाम में, साहिब शोभा देय २२
सुफल फलतहै भावना, भावहि सांचो देव॥
ठग पूज्यो गुरुभाव करि, तहां फुरो सब भेव २३
जैसे वद्धक भील ने, गुरु द्रोणा कूं मान॥
शस्त्र विद्या सीखियां, सब सूं अधिकी जान २४
गुरु गोविन्द समान हैं, रञ्चक भेद न जान॥
रामरूप गुरु टेक सूं, निश्चय हो कल्यान २५
वेदादिक विद्या पढ़ै, अर्थ करै बहु भांति॥
रामरूप गुरु सैन बिन, हिये न होवै शांति २६
जेती विद्या जगत की, गुरु बिन लहै न कोय॥
दर्शन रमता राम का, रामरूप क्यों होय २७
राजद्वार की चाकरी, बिना वसीले ख़्वार॥
गुरू बिना कैसे लहैं, ऊंचा हरि दरबार २८
दीपक दीन्हो ज्ञान को, खुले समझ के नैन॥
एकब्रह्म चहुँदिशि लखा, रामरूप गुरु सैन २९
आतम तत्त्व लखाइया, सतगुरु भये दयाल॥
संशय कोई ना रहा, जन रामरूप निहाल ३०
तन मन में आनँदभये, चिन्ता भय नहिं कोय॥

रामरूप हरि मिलन की, सैन दई गुरु मोय ३१
लखत अचम्भा सा भया; गई जु मनकी भूल ॥
रामरूप दुख सब गये, पाय लिया जब सूल ३२
जहां पिपीला गम नहीं, राई को न टिकाव ॥
रामरूप कह सतगुरू, कीन्हो ह्वां को राव ३३
आठ पहर ह्वाई बसूं, जहां न भयका खोज ॥
रामरूप कह सतगुरू, दीनी ऐसी मौज ३४
शीतलता नहिं क्षमासी, क्रोध सरीखी आँच ॥
सतगुरु सा साऊ नहीं, रामरूप कह साँच ३५
भलीभई सतगुरु मिले, नातर होते ख़्वार ॥
चौरासी यम काल का, सहते दुःख अपार ३६
धन्य भाग सतगुरु मिले, पाया ज्ञान अपार ॥
रामरूप वा चाँदने, देखा सिरजनहार ३७
बचे काल की चोट सूं, यम कूं धक्का दीन ॥
रामरूप गुरु ज्ञान सूं, माया चेरी कीन ३८
सब ज़ग मायाजाल में, फँसा मृगा जू जान ॥
रामरूप कोइ ऊबरा, पूरे गुरु के ज्ञान ३९
सबजगभरमा फिरतहै, बकत और की और ॥
गुरु भेदी मिल रामरूप, पाई निर्भय ठौर ४०
ज्ञानप्रकाशा गुरु मिले, मन भयो बेपरवाह ॥
रामरूप भइ गुरुकृपा, सतगुरु मिले अथाह ४१
गुरु गोबिंद में भेद ना, जल पाला आकार ॥

रामरूप सतगुरु मिलै, मिलया सिरजनहार ४२
सतगुरुमिलमनथिरभया, पाया साहिबधीर ॥
रामरूप आनँद भये, छूटी जग जंजीर ४३
चिन्ताने सब जगभखा, चिन्ता भखी न जाय ॥
रामरूप चिन्ताभखी, सतगुरु शरणै आय ४४
लोक वेद की गैल में, सबं जग भस्मा जाय ॥
रामरूप को गुरु मिले, दीपक दिया जगाय ४५
तेलभरा दीपक दिपा, बाती अमर कपाट ॥
रामरूप साहिब मिले, गुरू ज्ञान की हाट ४६
रामरूप गुरु महर कर, दीन्ही ऊंची सैन ॥
परमतत्त्व परचा भया, खुले ज्ञान के नैन ४७
निश्चय बूड़े जाय थे, बैठ जरजरी नाव ॥
रामरूप कह ऊबरे, सतगुरु किया उपाव ४८
बलिहारी गुरुदेव के, नाम नवरिया दीन्ह ॥
रामहिरूप चढ़ाय के, तुरत पार जो कीन्ह ४९
राम नाम के पटतरे, कछू न देवे लाय ॥
रामरूप क्या दीजिये, गुरु के गुणअधिकाय ५०
तन मन था सो देदिया, गुरु के चरणों माहिं ॥
रामरूप कह देन कूं, और वस्तु कछु नाहिं ५१
बदला गुरुके गुणनका, दिया न दीन्हा जाय ॥
कीन्हा भृंगी कीट सूं, है उणतर किह दाय ५२
सब स्तुति परमान की, गुरु गति अपरम्पार ॥

रामरूप मनबुधि थके, क्या सकै रसन उचार ५३
लख चौरासी योनि में, माता पिता अनेक ॥
रामरूप नाते घने, सतगुरु मिले न एक ५४
सतगुरु याही देह में, मिलै मिटावें दुःख ॥
रामरूप सांचे सगे, देह अमर पद सुक्ख ५५
सतगुरु सा शूरा नहीं, तीन लोक में कोय ॥
ऐसा शब्द जो मारिया, रामरूप गइ दोय ५६
लागत ही गुरु शब्दके, उठी बिरह की पीर ॥
रामरूप व्याकुल रहै, आठों पहर शरीर ५७
मारा शब्द सँभालके, तन मन कीया घाव ॥
रामरूप गुरु शूरमा, रण मांड्यो अति चाव ५८
जो गुरुके शब्दों मुये, पहुँचे सोई हजूर ॥
अलग रहे गुरु चोटसूं, रामरूप भये दूर ५९
सतगुरु धनुष सँभालके, सन्मुख लाया तीर ॥
रामरूप घायल भये, उठे प्रेम की पीर ६०
शब्द बाण गुरु मारिया, तनमन कीया चूर ॥
घाव नजर आवे नहीं, कारज कीना पूर ६१
सतगुरु मारा चावसूं, ज्ञान शब्द की चोट ॥
रामरूप निर्मल भये, निकस गये सब खोट ६२
बन बन छूटा भटकना, बक बक सुनना कान ॥
रामरूप आशा तजी, सतगुरु लागा बान ६३
काम क्रोध मद लोभमें, सब जग दागा जाय ॥

रामरूप कोइ ऊबरा, सतगुरु शरणा पाय ६४
सब जग बाँधा कपटने, कपट धसा सब अंग ॥
रामरूप कोइ ऊबरा, सतगुरु शब्द प्रसंग ६५

चौपाई।

सतगुरु वचन बीज है भाई। प्रान पुहुमि में बोवो ताई ॥
यतन प्रीति कर धारै कोई। मन बांछित ताकूं फल होई ॥
जो हित सूं गुरु वचन रमावै। युग युग सुखी नाहिं दुखपावै ॥
फल अनन्त काटै पुनि कर्मा। या सम बड़ा और नहिं धर्मा ॥
तन मन के सब मिटैं विकारा। सतगुरु वचन मिलै करतारा ॥
गोपीचन्द भर्तृहरि भारा। गुरुके वचन उतरिगये पारा ॥
गुरु वचनों बिन करनी थोथी। वेद पढ़ो कह वांचो पोथी ॥
जो गुरुमुख गुरु वचनों पागे। रामरूप सोई बड़ भागे ॥

दोहा।

जल माया मन दूध है, मिले परस्पर आय ॥
रामरूप गुरु हंस ने, लीन्हों पय निरताय ६६
जीव देह के रूप हो, मिला पचीसों हेत ॥
रामरूप गुरु ज्ञान सूं, न्यारे किये सुचेत ६७
अजपा जाप जपाइया, अनहद शब्द सुनाय ॥
अलख लखाया सतगुरू, अमृत प्याला पाय ६८

इति गुरुदेव अंग ॥



पारख अंग।

इस अंग में यह उपदेश है कि गुरु और शिष्य दोनों एक समान अर्थात् ज्ञान भक्ति शून्य होने से संसारसागर से पार नहीं होसक्ते हैं इस लिये मुमुक्षु पुरुष को चाहिये कि प्रथम परीक्षा करके ज्ञानखानि भक्तिमान् तत्त्वदर्शी ब्रह्मवेत्ता विद्वान् गुरु करना चाहिये जिससे पूर्णब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति होकर परमपद में पहुँच जावे और गुरु को भी चाहिये कि विषयशून्य विरागवान् पुरुषकी परीक्षा करके सदुपदेश करे तबही परम सिद्धि प्राप्त होसक्ती है॥

दोहा।

गुरू शिष्य दोउ एकसे, एकहि जगव्यवहार॥
रामरूप कैसे भवें, भवसागर सूं पार १
शिष्य तो अन्धाथा सदा, गुरुभी मिलिया अन्ध॥
रामरूप कैसे बने, यह झूठा सम्बन्ध २
दूर करो वा गुरू कों, जो भ्रम खोवे नाहिं॥
आपन तिर जाने नहीं, गहै बहुत की बाहिं ३
पूरे गुरु बिन ना बनै, शिष्यपूरा किसभाँति॥
रामरूप ज्यों ज्ञान बिन, जाय न मनकी भ्राँति ४

गुरु तो ऐसा कीजिये, जाते भर्म नसाय ॥
रामरूप कर चांदना, देवे ब्रह्म लखाय ५
रामरूप जो पूछले, निज भेदी सूं गैल ॥
जा पहुँचैं सुख सूं तहाँ, जहां सेल ही सैल ६
भूले कूं भेदी मिले, पहुँचावे सहला ॥
भूले कूं भूला मिले, पावे नहिं गैला ७
जाननहार न पूछिया, चला आपनी चाह ॥
रामरूप भटकत फिरे, कौन बतावे राह ८
गुरू विचारा क्या करे, जो शिष्यहि में खोट ॥
नाहीं नसै कुबेर सूं, नर झूठे का टोट ९

कुण्डलिया ।

गुरु चिंतामणि क्या करे शिष्य कूं चिंत न नेक ।
कल्पवृक्ष गुरु दोष नहिं कल्पै शिष्य न तेक ॥
कल्पै शिष्य न तेक रहै सो नित्य निरासा ।
कामधेनु गुरु करे कहा शिष्य होय न प्यासा ॥
बिन घट माला रहट भ्रमे खाली यों शिष्यउर ।
रामरूप क्या सरै मिले जो पूरा सतगुर १

दोहा ।

चरणदास पूरे गुरू, शिष्य भी पूरा होय ॥
रामरूप पूरा बने, दीप दीप ज्यों जोय १०

इति पारख अंग ।

श्रीहरिस्मरणअंग।

इस अंग में श्रीहरि अर्थात् पापहारी भक्तहितकारी श्रीभगवान् के नाम लेने और सुमिरन भक्ति करने की विधि और सुमिरन से जो जो सिद्धि और लाभ प्राप्त होते हैं उन्हों को अच्छी तरह से दरसाया है और अजामिल पापी का प्रसंग भी ग्रंथकर्ता ने इसमें लिख दिया है कि पुत्रके नारायण नाम लेने से ही यमदूतों से भगवत्पारषदों ने अजामिल को छुड़ादिया इसके पाठ करने और बिचारने से श्रीहरिनामसंकीर्तन में मनुष्य की रुचि उत्पन्न होकर भगवत् नाम के निरन्तर लेते रहने में दृढ़ श्रद्धा और विश्वास होजाता है ये अंग अवश्य ही पढ़ने के योग्य हैं॥

दोहा।

चरणदास सतगुरु कही, बारम्बार पुकार॥
रामरूप चाहे भला, तो ले नाम सँभार १
जिन सुमिरा सोई भया, भवसागर सूं पार॥
हरि का नाम जहाज है, रामरूप उर धार २
सुमिरण कीजे राम का, रामहि के गुण गाव॥

रामरूप आठों पहर, रामहि सूं लौलाव ३
बचे काल की चोट सूं, लगे न यम की मार॥
रामरूप सुमिरन किये, रीझैं सिरजनहार ४
राम नाम से लाग ले, करके सांची रीस॥
रामरूप जग में सुखी, रीझि मिले जगदीस ५
जैसे जल सूं धोय के, कीजे शुद्ध शरीर॥
रामरूप यों नाम से, जाय जीव की पीर ६
पाप किया सारी उमर, पाछे करी सँभाल॥
रामरूप तो भी किया, नाम भला तत्काल ७
निर्मल नीको नाम है, जपे सूं निर्मल होय॥
रामरूप जग मैल कूं, निश्चय डारै धोय ८
सबै अफल हरिनाम बिन, योग यज्ञ तप दान॥
रामरूप यह वणिज है, मुक्त जपै भगवान् ९
नाम नेम तप वरत है, नाम जोग यज्ञ दान॥
रामरूप प्रसन्न होय, जगपति कृपानिधान १०
सब फलदाता नाम है, नाम मुक्ति को धाम॥
नीचे से ऊँचा करे, रामरूप हरि नाम ११
हरि के प्रसन्न करन कूं, राम नाम उर धार॥
रामरूप सो चित धरा, चार वेद का सार १२
जो चाहे हरिदरश कूं, रामरूप जप नाम॥
सब तज टीका नाम करि, एताही है काम १३
मूलमंत्र हरि नाम है, सब मंत्रन शिरमौर॥

या सम चारो वेद में, रामरूप नहिं और १४
टीका चारों वेद का, षट शास्त्रन का सार॥
रामरूप सो नाम है, पाप मिटावनहार १५
सात द्वीप नव खण्ड में, तीन लोक युग चार॥
रामरूप सीझैं सुमिर, नाम सकल को सार १६
सिद्ध साधिक नावँ कहै, वेद दृढ़ावै नावँ॥
सब पुराण गावैं यही, नाम मुक्तिकी ठावँ १७
सुकृत टीका नाम है, रात दिवस लवलाय॥
रामरूप लखि बन्दगी, साईं मिलिहै आय १८
सबै प्रपञ्च बिसारि के, राम नाम सूं लाग॥
रामरूप साहिब मिलैं, कटैं कर्म के दाग १९
ब्रह्मा की सी आयु जो, तीन लोक का राज॥
रामरूप एता मिलै, हरिबिन किसी न काज २०
चन्दमुखी घर सुन्दरी, हस्ती झूमे द्वार॥
हुक्म चहूं दिस मुलक में, तऊ नाम बिन ख्वार २१
अति सुन्दर काया बनी, कुल, उत्तम आचार॥
रामरूप नहिं नाम चित, ताते भला चमार २२
थोथे सबही नाम बिन, जोग यज्ञ धन धाम॥
रामरूप राजा वही, जा घट नोवत नाम २३
रामरूप बहु बूडिया, कर थोथा आचार॥
अनन्त कोटि पापी तिरे, एक नाम के लार २४
दुर्लभ नरतन पायबो, दुर्लभ ऐसो दाव॥

रामरूप यह लाभ ले, हरि सुमरण लौलाव २५
एक घड़ी सुमरण करे, मन निश्चल ठहराय ॥
रामरूप कई जन्म के, जैहैं पाप बिलाय २६
सुमरण सा सौदा नहीं, तीन लोक में और ॥
रामरूप रट रैन दिन, सकल विकल तजदौर २७
सुमरण सम दौलत नहीं, रामरूप कलिमाहिं ॥
तन मन से भजिये सदा, तीनों ताप नसाहिं २८
सुमरण सौदा खूब है, मुक्ति नफा ता माहिं ॥
रामरूप कोई करो, टोटा आवै नाहिं २६
चतुर कूड बालक वृद्ध, के सुमरो नर नारि ॥
रामरूप सब कूं नफा, कबहुँ न आवै हारि ३०
जाके दौलत नाम की, सो धनवन्ता साह ॥
नाम बिना सब रङ्क हैं, कीने अनन्त गुनाह ३१
सब जग जाको दीन है, जा घट नाम निवास ॥
रामरूप चिंतामणि तहाँ, सर्व पदार्थ पास ३२

कुण्डलिया।

रामनाम सौदा सहल तामें नफा अपार ।
रामरूप सोना करे भटके विषय बिकार ॥
भटके विषय बिकार तासुको फल चौरासी ।
ता कारण दे सीस कूड जमपुर को बासी ॥
मुक्ति लाभ चाहे नहीं लगो रहै धन धाम ।

धृक जन्म ता जीव को तन खोयो बेकाम १

दोहा।

लाभ यही नर देह में, हरदम कहिये राम ॥
सोई अकारथ जान ले, रामरूप बिन नाम २३
घड़ी मुहूर्त निमिष पल, सुमरण करते जाय ॥
रामरूप सोई सुफल, बाकी अवधि गवाँय २४
जो बीतै हरिभजन में, सोई उमर सुलभ ॥
रामरूप गई नाम बिन, सोई जान अलभ २५
नमक हलाली नाम सूं, बिसर हरामी जान ॥
रामरूप दरबार में, हाजिर सो बलवान २६
नेकी हरि के नाम सूं, बदी बिसारे होय ॥
रामरूप जुग जुग सुखी, भूलै ना पल सोय २७
श्वेतद्वीप वासी रटै, जैसे इक रस नाम ॥
रामरूप त्यों धार ले, सुमरण आठो जाम २८
पहली सुमरण जीभ मुख, दूजे कण्ठ उचार ॥
तीजे मन चौथे हियै, रामरूप जप सार २९
धनि हृदय धनि जीभ है, धन्य मुख उचरे नाँव ॥
रामरूप वह देह धनि, में बलिहारी जाँव ४०
नाम लिहारी सन्त कूं, बन्दै तीनों लोक ॥
रामरूप त्यों भूप कूं, प्रजा देवे ढोक ४१

१-लिवैया।

जा घट नोवत नामकी, आठों पहर अखण्ड॥
रामरूप ताकूं नहीं, जन्म मरण जमदण्ड ४२
राम कहत रामै भया, मैं मैं गई नसाय॥
कीट भृंग ज्यों हो गया, रामरूप लव लाय ४३
सब जग कम्पै काल सूं, ब्रह्मा शेष प्रजन्त॥
रे मन तू ग़ाफिल कहा, वेगही भज भगवन्त ४४
रे मन तू सूतो कहा, वेगही राम सँभार॥
स्वांस खजानों घटत है, बीती जाय वहार ४५
स्वांस समानो धन नहीं, तीन लोक में कोय॥
ऐसे महँगे माल कूं, राम रूप मत खोय ४६
सोई सुकृत स्वांस है, नाम सुमिर तें जाय॥
रामरूप धिक सों घड़ी, बिन हरिनाम बिहाय ४७
सोई स्वांस अमोल है, सुमिरण करते लेय॥
नाम विना बरबाद सब, खाल लुहार धमेय ४८
सांझा सिरजनहार सूं, कर ले रे मन लाय॥
रामरूप तन धूल सम, महँगे मोल विकाय ४९
रामरूप अब चेतले, राम भजन को दाव॥
फिर पाछे पछितायगो, बीत जायगी आयु ५०
रे मन चूका दाव तू, मुख सूं कहा न राम॥
अन्त काल कूं पड़ेगा, जम बैरी सूं काम ५१
रे मन चूक्यो दाव तूं, पग्यो जगत जञ्जाल॥
सुमिरण सार बिसारिया, ताते डण्डै काल ५२

जो तू चितवे राम बिन, सोई फांसी काल ॥
रामरूप जबही कुशल, हरि सुमिरे हर हाल ५३
घट में नोबत स्वांस की, तबलग हरिगुण गाव ॥
रामरूप दिन चारि में, बनि है और बनाव ५४
जो दीखै सो स्थिर नहीं, देह कुटुम्ब धन धाम ॥
संगी करले आपना, रामरूप हरि नाम ५५
औसर चूके चूक है, फिर न बने वह बात ॥
रामरूप आयु गई, जब कैसी कुशलात ५६
नरतन पायो भाग सूं, सो तैं दियो गवाँय ॥
अमृत सोटे बिष लियो, काह करी चतुराय ५७
मन में भावन भक्ति ना, मुख सूं कह्यो न राम ॥
रामरूप तिन जगत में, तन पायो बेकाम ५८
रामरूप नहीं जानियां, प्रेम न प्रेम सवाद ॥
जैसे आया पाहुना, सूनै घर बरबाद ५६
ऐसे यह तन जान ले, सूने घर सामान ॥
रामरूप हरि ना जपो, कहा कियो ह्यां आन ६०
ज्यों आया त्योंही चला, खाली हाथ पसार ॥
रामरूप तन पाय के, ना सुमिरा करतार ६१
मातु पिता कहु कौन के, को सुत नाती बन्धु।
रामरूप स्वारथ सगे, धोखे भूला अन्ध ६२
प्रीति उपरले कुटुम्ब सूं, कर उपरला भाव ॥
रामरूप अन्तर विषय, एक निरञ्जन धाव ६३

काकूं हँसिये रोइये, का को कीजै सोग ॥
रामरूप को आपनो, नदी नाव संजोग ६४
सब तज भज हरिनाम कूं, झूठी जग की आस ॥
रामरूप हरि आसरे, सोई सांचा दास ६५
कूकस माया त्याग कर, राम नाम कण लेह ॥
रामरूप या प्रान कूं, नित अहार तू देह ६६
बचै नाम सूं जीव यह, नित नित मृत्यु न पाय ॥
रामरूप शुभ नाम कूं, हृदय लेह वसाय ६७
सुमिरण सुख का मूल है, सुमिरण है शृंगार ॥
सुमिरण शोभा नाक है, सुमिरण सुकृत सार ६८
मृग सींग जोगी गह्यो, हारल लकड़ी नेह ॥
विप्र जनेऊ को इष्ट, साधु नाम त्यों लेह ६९
हरि तज सुमिरे आन कूं, ताकूं लाभ न होय ॥
सूका सरवर रामरूप, ओसां भरै न कोय ७०
हरि बिन धावे आन कूं, सो पापी यमदूत ॥
रामरूप काकूं कहै, वाप बेसवां पूत ७१
एक टेक गह नाम की, दूजी झूठी आस ॥
विधि शंकर से वर दियो, सोऊ गये निराश ७२
में तो बिरही नाम का, भूलन जो हूं और ॥
रामरूप था एक मन, दीन्हा एकै ठौर ७३
पतिव्रता का एक तन, पति ऊपर वारा ॥
रामरूप तन मन दोऊ, हरि पै बलिहारा ७४

जबलों सुमिरों राम कूं, तबलों सुख पाऊं॥
रामरूप जल मीन ज्यों, बिसरत मरजाऊं ७५
हम आधारे नाम के, नामैं रंग राते॥
अमृत नाम विसार के, जीवै किह साथे ७६
पिता हमारा राम है, हम पुत्र प्यारे॥
रामरूप हरि छांड़ि के, लागै किस लारे ७७
हम तो आशिक नाम के, दूजा नहीं विचार॥
रामरूप चातक ज्यों, स्वांत बूंद आधार ७८
रामरूप जबलों दुखी, तबलों नाम न हीव॥
हरि सुमिरत पावन भया, पल पलसुखियाजीव ७९
नाम निरोगा है सदा, सब जग भोगै रोग॥
जे राते हरिनाम सूं, सोई भये अरोग ८०
नामही मेरे ओषधी, नाम ही मेरे वैद॥
रामरूप नामैं हरै, जन्म मरण की कैद ८१
सूख का सागर नाम है, दुनियां दुखकी खान॥
रामरूप चित चेत के, गहि सुमिरनकी बान ८२
रामरूप उपजै मरै, हरि बिन बारम्बार॥
निश्चल जबहीं होयगा, सुमिरैगा करतार ८३
रामरूप गुण गाय के, तू ले राम रिझाय॥
ज्यों जपिया प्रहलाद ने, कुलकी लाज गवाँय ८४
पिता सतायो हरि भजत, तऊ न छांड़ी बान॥
रामरूप लखि टेक कूं, हरिने राखी आन ८५

टेक गही हरि नाम की, गिरि ते दियो गिराय ॥
खम्भ बाँध काढ़ो खडग, तब हरि हुये सहाय ८६
कभी आँच ना साँच कूं, कर देखो क्यों न कोय॥
रामरूप हरि सुमिरतै,हानि कबहु नहिं होय ८७
सुमिरन करते हानि हो, तो भी मतै बिसार ॥
रामरूप फल होयगा, समरथ सिरजन हार ८८
भक्ति बिभीषण की बनी, सुमिरत हरि को नाम ॥
रामरूप लङ्का मिली, अति रीझे श्रीराम ८६
हनूमान ने टेक गहि, निश्चय सुमस्यो नाम ॥
रामरूप ताकी भई, जैजै तीनों धाम ६०
रग रग माहीं होगयो, राम नाम इकसार ॥
रामरूप लखि सब थके,धनि धनि कह्यो उचार ६१
ताते निशि दिन सुमिरिये, रामरूप हरि नाम ॥
सुख दाता दोउ लोकको, निश्चय रीझै राम ६२
रामरूप सुमिरण करै, संकट माँहिं सहाय ॥
चीर द्रौपदी को बढ़्यो, एकवार कह्यो गाय ६३
रामनाम की साख सुन, गुजरी उतरी पार ॥
राम राम कहती गई, रामरूप भई पार ६४
अजब मोहनी नाम है, त्रिभुवन मोहन हार ॥
रामरूप कहै और को, मोह्या सिरजनहार ६५
गजहि छुटायो ग्राह सूं, बूड़त लियो उबार ॥
क्षण में आये गरुड़ तज, सुनके नाम उचार ६६

साँची आशा नाम की, जपतेही फल होय॥
मिटै पाप बहु भाँति के, रामरूप रट सोय ९७
पद्मनाभ ज्यों कर दई, ब्राह्मण हत्या दूर॥
नाम जपाया तीन बर, गये पाप भरपूर ९८
आप चाव कर सुमिरिये, औरन चाव लगाय॥
रामरूप फल चौगुनो, दानी भक्त कहाय ९९
परमारथ कारण धस्रो, साधों ने अवतार॥
रामरूप कहकर दिये, बहुत जीव भवपार १००
वृक्ष नदी अरु मेघ जल, ये परमारथ रूप॥
रामरूप त्यों साधु हैं, देवे नाम अनूप १०१
रामरूप हरि नाम की, महिमा अगमअपार॥
सरवर पर गिरिवर तरे, जीवहोयक्योंनपार १०२
पलपल राम सँभारिये, और विचार न राख॥
सहजै इन्द्री बस भवैं, रामरूप जन साख १०३
क्या जानूं कब आय हैं, रामरूप चित नाम॥
अब तौ यह मन पग रहा, आठपहर धन धाम१०४
क्या जानूँ कब होयगा, हरि सुमिरन इकतार॥
रामरूप अब तो भया, मनविषयनमें ख्वार १०५
क्या जानूं कब पड़ैगी, हरिसुमिरन की बान॥
रामरूप अब तो भया, मन माया गलतान १०६
क्या जानूं कब होयगा, मोमन बे परवाह॥
रामरूप जग छूट के, एक नाम की चाह १०७

क्या जानूं कब उपज है, मोमन जगत गिलान ॥
रामरूप सुध होय के, सुमरणमें गलतान १०८
पवन रोक मनकूं गहो, हिये नाम लोलाय ॥
रामरूप एकान्त रट, यहजोग अधिकाय १०९
कँवल कँवल में ध्यानकर, तहां नाम धुनि लाय ॥
रामरूप यह मुक्तिविधि, जोगी भक्त कहाय ११०
काहे कूं वन वन फिरे, काहे भस्म लगाय ॥
मनकी चाह मिटाय के, रामनाम क्यों न गाय १११
मुक्ति होयगी नाम सूं, अमर नाम सूं होय ॥
ऋद्धि सिद्धि सब नाम में, रामरूप जप सोय ११२
रे मन तू चूके मती, सुख में राम सँभार ॥
दुख दरिद्र आवै नहीं, समरथ पोपनहार ११३
शरणै साहूकार के, फाका कभी न होय ॥
रामरूप त्यों नाम सूं, सुफल फलै कुल दोय ११४
जन्म मरण जम डन्डका, मोहि न संशय कोय ॥
रामरूप आठों पहर, रटन नामकी होय ११५
सोवत जागत चालतैं, बैठे ऊभै नाम ॥
रामरूप सब छांड़िके, एक नाम सूं काम ११६
मन जावे तो जान दे, रसना नाम उचार ॥
अग्नि तुल्य हरिनाम है, करै पाप की छार ११७
भावै बन पर्वत बसो, भावे साजो गेह ॥
रामरूप दोउ एक से, जाको हरि सूं नेह ११८

जाका चित है राम में, घर बन दोनों एक ॥
रामरूप राजा भया, पाया माल अलेख ११९
बिना नाम जो बन बसै, जों पशु पक्षी सूर ॥
रामरूप बस्ती भली, रहै नाम में चूर १२०
नाम बिना घर बन बसै, दोनों सुन्न समाज ॥
जा घट चहुलर नामकी, रामरूप धन्य राज १२१
रामकहत सबही सुफल, दुनियां दौलत राज ॥
रामरूप हरि नाम बिन, लोटन धूल अकाज १२२
राम कहत सबही रहत, सुफल लोक परलोक ॥
रामरूप भूला हरि, हारा दोनों थोक १२३
रामरूप कह वह बुरा, वही नरक का जीव ॥
सारे वही निरादरा, जाके नाम न हीव १२४
बुरा जानिये आप कूं, बुरा न कहिये काहि ॥
रामरूप आपही बुरा, हरितज नरके जाहि १२५
रामरूप करतार के, गुण अनन्त बहु नाँव ॥
हित चित करके भाव सूं, सुमिरो नीकी दाँव १२६
राम कृष्ण गोबिन्द कहो, माधो मुकुन्द मुरारि ॥
सबही शिरोमणि नाम है, भाव सहित उच्चार १२७
आप उदक जल एक ज्यों, त्योंही हरि के नाँव ॥
रामरूप तज द्वेषता, सुमिरो साँची दाँव १२८
वही राम नारायणा, विष्णु कृष्ण गोपाल ॥
वही निरञ्जन अलख है, वही बिहारीलाल १२९

सर्व नाँवन में एक गुण, ज्यों बादल की बूँद ॥
चित भावे सोई सुमर, रामरूप सब सूँद १३०
नयो नाम धरके कियो, एक भक्त उच्चार ॥
रामरूप तो भी मिले, मनको साँच निहार १३१
भक्ति छिपाई ना छिपे, आपही प्रकट होय ॥
बलि पाताल ध्रुव गगनमें, जस गावे सबकोय १३२
शेष रसातल में बसै, शिव ध्यानी कैलास ॥
रामरूप साँचे भक्त, तीनोंलोक उजास १३३
नाम देव पीपाभक्त, जिन की सारै छाप ॥
रामरूप मत पन्थ विन, जस भयो नामप्रताप १३४
कबीर जुलाहा बापड़ा, बालमीक रैदास ॥
रामरूप ऊंचे भये, साँच नामकी आस १३५
नाम प्याला पीवते, छके न हरि के दास ॥
रात दिवश पीवत रहे, तऊन मिटै प्यास १३६
तृष्णा हरिके नाम की, रामरूप मन माँहिं ॥
ज्यों पीवे त्यों त्यों बढ़े, कबहूं अघावे नाँहिं १३७
नाम महातम अधिक है, मोंपै कह्यो न जाय ॥
जो आयो अनभय विषय, उचरो सोई बनाय १३८

कुण्डलिया ॥

अनभय अविगत कूं कहैं, अनभय बानी वेद ।
अनभय आतम जान वो, अनभय मुक्ति अभेद ॥
अनभय मुक्ति अभेद, तास सूं निरभय होई ।

अनभय गावै सन्त, परमपद अनभय सोई॥
अनभय गोविन्द नाम, ताहिसुमिरोसोअनभय।
रामरूप कही समझ, निरन्तर एते अनभय १

दोहा।

एक दृष्टान्त जु कहत हूं, जामै नाम प्रताप॥
है भागवत पुराण में, कियोव्यासअस्थाप १३९
श्री मुनि शुकदेव ने, कही परिक्षित भूप॥
गुरू चरणदास प्रताप सूँ, बरनै रामहीरूप १४०
पुर कनोज के देस में, एक विप्र अजामेल॥
लग कुसँग भिष्टल भयो, गणिकासूंकर केलि१४१
ब्रह्म कर्म त्यागन कियो, राच्यो विषय बिकार॥
जूवा खेलै चौर अति, जार कर्ममें खुवार १४२
शौच क्रिया सब तजी, नीच कर्म में चूर॥
यों अट्ठासी वर्ष लों, किये पाप भरपूर १४३
वृद्ध भया तोलों कभूं, चेता नेकन मूढ॥
विषयन में राच्यो रहा, बुद्धिभ्रम आरूढ १४४
एक समय रमते हुवे, आ निकसे तहाँ साधु॥
परोपकारी हरिभक्त, जिनकी समझ अगाध १४५
लोगन सूं पूछन लगे, रैन रहन की ठाँव॥
उन्हों ने हँसकर कह्यो, अजामेल है नाँव १४६
बड़ो भक्त परमार्थी, तहां बसो तुम जाय॥
गये सन्त वेश्या तवे, द्वारे मिली जु आय १४७

उतरे हित लखि प्रीति सूं, पाछे पाई बात ॥
तब उदास हो उठ चले, जानि पाप उत्पात १४८
अजामेल चरणो पड़ा, हम पापी हैं राज ॥
तुम दर्शन करके नर्क, क्यों जावे महाराज १४९
लखि के उनकी दीनता, साधू भये दयाल ॥
रामरूप दाता बड़े, तिनकूं किया निहाल १५०
नो पुत्र थे तासु के, दसवों गर्भ मँझार ॥
ताको कहियो नाम तुम, नारायण उच्चार १५१
साधु बात कहै रम गये, वे रहै अपने धाम ॥
कोईक दिनमें सुत हुवो; रखो नारायणनाम १५२
बहुत हेत तासूं बढ़ो, वापै वारे प्रान ॥
वाको बोलन डोलनो, देख देख हुलसान १५३
कह कह नाम लडावई, वे दोऊ पित मात ॥
यों बालक सूं बाँधहित, बहुत हरषकूं पात १५४
सोवत जागत बैठते, ऊठत वाको नाम ॥
निशि दिन वाही कूं रटैं, भूलैं घड़ी न जाम १५५
जीमें वाही जिमाय के, पीवै वाहि पिवाय ॥
ऐसो भूलो मोह में, मूरख पगो लुभाय १५६
जानै नाँ गम काल की, फसो काल की फाँस ॥
इतने में जमदूत आ, देने लागे त्रास १५७
तबही उन सूं अति डरा, व्याकुल भया बिहाल ॥
हाथों फाँसी श्याम तन, देखे जम बिकाल १५८

मुख वाके भय रूप जो, ऊँचे ऊँचे बाल ॥
बसे हुवे तन जीव कूं, भये ऐंचत तिहिकाल १५६
अजामेल जानी यह, शत्रुन घेरो आय ॥
जो आवे मम पुत्र अब, देवे तुरत छुटाय १६०
तब ऊँचे सुरकर कह्यो, नारायण तू आव ॥
ए कोऊ मेरे शत्रु हैं, इनसूं मोहि छुटाव १६१
तिसी समय हरिपारषद, बिचरत बाट मँझार ॥
जय बिजय पुन्य सीलजो, सुनी सुशीलपुकार १६२
निज़ स्वामीको नाम सुन, तहाँ जु आये धाय ॥
देखो तो अजामेल कूं, पकड़ो है दुखदाय १६३
काल मृत्यु जमदूत भय, घिरो हुयो यों देख ॥
तबै पारषद जोर कर, दियो छुटाय बसेख १६४
पारषदन ते डरप वे, दूर खड़े हुवे जाय ॥
तब दूतों से पारषद, पूछा कहो सुनाय १६५
रे तुम नीचो कहाँ ते, आये मूढ अचैन ॥
ऐसे उत्तम हरिभक्त, वैष्णव को दुखदैन १६६
तब जमदूत ज़ु बोलिया, हम तो ऐसही मूढ ॥
महाराज तुम कौन हो, देव उपदेव से गूढ १६७
सर्ब कमलदल नैन हो, सर्ब पीताम्बर भेष ॥
क्रीट मुकट मकराकृत, कुन्डलझलकाविशेष१६८
शरीर श्याम घन चतुर्भुज, नव किशोर से रूप ॥
कमलमाल गल सोहनी, महामनोहर भूप १६६

चौपाई ॥

शंख चक्र अरुगदापद्म जो । धनुपबाणकरलिये खडग जो॥
अपना तेज प्रकाशकियेही । बड़े सामर्थवान हियेही ॥
हमसे जमदूतन के ताँई । क्यों खेदत हो कहो गुसांई ॥
ऐसे जमदूतन की बानी । सुन बोले हरिके अगवानी ॥
रे तुम कैसे हो धर्मदूता । हमकूं धर्मलक्षण कहो नूता ॥
ऐसे सन्त कूं डन्ड न आवै । अजामेल यह हरि गुणगावै ॥
तबही सुन जमदूत उचारे । बेद कहै सो धर्म पियारे ॥
बेद बिरुद्ध सो अधर्म सारे। बेद प्रतक्ष है विष्णु माहारे ॥

दोहा।

यह दुष्ट कैसे चला, वेद पन्थ की रीति ॥
रजगुन तमगुन अतिलिये, लिसकुकर्मअनीति १७०
विभिचारी ज्वारी वड़ो, मधुपानी अति चोर ॥
अहंकारी हिंसक दुर्बुद्धि, करै पाप नित घोर १७१
तिनके तो साखी बहुत, शशि सूरज आकाश ॥
पवन अग्नि जल पृथ्वी, तारागण प्रकाश १७२
त्रिकालसन्ध्यादिनरातजो, काल धर्म दें साख ॥
हमारे स्वामी धर्म के, ऐते हैं शुभ वाक १७३
इतने साखी साख दें, तब काहू डन्ड देह ॥
अपने मन से किसी कूं, कबहूं नाँहि कैसेह १७४
हमरे स्वामीराज के, ऐसा है शुभ न्याय ॥
पापी हो ताकूं सज़ा, धर्मी कूं सिर नाय १७५

धर्म तो ऐसो है शुभी, भला करै दोऊ लोक॥
सुखदाई या जीव को, ताके मन नहीं दोख १७६
तातें तन धर कीजिये, कछु सुकृतिकी लाभ॥
दुकृति ते नाहीं भला, निश्चय होय खराब १७७
अजामेल तो देहधर, सदा किया है पाप॥
बालकपन ते आजलौं, दुकृतिही अस्थाप १७८
याके तनमें धर्मको, नेक नहीं है लेश॥
तप तीर्थ व्रत दान जो, भूल न कियो शुभेश १७९
मॉंतो पाँच पचीस सूं, स्वारथ में रहो पूर॥
परमारथ जानो नहीं, ब्रह्मचर्य सूं दूर १८०
लह्यो न हरिके रूप कूं, हर्ष सोग भै पाग॥
तृष्णा ममता मोह में, भूल रहो दुर्भाग १८१
इन्द्री मन रोके नहीं, भ्रम तिमिर रह्यो छाय॥
सतसंगत पाई नहीं, ताते भूल नसाय १८२
हुवो न त्रिपत विषय सूं, जन्म कर्म दियो खोय॥
वृथा पाई देह इन, धर्म न जान्यो कोय १८३
ऐसे जमदूतों कही, सबै हकीकत खोल॥
तबही सुन हरिपारषद, उन्हें कहत भये बोल १८४
देखो अचरज है बड़ा, दैह अडन्डी डन्ड॥
धर्म तो सब को है पिता, तहाँ द्वेष क्यों मन्ड १८५
वह तो समदृष्टि हुतो, सो क्यों भूलो जान॥
ज्ञानी के हृदय विषय, फिर क्यों होयअज्ञान१८६

जाकी गोदी सीस दे, सोवे होय निचन्त ॥
सोई सिर काटन लगे, तो को शरण लहन्त १८७
अजामेल तो अवै, अक्षर चार उचार ॥
नारायण जो नाम है, सोई कहो पुकार १८८
बेद माहिं ऐसे कह्यो, अक्षर कहै जु दोय ॥
जन्म मरण के पाप मिट, चारमुक्ति लह सोय १८९
सो दो अक्षर येजु हैं, कृष्ण हरी अरु राम ॥
अन्त समय परबस कहै, लेहे मुक्ति विश्राम १९०

चौपाई।

अब पापी गति कहूं सुनाई। नाम लेत सोभी तिरजाई ॥
गुरु नारी के रमणो वारे। मित्रद्रोही ब्रह्महत्यारे ॥
सुरा पानी स्त्रीहत्यारो। बालक अरु गर्भ हतनेवारो॥
पिता मातु पुनि गौकी हत्या। इन कूं आदि पाप है कित्ता ॥

दोहा।

कृष्ण नाम ते तिरे हैं, तिरत तिरैंगे जान ॥
सर्व पाप छेदन करै, अजरनाम भगवान १९१
अरु अन्तसमयमेंनामकी, कहाँ प्रापत होय ॥
पूर्बले शुकृति बिना, हियै न आवे कोय १९२
कोऊ कहै सुत हितलियो, तौ पै नीको नाम ॥
बिषयमिल्यो परहासहित, गीत अलापे वाम १९३
सहज में हेला दे कहै, अनन्त पाप कटजात ॥
रामरूप के नाम ते, सबै मिटत उतपात १९४

रोग पड़ो सर्प को डसो, जल थल माहिं सहाय ॥
सिंह व्याघ्र को भय कष्ट, हरिसुमरणते जाय १९५
छोटे मोटे पाप की, कौन चलावे बात ॥
जन्म मरण दुख मेरु सम, सोउ नामतें जात १९६
जप तप धर्म साधन व्रत, तीर्थ यज्ञ अरु दान ॥
इनसूं नाहिं पवित्र होय, सोहो जप भगवान १९७
चरनन ते गंगा चली, तिंह न्हाये अघ जात ॥
तो कहो नाम प्रताप ते, क्यों न कटै तिहूंपात १९८
भावैं जान अजान लों, अग्निस्वरूपी नाम ॥
पाँच ताप निश्चय जरें, जो आवे हिय ठाम १९९
अमृत जान अजानपी, सोऊ अमरा होय ॥
विषकूं समझ असमझभखि, निश्चय मरिहै सोय २००
ऐसो भगवत धर्म सुन, दूत छोड़ गये भाग ॥
अजामेल हूवा सुखी, तिसीसमयअनुराग २०१
अपने स्वामी से करीं, दूतों जाय पुकार ॥
हरि पारषद सहाय कर, पहुँचे लोक मँझार २०२

चौपाई।

अजामेल ता पाछे जाना। कछु स्वप्ना सा मन में माना ॥
कहाँ गये वे भम सुखदाई। अरु कहाँ गये वे अतिदुखदाई ॥

दोहा।

अजामेल ज्ञानी भयो, सुनके धर्म अधर्म ॥
भक्ती गुण प्रकट भयो, जान महातम पर्म २०३

अरु ऐसे कहने लगो, हरि उत्तम मैं नीच ॥
या दासी के संग कर, वृथा जन्म गयो बीच२०४
धृक मो कपटी मूढ़ कूं, कुलहि लगायो दाग़ ॥
पतिव्रता कूं छोड़ के, पापनि सँग अनुराग २०५
मात पिता की सेव तज, जन्म बिगाड़ो स्वाद ॥
नीच संगकर ब्रह्म तत्व, खोय दिया बरबाद २०६
कैसे भुगतूंगा नरक, क्या जानूं क्या होय ॥
जमडन्ड सूं कब छुटूंगा, रहा पाप में बोय २०७

चौपाई।

यह तो कछु स्वप्न सा आया। कहाँ गये दुष्टी दुखदाया ॥
कहाँ गये वे हरिके प्यारे। जम की फाँस छुटावनहारे ॥

दोहा।

अब कहाँ हरिके पारषद, दर्शन कैसे होय ॥
दर्शन करतेहीं भया, तन मन आनन्द मोय२०८
भई सो भईरे जीव अब, हरिचरनन सूं लाग ॥
शरण आय आठो पहर, हरी नाम सूं पाग २०९
मंगलकारी नाम है, जपै सुमंगल रूप ॥
नाम बिना कैसे छुटै, जन्म मरणकी धूप २१०
जो नहीं रट है नामतूं, तो होवे बहु खुवार ॥
चौरासी लक्ष गर्भ में, भुगते दुःख अपार २११
ऐसे समझ बिचार कर, समदृष्टि भया मन्न ॥
एक पदार्थ मानियां, गोविन्द नाम रतन्न २१२

मैं तो पशू सरूप हूँ, ज्यों बन मृग अज्ञान ॥
मूढ़ राग बस होयके, बंधे बस्ती आन २१३
यों मैं माया मोह में, भूलो भजन बिसार॥
अब तो हरिही की शरण, लीनी है निरधार २१४
अवही सूं जु विचार के, डन्ड कमन्डल धार॥
सत संगत प्रताप सूं, तज्यो जगतजञ्जार २१५
हरिद्वार क्षेत्र गया, तहाँ जोगही साध॥
इन्द्रिनका लालच तजा, लाया ध्यान समाध २१६
इतने में परब्रह्म में, लीन भया हुलसाय॥
सबही सांग उपांग सूं, हरिस्वरूपलियोपाय २१७
तभी कलेवर छूट के, भयो पारषद रूप॥
चढ़ि के हेम बिमान पै, पहुँचो धाम अनूप २१८
नाम लियो सुत हेत जो, पहुँचो हरिपुर जाय॥
क्यों न तिरेंगे पीछले, श्रद्धासूं गुण गाय २१९
नाम महातम है बड़ो, सदा कीजिये जाप॥
सुमिरनते निश्चय मुक्ति, पावै छूटै ताप २२०
परम गूढ़ है यह कथा, सावधान हो धार॥
सुनै सुनावे प्रीति सूं, पावै मोक्ष द्वार २२१
नाम लेत पातिक कटै, नर्क त्रास जाय खोय॥
तीन लोक यश बिसतरे, और बहुत फल होय २२२

चौपाई।

अन्तकाल में पुत्तर हेता। नारायण यों नाम कहेता॥

अजामेल कृतार्थ हूवा । जन्म मरण का मिटगया दूत्रा ॥

दोहा ।

जो कोई श्रद्धा सहितले, तो क्यों न होवे मुक्ति ॥
नाम जपत केते तिरे, विन समझे विन युक्ति २२३

अष्टपदी ॥

राजा पूछी बहुर धर्म ही राजने ।
दूतनके सुन वचन कहा कहो तासने ॥
नहीं छूटे जमडन्ड काल फिर ना टले ।
यह सन्देह मिटाय देहु मेरो भले ॥ १ ॥
कहै श्रीशुकदेव सुनो राजा अबै ।
दोनों का संवाद कहूँ तुम सूं सबै ॥
पारषदों के त्रास पाय जमदूत ही ।
धर्मराज सूं जाय बात ऐसे कही ॥
तुम काहे के भूप अहो मृत्युलोक में ।
लगी हिमायत होन जु पापी थोक में ॥
बड़े कुकर्मी दुष्ट कूं लियो बचायके ।
हम कूं मारो चार पारषदों आयके ॥
तुम्हरी आज्ञा पाय लेन वाकूं गये ।
पारषदों ने मार खेद हमही दिये ॥
नारायण जो नाम तासु महिमा कही ।
सो नारायण कौन कहो हम सूं सही ॥ २ ॥

दोहा।

तब ऐसे कहने लगा, दूतन सूं जमराज ॥
श्रीनारायण नाथ है, सबजगके महाराज२२४
ओत पोत छाये रहै, सर्ब जगतकी जोति ॥
उतपति प्रलय स्थितिसदा, उन इच्छा सूं होत २२५

चौपाई।

हम उनके निज दास सदा हैं। वे देवन के देव महा हैं ॥
वेई विधाता के जु विधाता। कालके काल जगतपति दाता ॥

दोहा।

उनसूं अपना जोर नहीं, हम उन पद की धूल ॥
जहाँ स्वामी को नामलैं, तहाँ न जावो भूल २२६
भली भई जो तुम भगे, भागे उबरे प्रान ॥
हरि दासन को जीतलै, ऐसो को बलवान २२७

चौपाई।

तीन लोक अरु सब ब्रह्मांडा। देव दैत्य नर नागप्रचंडा ॥
जग डोरी जगदीश के हाथा। सबके बड़े जगत के नाथा ॥
हम तो हरिके अनुचर येता। लोकपाल और दस परचेता ॥
सूरज चन्द अग्नि अरु बाई। शंकर ब्रह्मा सब देवाई ॥
ये सब हरि के आज्ञाकारी। हैं सबही सेवकहितकारी ॥
अरु जो कपिलकुंआदि मुनीशा। नारद कस्यप आदि ऋषीशा ॥
पारब्रह्म को पार न पावैं। गाय गाय गुण शीस नवावैं ॥
मन अरु वाच अगोचर जाना। जोतिरूप है पुरुष पुराना ॥

दोहा ।

उनकी गति कूं को लखे, अगम अगोचर गूप ॥
सब में व्यापक अलख हैं, अन्तरयामी रूप २२८
सब धर्मन के बीच में, भगवत धर्म प्रधान ॥
तिन के जाननहार हैं, द्वादशभक्त सुजान २२९
विधिनारद सनकादि शिव, स्वायम्भूमनु प्रहलाद ॥
कपिल जनक भीष्म धर्म, बलि शुकदेव जु आदि २३०
ऐसो महा गुह्य है, धर्म जानत बारह साधु ॥
भक्ति पदार्थ है बड़ो, महिमा नाम अगाध २३१
पुत्र हेत लेते तिरा, ऐसा है हरि नाम ॥
शुद्ध चित होके जो भजे, क्यों न तिरे निसकाम २३२
नारायण के नाम तैं, कोटि कोटि अघ जाँहि ॥
अजामेल की साख है, जीवनमुक्ति कहाँहि २३३
आज के पीछे साधु तैं, डरते रहियो जागि ॥
सुन के धुन हरि नामकी, निश्चय जइयो भाग २३४
जो बेमुख हरि नाम सूं, हरि सूं न्यारा होय ॥
तिनकूं लावो पकड़ के, आन धर्मी जो कोय २३५
आपन तो डन्ड देत हैं, दुष्टन कूं पहिचान ॥
हरिभक्ता तो हमन सूं, सदा शिरोमणि जान २३६

चौपाई ।

श्रीकृष्ण के चरनों मांहीं । रहा जीव हो भंवर तहांहीं ॥
सो वे अपने नांहीं सहारे । जिनको मन हरि चरनों लारे ॥

दोहा।

ऐसे हरि के दास जो, सदा निडर मन माँहि॥
त्रिलोकी के बीच में, तिन्हें कहूं भय नाँहि २३७

चौपाई।

सुन के बचन धर्म के दूता। परे मुरझ भय मान बहूता॥
कहन लगे हैं साधु म्हारे। हरि के दासों से हम हारे॥

दोहा।

श्री शुकदेवजु भूप सूं, कही कथा यों भाष॥
हमने पहिले सुनी थी, मुनि अगस्त के पास २३८
सोई भाषा में कही, राम रूप कर चाव॥
चरण दास गुरु दया सूं, मोहिं नाम को भाव २३६
काहू आशा ज्ञान की, काहू जोग प्रभाव॥
राम रूप के हिये में, एक नाम सूं चाव २४०
वार वार हिये राखियो, हरि सुमरण की याद॥
राम रूप संगी यही, और सबै बरबाद २४१



अजपा गायत्री अंग

इस अंग में ग्रन्थकर्ता ने श्वास के साथ के जो प्रत्येक मनुष्य के नासिका द्वारा विना जिह्वा के जपे अखण्ड सुमरण हो रहा है उसका लक्ष करा कर इस श्वास के साथही मनही मन में गुप्त भगवत् भजन करने की रीति को कई प्रकार से बतलाया है गुरु कृपा से जिज्ञासू और मुमुक्षु पुरुषों को इस अखण्ड सुमरण की सिद्धि प्राप्त होजाती है और सोते जागते इस अजपा जाप से परम सिद्धि प्राप्त होकर जीव तत्त्वदर्शी और त्रिकालज्ञ होजाता है ॥

दोहा ॥

कर माला मुख जीभ सूं, कौन जपै हो खेद ॥
राम रूप सत गुरु दियो, अजपा जाप अभेद १
पाव घड़ी हिरदे जपे, हंसा सोहम् जाप ॥
राम रूप नासैं सबै, चौरासी संताप २
देशों की बोली जुदी, पंथों जाप अनेक ॥
राम रूप कहैं सब घटैं, अजपा सोहं एक ३

नाम गगन डोरी तणी, सुरती आवे जाय ॥
रामरूप ज्यों वरत में, नटणी रहे समाय ४

सोहं सोहं होत जो, यही ख़्याल है खूब ॥
रामरूप कहै देख लो, घटही में महबूब ५

यही अजपा ब्रह्मा जपा, शिव नारद सनकादि ॥
रामरूप यही परम जप, यही गायत्री आदि ६

अजपा जपिया भरथरी, गोरख गोपीचंद ॥
रामरूप जिन यह जपा, जाके छूटे फंद ७

सोहं अजपा आतमा, यही देह का जीव ॥
रामरूप करै ध्यान जो, सोई होत है सीव ८

लख चौरासी देह में, सोहं दीपक सार ॥
रामरूप याके बुझै, तुरत होत अंधियार ९

बाल युवा बूढ़ा भये, सोवत जागत ठांहि ॥
सोहं सोहं एक रस, रामरूप घट मांहि १०

ऊंच नीच छोटा बड़ा, यह देहों का ज्ञान ॥
सोहं सब घट एकसा, रामरूप धरि ध्यान ११

सोई सूरज चांद में, सो जग चींटी मांहि ॥
रामरूप एकै रम्यौ, दूजा कोऊ नांहि १२

परम हंस अजपा जपै, बैठे ठौर इकंत ॥
आठ पहर लागे रहैं, राम रूप सो संत १३

सो कहि भीतर जात है, ऊपर आवैं हंग ॥
सुरत मकड़िया तार करि, रामरूप रहु संग १४

रामरूप रायत करै, नाभि नासिका मांहि॥
बिरला जानें देश यह, हरि काहू सुधि नांहि १५

अरिल्ल।

सोहं सोहं होत सकल घट मांहिरे॥
वह मैं हू यों कहे भेद कुछ नांहिरे॥
जमकी फांसी कटैं किये यह जापरे।
अरेहां रामरूप हो मिलै आप मैं आपरे १६
अजपा याको नाम आपहि जप होयरे॥
करमाला मुख जीभ हलै ना कोयरे॥
ब्रह्मसिंधु जो आप तास की लहर है।
अरेहां रामरूपधरि ध्यान मिटै जम कहर है१७
तेल तिलौं के मांहि दूध में घीव ज्यों।
अगन काष्ठ में जान पिंड में जीव त्यों॥
नीच ऊंच सब धरो एकही दीवरे।
अरेहां रामरूप घट बीच देख ले पीवरे १८
आसन पद्म लगाय हिंडोले झूलिये।
सोहं सुरति रमाय जगत कूं भूलिये॥
सब सखियां ले संग पीव गुण गाइये।
अरेहां रामरूप या भांति मुक्ति पद पाइये १९
चरनदास गुरु दियो गुपत निज भेद है।
यह अजपा जपसार पाप सब छेद है॥

बृंक्ष पात ज्यों जान पतंगा रंग है ।
अरेहां रामरूप हो मुक्ति मिलै हरिअंगहै २०

इति ।



साधुमहिमा अंग ।

इस अंग में साधुमहिमा अर्थात् जिन्होंने तन मन वचन को साध लिया है वोही साधु नाम से प्रसिद्ध हैं उन्हों के लक्षण कहकर उनकी सेवा और सतसंग करनेवालों को लौकिक अलौकिक लाभ होना बरणन व करुण कृपा का फल दरशाया है इस अंग के पढ़ने और विचार करने से साधु संग और साधुसेवा में अत्यंत श्रद्धा और रुचि उत्पन्न होजाती है ॥

दोहा ।

चरण दास गुरु देव के, चरणन को धरि ध्यान ॥
राम रूप कहै बरन हूं, बाणी हित कल्यान १

चौपाई ।

भव तिरबे को एक उपाई । निपट सुहेला कहूं सुनाई ॥
मन प्रतीत प्रीति कर हेवे । हरिके साधुन कूं नित सेवे ॥
यह उपाय सब ते अधिकारो । बेगही रीझे सिरजनहारो ॥
साधों की सेवा फल सेती । हरि पद पावे कुटुम्ब समेती ॥
जैदेवा सेवा चित धारी । साधों काज भयो उपकारी ॥
ठग पूजे साधुन के भेषा । औगुन परिगुण कियोविषेशा॥
हाथ पाँव ज्यों के त्यों हूये । अपनी करनी साकत मूये ॥
जैदेवा को जस बड़याई । आगै सूं जो भयो सवाई ॥

दोहा ।

साधु सेव सब सें सरस, हर्ष करै निष्काम ॥
त्रिलोचन पै रीझि के, हूये आप गुलाम २

चौपाई ।

साधुन की सेवा चित धरिये । तातैं जम सूं कबहु न डरिये ॥
साधुन की सेवा चित लाओ । जन्म मरणदुखसकलगँवावो॥
निष्किञ्चन भक्तन हित माँडो । साधु सेव सूं चित नहीं छाँडो ॥
निबड्यो धन जब लूटन धाये। साहरूप धर आप लुटाये ॥
लाला चारज भली निबाही । साधुसेव में बड़ो सिपाही ॥
भेष देख शंका नहीं मानी । मुरदा भी पूजा घर आनी ॥
सैना साधु सेव चित धारी । भये सहाय आप गिरधारी ॥
वाको रूप धार महाराजा । रामरूप सारे सब काजा ॥

दोहा ।

नरसी महता भक्त को, कहा बरनू प्रताप ॥
साधुसेव के किये तें, हुण्डी लई हरि आप ३
धन्ना भक्त के प्रेम को, लखो न वारा पार ॥
साधु सेव ऐसी करी, तन मन धन सब वार ४
बीज खवायो साधु कूं, बोये काँकर जाय ॥
निपज्यो खेत सुहावनों, हरि ने करी सहाय ५

चौपाई ।

सदाव्रती था एक महाजन । साधुसेव में ताको अतिपन ॥
पुत्र मुवो तउ टेक न छाड़ी । दूनी भक्ति गही मन गाढी ॥

हंस भेष कूं देख लुभाये । बधकों के कर तुरत बँधाये ॥
देखो जिनकी टेक अपारा । रामनिमित्त अपना तनवारा ॥
साहिब जबही हुवे सहाई । राजा सूं दिये बेग छुटाई ॥
साधों को सेवे जो कोई । वाके हानि कबहुँ नहीं होई ॥
साधुसेव है जिस घर माहीं । जम पिशाच वहां आवै नाहीं ॥
रामरूप कह यही विचारी । सन्तन की सेवा हियधारी ॥

दोहा ।

भली भक्ति भारी करी, सेऊ सम्मन गाज ॥
शीस कटायो चाव सूं, साधौं ही के काज ६
साँचे मन साँची भक्ति, साँचो ही उर ध्यान ॥
तन मन धन सब कर दियो, साधौं पै कुरबान ७
निरबैरी सब जीवसूं, निरबसई निसकाम ॥
रामरूप कह सन्त सो, चित राखै हरि नाम ८
ज्ञान गँभीर सधीर चित, आनन्दी निरद्वन्द ॥
रामरूप उनमत दिशा, सन्त सोई निरबन्धु ६
दयाशील तन मन बसै, कोमल सलिल सुभाव ॥
रामरूप सम दम सहन, हरि दर्शन को चाव १०
दाता हैं निज नाम के, साता साक्षी रूप ॥
कञ्चन काच समानता, सोई साधु अनूप ११
शीतल उर निस कल्पमन, सर्ब मित्र चित शांति ॥
स्तुति निन्दा एकसी, गुणातीत अतिकांति १२
राग द्वेष जिनके नहीं, त्यागी निरअभिमान ॥

रामरूप कही द्रोहना, राव रङ्क सामान १३
धन संतोषी साधु वे, साँचे वे परवाह ॥
रामरूप हरि सुमर के, मेटी जग की चाह १४
साधु समागम करतही, उर की तप्त सिराय ॥
रामरूप हो परम सुख, आवागवन दुख जाय १५
रामरूप सँग साधुका, निरफल कबहुन जाय ॥
सूली का कांटा रहा, संगत का गुण पाय १६
हित सूं संगत साधुकी, रामरूप कर लोय ॥
दुरमति नाशै सुमतिउर, हुरमत दूनी होय १७
पूरबजा या पच्छिमहिं, उत्तर दक्षिण डोल ॥
सब निरफल सतसंग बिन, रामरूप कही खोल १८
सुफल जात्रा दोय की, एक हरिजन एक राम ॥
रामरूप हरि मुक्ति दैं, जन सुमरावे नाम १९
बृथा बन बन भटकना, कबहुन मिलहीं राम ॥
रामरूप सतसंग बिन, सब क्रिया बेकाम २०
रामरूप सोई सफलदिन, मिलै सयाने सन्त ॥
प्रेम अंकभर भेटिये, पापन को हो अन्त २१
ज्यों पानी पय संग कर, होत दूधके रंग ॥
यों नीचा ऊंचा करै, रामरूप सतसंग २२
ज्यों खाई गढ़ निकट की, जल कोई पीवै नाहिं ॥
वही नीर सरिता मिलै, सबअंचवे अरु न्हाहिं २३
उत्तम हरि के सन्त हैं, उत्तम हरि का नाम ॥

मध्यम सुख संसार का, रामरूप किस काम २४
राम रूप साँची भगति, साँचे जन बे दाग॥
साँच त्याग जग झूठ सूं, रहे मूढ़ नर लाग २५
ज्यों काजल की कोठरी, ऐसा जग का संग॥
रामरूप धन साधु वे, लगै न दाग कुसंग २६
काजल ही का जगत यह, काजल ही की नारि॥
रामरूप अलगै रहै, तिनकी मैं बलिहारि २७
हरिजन वस्त्र ऊजले, छिपे न औगुन मेल॥
काला कांबल साकती, तहां दुरै सब फेल २८
साधु साध गुण ना तजै, मिलैं असाध अनेक॥
रामरूप अहि लिपटहिं, चन्दन तजै न टेक २९
जे राते हरि नाम सूं, उन मन क्षीणा तन्न॥
चाह तजी स्वरलोक लों, एक साईं सूं मन्न ३०
जे नेही हैं नाम के, जिनकी पिञ्जर देह॥
रामरूप पीरे भये, लागा घाव सनेह ३१
नींद न आवे रैन कूं, तरफत ही दिन जाय॥
रामरूप हरि नेह में, साधू रहै समाय ३२
गाफिल सोवत चैन में, नेही नींद गँवाय॥
रामरूप ज्यों जल बिना, मीन तरफ अकुलाय ३३
राम रूप भोला सुखी, निशि दिन सुखमें जाय॥
चातुर दुखी वियोग में, पीपी रटत बिहाय ३४
चतुर सन्तछिन छिनमरण, जाकूं पी की लाज॥

रामरूप भोला सुखी, लहै न काज अकाज ३५
परकी पीड़ न जानई, अपने पीड़ न नैंक ॥
साईं सूं परचा नही, रामरूप मन बैंक ३६
सन्त बियोगी राम के, दिन दिन पीले होत ॥
रामरूप तन मन बिकल, कसक हिये उद्दोत ३७
पीलक छाई नेह की, रामरूप तन माहिं ॥
लोग कहै पिंड रोगिया, भेद लखै कोई नाहिं ३८
साधू नेही नाम के, लंघन को हिय चाव ॥
रामरूप जग सुख तजे, एक साईं के भाव ३६
सब जग स्वारथ का सगा, तिनकी झूठी प्रीति ॥
त्याग कामना हरि भजे, धनि वे साधु पुनीति ४०
साँचे नेही राम के, जग में छाने नाहिं ॥
रामरूप कह ना दुरै, ज्यो सूरा रणमाहिं ४१
जग दुख दाझा जीवड़ा, साधु संग सुखपाय ॥
रामरूप जल डारतै, जैसे अग्नि सिराय ४२
हरि भक्ता की जाति नहीं, अच्युत गोती जान ॥
नीच ऊंच कुल भेदना, हरि सुमरै परवान ४३
हरि सुमरै ऊंचो भयो, गयो नीच पन दूर ॥
रामरूप बासन्त की, जाति बखाने कूर ४४
ऊंचे कुल कूं क्या करै, जहाँ न हरि को नाम ॥
उज्जल कूवा जल बिना, रामरूप किस काम ४५
जो हरिजन हो नीच कुल, तो भी उत्तम जान ॥

रामरूप शबरी सदन, भक्तों में परमान ४६
साधू आवत देखकर, उठ पग पूजै धाय ॥
स्तुति कर ऐसे कहैं, दया करी तुम आय ४७
हरिजन आवैं तासु घर, पाप ताप दुख जाहिं ॥
पुण्य उदय हो सहजही, सुखआनँदअधिकाहिं ४८
जाघर सन्त न आवही, सो घर मढ़ी मसान ॥
भूत पिशाच बसे तहां, धर्म पुण्य की हानि ४९
धन्य भूमि वह जानिये, जहां सन्त को बास ॥
रामरूप दिन दिन हर्ष, दुख दरिद्र को नास ५०
साधू आये देख कर, अति शीतल भये नैन ॥
ज्यों भूखे भोजन मिल्यो, यो तन मन भयो चैन ५१
रामरूप वह शुभ घड़ी, शुभ मुहूरत जान ॥
शुभ सोई दिन जानिये, सन्त मिले ज्यों आन ५२
राज मिले सुख रङ्की कूं, गूंगे जिभ्या पाय ॥
त्योंही हरिजन के मिले, रामरूप हर्षाय ५३
जहाँ न सेवा साधु की, नहिं आदर नहिं भाव ॥
धिक जन्म ता जीवको, चूक्यो नीको दाव ५४
साधुसेवा सों पाइये, साहिब सिरजनेहार ॥
जहाँ न आदर सन्त को, धारै जन्म अपार ५५
साधु न आये पाहुने, नयो न तिनको सीस ॥
चरण न धोये प्रीति सूं, डूबो बिस्वे बीस ५६
साधुन की सेवा करी, हित कर पूजे पाय ॥

सुफल जन्म तानै कियो, जम कूं दियो गँवाय ५७
पाप गये ता गेह सूं, जहाँ आये हरिदास ॥
रामरूप मंगल भये, हरि मिलने की आस ५८
जप तप पूजा सब अफल, जहाँ न जन को भाव ॥
रामरूप सुन्दर अधिक पै, विना नाक को राव ५६
सन्तन सूं वेमुख रहै, साहिव सूं अति प्रीति ॥
रामरूप बन दासही, पै दुरवासा रीति ६०
दुरवासा तपसी बड़ा, साहिव सेती नेह ॥
सहा गया नहीं विष्णु पै, रखै सन्त सूं नेह ६१
चक्र सुदर्शन भेजिया, दीजै ताहि जराय ॥
डरभागो तिहूंलोक ऋपि, कोई न हुयो सहाय ६२
सन्तद्रोही जगत में, नीच कहावे सोय ॥
रामरूप त्रयलोक में, जगह मिलै न कोय ६३
तन मन धन अरु बचन सूं, साधुसेव चित धार ॥
राम रूप अघ सब हरै, रीझै सिरजन हार ६४
धन्य वह तन धन्य ग्रह, कुलधन्य सकल परिवार॥
जहां निस मैंही सन्त की, सेवा को उपकार ६५
रामरूप सतसंग में, एते नाशैं जान ॥
अकस लोभ अज्ञानता, चिन्ता तृष्णा मान ६६
मान लोभ जाघट वसै, दम्भ कपट ता साथ ॥
रामरूप ताकूं कबहूं, मिलै न त्रिभुवन नाथ ६७
कुष्ठ भये ज्यों देह में, सुन्दर ताको नास ॥

तैसे तृष्णा लोभ तैं, मनको जाय हुलास ६८
लोभ मोह मद त्याग के, सन्तन सूं कर प्रीति॥
पापहरन हरिशरन की, रामरूप यही रीति ६९
तीरथ देव शिलामई, सेव अन्त फल होय॥
रामरूप साधू दरश, बचन सुनत फल सोय ७०
सन्तन की स्तुति करै, मुख सूं बारम्बार॥
मय कुटम्ब भवसिंधु सूं, रामरूप हो पार ७१
हरिजन तीरथ गंग में, वचन पर्ब में न्हाय॥
संशय पाप नसें सभी, रामरूप पद पाय ७२
होंहि दयालु गोपाल अति, कृपा करैं जब दोय॥
साधु समागम मेघ जल, ताप तप्त जा खोय ७३
साधु सयाने जब मिलें, तबहीं अति सुख होय॥
रामरूप मन भूत गति, देखत रहै न कोय ७४
हरिजन दर्शन करतही, हरिजी आवै याद॥
रामरूप हो हंस गति, ऊंची समझ अगाध ७५
बड़ा लाभ साधू दरश, दिनदिन नाम सिवाय॥
रामरूप इन देखते, और न देखन चाय ७६
दानी साधु समान को, रामरूप जग माहिं॥
अभय करैं साहिब मिलें, और चाह सब जाहिं ७७
जीव जीव कूं दान दे, उरकी मिटै न चाह॥
रामरूप जन नाम दें, साहिब मिलै उमाह ७८
दान जिते सबही बड़े, पैना नाम समान॥

रामरूप सब धातु में, पारस अधिकी जान ७९
ऐसे दानी साधु हैं, हरैं दरिद्दर मूर ॥
रामरूप दे नाम धन, करै साह भरपूर ८०
लख चौरासी जौनि में, चित नहिं आवै नाम ॥
रामरूप सतसंग में, ज्यहिं पाये बिसराम ८१
नाम नाव साधों करी, बड़ा किया उपकार ॥
रामरूप भव बूड़तैं, बहुतक लिये उबार ८२
रामरूप या जगत में, साधू बड़े दयाल ॥
जिन प्रसाद गोविन्दमिलै, जीवहि करैं निहाल ८३
अजब अनूठा रूप है, साधू सन्त जगमाँहिं ॥
जिन मिलजीव कारजसरे, रामरूप दुख जाहिं ८४
नैनों लखे स्वरूप कूं, श्रवण शब्द कर पान ॥
रामरूप मन दुख गया, सबठां सुखकी खान ८५
नैन सुखी श्रवण सुखी, मनमें मंगलचार ॥
रामरूप हरिजन मिलै, आनन्द होंहि अपार ८६
बने तो सँग रहिये सदा, कलह क्लेश निवार ॥
रामरूप कह सन्त के, तन मन दे बलिहार ८७
कोमल संगत साधु की, कोमलही कर लेत ॥
रामरूप जी ज्ञान दे, सब शुभ सौंज समेत ८८
मलागीर ज्यों बेधिया, जेता ढिग बन राय ॥
रामरूप त्यों पलटया, जीव साधु सँग पाय ८९
लोहा पारस मिलतही, तुरत हेम हो जानि ॥

रामरूप त्यों साधु सँग, जीव लहै कल्यान ६०

चौपाई ।

पारस परस लोह ज्यों भाई । पलटा गोत भया उंचाई ॥
त्यों निरधन मिल धनवन्ताई । वहबी हो धनका अधिकाई ॥
लघु संगत दीरघ की पावै । सोऊ बड़ा होय दरसावै ॥
छाछ दूध परसत मिलजावै । जाँवणहूं दधि होय दिखावै ॥
खाली पूरण के सँग लागै । जोहो वाके भाग सुभागै ॥
होय दशगुणों देखत जबहीं । एकसूं सुन्न लगतहै तबहीं ॥
योंही साधु संग अधिकाई । तिनमिल भवजलको डरजाई ॥
रामरूप सुध साधु जहाजा । परसत पार होय सुखसाजा ॥

दोहा ।

ज्यों गंदा जल नदी मिल, सिंधु समापत होय ॥
रामरूप सतसंग सूं, जीव ब्रह्म में जोय ६१

चौपाई ।

चुम्बक पारस लोह मिलाई । अरु तीजैं चन्दन बनराई ॥
ऐजड पलट मृतग फिर चालैं । ऐसा सतसंगत गुण आलैं ॥
यों नर पलटै संगत आई । जैसे बेल लजालू भाई ॥
साधू चन्दन बचन सुगन्धा । तासू कुल काष्ठ गयो गन्दा ॥
देखत होय गई गत औरे । सीस निवा भूपति करजोरे ॥
वालमीक बधिक बुद्धिहीना । संगतगुणऋषिभयोप्रबीना ॥
पुहप तिलौं मिल होय फुलेला । जीव शुद्ध सतसंग सुहेला ॥
ऊंचे संग ऊँचाई होई । रामरूप कर देखो कोई ॥

दोहा।

भजन शील संतोष धन, कभी न आवै अंग॥
रामरूप खाली रहै, बिन ऊंचे संतसंग ९२

चौपाई।

साधु संग हो शीतलताई। क्रोध लोभ ज्वाला बुझजाई॥
आवै नाम दरब घट माहीं। दुख दरिद्रता रहै जु नाहीं॥
बादल बन्दे की गति एकी। सुन्न सुधारस लहैं विवेकी॥
फिर जल उमँग द्रवे सुख देवें। बाणी वर्षा कर मन भेवें॥
जन जग में आभे समजानें। कर पारमार्थ सुन्न समानें॥
ब्रह्मण्ड पिण्ड सूं निकसै सोई। आभै अरु आतम ये दोई॥
सदा सुन्न में रहै समाये। बादल बन्दे दोय बताये॥
परउपकार करन कूं होवें। रामरूप सींचै गुण बोवें॥

दोहा।

साधू घट घट गरजके, वचन बूंद वर्षाय॥
हिये भूमि निपजै सरस, कुल अनन्त ब्योसाय ९३
परउपकारी जगत में, कोईक बिरले सन्त॥
रामरूप कह शीष दें, स्वारथ काज अनन्त ९४
जे दयाल परमारथी, उदय न होवें साध॥
रामरूप कह जगत में, बढ़ै बहुत अपराध ९५
जे साधू गुह्य ज्ञान का, करैं नहीं उपकार॥
रामरूप भवसिंधु में, बूड़ जाय संसार ९६
कौन ज्ञान दें तम हरैं, कौन लखावे राम॥

रामरूप सँग साधु बिन, जीव न पावै ठाम ९७
साधू सूम होवें नहीं, देवें ज्ञान अपार ॥
प्रकटे याही हेतु कूं, तनमन सूं उपकार ९८
रामरूप सिद्ध साधु में, दीप भानु अंत्रेस ॥
सिद्ध उधारै एक दो, साधु उधारे देस ९९
दीप दीप मिल चाँदना, साधु साधु मिल साधु ॥
तिमिर अशंका जाय सब, साईं मिलै अगाधु १००
रमते बैठे सब भले, ज्यों जल साधु गँभीर ॥
रामरूप लक्षण सहित, जो सुमरै रघुबीर १०१
शुक्र सूर शशि व्यासजी, बृहस्पति ध्रुव शुकदेव ॥
सबही पूज्यक पूजिये, डोल अडोल न भेव १०२
सीझै साईं सारखे, सो बिरले जग माहिं ॥
भेप सिपाही बहुत हैं, सूरा ठहिं ठाहिं १०३
बाहर साधु कठोर से, नारिल की ज्यों जानि ॥
भीतर कोमल शुद्ध गति, रामरूप पहिचान १०४

चौपाई ।

ऊपर साधु विघन गति भासैं । ज्यों चन्दनअहिमिलैं उदासैं ॥
भीतर शीतल बास सुगन्धा । यों हरिजनउर शुद्ध अनन्दा ॥
बाहर साधु सीप ज्यों मैली । भीतर मोती आब उजेली ॥
ऊपर नाना संग पसारा । अन्तर केवल ज्ञान अपारा ॥
साधु सहित कण माहे जानौं । ज्यों मक्के की ज्वार पहिचानौ ॥
ताहि विघन पंछी को नाहीं । ऐसे सन्त छिपे जगमाहीं ॥

ऊपर कोमल बेर समाना । तों चूंथे पंक्षी जग नाना ॥
गुप्त नारियल की ज्यों रहना । रामरूप साईं चित गहना ॥

दोहा ।

साधु सिंघाडा नारियल, ऊपर कठिन निहार ॥
अन्तर राखे वित्त कूं, रामरूप सुख सार १०५
पय उफान जल चोट ज्यों, ऐसा सन्तां रोश ॥
रामरूप ठहरे नहीं, मन उज्ज्वल में जोश १०६
तुरतही जानै सब खलक़, जे चले साधु कुचाल ॥
रामरूप सूरज ग्रहन, चीन्हे जग ततकाल १०७
सन्त अदोष अडोल चित, सोई चलै अनीत ॥
रामरूप भौंचाल ज्यों, जान परै बिपरीत १०८
ताकूं औगुन ना लिये, जे जन समझा ज्ञान ॥
रामरूप रज ना चढ़ै, ज्यों कञ्चन पर जान १०९
बहुसलता समंदहि मिले, बढ़ै न पलटै स्वाद ॥
रामरूप ज्यों साधुगति, हलै न कीयें बाद ११०
घुण नहिं भखै अंगार कूं, जोंक न लागै काठ ॥
रामरूप त्यों साधुगति, औगुन सकै न आंट १११
ज्यों मणि हीरे लाल का, दीपक द्रुम चित्राम ॥
त्यों साधू कहु क्या करै, मारुत माया भाम ११२

चौपाई ।

साधू सुन्न स्वरूपी लहिये । पांच तत्त्व तिनमाहीं कहिये ॥
रहै मिलैं सो एकै ठाईं । पैवै लिये छिपे जो नाहीं ॥

सो जग में बिरले हैं बीरा । सुन आतम सम साधु सधीरा ॥
सब में न्यारा अरु सबमाहीं । पूरण बुद्धि अगाध गुसाईं ॥
तन मन या विकलप उपजावै । पंच बिषय हिया अधिक डुलावै ॥
इनसे बचे रहै चित ठहरा । सो साधू साहिब सम गहरा ॥
करै मनोरथ मन के दूरा । दिल राखै साईं में पूरा ॥
रहै तनमें अरु सदा न्यारा । रामरूप सो हरिजन प्यारा ॥

दोहा ।

रञ्चक डरै न मरन सूं, परमेश्वर सूं नेह ॥
रामरूप ता सन्त कूं, साहिब शोभा देह ११३
बालक पनै न खेलिया, जोबन नारि निवार ॥
वृद्धपनै व्याकुल नहीं, दई अवस्था टार ११४
श्रीशुकमुनि सनकादिज्यों, अरु ज्यों ध्रुव प्रहलाद ॥
राम रूप इक रस रहैं, मध्य अन्त अरु आदि ११५
मान न व्यापा वित्त का, प्रानन परस्या पिंड ॥
माया मन मोह्या नहीं, तुच्छ जान ब्रह्मण्ड ११६
एक अवस्था एक दृढ़, भगवत में मन पूर ॥
रामरूप जग सूं अलग, करी वासना दूर ११७
पाँव पसारे चाह तजि, लीने हाथ सकोड़ ॥
रामरूप निरभय रहैं, साधू जग मुख मोड़ ११८
बड़े बादशाह साधु हैं, साहिब सूं नहीं चाह ॥
रामरूप दोउ लोक से, हूये बे परवाह ११९
बड़ा न साधु समान को, तीन लोक में और ॥

रामरूप इनकूं दई, हरि हृदय में ठौर १२०
हरिजन उर हरि जी सदा, हरिजी के उर साध॥
रामरूप क्या कहि सकै, गुण लीला जु अगाध१२१
साहिब साधु अगाध गति, तो पै साधु अपार॥
नाँव निनावे कै धरें, जिनके भक्त भँडार १२२
स्वामी कर सेवक सिरै, अचरज नाहिन ईश॥
तरुवर फल जल बुदबुदा, देखो ऊपर शीश १२३
स्वामी सेवक एक हैं, बीज वृक्ष ज्यों जान॥
रामरूप यों भेदना, जल पाला पहिचान १२४
साधु मिले साहिब मिले, तन मन भयो उछाह॥
रामरूप दरगाह में, बकसे गये गुनाह १२५
साधु मिले आनँद भये, मन की पुरवी आस॥
हरिपुर में साझा किया, जम की छूटी त्रास १२६
प्रबल माया विष्णु की, बाँध्यो सब संसार॥
रामरूप कोई ऊबरो, हरिभक्तन के लार १२७
धन्य पोरि धन्य ग्रहे जो, धन्य भूमि वह जान॥
रामरूप जहाँ सन्तजन, करे भजन भगवान १२८
देश गाँव कुल वह सुफल, पर्वत तीरथ ठाम॥
रामरूप जहाँ हरि भजै, सन्त सदा निसकाम१२६
जग समुद्र के तिरन कूं, साधु संग है नाव॥
रामरूप चढ़ि पार हो, सुगम सुहेलो दाव १३०
दान तपस्या जोग सूं, कष्ट किये फल होय॥

रामरूप हरिजन कृपा, सहज परम पद जोय १३१
अघट पाप बहु भाँति के, सन्त बचन सुन जात ॥
रामरूप रञ्चक अगन, रूई मणो जरजात १३२
ना सुख तप तीरथ किये, ना सुख बरत उपास ॥
रामरूप हरि के भजे, सदा सुखी हरिदास १३३
चान्द्रायण व्रत अति करै, रामरूप फल हेत ॥
अचै चरणोदक साधु को, सो पुनि अधिकी लेत१३४
होम यज्ञ व्रत के किये, लहै स्वर्ग के भोग ॥
साधु चरणोदक पियेते, मिटै जन्म दुख रोग १३५
परमधाम बासो मिलै, नाशै व्याधि उपाध ॥
रामरूप मुक्ताभवै, लिये चरणोदक साध१३६

इति



सूरातनका अंग ।

इस अंग में भगवत् भजन करनेवाले पुरुष को ही शूरमा (शूरवीर) वरणन किया है और सुमरणरूपी शस्त्र से काम क्रोधादि शत्रुओं को जीतकर जीव जीवन्मुक्ति प्राप्त कर लेता है ये अंग अवश्य पढ़ने के योग्य है क्योंकि विना शूरवीरता के मायाके प्रबल दल को जीव जीत नहीं सक्ता है ॥

दोहा ।

रामरूप सोई शूरमा, तोड़े भर्म कपाट ॥
सुमरन में लागा रहै, छाड़ि जगत की बाट १
रामरूप शूरा सोई, मँडै भक्ति में आय ॥
सौंही रहै जु राम के, पाछै पग न उठाय २
रामरूप शूरा सोई, मँडै प्रेम के खेत ॥
टूक टूक हो गिरपड़ै, तजै न हरि का हेत ३
रामरूप सोई शूरमा, सुन्न में ध्यान धरै ॥
पहिले मन कूं मारके, पाछै आप मरै ४
सुन्न ध्वजा फरकत सदा, अनहद बाजै तूर ॥
रामरूप रणधीर जो, पहुँचै सोई हुजूर ५
सुन्न नगर मारू वजै, शूरा सुन हुलसांहि ॥
रामरूप सनमुख मँडैं, कायर भागै जाहि ६

कायर घना पचावहीं, कारज करही शूर॥
वक्त पड़ै जानी परै, रामरूप हो नूर ७
सँभल सँभल गुण गावईं, सूरा सोई सधीर॥
चोटों से भागै नहीं, सनमुख सहै शरीर ८
तरुवर ऊँचा फल भला, पंथी देख लुभाहि॥
रामरूप बहु पचगये, कोइक सूरा खाहि ९
शिरके साटै पाइये, कैसाही हो दूर॥
रामरूप शिर लोभ सूं, निरफल रहे विसूर १०
प्रेम पन्थ अति कठिन है, विकट पहुँचना धाम॥
शीश लोभ त्यागन करै, तब भेटैगा राम ११
प्रेम भक्ति दुर्लभ महा, सहज सुहेली नाहिं॥
रामरूप शिर कर गहै, तब पावै निज ठाहिं १२
धुर महलां की वह कहै, जो निज भेदी होय॥
रामरूप दरबार में, सूरा पहुँचै कोय १३
शिर त्यागै कोई शूरमा, तन मन सदकै देय॥
रामरूप जब हरि मिलैं, सनमुख मुजरा लेय १४
शूरा शिर त्यागन करै, दाता धन को लोभ॥
पतिव्रता तन कूं तजै, तबही पावै शोभ १५
भक्त दुहेली कायरां, शूरा नित हुलसाहिं॥
जात बरन कुल मान, जोछोड़दिया छिनमाहिं १६
कायर कुलमें फँस रहै, अरु माया के जाल॥
रामरूप न्यारे हुये, सोई भये निहाल १७

हरि हीरा हमने लिया, तन मन अरपा शीश ॥
सहज सुहेला ना मिलै, रामरूप जगदीश १८
शिर त्यागै साईं मिलै, बातां मिलसी नाहिं ॥
रामरूप आपा तजै, तब शोभा जग माहिं १६
झूठी बातों ना मिलै, साँचा सिरजन हार ॥
शीश राख सौदा करै, किस बिधि पावै सार २०
जब लग शिर त्यागै नहीं, तन राखन की चाह ॥
रामरूप हरि ना मिलै, मिटै न उरकी दाह २१
जाति बरन दिन चार का, थोथी कुल की लाज ॥
कायर तिनमें फंस रहै, शूरमा कीने काज २२
खडग धारवी सुगम है, सुगम सती का काम ॥
रामरूप कुल मान तज, कठिन सुमरना राम २३
आपा थापै दुख घने, लागै चाह अनन्त ॥
रामरूप आपा तजे, सोई शूरा सन्त २४
शील क्षमा हथियार ले, मँडौ भक्ति मैदान ॥
काम क्रोध कूं मारना, साईं मैं गलतान २५
काम क्रोध मोह लोभ कूं, गरब हनै सो शूर ॥
साधु शूर का भेष ही, सोहै बरसे नूर २६
घट के वैरी सब हनै, अरु जग सूं युध माँड़ ॥
रामरूप हरि कारणै, सबै चाह दे छाँड़ २७
पाँच पचीसों जीत कर, मारै तीनों साल ॥
रामरूप अमराभवै, तासूं डरपै काल २८

मन जीतै तन वस करै, वचन वनावे फूल ॥
साहिब सूं सनमुख रहै, शूरा सोई कबूल २९
पांचन कूं निग्रह करै, सुमरै सिरजनहार ॥
सोई सांचा शूरमा, रामरूप हो पार ३०
ये अरि जगमें जीतणों, मन इन्द्री अज्ञान ॥
ज्ञान खडग की धार सूं, भला करे घमसान ३१
पग रोपै बिन नाटले, जो वैरी रण माँहि ॥
रामरूप जग जीतना, दुर्लभ हांसी नाँहि ३२
सकल भर्म कूं परहरै, खंडै जग की रीति ॥
सोई शूर कहावई, साईं सूं प्रतीति ३३
शूरा सोई जानिये, जाके हरि की प्रीति ॥
तन मन सूं सनमुख रहै, छोड़े जग की रीति ३४
शूरा के शिर है नहीं, पाछै कूं पग नाहिं ॥
आगे भूझै धरणी के, भक्ति खेत के माहिं ३५
शोभा पावे जगत में, अरु रीझैं करतार ॥
सती शूर ज्यों हूजिये, जन्म न वारम्वार ३६
पीठ फेर नहिं देखिये, जोवन धन अरु नारि ॥
भूझै जलै सँभाल के, इन्द्री मन कूं मारि ३७
कुटुँब जगत कूं छोड़ के, सती जलै पिय प्रीति ॥
यों हरि आपा सौंपदे, सो पूरा रणजीत ३८
शूरा साँचा जानिये, लिये हाथ में शीश ॥
लड़े चाव ही चाव सूं, सुरत धरै जगदीश ३९

दो दल में ठाढ़ा रहै, गहै प्रेम का सेल॥
पीछे छोड़े साथ कूं, धसे राम की गैल ४०
वहु दुर्जन के मांहि ही, रहै सावही धान॥
शूर वंड़ा ही जानिये, जाकै नाहीं मान ४१
मान न शूरा करत है, खडग सँभारै ज्ञान॥
ठेक भरोसा दृढ़ गहै, रामरूप हरि ध्यान ४२
ध्यान करन सुलभ नहीं, बड़े शूर का काम॥
मन जीतै वैरी भजे, रामरूप हो नाम ४३
जो कोई शूरा भक्ति में, बल योधा रणजीत॥
पावै चौथा पद वही, जाके ऐसी रीति ४४
शिर साटे का खेल है, प्रेम भक्ति के माहिं॥
शूरा पहुँचे गुरुमुखी, कायर बे सुख नाहिं ४५
जगत वड़ाई में फंसे, कायर का क्या काम॥
शूरा नीचा हो चलै, जब पहुँचे निज धाम ४६
जो कोई नीचा हो चलै, हरि मारग के माहिं॥
तासूं धाड़ी चोर ठग, सवही देख डराहिं ४७
शस्त्र सोहे शूर के, क्षमा दीनता ध्यान॥
शील दया संतोष ही, गहे खड़ै मैदान ४८
काम क्रोध से थरहरै, मोह आदि भगजाहिं॥
जेते गुण अज्ञान के, सब ही देख डराहिं ४९
वैरी सूं सनमुख लड़ो, भाग्यां भला न होय॥
रामरूप साके चलैं, कुली उजाले दोय ५०

बैरी सूं नहीं भागिये, पीठ दिये घर दूर॥
साईं आगे रण मँड्यो, सनमुख लड़ो हुजूर ५१
शूरां आगै बाहसी, कोई शूरा महन्त॥
परदल मोड़ै रणमँडै, रामरूप सोई सन्त ५२
बखतर सजै न शूरमा, मरने का भय नाहिं॥
कायर भागे काल सूं, शूरा सनमुख खाहिं ५३
शूरा कूं सब जग निवै, रीझै सिरजनहार॥
रामरूप हित राम सूं, दुरजन डारे मार ५४
जब लग आशा देहकी, तब लग शूर न होय॥
रण माँडै कोई भक्तजन, मान बड़ाई खोय ५५
हरि का मारग कठिन है, विकट तजन धनधाम॥
रामरूप मन भूप सूं, आठ पहर संग्राम ५६
शब्द सेल वाहो उसे, जो कोई सनमुख लेय॥
कायर पै नहीं बाहिये, भागै पीठा देय ५७
रामरूप शूरा भला, कायर बुरा कपूत॥
खोवै कुलकी गांव की, भेष लजावै ऊत ५८
कारज सरै न कायरा, लोग हँसावनहार॥
रामरूप शूरा बिना, होय न जैजै कार ५९
रामरूप शूरा भला, सनमुख चोटें खाय॥
कै बैरी कूं ले रहै, कै आप मरै वा दाय ६०
कायर सारै ही बुरा, अन्त लजावे भेष॥
रामरूप शूरा बिना, कोइ न पकड़े टेक ६१

कायर देखत ही भगे, शूर मंडै रणमाहिं ॥
पूरा पट्टा लिखाय के, राम खज़ाना खाहिं ६२
स्वांग बनावन सहल है, करनी भक्ति दुहेल ॥
रामरूप शूरा टिकै, जबसनमुख चाले सेल ६३
ये तो थोड़ा ही भला, शूरा सन्त सपूत ॥
बहुत घणा किस कामका, कायर कूर कपूत ६४
शूरा के नगर बसै, कायर फिरै खराब ॥
साधु सपूता बाहरी, कुल कूं चढ़ै न आभ ६५
शूर सती तन कूं तजे, साधू त्यागै लोभ ॥
रामरूप लंघन करै, त्यों त्यों पावैं शोभ ६६
नेह निवाहे राम सूं, कोई शूरमा सन्त ॥
हरि सूं प्रेम न तोड़ई, आवो विघ्न अनन्त ६७
नेह निवाहे ही भला, तोड़े भला न होय ॥
आगे हो पाछे फिरै, बुरा कहै सब कोय ६८
अब तो माँड्यां भक्ति रण, पाछै हटा न जाय ॥
जननी लाजे जग हँसै, साईं कूं न सुहाय ६९
शूरा तो सोंही चले, रण बिच करै बिताड़ ॥
अणी चुकावे गादुड़, पाछे जु खेलवाड़ ७०
मन ललचावे देखकर, बहुत बनावे भेष ॥
रामरूप हरि नाम की, बिरला पकड़ै टेक ७१
शीश टूट रणमें पड़ा, करै कमध घमसान ॥
सोई शूरा सराहिये, मँडै भक्ति मैदान ७२

शीश सहित सनमुख, लड़ै जबलग शूरा जान ॥
शिरकट पाछे धड़ लड़ै, ताकूं कमथ पहचान ७३
भागै लाजै तीन जन, साधु सती अरु शूर ॥
रामरूप सनमुख भले, ह्यां शोभा वहां नूर ७४
सती डिगे सलरोप के, शूर डिगे रण माहिं ॥
संत डिगै हरि नाम सूं, तिन्हें ठिकाना नाहिं ७५
साधु सती अरु शूर कूं, भागै जागहि नाहिं ॥
जलै मरै हरि टेक में, तब शोभा जग माहिं ७६
ये तीनों संसार में, बिरचे ही जस लेहँ ॥
आगे हो पीछै फिरे तो, कुल कूं अपजस देहँ ७७
जो साधू रणभक्ति में, सनमुख मँडै बनाय ॥
रामरूप सांई मिले, सुर नर पूजे पाँय ७८
हरि सौंही सनमुख चले, तासम शूर न कोय ॥
शिर काटै साई मिले, रामरूप धनि सोय ७९
ज्यों शूरा कर शीश ले, सनमुख रण में जाय ॥
रामरूप त्यों भक्ति में, साधू रहै समाय ८०
महा शूर सोई जानिये, शिर तज सुमरै राम ॥
रामरूप जस जगत में, अरु पावै निज धाम ८१
हरि मारग हृदय गहै, साधू शूरा सोय ॥
रामरूप साई मिले, अधिकी लाहा होय ८२
देखो अचरज सतीका, लियो सिधोरां हाथ ॥
मोह तोड़ संसार सूं, जली पीव के साथ ८३

मृतक जग का पीव सँग, सती जले कहि राम ॥
रामरूप साईं सुमर, क्यों न लहो सुखधाम ८४
जिस कारज में शीश दे, तनका लोभ उठाय ॥
रामरूप सोईं सिद्ध हो, सदा रहै जस छाय ८५
जो हरि मग में पगधरे, तो सुन ले यह बात ॥
पहिले त्यागूं शीश कूं, दूजे जग का साथ ८६
शूर चढ़े संग्राम कूं, पिण्ड प्रान कूं त्याग ॥
दारा सुत वित कूं तजै, जाकी हरि सूं लाग ८७
साईं सूं सोंही रहो, पीछा फिर मत देख ॥
साहिव सें अन्तर पड़े, अरु लाजे यह भेष ८८
जो शूरा संग्राम में, उलट चले मुख मोड़ ॥
रामरूप ताही समय, बुरा कहै दोऊ ओड़ ८९
अब भागे कैसे वने, अणी मँडी जो आय ॥
कै मरवो कै मारवो, दोउ विधि शोभापाय ९०
मुये मिलें परलोक सुख, जीतें जगमें नूर ॥
रामरूप सब विधि भला, जो हो साँचा शूर ९१
कुशल शूरमा बहुत हैं, वक्र पड़े कोई एक ॥
रामरूप ललचाय के, घने बनावे भेष ९२
जोम दिखावत बहु फिरैं, गली बजारों माहिं ॥
रामरूप रण में मँडै, तेई शूर कहाहिं ९३
नितही सूधे से रहै, जे शूरा जग माहिं ॥
टूक टूक हो के लड़ै, रामरूप रणठाहिं ९४

अति ही सूधे से लगै, साँचे शूरा साध ॥
काम पड़ै हो बाँकुडा, रण में मँडै अगाध ९५
जिन तन त्यागा आपना, मरने सूं न डराय ॥
रामरूप कैसे डिगै, रण विच रोप्या पाय ९६
तजे बड़ाई ईर्षा, अरु कुल को अभिमान ॥
सकुच शरम तज हरिभजे, सोई शूरा जान ९७
सुभट शूर जो कुछ तजै, सो फिर धारे नाहिं ॥
रामरूप साँचा पुरुष, डिगे नहीं रणमाहिं ९८
साधु शूर के पन्थ में, बहु सुख पावै जीव ॥
रामरूप निरभय चलें, जाय मिलें सतपीव ९९
शूरा तो बहुभांति के, जोधा बहुतै लोय ॥
रामरूप मारै मदन, ता सम कोई न होय १००
मदन मार मन बस किया, इन्द्री जीती घेरि ॥
रामरूप ताकूं मिले, साईं सहज सबेरि १०१
रणजीता वही जानिये, जिन मन जीता होय ॥
जो लूटा इन्द्री बिषय, गया जु सर्वस्व खोय १०२
रामरूप आशा तजे, सो शूरा निज दास ॥
करै चाकरी राम की, जग सूं होय उदास १०३
मुक्तिपाय जागीरही, चौथे पद सुख लेव ॥
जन्म मरण मिट जाय सब, होय हो अमर अभेव १०४
आन देव कायर भजे, तिनकूं यह सुख नाहिं ॥
सात पाँच का आसरा, लूट लिये मग माहिं १०५

झूठी आशा धर चले, आन देव के साथ॥
रामरूप कहै बीच में, डूब गये छुट हाथ १०६
सात माँमूं का भानजा, भूखा सोवे रात॥
एक द्वार जो गिर रहै, साहिब बूझै बात १०७
आन देव कूं त्यागनो, जपनो हरि को नाम॥
हर काहू सूं ना वनै, यह शूरा को काम १०८
शूरा सोई जानिये, छोड़े सकल विकार॥
हरि ही सूं लागा रहै, राम ही रूप निहार १०९
चरनदास गुरु दया सूं, साँचा शूरा होय॥
रामरूप वा सन्त के, जस गावें सब कोय ११०

अरिल्ल।

बाजीदा सुलतान सुभट मन सूररे।
द्रव्य राज तन त्याग किया भय दूररे॥
मोरध्वज हरिश्चन्द चढ़ाया शीशरे।
परिहां रामरूप रणजीत रिझाया ईशरे॥





बिरह का अंग।

इस अंग में बिरह अर्थात् प्रेम की प्रशंसा बरणन कीगई है मनुष्यजन्म की सफलता भगवत् चरणारविंदों में प्रेम के होने से ही दिखलाई है उस भगवत् प्रेम की महिमा और उसके प्राप्त होने के उपाय और प्रेम से साक्षात् परमात्मा की प्राप्ति का परम फल भलीभांति दिखलाकर प्रेमीजनों की प्रेमप्राप्ति के पश्चात् जो दशा होती है वह निरूपण कर प्रेम उत्पन्न होने के परम सुलभ साधन बतलाये गये हैं यह अंग प्रेमोत्पादक (प्रेम उत्पन्न करनेवाला) सज्जन पुरुषों को मन लगाकर अवश्यही पठन करना चाहिये ॥

दोहा ॥

बिरहा उपज्यो हिये में, बाहर झलक्यो आय ॥
रामरूप मूके अधर, नैनन जल बर्षाय १

साधु शब्द सुन ऊपजे, हरि प्रीतम की चाह ॥
रामरूप बिरहा लगे, तन मन माहीं दाह २

बिरह दाह भारी लगी, रामरूप तन माहिं ॥
बिन देखे गोपाल के, चैन एक छिन नाहिं ३

मन की कहिये कोन सूं, को जानै यह भेद ॥

रामरूप बिरहा करै, हिये रैन दिन छेद ४
नाना बिधि के सुख सबै, पी बिन अति दुखदाय ॥
रामरूप प्रीतम सहित, बिपदा स्वर्ग बिहाय ५
क्या ले करूं बसन्त ऋतु, बिरह व्यथा मन माहिं ॥
रामरूप सो दिन भले, जब प्रीतम गलबाहिं ६
ऋतुवन्ती ज्यों बिरहनी, चहै पिया को पास ॥
रामरूप मन तू बसै, साहिब पुरवो आस ७
तरफत बीतै रैनि जो, सोचत ही दिन जाय ॥
रामरूप प्रीतम बिना, बिरह व्यथा रहिछाय ८
रैनि बिहावे तरफ ते, रोवत सब दिन जाय ॥
रामरूप बिरहन दुखी, कुञ्जहि ज्यों कुरलाय ९
बाट तुम्हारी हेरते, वहु दिन बीते श्याम ॥
जिवड़ा तरसे दर्श कूं, नैनन ना आराम १०
बाट निहारत दिन टलै, रैन बिताऊँ रोय ॥
रामरूप कब देवोगे, सेजड़ियां सुख मोय ११
हे प्रीतम कब मिलोगे, कब सेजां सुख होय ॥
कब मोहि करो सुहागनी, बिरह बिछोहा खोय १२
फेर न अवसर यह समां, हे प्रीतम अब दाव ॥
तालावेली हो रही, हिये बिरह का घाव १३
घाव मिलावो आय के, हित का मलहम लाय ॥
रामरूप पिव कारने, हिरदा फट फट जाय १४
बिरहिन झुरवे रैन दिन, मनहीं मन अकुलाय ॥

श्याम पियारे ना मिले, औसर बीत्यो जाय १५
रामरूप बिरहन दुखी, जैसे जल बिन मीन॥
चैन नहीं पल छिन घड़ी, सूक भयो तन छीन॥
मन मेरा चातक भया, तुम प्रीतम हो स्वाँति॥
रामरूप की प्यास लखि, वर्षो हित की भाँति १७
रामरूप कासूं कहै, विरहिन मन की बात॥
तुम नीके जानत पिया, बिरह करत है घात १८
कासूं कहूं सँदेसड़ा, अपने मन की पीर॥
वाट निहारत दृग थके, सूकत चल्यो शरीर १६
कह संदेशो पीव को, मन अंदेस न जाय॥
कै प्रीतम आदर्श द्यो, के मोहिं लेहु बुलाय २०
सकूं न तुम्हें बुलाय मैं, मो आवन गम नाहिं॥
रामरूप योंही तपे, जीव विरह के माहिं २१
तन जलाय कोयला करूं, पाती लिखूं पुकार॥
हाडों की लेखनि करूं, यों जी डारूं वार २२
जीवन सूं मरना भला, बिन प्रीतम जग माहिं॥
बिरह सतावे रैन दिन, भेद कहसकूं नाहिं २३
केश पलट धौले भये, मुख ना बोले पीव॥
रामरूप वेदनि यहै, जीव की जाने जीव २४
सब जग दीखे सुखभरा, हुलसत खेलत खात॥
रामरूप विरहिन दुखी, पी बिन जोबन जात २५
पल पल बीते पीव बिन, जुग जुग की सामान॥

तौ दिन बीतै कौन बिध, रामरूप हैरान २६
बिरही सा दुखया कोई, दूजा जग में नाहिं॥
रामरूप हरि कारने, सदा झुरे मन माहिं २७
ना वह मिलै न सुखभवै, बेदन बिरहिन जाय॥
रामरूप पिया मौत दे, के दर्शन दे आय २८
ना मैं मरूं न जीव हूं, लगा बिरह का घाव॥
रामरूप जबहीं कुशल, दारू दर्श दिखाव २९
काम लोभ तृष्णा तजी, मैं तुम कारन श्याम॥
रामरूप रूखे लगै, सकल कुटुंब धनधाम ३०
प्रीतम तेरे कारने, मैं लीना वैराग॥
तन मन धन सदके किया, तो भी भरूँ दुहाग ३१
करो सुहागिन पीव अब, अति आतुर भया मन्न॥
रामरूप नाहिं सह सकै, बिरह बिछोहा तन्न ३२
करो मेहर तज क़हर कूं, हे प्रीतम गल लाव॥
निशिदिनतरफूं मीन ज्यों, रामरूप पिय आव ३३
बिरह चोट की पीड़ का, दरद न जाने कोय॥
रामरूप बिरही लखै, के जिन लागी सोय ३४
खैंच कमाण बिछोह की, प्रेम लगाया तीर॥
रामरूप तन मन बिंधा, उठै बिरह की पीर ३५
बिरह भुवंगम ने डसी, लहर चढ़ी तन माहिं॥
मंत्रन लागै तासु पर, जीवे कि जीवे नाहिं ३६
बिरह भुवंगम खाइया, तन मन घूमत प्रान॥

सकै उतार न गारडू, रामरूप हैरान ३७
कामी के चित कामनी, लोभी के चित दाम॥
अमली के चित अमल है, रामरूप चित नाम ३८
रटै चकोरा चन्द कूं, वैरागी मन त्याग॥
रामरूप चित पीव से, ज्यों नारी सूहाग ३९
इन्द्री राती विषय सूं, मन राता उन माहिं॥
रामरूप त्यौं राम कूं, कबहूं भूले नाहिं ४०
जीव पियारा देह कूं, देह पियारी जीव॥
पवन पियारी अगनि कूं, रामरूप कूं पीव ४१
पीव हमारा राम है, सदा पास दिलदार॥
हम सूं यों नहिं बोलता, औगुन किये अपार ४२
जैसी तैसी हूं पिया, बुरी भली तेरी॥
रामरूप मन तू बसै, तुझे लाज मेरी ४३
टुक हँस बोलो साँईया, दर्द दिलाँदा जाय॥
रामरूप की चूक कूं, प्रीतम द्यो विसराय ४४
हमैं भूख है दर्श की, दे भिक्षा दीदार॥
रामरूप की खबर लो, हे साईं दातार ४५
विन दर्शन जीवन इसा, ज्यों बालक बिन माय॥
रामरूप जीवन वही, पीतम संग विहाय ४६
यही अर्ज यहि वीनती, हे प्रीतम यहि बात॥
रामरूप कूं दर्श द्यौ, अवसर वीत्यो जात ४७
तुम्हरे दर्शन की विथा, मोपै सही न जात॥

दुखी दीन की खबर ल्यौ, तप्त बुझावो तात ४८
तू है तैसी बात कर, हो दयाल जगदीश ॥
रामरूप बिरहिनि दुखी, करो दर्श बकसीस ४९
छाले पड़गये जीभ में, कूकत पिवको नाँव ॥
नैनन में झाईं पड़ी, लखत पन्थ की दाँव ५०
तन दीपक मन बात करि, लहू सँजोऊं तेल ॥
रामरूप इस विधि करूं, हरि प्रीतम सूं मेल ५१
तन मन वारैं पी मिले, तो वारूँ सौ वार ॥
ना जानूं किस बात सूं, रीझैं सिरजनहार ५२
तीन लोक सुख वारि के, तन मन सदके द्यूं ॥
रामरूपजी अरप के, टुक प्रीतम लख ल्यूं ५३
चौरासी गलियां फिरी, कहूं न पाया पीव ॥
अवके अवसर आ बना, ताते वारूँ जीव ५४
बिन दर्शन कुछ और हम, माँगत नाहिं पिया ॥
रामरूप कह फेर ले, जो कुछ हमें दिया ५५
हम आशिक दीदार के, कछु और न भावै ॥
रामरूप मन तू बसे, तुझ ही कूं गावै ५६
तेरे कारन साँइयां, रामरूप दुखिया ॥
दे दर्शन टुक महर कर, जबही हूं सुखिया ५७
तालावेली पीव बिन, विरहा जोर करै ॥
दे दिलवर दीदार अब, ज्यों मन धीर धरै ५८
जो उलटी सुलटी सबै, दुर्जन सज्जन होय ॥

प्रीतम तेरी महर सूं, प्यार करै सब कोय ५९
हमें दुखाये क्या मिलै, भला कहैगा कौन ॥
स्वाँमी डारो विरद में, जो तुम धारी मौन ६०
हँस बोलो दीदार द्यो, साहिब प्रकटो आय ॥
बिरहिन की पीड़ा हरो, रामरूप गल लाय ६१
ज़ाके पीड़ा पीव की, सो साहिब का लाल ॥
पीड़ा बिना वन्दा नहीं, फिरै बजावत गाल ६२
बिरही झुके बिरह में, जिह तन लहू न माँस ॥
रामरूप मुरझाइया, दीखै स्वांस ही स्वांस ६३
निमख न भूलै राम कूं, अन्त सुरत नहिं जाय ॥
रामरूप विरहन सोई, पीपी करत बिहाय ६४
पिया पियाला इश्क का, मरने सूं न डरै ॥
रामरूप आशिक वही, शिर कूं दूर धरै ६५
विरह लगाया राम सूं, तिन्हैं न प्यारा तन ॥
रामरूप सर्वस्व दिया, देख पिया का मन ६६
विन सर्वस पी कूं दिये, पिया न रीझै कोय ॥
पहिले आपा खोयके, पाछे सब कुछ होय ६७
विरहअग्नि में जाल दे, तन मन प्रान समेत ॥
रामरूप नख शिख जलै, तबआपही सोधी लेत ६८
हरि प्यारे के इश्क में, तन मन प्रान जलाय ॥
ज़ो कुछ होय सो रोयतां, और न कछू उपाय ६९
नाँ वह रीझै हठ किये, नहिं साहिब सूं जोर ॥

रामरूप लखि पीड़ कूं, आपहि करे निहोर ७०
यही जोग यहि ध्यान है, यही ज्ञान वैराग ॥
इश्क लगाया पीव सूं, आठों पहर सुहाग ७१
लोक लाज शंका तजी, सुध बुध दीनी खोय ॥
रामरूप के मन वस्यौ, पीव प्यारा सोय ७२
बिरही कूं भावै नहीं, विना राम कछु और ॥
तड़फ तड़फ जी जात है, पिया न खोली पौर ७३
हे प्रीतम तुम क्या करी, चितको कियो कठोर ॥
हम ससकें दुख दिन भरे, मिलिये साहिव मोर ७४
हम बिरहन पीड़ा हमें, तुही तुही पुकारें ॥
रामरूप दीदार दें, तन मन धन वारें ७५
राम बिरह की पीड़ सूं, नींद न आवे तेक ॥
करडा घायल रामरूप, धीर न बँधै नेक ७६
करक कलेजे मे उठै, आठौं पहर कराह ॥
रामरूप भारी बिरह, अब नाहिं सकूं सँवाह ७७
सती भली सल पैठ के, घड़ी एक में छार ॥
रामरूप बिरहन दुखी, रहै पुकार पुकार ७८
बिरहन आली लाकड़ी, बुझै न जल वल जाय ॥
सिलग सिलग कोयला भई, यों बिन पीव बिहाय ७९
रे बिरहा भौंडी करी, लिया न राखा जीव ॥
तन सुकाया पिंजरा किया, अजहुँ न आये पीव ८०
रे बिरहा अब जावतूं, पी कूं आवन देय ॥

भौंडा लगै बियोग यह, रामरूप सुध लेय ८१
मोहि जलावे रैनि दिन, बिरह बिछोहा आय ॥
कोई प्रीतम कूं खवर द्यो, दर्श दिखावे दाय ८२
कोई न जानै पीड कूं, पिव सूं कहै न कोय ॥
रामरूप स्वांसा भरे, क्या जानूं क्या होय ८३
कै तो हम सुन्दर नहीं, कै तू बड़ा कठोर ॥
तालावेली हो रही, अजहूं करै निहोर ८४
तिरपा तेरे दर्श की, रात दिवस मन माहिं ॥
रामरूप हिया बुझ रहा, जब लग पावे नाहिं ८५
भूख विना भोजन सवफीके, तरु विना ज्यों छाया ॥
रामरूप योंहि तू पास है, हेत विना नहिं पाया ८६
अन्तर पीर न विरह की, रोया नाहिं पुकार ॥
रामरूप कहै ना मिला, तातें सिरजनहार ८७
साहिव मिलै न भाव विन, हिये भक्ति नहिं होय ॥
विरह न उपजै भाव विन, प्रेम न जागै कोय ८८
कै रोवो कै हँस रहो, कै सोवो के जाग ॥
रामरूप उरभाव रख, सवही स्वांग सुहाग ८९
भावहि मन निर्मल करै, भावहि दर्पण जान ॥
भावहि हिरदा शुद्ध कर, राम मिलावै आन ९०
जिन पाया जिन भाव सूं, साईं सब जग माहिं ॥
भाव विना हरि दूर है, ढिगही परसै नाहिं ९१
शास्त्र वेद पुराण पढ़, कहै जुगन की बात ॥

प्रेम अंक जानै विना, कछू न आवे हाथ ६२
बिना प्रेम पाती पढ़े, हिया न कोमल होय ॥
प्रेम बिना पढ़ वह कथा, चाला जन्म विगोय ६३
बिरह मार मन वस किया, इन्द्री रोकी पांच ॥
पवन सुरत थिर होगये, विरहा उपजा सांच ६४
बिरही भूना वीज है, जल वल गये विकार ॥
रामरूप उपजे नहीं, जग में बारम्बार ६५
बिरही सोई जान लो, पञ्च विषय जहाँ नाहिं ॥
रामरूप आठों पहर, सुरत पिया के माहिं ६६
रोय रोय राते भये, प्रीतम कारन नैन ॥
लोग कहैं दुखणाइयां, मोहि विरह दिनरैन ६७
आँसू बर्षै प्रेम के, जब हित नाणा जाय ॥
रामरूप रोये बिना, गोदी लेय न माय ६८
रामरूप हँसणा नहीं, रोवन सूं चित लाय ॥
पीव पियारे प्रेम लखि, लैंगे गले लगाय ६९
हँसूं तो बिरहा चौगुनो, रोऊं तो तन छीन ॥
मनही माहिं बिसूरना, ज्योघुणकाठजूंकीन १००
रोम रोम पी पी रटै, सब विदन रोवत जाय ॥
रोवत रोवत हरि मिलै, सुख में रहै समाय १०१
जिन पाया तिन रोयके, ध्रुव प्रहलादहि आदि ॥
रामरूप हँसते मिलै तो, क्यों घर छोड़ै साधु १०२
जिन नैनों हम रोइया, वे नैना कोई और ॥

रामरूप नैनन लखी, भीनी प्रीतम ठौर १०३
पीव लखा उन दृगन सूं, जब फीके लागे भोग ॥
रामरूप कहै मिटगये, सब तन मन के रोग १०४
बुरा कहो मत बिरह कूं, बिरहा जीवन प्रान ॥
रामरूप बिरहा बिना, मानुष पशू समान १०५
बिरही प्रीतम होगया, जब मनके गये बिकार ॥
रामरूप प्रीतम भया, तब छूटे सब जंजार १०६
तनमन प्रीतम होगया, सब जग प्रीतम रूप ॥
लहर समन्दर होगई, ऐसे रामही रूप १०७
पी पी कहते पी भया, बिरह किये ये काम ॥
अगम अगोचर दूर था, सो निकट मिलाया राम १०८
बिरह लेगया राम पै, तुरत मिलाया जाय ॥
पहिले बैरी होय के, पाछे करी भलाय १०९
बिरहा सा साऊं नहीं, बिरहा सा नहिं मिन्त ॥
राम मिलाया बिरह ने, मेटी सबहि चिन्त ११०
मैं बलिहारी बिरह के, बिरह मिलाया कन्थ ॥
बिरह बिना सूझै नहीं, रामरूप पिया पन्थ १११
बिरह पिया का रूप है, बिरह पिया की जात ॥
रामरूप बिरहा बिना, पीव न पूछै बात ११२

॥ छन्द ॥

प्रेम फाँसी फँध रहाहै मन जिन्हों का चाव सूं ।
मस्त हैं दिलदार के सँग आशिकी के भाव सूं ॥

शीश कूं ले हाथ में करते हैं जाँ बाज़ी सदा।
सिदक़ दिल सूं होरहे महबूब के ऊपर फ़िदा॥
इश्क में जो सनरहे हैं मौत सूं डरते नहीं।
बिन पिया इक सायते आराम दिल धरते नहीं॥
आसरा जिन कूं सदा इक पीव के दरबार का।
रामरूप आनन्द उन कूं सुख वड़ा दीदार का १
रैन दिन जिन कूं गुज़रती याद प्रीतम के महीं।
ऐश दुनियां के ज़रीभर सो नज़र करते नहीं॥
इश्क में ग़लतान हैं महबूब सूं मन लाय के।
तनसे चूरम चूर हैं उस तरफ हित चित भायके॥
ग़र्क़ हैं दरियाय वहदत लामका की मौज में।
गैर की दानिश्त में कुछ और से हैं औज में॥
सेरहैं अखियां जिन्होंकी देख दिलवरकास्वरूप।
पीव सूं मिलकर हुये हैं रामरूपा रामरूप॥

इति

पतिव्रता का अंग।

इस पतिव्रता अंग को ग्रंथ कर्ता ने इस तरह से कथन किया है कि जिस प्रकार पति-व्रता स्त्री एक अपने पतिही की सेवापरायण रहकर भुक्ति मुक्ति दोनों प्राप्त कर लेती है ठीक इसही तरह से परमात्मा की भक्ति करने से लौकिक अलौकिक पदार्थों की प्राप्ति सुलभ हो जाती है क्योंकि अनन्य भक्तों की एक भगवान् ही गतिहै स्वयम् भगवान् ही उन भक्तों के संपूर्ण मनोरथ सिद्ध कर देते हैं, इस पतिव्रता अंग के पढ़ने से एक परमात्मा के ही भजन भावना में भक्तजनों का चित्त दृढ़ होजाता है॥

दोहा।

पतिव्रता वाकूं कहै, पति आज्ञा की टेक॥
रामरूप वही सन्त सो, सुमरे साहिब एक १
आन पुरुष चित ना बसै, पतिव्रता है सोय॥
रामरूप एके भजे, जो कछु होय सो होय २
एक देह मन एक ही, दीन्हा एकै हाथ॥
रामरूप दोजख पड़े, जो दूजा लै साथ ३
जो आशिक हैं एक के, दूजे से क्या काम॥
रामरूप मुख दो नहीं, जो दूजा ले नाम ४

दूजे कूं धावे वही, जो दूजे का होय ॥
रामरूप के मन बस्या, पीव पियारा सोय ५
उपजावे पाले वही, वही खपावे जान ॥
तो दूजा क्यों सेइये, रामरूप हैरान ६
एक जीव एकै दिया, दूजे सूं नहीं काम ॥
रामरूप आशिक वही, जपे एक को नाम ७
बन्दा तो आशिक भया, महरवान महबूब ॥
रामरूप रब एक सूं, इश्क लगाया खूब ८
एक मूल गह लीजिये, रखिये एकै टेक ॥
दूजी राह न चालिये, यह पतिव्रत विशेख ९
दूजा अंग न लाइये, दूजा देख न नैन ॥
रामरूप रति एक सूं, सुनै न दूजा बैन १०
हँस बोलूं तो पीवसूं, जो देखूं तो पीव ॥
रामरूप वारन किया, तन मन धन अरु जीव ११
जाना नरक कबूल है, पीव पियारे साथ ॥
चाह नहीं मोहिं स्वर्ग की, रामरूप बिन नाथ १२
तन मन दीन्हा एक कूं, एकहि सेती व्याह ॥
एकै जान्या रामरूप, दूजे की नहिं चाह १३
भाँवर लीनी भाव की, गठजोड़ा गुरु ज्ञान ॥
हथलेवा हित हरी सूं, रामरूप रँग मान १४
साँचे समरथ धनी सूं, मैं जो किया उछाह ॥
सन्त जु माई बाप हैं, दीन्हा तिन्हों विवाह १५

लिया जन्म सतसंग में, जब पाया हरि पीव ॥
नहीं तो भरम्यां फिरै था, चौरासी का जीव १६
प्रेम प्रीति सतसंग सूं, पाया नेडै राम ॥
नहीं तो भरम्यां फिरै था, रामरूप बेकाम १७
लख चौरासी जौण में, बहुते कीते पीव ॥
एक पीव जाने बिना, भटक फिरा यह जीव १८
कहीं ठिकाना ना मिला, बिन साँचे भरतार ॥
रामरूप शोभा गई, जनै जनै के लार १९
परपुरुषाँ की चूनरी, ओढ़ै चढ़े कलंक ॥
अपने पी की गूदड़ी, शोभा देत निशंक २०
रूखा सूखा पीव का, खाये सरस सुरंग ॥
रंप पी का खटरस बुरा, यह बिभिचारण अंग २१
परपुरुषाँ सूं प्रीतडी, जन्म बिगोवा होय ॥
निर्फल सेवा तासूं की, भला कहै नहिं कोय २२
जनै जनै सूं प्रीतडी, करत फिरै बिभिचार ॥
रामरूप जग में कुजस, हेत न दे भरतार २३
पतिव्रता कूं पीव बिन, पुरुष न दीखै और ॥
रामरूप त्यों हरि बिना, आश न दूजी ठौर २४
हंसा तो मोती चुगैं, सिंह न सूंघै घास ॥
रामरूप के हरि बिना, और न दूजी आस २५
ब्रह्मा शेष महेश लों, सुर तेतीसों जान ॥
रामरूप सेवे हरी, नर क्यों ध्यावै आन २६

आन धर्म सूं काम क्या, अपना धर्म सँभाल॥
रामरूप रहु टेक में, साईं करै निहाल २७
सगा सनेही रामसा, और न दीखै कोय॥
रामरूप ताकूं तजै, तो कैसे सुख होय २८
कर्म कटै हरिनाम सूं, दुख दरिद्र सब जाय॥
रामरूप आफत टलै, जम की नांहिं बसाय २९
तन मन की बेदन सबै, राम भजन सूं जाय॥
रामरूप उसै छांड़ के, भर्मत फिरै बलाय ३०
सेवक हूजे राम का, तज दूजा दरबार॥
रामरूप उस एक में, जो चाहे सो त्यार ३१
जड़ सींचे सब सींचिया, डाल पात फल फूल॥
रामरूप पूजे सबै, जब पूजा हरि मूल ३२
सब काया तिरपत भई, जब मेल्हा मुख ग्रास॥
मन बुद्धि इन्द्री प्रान जो, सबकूं भया हुलास ३३
तातैं अबिगत पूजिये, छांड़ि आन की आश॥
रामरूप उस एक के, सबै देवता दास ३४
परम तत्त्व जाने बिना, मन का भर्म न जाय॥
रामरूप उस एक में, रहिये सदा समाय ३५
शिर नावै तो रामकूं, जपै तो सिरजनहार॥
रामरूप यह पतिबरत, जब रीझै भरतार ३६
मनसा बाचा करमना, एक पीव सूं लाय॥
रामरूप पिया रीझ के, लेवै कण्ठ लगाय ३७
सन्तन में साझा नहीं, मन में प्रीति न भाव॥

रामरूप उस पीव सूं, कैसे बने बनाव ३८
जहाँ भक्ति जहाँ मैं नहीं, मैं जहाँ भक्ति नाहिं॥
रामरूप तज मानकूं, तब प्रीतम गलबाहिं ३९
रहिये राज़ी रजा में, पतिव्रता है सोय॥
रामरूप आपा नहीं, पीव कहै सो होय ४०
साहिब रीझै भक्ति सूं, भक्ति बिना हरि दूर॥
रामरूप कहै भक्ति बिन, गये बिसूर बिसूर ४१
जो आशिक हैं राम के, तिन्हैं न जग सूं काम॥
रामरूप कहै तज दिये, ज़न ज़मीन ज़र गाम ४२
राजा राणा क्षत्रपति, जाय न तिनके पास॥
रामरूप हरि के हुये, जब कैसी जग आस ४३
आज्ञा पालै पीव की, सो पतिव्रता नारि॥
रामरूप करै भक्तिही, सब परपञ्च बिसारि ४४
भेद आपने पीव का, बाहर कहै न कोय॥
रामरूप पतिव्रता सो, आज्ञाकारी होय ४५
आज्ञाकारी पीव की, तन मन सेवा माहिं॥
रामरूप ऐसा कोई, जग में बहुते नाहिं ४६
आज्ञा ले जावे कहीं, बैठे ऊठै सोय॥
आज्ञा ले भोजन करै, कबहूं दुख नहीं होय ४७
हानि लाभ कछु ना गिनै, एक हुक्म सूं काम॥
रामरूप आपा तजै, सो पतिव्रता बाम ४८
सोई सुहागिन सुन्दरी, पति आज्ञा में होय॥
रामरूप ऊँची चढ़ै, भला कहै सब कोय ४९

अंतर टौना त्याग के, हुकम पिया का पाल ॥
यह विधि है बस करनकी, सदा पीव खुशियाल ५०
रामरूप ज्यों पतिव्रता, साहिब सेती दास ॥
शिष्य गुरू ऐसे रहैं, दिनदिन भक्तिप्रकाश ५१
आज्ञा मेटी पीव की, चाली मनके भाय ॥
अब कैसे भरतार कूं, मुख दिखलाऊं जाय ५२
जैसी तैसी पीव की, पीया बकसन हार ॥
रामरूप समरथ धनी, मैंही अवगुन हार ५३
मैं तो अवगुन बहुकिये, तेरी ओट भरतार ॥
रामरूप कूं राख ले, अब शरणैं करतार ५४
जो छीनै तो रामजी, जो देवै तो राम ॥
पात न हालै हुक्म बिन, राम करै सब काम ५५
रामही सेती माँगिये, रामही सबका साह ॥
रामरूप दाता वही, और सरवकूं चाह ५६
आशा रखिये राम की, और सबन सूं तोड़ ॥
रामरूप पतिव्रत यह, एक राम सूं जोड़ ५७
मीराँ गिरधारी भज्यो, करमां ने जगन्नाथ ॥
तुलसी दासा रामबिन, और न नायो माथ ५८
गहो टेक भगवान की, जो सब जग का नाथ ॥
रामरूप साँचा धणी, सो क्यों तजिये साथ ५९
कान आँख जिभ्या दई, नाक त्वचा कर पाँव ॥
रामरूप हरि सब दिया, ताको लेय न नाँव ६०
रामरूप हरिने दिया, सुत नाती धन प्रान ॥

रात जगावें पीर की, यह देखो अज्ञान ६१
रामरूप हरि महर कर, अन्न उपाया जान॥
काढ़े माप जू पीर का, यह पूरा अज्ञान ६२
बेटे दीनें रामने, पूजें सेढ़ मसाण॥
रामरूप वे कृतघ्न, क्यों न सहैं जमसाँण ६३
आन धर्म वाकूं कहै, शीश नवावैं आन॥
रामरूप भटकत फिरैं, बिन साँचे भगवान ६४
पाखण्डी वहि जानिये, निशिदिन पाप कमाय॥
रामरूप कहै रामतज, शरण आनकी जाय ६५
जब लग मन में कामनाँ, तब लग भक्ति न होय॥
रामरूप फल दे सही, परआपमिलैनहिंकोय ६६
आशा रखिये दर्श की, दूजी चाह निवार॥
रामरूप तो सब मिले, स्वर्ग मुक्ति भण्डार ६७
बिन आशा सब कुछ मिलै, आशा आश निरास॥
रामरूप आशा नहीं, सोई साँचा दास ६८
रामरूप कहै नाम बिन, कछू न कीजै चाह॥
स्वर्ग मुक्ति ऋद्धि सिद्धि लों, सब सूं बेपरवाह ६९
आन देव अमरा करे, तीन लोक दें राज॥
रामरूप कहै भक्ति बिन, मेरे किसी न काज ७०
जो हरि देवै आप सूं, सो धारूं ले शीश॥
रामरूप मुख ना कहै, तू दे कुछ जगदीश ७१
फल निमित्त हरि कूं भजै, धन पुत्तर की आश॥
रामरूप वे भक्त ना, स्वारथ ही के दास ७२

स्वर्ग आदि के फल तजैं, भजैं निरञ्जन नाम ॥
रामरूप साँचे भगत, पावैं प्रभु को धाम ७३
सहकामी ऊरा भगत, निसकामी भरपूर ॥
रामरूप तज कामना, रहै प्रेम में चूर ७४
अर्थ धर्म काम मोक्ष ए, चार पदारथ सार ॥
रामरूप जो हरिभगत, तिन्हैं न उन सूं प्यार ७५
रामरूप बैकुण्ठ लौं, चाह तजै सोइ दास ॥
बिनाराम पद और सब, जानैं झूठी आस ७६
वही शिरोमणि दास है, अनन्यभक्त निसकाम ॥
रामरूप माँगै नहीं, सुत नाती धन धाम ७७
स्वारथ की सेवा बुरी, अन्त टूट ही जाय ॥
रामरूप कबलौं रहै, कच्चे सूत बँधाय ७८
एक दोय लौं पूरिये, सह कामी की आश ॥
रामरूप कबलौंभरै, दिन में सौ सौ प्यास ७९
आखिर कूं टूटै सही, स्वारथ रूपी प्रीति ॥
रामरूप कबलौं रहै, जल में बालू भीति ८०
भक्ति करै चाहै मुक्ति, सोऊ आधा दास ॥
रामरूप पूरा सोई, रखै न कोई आस ८१
आँखों से दर्शन चहै, मुख सूं हरि को नाम ॥
रामरूप वह दास निज, करै भक्ति निसकाम ८२
कोऊ सेवै देवता, काहू राज की आस ॥
रामरूप कहै में किया, गुरू श्याम चरण दास ८३

इति

सतगुरुकृपा अंग।

इस अंग में यह वार्ता वरणन कीगई है कि सत गुरोंकी कृपाही सर्व फलदायक और पर-लोक लोक में सहायक है और गुरु की शरण हो जाने से सर्वसिद्धि प्राप्त होजाती हैं गुरु मुखी मनुष्य और निगुरे मनुष्य दोनों की भली और बुरी दशा दरशाई है कि गुरुमुखी के सर्व कर-तव्य सफल और निगुरे के निसफल हो-जाते हैं॥

श्रीगुरू चेले सम्बादे।

शिश वचन।

दोहा।

नमो नमो शुकदेव जी, दादा गुरू दयाल॥
ज्ञानसिन्धु माया रहित, ईश्वर बुद्धि बिशाल १
मान रहित आनन्दयुत, सर्व अंग दातार॥
धीरवन्त गम्भीर अति, कोई न पावत पार २
वार वार वन्दन करूं, सतगुरू विष्णु समान॥
चरणदास महाराज का, रामरूप को ध्यान ३
धन धन तुमं गुरुदेव जी, भक्तराज रणजीत॥
नख शिख भीगे प्रेम में, किया जु हरिसा मीत ४

चौपाई।

भक्ति लई जग व्याधा डारी। मन जीता आसा सब हारी॥
शुभ लक्षण हिय मांही धारे। पांचौं चोर पकरि कर मारे॥
तारन तरन कहाये तुमहीं। राव रंक कूं जानो समहीं॥
तृष्णा लोभ बड़ाई खोई। शील दया तन मन में पोई॥
चार दिशा में जसही फैला। मिलजज्ञासी पावैं गैला॥
ज्ञान भक्ति जोग के दाता। देत रहत हो दिन अरु राता॥
जबताई में हुताजू भोला। समझा नहीं न अन्तरखोला॥
उपजी मोमन में अब ऐसी। जगसैं छुट्टूं जु कहिये जैसी॥

दोहा।

सकल बिकल मनमैं रहै, चित रहै अधिक उदास॥
अब तुम किरपाही करो, राम रूप है दास ५॥

चौपाई।

द्यो बैराग जु बन्धन टूटैं। मोक्ष कपाट बेगहीं खूटैं॥
लोक भोग परमन नहि चालै। पवन बासना सूं नहि हालै॥
संतोषी हों निश्चल रहूं। चरणकमल बिनअन्त न वहूं॥
दुख सुख टारूं आनन्द लहूं। आतम पूजा हित कर गहूं॥
सदा रहूं सबका सुखदाई। तन में रहै दीनता छाई॥
पहिलै करूं सो मोहि बतावो। उपजैभक्ति सो राह दिखावो॥
मेरे मन कूं तुमही खैंचो। तुमउपदेशबिना नहीनिहचो॥
तुमहीं जगावो तो मैं जागूं। हरि के मारग कूं उठ लागूं॥

दोहा।

बाल अवस्था है महा, खेलन को अति चाव ॥
इन्द्री मन अति चपल हैं, याको थोह उपाव ६
सकल चपलता छूट कर, लागै हरि की ओर ॥
रामरूप के रूप में, तुमही लावो मोर ७
जन्म चलो यों जात है, ज्यों अँजली को नीर ॥
मम हीये उपदेश का, खैंच लगावो तीर ८

गुरु बचन।

दोहा।

उत्तर सबही बात को, शिष्य तोहि कहूं सुनाय ॥
गुरू कृपा बांछित रहो, यही जु बड़ा उपाय ९
जा पर गुरू प्रसन्न हैं, तानैं सब कुछ कीन ॥
बिन करनी साधन बिना, जन्म सफल कर लीन १०

चौपाई।

गुरूकृपा इन्द्री बस होवैं। बिषय बिपति सबहीजो खोवैं ॥
गुरूकृपा सूं मन थकजावे। सकलबिकलधोखा बिसरावे ॥
गुरू कृपा उपजै बैरागा। जावैं मान मोह सब भागा ॥
गुरू कृपा आवै संतोषा। मिटै बासना पावै मोक्षा ॥
गुरू कृपा सूं ज्ञान प्रकाशै। आतम लखै अविद्या नासै ॥
गुरू कृपा चंचलता जाई। धीरज बँधे अधीर नसाई ॥
गुरू कृपा हरि दर्शन पावे। जन्म मरण का रोग मिटावे ॥
रामरूप जो गुरुहि रिझावे। जाको यश तिरलोकी छावे ॥

दोहा ।

जो कुछ है सो गुरु कृपा, गुरू कृपा बिन ख्वार ॥
रामरूप खेवट गुरू, गुरुही तारै पार ११
मूरख को चातुर करे, गुरू कृपा बलवान ॥
देखो शबरी कूं मिलें, गुरू कृपा भगवान १२
नीच सूं ऊँचा होत है, भिक्षक सूं दातार ॥
गुरू कृपा जापर भवैं, ताके सब जग लार १३
रामरूप सब में बड़ी, गुरू कृपा की बात ॥
चौरासी छिन में कटी, नारद की विख्यात १४
नारी सब में सो बड़ी, जापर पीव खुशहाल ॥
रामरूप शिष्य सो बड़ा, जापर गुरू कृपाल १५
हरी कृपा दे कर्म फल, सो तो अचरज काह ॥
गुरू कृपा रीता भरै, करत रंक कूं साह १६
हरी कृपा कर मुक्ति दें, गुरू कृपा करतार ॥
साँचे सतगुरु कृपा की, रामरूप गति भार १७
ज्ञान भक्ति अरु जोग बल, गुरू कृपा सूं होय ॥
रामरूप लह मुक्ति पद, दुबधा रहै न कोय १८
करनी कथनी सब मिटै, जो गुरु किरपा नाहिं ॥
थोथा भुस कूटत रहै, कहा निकासै माहिं १९
आठ सिद्धि प्रापत भवैं, मुख से कहै सो होय ॥
रामरूप गुरु कृपा बिन, श्वान स्याल सम सोय २०
बहु चतुराई बहुत गुण, बहु विद्या को जोर ॥

रामरूप गुरुकृपा बिन, भटकै ज्यों ठग चोर २१
भावैं भटको तीरथों, भावे बृत्त कराव॥
रामरूप गुरु कृपा बिन, सबही थोथे चाव २२
जप तप पूजा बहु करें, करैं घनेरा दान॥
रामरूप गुरु कृपा बिन, होय नहीं कल्यान २३
पंच अग्नि तापत रहो, अरु कै उलटा झूल॥
रामरूप गुरु कृपा बिन, जाय न मनकी भूल २४
चरणदास यों कहत हैं, रामरूप सत मान॥
आगे हुवा न होयगा, बिन गुरु किरपा ज्ञान २५
काशी करवत बन बसौ, के जग देखो धाय॥
गुरु बिन संशा मुक्तिका, रामरूप नहिं जाय २६

शिष्य वचन।

दोहा।

मोहि एक संदेह है, पूछत हूं सिरनाय॥
भेद खोल कह दीजिये, परमारथ के भाय २७
जिन मनुष्यों गुरु ना किया, रहे भूल के माहिं॥
उनकी भी गति होयगी, के कछु होनी नाहिं २८
और भी सब मिल यों कहैं, निगुरा रहन अजोग॥
पुण्य अरु जप तप ना लगै, बिन गुरु करैं जो लोग २९
भर्म मिटावनहार हो, महाराज रणजीत॥
मोकूं सब कह दीजिये, निगुरी सगुरी रीति ३०

गुरु बचन।

दोहा।

जा प्रानी के गुरु नहीं, सो वह पशू समान॥
जन्म पाय गुरु ना कियो, करी पुन्य की हानि २१

चौपाई।

जन्म पाय के बिरथा खोया। अन्तसमय सिर धुनधुन रोया॥
निगुरेका दर्शन नहीं लहिये। सौंहीं आवे दृष्टि बचइये॥
निगुरे सूं सपरस नहीं कीजै। उसके करसूं जल नहिं पीजे॥
जहां निगुरा बैठे उठजावे। वा ठौरी कूं पग न छुवावे॥
आध घड़ी पाछै सुध होई। फिर बैठे तो पाप न कोई॥
रामरूप सो धनि धनि सुगुरा। तीनलोकमें ध्रगध्रग निगुरा॥

दोहा।

अपने कानों ना सुनै, निगुरे नर की बात॥
गलै लाग मिलिये नहीं, होय अपावन गात ३२
कोई कारण सहजे भवै, निगुरे का जु मिलाप॥
न्हा सुमरै गुरु देव कूं, जब वह उतरे पाप ३३
जप तप तीरथ पुण्य ही, और करे जो दान॥
गुरु बिन निरफल जायँ सब, कथा सुनै जो कान ३४
पित्रों को पहुँचै नहीं, जल देवे और श्राद्ध॥
बिच ले जायँ प्रेतही, गुरु बिन सब बरबाद ३५
खोटे कर्म कटे नहीं, हरिपद से बेमुख॥
निगुरा लोक परलोक का, कभी न पावे सुख ३६

चरणदास ऐसे कहैं, सुनो रामहीरूप ॥
निगुरे ही कूं जानिये, जीवत प्रेत स्वरूप ३७
गुरु किया श्री भगवान ने, जब लीना अवतार ॥
ऋषि मुनि देवत चाव सूं, गुरु कर जान्यो सार ३८
चन्द हजारों ऊगवे, और उगवैं रवि कोर ॥
रामरूप चांदन इता, पै गुरु बिन अँधघोर ३९
निगुरे नर की जगत में, सब विधि होवे हानि ॥
मर के जावे नरक में, यह सांची कर मान ४०
चन्द विहूनी रैन ज्यों, शील विहूनी नारि ॥
रामरूप गुरु देव विन, मनुष्य जन्म धिक्कार ४१

चौपाई ।

हानि विप्र की तपके त्यागे । हानि नारि की कुल सूं भागे ॥
हानि पृथ्वी की ऊगे नाही । हानि मनुप की गुरू बिनाही ॥
यही समझकर गुरुमुख हूजै । जिन परताप अभयपद सूझै ॥
रामरूप रणजीत कहत है । निगुरे नर जमडंड सहत है ॥

दोहा ।

गुरु बिन भर्म न भाजई, हिये न आवे ज्ञान ॥
रामरूप हरि ना जपै, भूंस मरै ज्यों स्वान ४२
गुरू बचावे नरक सूं, गुरू मिलावे राम ॥
रामरूप गुरुदेव विन, लहै न सुख का धाम ४३
सगुरे की पदवी बड़ी, या जग अरु सुरलोक ॥
गुरु मुख के दर्शन किये, मिटै पाप के थोक ४४

चौपाई।

गुरू किये उज्ज्वल बुधि होवे। पिछले पाप सभी जो खोवे॥
जन्म दूसरा वाका जानो। वाकी सूरत से पहिचानो॥
भाग बड़ेही वाके जागे। धन धन देवत कहने लागे॥
पितर प्रफुल्लित अरु धरती। पुत्र होन की शोभा वरती॥
धन धन मातपिता कुलवाका। रामभक्ति का पूजा नांका॥
जो वह भक्ति हिये में जागे। तो तब कौन बराबर वाके॥
एक अरु सौ पीढी कूं तारे। बेद शासतर कियो विचारे॥
चरणदास निश्चयकरि भाखो। रामरूप हिरदय में राखो॥

शिष्य बचन।

दोहा।

रामरूप पग पूजि कै, पूछै श्रीमहाराज॥
गुरु करिके बे सुख भवे, सो कहु कौने काज ४५
फिर गुरु की निन्दा करें, बैठ बैठ सब माँहिं॥
ऐसे दुष्टी नरन कूं, कैसे पाप लगाँहिं ४६

गुरु बचन।

दोहा।

निगुरे से भी वे बुरे, सहस गुनेहीं जान॥
बे सुख होय अभिमान सूं, महा मूढ़ अज्ञान ४७
पिछले पापन के किये, अब के यह बुध होय॥
गुरु राखै तोही रहै, नां तर सबगया खोय ४८

निगुरे संभले समझकरि, गुरु कर उतरे पार ॥
वेमुख बिगड़े गुरु तजे, सो डूबे संसार ४९
कोटि वर्ष रहै नरक में, बहोत सहै जम मार ॥
फेर धरे तन जगत में, सूकर को मुख धार ५०
दुखी रहै दुनियां विषै, कभी न पावै सुख्य ॥
हत्यारे सूं अधिक है, जो गुरु से वे मुख्य ५१
गुरु सेती सनमुख रहै, धरै हिये में ध्यान ॥
चरणों से लागा रहै, तौ चढ़िहै परवान ५२

चौपाई।

गुरु मुखकी अब चाल बताऊं। नीकी भांति सभी समझाऊं॥
सदा रहै अज्ञा के माहीं। गुरु की अज्ञा मेटे नाहीं॥
अपनी बात छिपी नहिं राखै। ज्योंकीत्यों गुरु आगे भाखै॥
याका फल यही पातक नासै। औगुण छुटै कटै जमफांसै॥
और नरन में शोभा पावै। शनै शनै ऊंचे चढ़िजावै॥
लज्जा लियैं रहैं गुरु आगे। ऐंठ ईर्षा गुस्सा त्यागे॥
अपनी प्रभुता नाहिं जनावे। सकुचा रहै दीनता लावे॥
चरणदास कहै मनमें धरिये। रामरूपशिषनाहिं बिसरिये॥

दोहा।

रामरूप सतगुरु कभूं, चिमटो नोंचै चाम ॥
तद्यपि टेक न टारिये, गुरुही को जप नाम ५३
गुरु आगे नान्हां रहै, बहुत न बोलै बोल ॥
सीखन ही के समय में, अन्तर की सब खोल ५४

चौपाई।

गुरुका आसन और खड़ाऊं। नाहिं उलंघै धर्म बताऊं॥
काया छाया बस्तर जानो। ताहि उलंघै पातिग मानो॥
जो स्नान का पानी होवे। नाहिं उलंघै नीके जोवे॥
आज्ञा नाहिं उलंघन करिये। सभीभांति ले सिरपर धरिये॥
शुध हिरदा कर सेवन कीजै। हो निहकपट जुतनमनदीजै॥
हरि समान गुरुही को जाने। ऐसी निश्चय मन में आने॥
गुरु आगे डंडोत न लेवे। गुरु आगे उपदेश न देवे॥
यह मरयाद सदा चलि आई। मो कूं श्रीशुकदेव बताई॥
कछू कछू तोकूं समझाई। हिये राखै हो भक्ति सवाई॥
चरणदास कहै रामही रूपा। हरि रीझै फल देह अनूपा॥

दोहा।

रोम रोम गुरुही जपै, गुरुही सूं करि हेत॥
ध्यान गुरू का किये ते, हरि निर्भय पद देत ५२

छप्पै।

गुरु की सेवा करो प्रीति गुरु ही से ठानो।
गुरु संगी दोउ लोक गुरू सम मीत न जानो॥
गुरु पर तन मन वारि रहो गुरु ही सूं राता।
गुरु कूं ईश्वर जानि मुक्ति पद के गुरु दाता॥
तिरलोकी में गुरु बड़े गुरू समान नहीं कोय।
तातैं गुरु ही पूजिये रामरूप शिष्य सोय॥

दोहा ।

दूर देश हो शिष्य कभी, सेवे मन चितलाय ॥
निकट होय तन सूं करै, रामरूप हर्षाय ५३

शिष्य बचन ।

दोहा ।

गुरुकरि फिर सतगुरु करै, याको कहा बिचार ॥
रामरूप आधीन कूं, कहिये गुरू निहार ५४

गुरु बचन ।

दोहा ।

पहिला गुरु मरयाद का, छोत उतारन हार ॥
दूजा सतगुरु ज्ञान घन, जीव करै भव पार ५५
जव लग सतगुरु ना मिलै, तव लग तपकी हान ॥
भक्ति जोग पावत नहीं, हिये न आवे ज्ञान ५६
सतगुरु विन भटकत फिरे, मुक्ति न पावे पंथ ॥
भक्ति बीज को बोय है, कौन मिलावे कंथ ५७
कनफूंका गुरु हद्द का, जगत दृढावन हार ॥
राखै प्रवर्त ही बिषय, नाहिं उतारे पार ५८
आन धर्म अस्थाप करि, आन धर्म डिढ देत ॥
जिभ्या कारण आपनी, द्रव्य लाभ के हेत ५९
सतगुरु वाकूं जानिये, जगत दिखावें थोथ ॥
परमेश्वर पहिंचान कूं, करत ज्ञान उद्दोत ६०
तन तेरा है नाव सम, भवसागर के माहिं ॥

सतगुरु खेवट रूप हैं, तारेंगे गहि बाहिं ६१
जिन मरयादा गुरु किया, सतगुरु किया न ढूंढ़ ॥
ते नर अज्ञानी रहे, जगत फँदे वह मूढ़ ६२
तातैं मैं नर सूं कहूं, सतगुरु शरणी आव ॥
जिनसे ले तत ज्ञान ही, आवागवन मिटाव ६३
देखो रामानन्द ने, मरजादा गुरु त्याग ॥
राघवानन्द सतगुरु किये, जब गये संशयदाग ६४
राजा परिक्षित चतुर ने, पहिला गुरु तज दीन ॥
मुक्ति काज के कारणैं, सतगुरु शुकमुनि कीन ६५
पहिलैं गुरु पूरे मिलें, सकल मिटावें चाह ॥
तो फिर गुरु काहे करैं, नसी हिये की दाह ६६

कुण्डलिया ।

पहिले ही गंगा मिलैं तो कूँवे क्यों जाय ॥
न्हैइये झोबा झोब हो तन की तस बुझाय ॥
तन की तस बुझाय गंग ज्यों सतगुरु भाई ॥
तन मन भेट चढ़ाय लेहु परवी चित लाई ॥
कूप त्याग गंगा परस जाग्य बात्त यह जानि ॥
यों गुरु सूं सतगुरु बड़े रामरूप पहिंचानि १

दोहा ।

थोथे गुरु जग में घने, बात बनावनहार ॥
औरन कूं कैसे भरैं, आप फिरत हैं ख्वार ६७
ऐसे गुरु जग में बहुत, लिये मान धन चाह ॥

रामरूप सतगुरु कोई, मेटे उर की दाह ६८
रामरूप सतगुरु वही, साँचा बेपरवाह ॥
ऐसा गुरु क्या तारही, आप फंसा जग चाह ६९

कुण्डलिया ।

आप जगत बन्धन बँधे औरन कूं कहै त्याग ॥
पर कूं क्षमा दृढावई अप उर लागी आग ॥
अप उर लागी आग कहो कैसे को माने ॥
सूम कहै करि दान बेसवा सील बखाने ॥
सुनै सोई हाँसी करै हिये न लावे कोय ॥
रामरूप शिष क्यों जगे गुरुही रहिया सोय २

छप्पै ।

ठोठ गुरू जो करे रहै नित ज्ञान पियासा २
जैसे खारी कूप गाय कातर की आसा ॥
मठा धोरी देहे नारि खोटी दुख दाता ॥
तैसे कच्चा वैद्य करे प्राणों की घाता ॥
रामरूप गुरु सो भला दरबारीहरिधामका ॥
ऐसा गुरु क्या कीजिये चेराधनअरुबामका ॥
सतगुरु कीजे देख वैष्णव ज्ञानी पूरा ॥
हो ध्यानी स्थिर बुद्धि नहीं हो चञ्चल कूरा ॥
राग द्वेष सूं रहित जगत से न्यारा खेलै ॥
करे अगम की सैल पक्ष में मन ना मेलै ॥

चिदानन्द के बीच में सदा रहे लवलीन ॥
रामरूप सतगुरु सोई जगतारण परवीन ॥

दोहा ।

सतगुरु सुख दे जगत में, अन्त समय दें मुक्ति ॥
दोनों लोक सहाय हों, रहैं सदा संजुक्ति ७०
सतगुरु महिमा अगमगति, जानि सकै नहिं कोय ॥
जो कोइ पावै भेदही, उन्हीं सरीखा होय ७१
अँधियारे घर चांदनां, सतगुरु जी के बोल ॥
भरम कर्म कोई ना रहै, निकसजाय सब गोल ७२
कहा भेट उनकी धरूं, रहूं बिचार बिचार ॥
सातद्वीप चौदह भवन, देखा दृष्टि उघार ७३
एक बचन सर बर नहीं, हिरदय देखा तोल ॥
आँखैं सकुची सिरनया, दिया जुनाम अमोल ७४
रामरूप निश्चय करो, बदला दिया न जाय ॥
सतगुरु किरपा देखिये, अधिकी सैं अधिकाय ७५

इति ॥

बैराग चितावनी अंग

इस अंग में मनशिक्षा उपदेश का वर्णन करके पश्चात् यह संसार जो सत्य प्रतीत हो रहाहै वास्तवमें यह अनित्य नश्वर(नाशमान) यह सिद्ध करके जीवात्मा को भगवान् की भक्ति करने से ही आवागमन अर्थात् जन्म मृत्यु से निवृत्ति होजाती है. यह निश्चयात्मक करके दिखला दिया है।

दोहा।

वड़े भाग तेरे जगे, पाई मानुष देह ॥
रामरूप यही दाव है, हरि सुमरण कर लेह १
जो अव राम न सुमर है, तो होवे बहु ख्वार ॥
ऊंचे सूं नीचे गिरे, फेर कहाँ यह बार २
झूठ जगत की प्रीति है, झूठा यह तन जानि ॥
झूठे में क्या फँस रहो, मेरा मेरा मान ३
देह नीर के झाग सम, जीव चिड़ी सम जानि ॥
जो वैठै डूबै मरै, निश्चय होवे हानि ४
जीव देह की प्रीति ही, सुपने का सा खेल ॥
रामरूप निश्चय करो, यह झूठा सा मेल ५

चौपाई।

यों लोगन का मेल सगाई। सदा रहै नहीं मित्तरताई॥

आखिर बिछुरै जानि बसेखैं । क्यों नहिं चेतत मूरख तेकैं ॥
फँसा मूढ़ जग झूंठ मँझारे । कारण कौन अचेत हुवारे ॥
रात दिना तव आयु घटावे । मौत डोरि कूं खैंचत लावे ॥
छीण आरबल होती जावे । मौत नजीक चलीही आवे ॥
क्यों परलोक सुधारत नाहीं । रामरूप सुमरो नहिं साँई ॥

दोहा ।

जानत ना परलोक कूं, तिनकी बुधि भइ छीन ॥
वे जानत हैं देह कूं, जन जन के आधीन ६
वैसों के मारग चलै, सो भी विगड़े आप ॥
शुभ करमन कूं छोड़ कर, बहुत लगावे पाप ७
चलै भक्त की चाल जो, अरु मन जीता होय ॥
उनकी सेवा कीजिये, मुक्ति पूछिये सोय ८

चौपाई ।

वे जो तोकूं चाल चलावें । जिस मारग की राह लगावें ॥
चेतन होकर वामे चलिये । इत उतकूं कहुं नेक न हिलिये ॥
सांच डगर में मनकूं दीजे । झूठ कपट का संग न कीजे ॥
जो कोइ मनुष्य आज कूं देखे । कल कूं बिसर रहो गहटेके ॥
कहै कि कल जाने क्या होई । सुख करलीजे आजहि सोई ॥
खावे पीवे हँसे हँसावें । मौत चिन्त मन में नहिं लावे ॥
जाने ना मरिके कहँ जाना । ऐसों से मत करो पिछाना ॥
छाया बिना बेत कूं त्यागो । यों बिषयींके सँग मतलागो ॥

दोहा।

झूठ कपट छल भगल में, उमर गँवावत लोग॥
ताऊपर कहै चतुर है, करैं विषय का भोग ६
करैं विषय का भोग ही, कर कर उमँग हुलास॥
नरक परत हैं चाव सूं, रामरूप सुनि दास १०

चौपाई।

वे नर अधिक सयाने जानों। करैं राति का धौसही मानों॥
आछे करम तास में करई। ध्यान धनीका हिरदय धरई॥
भक्षन मौत करत है ऐठें। सोवत जागत चलते बैठें॥
ऐसे मौत रहत नित लागी। तासूं रहै जु निडर अभागी॥
रहै अचेत नहीं सुध राखै। सतसंगतिकी सुनै न साखै॥
ज्यों भिड़हा बकरी ले धावै। तैसे मौत जीव ले जावै॥
ताते डरिये दिन अरु राती। रामभक्त कूं कीजे साथी॥
दीपक धर्म बालते रहिये। राह अँधेरी में जो चहिये॥
निश्चय चलना होगा भाई। मात पिता नहिं संग लुगाई॥
जो कुछ करै सुसंग तुम्हारे। चरणदासकहै क्यों न बिचारे॥

दोहा।

रामरूप हरि नेह कर, परिहरि सकल उपाधि॥
खोटे कर्मन कूं तजो, भले कर्म आराध ११

चौपाई।

चौरासी के दुख सूं डरिये। जठर अग्नि में काहे परिये॥

बड़े कष्ट कर यह तन पायो । पहिले चौरासी फिर आयो ॥
वड़ भागन नर देही पाई । अब अचेत मत हो जग आई॥
भक्ति करो के तपही कीजे । पाप उपाधि सबै तज दीजे ॥
अवधि आपनी कूं पहिचानो । विन लगाम का घोड़ा जानो॥
चरणदास कहै रामहि रूपा । ज्यों ठहरे नहिं सूरज भूपा ॥

दोहा ।

ऐसेही यह अवधि जो, इकरस बीती जाय॥
कोटि जतन कोई करो, नेकहूं ना ठहराय १२

चौपाई ।

हरि सों बिमुख रहै जो कोई । तो वाकूं बहुतें दुख होई ॥
आयु घटै जबही जम आवैं । बाँध पकड़ बहु त्रास दिखावैं ॥
धरमी के रक्षक सुखदाई । वासेती बहु करै भलाई ॥
पापी के गल संकल डारै । भांति भांति की बहुते मारै ॥
ऐसे ही जमपुर ले जावैं । ह्वांतौ बहुतै कष्ट दिखावैं ॥
पीप रक्त के कुंड जो होवें । उनमें वाकूं बहुत डुबोवें ॥
बड़े गीध लोहे सी चोंचैं । पतितन के तन कूं बहु नोचैं ॥
अरु तरुवर के तीक्षण पाता । वा तल खड़ा करै दुखदाता ॥
पात झरैं वा तनकूं काटैं । त्रास सहै पापन के साटैं ॥
जब क्या होय बहुत पछिताये । रामरूप के विन गुन गाये ॥

दोहा ।

बैतरनी नदी बिषै, अरु जलती सी रेत ॥
पतितन कूं जम किंकरा, तामें गोते देत १३

चौपाई ।

पापी नर ऐसे दुख पावें । फिर चौरासी के मधि जावें ॥
बारी भर पावैं नर देही । तोभी करैं न रामसनेही ॥
मौढूं नर ए कछू न जाना । अपने करता कूं न पिछाना ॥
देखा देखी तू मत भूलै । इनके सँग क्यों खोवे मूलै ॥
अब हरिसुमरन क्यों ना लागे । दीरघ भय आवत तो आगे ॥
वा डर में रंचक सुख नाहीं । मृत्युको जान आपनै ताईं ॥
अपने मन में यों तुम जानो । जम ले जैहै सांझ बिहानो ॥
ताते हरि मारग में आवों । ऐसी देह न अफल गँवावों ॥
सजन मित्र अरु तेरे भाई । तो देखत जम ही लेजाई ॥
कुछ लीये कछु लेहैं आगे । मनै करै नहिं रहै अभागे ॥
ऐसेही तोकूं ले जैहै । कुटुँब लोग नहिं संग चलैहै ॥
रामरूप चरणदास कहत है । अपना कीया संग रहत है ॥

दोहा ।

जब आवेगी मृत्यु ही, छिन में छूटै देह ॥
रामरूप हरि सुमर के, सांचा करले गेह १४

चौपाई ।

मृत्यु समय नैतर फिर जैहै । दोनों कान जु बहरे ह्वैहै ॥
अब सूं क्यों नाहिं हरि गुन गावै । मृत्यु समय कछु ना बनि आवै ॥
जो कुछ करै सो अब कर भाई । जाय बुढ़ापे में सत्याई ॥
तन की शोभा सब लुट जैहै । मौत दिखाई सौंही दैहै ॥
रामभक्ति अबही कर लीजै । छिन छिन आयु घटै तन छीजै ॥

जम तव देह कोऊ मिस करकै । तोड़ अचानक डोरे घरकै ॥

दोहा ।

तातै चेत शिताब ही, करो वड़ा हरि मीत ॥
तो तन में बहु भेड़िया, गहि शुभ कर मजुरीति १५

चौपाई ।

कुटुँब मित्र तेरे सब वैरी । जग में सुरति फँसावें तेरी ॥
अपने कारज तोहिं लगावें । रामभक्ति की डगर भुलावें ॥
जग धन में राखै मन तेरा । मोह जाल सूं तोकूं घेरा ॥
तू नहिं समझै हिय का आंधा । विषय स्वाद पांचों से बांधा ॥
ऐसा क्यों नहिं द्रव्य कमावे । धाडी लुटै न चोर चुरावे ॥
ताकूं कोई बन्धु न बांटै । क्षीण होय नहिं हाटै बाटै ॥
राजा डांडन ह्यां रह जावे । अन्त समय तोकामहिआवे ॥
संग चलै बहुतै सुख देवे । ऐसे धन कूं क्यों नहिं सेवे ॥
काहू का साझा नहिं यामें । टोटा कबहुँ न आवे तामें ॥
रामरूप चरणदास सुनावे । अपना कर कर ही समझावे ॥

दोहा ।

जठर अग्नि वलती रहै, जब लग तो हिय माहिं ॥
तब लग हरि की भक्ति कर, ढील कीजिये नाहिं १६

चौपाई ।

माता पिता पुत्र अरु भाई । सँग न चलैं धन वह सँग जाई ॥
रूपा सोना रतन कमावै । वाही लोक में काम न आवै ॥
जप तप धर्म सुकर्म ही केरा । लोक प्रलोक सँवारै तेरा ॥

तूभी जानत है यह नीके। भूल रहा सुख इन्द्रिनही के॥
ऐसी भूल बुरी है भाई। रीते जैहो जन्म गवांई॥
रामभजन कर उज्ज्वल नीका। निश्चय संगी तेरे जीका॥

दोहा।

रामरूप हरिभक्त विन, और न संगी कोय॥
सोच समझ कर देख ले, मन विचार करि सोय१७

चौपाई।

तू कभी जाने को लेखत है। पाप पुण्य कूं को देखत है॥
छिप कर करै मूढ़ अरु आंधा। दिख पावै तो जाऊं बांधा॥
तू जानत है कोऊ न देखे। देखे सब ठां राम बिसेखे॥
देखे पवन अग्नि अरु पानी। चन्दा सूरज धरती रानी॥
ये सब तेरी साख भरत हैं। काहू की कुछ ना राखत हैं॥
ये सब साक्षी दिन अरु राती। छिन नहिं बिछुरैं नितही साथी॥
गुप्त प्रकट जो कर्म करत हैं। तिन्हैं देवता तकत रहत हैं॥
तातें ही शुभ कर्म करीजै। खोटे मारग कूं तजि दीजै॥

दोहा।

जमपुर ही की राह में, दुख वैरी वहु भांति॥
तातें तू हरिभक्ति कर, तव पावै सुख सांति १८
सात पांच मन दूर कर, राम भक्ति कूं लाग॥
सोवो जग की ओर सूं, हरि ओरी कूं जाग १९

चौपाई।

अब तू भया वर्ष षोडश का। भेदी होन लगा सब रस का॥

दो अठवारे बीते जाई । तीजा पहुँचा है अब आई ॥
धर्मपन्थ में क्यों नहिं आवै । क्षीण आर्वल होती जावै ॥
भय अरु कष्ट महा जम लावैं । पकड़न तोहिं चलेही अवैं ॥
ऐसा सावधान क्यों न होई । तोहि दबाय सकै नहिं कोई ॥
मैं जो कहा हिये में धरिये । जोकुछ किया जाय सो करिये ॥

दोहा ।

जग धन का संग्रह करै, औरन ही के काम ॥
धर धर के मरजात है, संग न चालै दाम २०
जिन जिनकी प्रारब्ध का, सो सो लैंगे बांट ॥
हाथ पसारे ही चला, कछू न बांधा गांठ २१
जो धन होवे जगत का, सो दीजे बरताय ॥
सो निश्चय शुभ कर्म है, यह विरथा नहिं जाय २२

चौपाई ।

घर का मोह सोई है रसरी । सब संसार बँधो है गँसरी ॥
बुद्धिमान नर सोई थापा । रसरी काट छुटावे आपा ॥
मूरख काट सकै नहिं वाकूं । अपनी जीवन जाने ताकूं ॥
जो कोइ जानै मोकूं मरना । कुटुँब द्रव्य उसकूं क्याकरना ॥
यह जग आंधा कूप पहिंचानो । तामें गिरा आपकूं जानो ॥
अपने मनमें यही बिचारो । बड़े गए कहां याहि सँभारो ॥
ऐसेही मोकूं भी जाना । योंही समझै सोई सयाना ॥
कल करना सो कीजे आजा । ढील न करिये शुभही काजा ॥

दोहा।

मध्य करै सो भोर कर, चला जु आवै काल॥
भूलै मत पूरी उमर, मौत बिछाया जाल २३
बार बार ताते कहूं, साधुन को कर संग॥
निकस अविद्या तिमिर सूं, जगत महा बे ढंग २४

चौपाई।

जब प्रानी की देह छुटत हैं। कुटुँब लोगसब आहि लुटत हैं॥
धरा ढका घर देत छुटाई। डार अग्नि में देह जराई॥
अपने अपने घर कूं जावै। झूठे संगी काम न आवै॥
तीन काल में अपने नाहीं। ऐसा संगत जो जग माहीं॥
राह धर्म ही की में आवो। जो तुम अपना भला जु चाहो॥
सोई पहुँचै पद निरबाना। रामरूप सुमरे भगवाना॥

दोहा।

अरु या मनुषा देह कूं, मुक्ति नसेनी जान॥
खोवे ऐसी पाय के, सो जानो अज्ञान २५
या सीढ़ी में जो गिरै, दुर्लभ पावे फेर॥
सावधान हो जो चढ़ै, पहुँचै जाय सबेर २६
मात पिता सुत नार कूं, तज कीजे हरि नेह॥
जन्म जन्म ये तो मिलै, हरि हित याही देह २७

चौपाई।

यह विचार कीजे मन माहीं। धनधन कुटुँब भयो जग आई॥
जब जब जन्म धरत यह लोई। याके संग कुटुँब हीं होई॥

लाखन बाप भये सुत नारी । लाखन भइया अरु महतारी ॥
हम उनके वे कभु न हमारे । आवागवन लगी इकसारे ॥
तातें एक ठौर नहीं रहै । तज बिचार दुख काहे सहै ॥
वे न हमारे हम नहिं उनके । ये बन्धन सब पाप अरु पुन के ॥
जनम अकेले ही ले आवैं । फेर अकेले ही उठ जावैं ॥
कुटुँब काज खोटा कम करहीं । इत वित दोऊ लोक दुख भरहीं ॥

दोहा ।

बुरे भले कम करत हैं, आपनहीं के काज ॥
कै वे भुगतो काल कूं, कै वे भुगतो आज २८

चौपाई ।

देह धरे का फल वे पावैं । विषयभोग जगके बिसरावैं ॥
कछू वस्तु की चाह न राखैं । जब भाषैं तब हरिही भाखैं ॥
वैरी अरु मित्र नहीं जानै । सब में आतम इक पहिंचानै ॥
चाहै मुक्तधाम कूं पाऊं । भवसागर में बहुरि न आऊं ॥
तो जीतै मन सकल पसारा । जगभोगन सूं होय नियारा ॥
जिन जगत्यागा भय गए सारे । बिपत आपदा तजभए न्यारे ॥

दोहा ।

विषय त्याग हरि कूं भजै, रहै जहां लौ लाय ॥
रामरूप के रूप में, जवै मिलत है जाय २६

चौपाई ।

बन्धन बँधे नेह के कीये । मुक्ति होय सबके तजदीये ॥
हरिकी ओर मनुष्य जो आवै । तज संसार परम सुख पावै ॥

जा आनँद का वार न पारा। सब दुख छूटैं जगके भारा॥
सरवर करैं न छत्तरधारी। तिनकीमहिमाअधिकअपारी॥
तीनलोक में दीखै ऊंचे। महा पवित्तर मन के सूचे॥
तिनके दर्श किये सुख होवै। तनमनकी व्याधा सबखोवै॥
सन्तके दर्श जाय भ्रम जीको। सन्तप्रभाव विनासब फीको॥
धन्य साधु हरिजी के प्यारे। जग कूं त्याग हुये जो न्यारे॥
देवत देख बहुत ललचावै। नरपति सुरपति शीश नवावै॥
लोक परलोक दोऊ में शोभा। दिनदिननिकसबड़ाईगोभा॥
अरु कबहूं जग सूं हित लावै। उठै वासना मन खिडजावै॥
डिगै गिरै दुनिया के माहीं। रामरूपसूं हित रहै नाहीं॥

दोहा।

कुटुँव घेर मन्दिर करै, करै द्रव्य का ध्यान॥
रामरूप वे जानिये, महा मूढ़ अज्ञान ३०
कुटुँव त्यागि विरकत भवै, फिर आवै घर माहिं॥
ऐसे मूरख पतित की, संगत कीजै नाहिं ३१
ऐसे की संगत किये, छुटै धर्म की बाँह॥
सुपने हूं मिलिये नहीं, भूलन छूंजै छाँह ३२
बिगड़े सूं मिल बिगड़है, यह निश्चय कर बात॥
परखन की मन में कबहुँ, बस देखो एक रात ३३
वे कुनबेकी वन्ध में, कहैं बिगड़ते बैन॥
आठ पहर साठों घड़ी, उन्हैं न कबहूं चैन ३४

चौपाई ।

जैसे गज जंगल में रहता । अपने चाहे आनँद करता ॥
पकड़ा आया बस्ती माहीं । वे सुख स्वप्नेहूं कहुँ नाहीं ॥
जैसे मछरी जल सूं काढ़ी । तरफनलगी पीर हिय बाढ़ी ॥
जैसे पंक्षी पिंजरे राखा । दुखीरहै कछु बसनाहिंवाका ॥
ऐसे नर वह भवन मँझारी । पावत है दुख महा अपारी ॥
धृक २ हरि तजि फिर आया । सुखचाहा सुखनेक न पाया ॥
नरतन पायके बिरथा खोया । अन्तसमय शिर धुन २ रोया ॥
तो बिरकतकूं ऐसे चाहिये । गिरहीकेसँगमिलनहिंरहिये ॥

दोहा ।

मोह भरे अरु लोभ के, उनके विषयी बोल ॥
उलझ रहै मिलै घने, सब चालन में झोल ३५
ग्रेही के ऐसे बचन, निरा मोह का रूप ॥
उनकी सीख न लीजिये, बात कहत हूं गूप ३६
सीख जु लीजे साधु की, दोऊ लोक फल होय ॥
जीवत सुख परलोक गति, दुविधा रहै न कोय ३७
रामरूप सतसंग बिन, और नहीं कुछ सार ॥
भक्त खेत जबही बचै, सत संगत हो बार ३८
तातें संगत ही करो, साधु संग ही सार ॥
दुःख रूप यह जगत है, ताकी चाह निवार ३९

चौपाई ।

जगत् समुन्दर भयका कहिये । बुद्धिमानकूं फँसा न चहिये ॥

पाल जू याकी मनकूं जानो। स्परस याकां टापू मानो॥
मच्छ बड़ा रसना का रस है। गन्ध कीच में जावे फँस है॥
शब्द नीर ता माहिं भराहै। रूपभँवर डरलगे खरा है॥
सो वैकुण्ठ राह के माहीं। रोक रहा जानेदे नाहीं॥
जो संतोष जहाज बनावे। सत्य मेखैं ता माहिं जड़ावे॥
चम्पू धर्म करै जल काढ़ै। तासूं पानी पाप न बाढ़ै॥
लंगर त्याग बांधिये जैसे। पार सिन्धु के उतरै ऐसे॥

दोहा।

सो उपाव करते नहीं, ऐ अज्ञानी लोग॥
रैच जगत व्यवहार में, फँसे विषय के भोग ४०

चौपाई।

जैसे रोगी रोग बढावे। जासूं बढ़ै सोई पुनि खावै॥
सो वह खातेही सुख लावै। बढ़ै अजीरन बहु दुख पावै॥
ऐसे इन्द्रिन के रस सुखिया। बहुर होत है बहुते दुखिया॥
भवै कुम्हार चाक ज्यों वेही। चौरासी भरमत है तेही॥

दोहा।

चौरासी भयभीत हैं, तामें कष्ट अपार॥
देही कांपत है महा, जब मन करै बिचार ४१
चार खान के बीचहो, निकसत है जब जीव॥
विना भक्ति फिर फिर गिरै, भक्ति मिलावे पीव ४२
चार खान जो सृष्टि की, जानत है जन कोय॥
जरायज अंडज स्वेदजी, चौथी उदभिज होय ४३

चौपाई ।

वही जरायज उदर सूं उपजै । पशूआदिदे मनुष्य जु निपजै ॥
दूजी अंडज खान बिचारे । मोर आदि पंक्षी भये सारे ॥
तीजी स्वेदज पिंडों माहीं । पिंडे बिना जु उपजै नाहीं ॥
जूम आदि खटमल हैं जैसे । लट मच्छर कीड़ा हैं तैसे ॥
चौथी उदभिज यही जु जानो । प्रकटे पृथ्वी से पहिंचानो ॥
पर्वत आदि खान कई देखो । वृक्षबेल अरु घास विशेखो ॥
चार खान ये तोहिं बताई । भिन्न भिन्न सब खोल दिखाई ॥
जो हरिभक्ति करै नर कोई । ताको उपजन फिर नहिं होई ॥

दोहा ।

कथा सुनै संगत करै, सतगुरु को हिये ध्यान ॥
सो निश्चल पद थिर भवै, आवागवन की हानि ४४

चौपाई ।

शास्त्र सुनै न जग नर लोई । जिन की मैलीही बुधि होई ॥
कथा न साबुन लागा कोई । सतसंगत के नीर न धोई ॥
ताते चिकटी जगमल माहीं । याही ते उजली भई नाहीं ॥
जगही कूं सांचा कर जाना । कुटुंब मित्रहीसूं हित ठाना ॥
जो कोइ उपजै अरु मर जावै । हानि लाभमें दुख सुख पावै ॥
उनकी तो धुंधली मति जानो । रणजीत कहैं रामरूप पिछानो ॥

दोहा ।

बीती कूं सोचे घना, कुछ नहिं आवे हाथ ॥
हिया जलै बिन आगही, किये मोह का साथ ४५

चौपाई।

बीती के गुण याद न करै। औगुण जान ताहि परिहरै॥
अच्छा मनुष्य वस्तु थी पासा। दोनों की त्यागै जो आसा॥
वाके औगुण सोचत रहै। मरै गिरै तो नाहीं दहै॥
आगे हुता विभव जस राजै। याद करै तो दुख नहिं भाजै॥
जो कुछ आवै अरु चलिजावे। ताकूं जाने सहज सुभावे॥
मरे गए का शोच करैही। रामरूप सुन दुःख भरैही॥

दोहा।

मूये की औषधि यही, वाकूं दे बिसराय॥
ज्ञानी जन वही जानिये, निसचल मति ठहराय ४६

चौपाई।

सोचै कलपै सो अज्ञानी। तीन बस्तु ये ना ठहरानी॥
ज्वानी जोवन जग में जीवन। मित्रसंग वससुखरस पीवन॥
ज्ञानी मन बुधि ह्यां नहिं सानैं। इन वस्तों कूं थिर नहिं जानैं॥
थिर नहिं जासूं हित न बढ़ावै। तो काहे कूं दुख सुख पावै॥
दुख सुख तजै रहै लवलाई। उनही मनुष्यों मुक्ति जु पाई॥
दुख सुख परै परम पद होई। ज्ञान द्रव्य सूं पावै सोई॥
जग का द्रव्य नरक ले जावै। जीवत कष्ट अधिक दिखलावै॥

दोहा।

आवै बहुतहि कष्ट सूं, राखन में बहु दुख॥
रामरूप निश्चय करो, या धन में नहीं सुख ४७

चौपाई।

जाते दुःख बहुतही पावै। ठग धाड़ी के चोर मुसावै॥
धन बाढ़ै ज्यों दुख बढ़िजावै। नैक न चैन क्लेश उपावै॥
वह नहिं जाने जड़ अज्ञानी। धनके माहिं रहै मति सानी॥
मुये न छूटै धनकी आसा। नाग होय जा बैठे पासा॥
बुद्धिमान जो पहिले त्यागै। संतोष द्रव्यमें मन अनुरागै॥
बिनस वान सूं प्रीति न कीजै। याकूं छोड़ राम धन लीजै॥
जन्म पाय जगमें जो खोवे। पशु वन कीसी वा गति होवे॥
घास भखै घासे मन धारै। सिंह अचानक वाकूं मारै॥

दोहा।

ऐसे नर जग में रचो, नेक न सुरत सँभाल॥
आन अचानक मारहै, नाहर की सम काल४८

चौपाई।

मरत मरत जग चाह न छूटै। आवत जात कालही लूटै॥
जग छूटन को जतन बिचारो। राम नाम हिय माहीं धारो॥
आयुर्दा ऐसे चलि जावै। सिंधुमाहिं ज्यों बोहित आवै॥
रात दिना तव आयु घटावै। तू जाने मो देह बढ़ावै॥
पाख अँधेरा अरु उजियारा। भखे जात है जन्म तुम्हारा॥
तौ तू चेत हेत कर हरिसूं। डरते रहो मौत के डरसूं॥
जो कीजै हरिही के काजै। ताते मुक्ति होय दुख भाजै॥
जो कोइ कर्म करै फल चाहै। आवागवन कूं सोइ बिसाहै॥
भले कर्म देवत तन पावै। बुरे कर्म चौरासी जावैं॥

बुरे भले दोनों सम करै । जग में आय मनुष्यतन धरै ॥
भले बुरे कर जतन छुटावै । ब्रह्म होय वा माहिं समावै ॥
चरणदास कहैं तोहिं चिताऊं । रामरूप सुनि परगट गाऊं ॥

दोहा ।

जन्म मरण में कष्टही, चौरासी दुख भार ॥
मूरख याही में रहै, चतुरा माने हार ४६

चौपाई ।

बुद्धिमान नर ऐसा कीया । राम भक्त में मनकूं दीया ॥
मूरख ने जग सांचा जाना । ताही के सँग जन्म सिराना ॥
ऐसा जन्म बहुर कब पावै । भरमत भरमत बारी आवै ॥
वाजा मूरख यों मन लावै । साधु भये भोजन को खावै ॥
रोग होय तो औषधि कित है । दुखसुख माहीं संगनमितहै ॥
रामरूप सुन कहै रणजीता । मूरख के मन ऐसा चीता ॥
वह मूरख समझै नहिं बाता । राम बड़े सूं लागै नाता ॥
सब बातन के हरि रखवारे । जोकोइ उनकी शरण सँभारे ॥
सन्तन ही हित हरिसब कीना । ताकूं बिसरे सो मत हीना ॥
आगे जोभये ऋषिमुनिध्यानी । बूढ़े तक औषधि नहिं जानी ॥
सदा सुखी रहै संगत बासी । जो जग सेती भए उदासी ॥
दुखी बहुत जगके व्यवहारी । काहू के सँग सुत अरु नारी ॥
कोऊ अकेलाही दुख पावै । परसुखदेख अधिक ललचावै ॥
कोऊ निरधन धनकी इच्छा । कोऊ डोलत मांगत भिक्षा ॥
कोई घोड़े की असवारी । कोई फौज हाथी अम्बारी ॥

कोई गरीब कोइ है मुखिया । सबहीकूं तुम जानौ दुखिया ॥
काहू कूं पुत्तर दुख देवै । सुत काजै कोइ पत्थर सेवै ॥
माया जाल जगत कूं जानो । समझवचासोइअधिकसयानो॥

दोहा ।

कोई कहै मोहिं सुख घना, कोई कहै दुख भार ॥
ऐसे ही मरजात है, मनुषा देही हार ५०
जगत कलह का रूप है, सुख नाहिं नेक विचार ॥
काम क्रोध की आग में, जला जात संसार ५१
जप तप ध्यान उजाड़ दें, काम क्रोध से दुष्ट ॥
सावधान इन से रहो, धारे रहो जु मुष्ट ५२
इन दो सें रक्षा करो, अपने तप के खेत ॥
रामरूप सूं कहत हैं, चरणदास कर हेत ५३

चौपाई ।

काम क्रोध दोउ दुर्जन भारी । जन्म जन्म राखत है ख्वारी॥
एही धर्म नष्ट कर डारैं । लेजा डारैं नर्क मँझारैं ॥
इन दुर्जन कूं दूर भजावै । क्षमाशील घटमाहिं बसावै ॥
चौरासी में ये भरमावैं । निश्चय नर्क माहिं ले जावैं॥
ताते इनसूं कर छुटकारा । रहै सदाही तन सूं न्यारा ॥
बिनसवान तन रोग भराही । मल मुत्तर दुर्गन्धखराही ॥
हाड़ चाम लोहू अरु मांस । स्वांस स्वांस में होवे नास ॥
यासूं प्रीति करै अज्ञान । मूरख लेवै आपा मान ॥
देही पाप लगावन हारी । संग चलै नहिं होजा न्यारी॥

रामरूप रणजीत चितावै। सावधान हो तोहिं बतावै॥

दोहा।

नवों दुवारे नर्कही, बहत रहत दिन रात॥
समझवान न्यारा रहै, कारज ले इहि साथ ५४

चौपाई।

याके माहिं जोग तप कीजै। यही लाभ जो तनसूं लीजै॥
याको कछू भरोसो नाहीं। क्या जानैं यह कब छुटजाहीं॥

दोहा।

जन्म चलो ही जात है, भागो देहा देह॥
तामें लीजै लाभ यह, हरि सूं कीजै नेह ५५

चौपाई॥

टोटा बड़ा जु राम न जाना। अपना जन्म नहीं पहिंचाना॥
शुभ कर्मन का मारग छूटा। काम क्रोध चोरों ने लूटा॥
इन्द्रिनही के स्वादन माहीं। फँसा रहा कछु जाना नाहीं॥
चावही चाव कुटुँब घन घेरा। तामें चित दे किया बसेरा॥
समझा नहीं जु मूढ़ अनारी। अपने पांवन बेड़ी डारी॥
नेह जगत का बहुतै दहै। मुक्ति न होवै बाँधा रहै॥
हानि ही हानि लाभ नहिं होई। चेतै ना बड़ मूरख सोई॥
वे नर कहिये बड़े अभागी। जिनकी प्रीति विषयसूंपागी॥

दोहा।

उनकी संगत ना करै, बैठै ना उन पास॥
उनके बचन सुनै नहीं, बिषसा छोड़ै तास ५६

चौपाई ।

सतपुरुषों का संग गहीजै । तिनकी संगत माहिं रहीजै ॥
भक्ता जोगी ज्ञानी जनहीं । इन्द्रिनबसकर जीता मनही ॥
पूरे लागे हरिकी ओरी । जिन्हों बासना जगकी छोरी ॥
शुभ कर्मन के मारग लागे । गुरु के चरणकमल में पागे ॥
बिषय बासना भोग बिसारे । रहें जगत में पै वे न्यारे ॥
सब जीवन केही सुख दाई । काहू से नहिं करैं बुराई ॥
बनै तो पर दुखही हर लेवैं । अपनी सी मति उनकूं देवैं ॥
ऐसों का सँग करै जु कोई । वह भी निश्चय वैसा होई ॥

दोहा ।

शुभ कर्मी के संग मिल, शुभ करमी हो लोय ॥
बिषयी नर के संग सूं, निश्चय बिषयी होय ५७

चौपाई ।

इन्द्रिनके सुख अति दुखदाई । अब मैं इनकूं देहुँ दिखाई ॥
इनके रस में बहुत बिकारा । बिपता रोग और दुखभारा ॥
जिह्वा स्वाद घना खाजावे । सो वह तनमें व्याध उठावे ॥
नैन स्वाद सूं रूप मँझारी । वह तौ करै बहुतही ख्वारी ॥
श्रवण स्वाद ऊठै अभिमाना । जाग क्रोध करै जीकी हाना ॥
स्वाद नासिका छैल चिकनियां । गन्धसुगन्धयाकी बुधिहनियां ॥
त्वचा स्वादभया कुटुँब घनेरा । फिर बैरी हो याकूं घेरा ॥
इनही पांचन कूं जग जानो । फँसै आयकर मूढ़ अयानो ॥

दोहा।

ऐहीजग में डारकर, बहुत दिखावै दुःख॥
मूरख नर समझै नहीं, या कूं जानै सुक्ख ५८

चौपाई।

जगकूं भलाकहा नहीं किनहूं। वेद पुरान और हरिजनहूं॥
भांति भांति के भय उपजावै। चिन्ता घनी काल डरपावै॥
खिनसखान सांचा सा दीखै। तामें बैरी बहुतक जीके॥
गया तरसता जो ह्यां आया। प्यासबुझीनहिंना सुखपाया॥
इन्द्री स्वाद छका नहिं क्योंही। मौत अचानक मारा योंही॥
हाय हाय करते तन छूटा। कुटम्ब मित्रथे तिनखहलूटा॥

दोहा।

जो जो राचे जगत् में, सो सो हूबे ख्वार॥
दो ठग ने फाँसी दई, एक द्रव्य एक नार ५६

चौपाई।

बहुनर खेलैं इनके माहीं। भूल रहै वै चेतै नाहीं॥
यह जु अमोलक मनुषा देही। खोवे बिरथा जगत सनेही॥
जानत नाहिं मूढ़ मति आँधे। मोह फाँस में हितकर बाँधे॥
आठ पहर बौराये डोलैं। राजस तामस लीये बोलैं॥
हरिकूं बिसरे मूल गँवावैं। अगम पन्थ कूं कैसे पावैं॥
अबहीं समझै सो बड़भागी। आयुर्दा कूं दीमक लागी॥

यह प्रानी इसकूं नहीं जाने। अपना बहुत रहनही ठाने॥
थिर नहिं रहना कोऊ कैसे। कोटि उपाय करो कोई जैसे॥

दोहा।

जैसे पंक्षी रैन बस, तरुवर ही के माँहिं॥
जगका जीवन जानिये, सुख बादर की छाँह ६०

चौपाई।

ह्यां तो जन्मत दुखही दुख है। मरने तक कहुं नैक न सुखहै॥
हिय बैराग उठै सुख जित है। आतम माहिं बसै सो नितहै॥
बिषय स्वाद जगके दुखदाई। आतम ज्ञान महासुखदाई॥
ध्यान मांहि सुखही सुख होई। अरु समाधि सुखसागर सोई॥
जगत राज में जो सुख पाते। भूप छोड़ जंगल क्यों जाते॥
बनमें जाय तपस्या छाई। कलकल छूट शांति जो आई॥

दोहा।

बड़े मरद जिन जग तज्या, ना जग तजता वाहि॥
कोई रहनैं ना दिया, चलतैं लूटा ताहि ६१

चौपाई।

सब मिल पावक ही में दागा। चहूं ओर जब देखन लागा॥
अपनी देह कुटम्ब के लोई। हमरे तो सँग हुवा न कोई॥
पुत्तर आय खोपड़ी फोड़ी। घर में नार चूड़ियां तोड़ी॥
तौ भी मूरख समझा नाही। रही बासना उनके मांही॥
तांते जन्म मरण ही होवै। धार धार तन वृथा खोवे॥

जोकोई समझजगतसूं भागा। उपजा त्याग और वैरागा॥
सो परमातम ध्यान समाए। भवसागर में बहुरन आए॥
बुद्धिवान ताही कूं जानों। वाकूं शूरा मल्ल पिछानो॥

दोहा।

जग त्यागा वन मे बसा, किया जु हरि का ध्यान॥
मूरख जग तज ना सका, पड़ा तिमिर की खान ६२
रणजीता वही जानियैं, जिनमन जीता होय॥
जो लूटा इन्द्री विषय, गया जु सर्वस्व सोय ६३
हिया शुद्ध उज्जल वसन, तापै रंग चढ़ जाय॥
चिकटे पै रंगना चढ़ै, सौं सौं करो उपाय ६४
मर्द समझ जोले लई, फिरनही डारी ताहि॥
रामरूप हरि रँग रँगे, सोई साँचे नाह ६५

इति



भक्तिज्ञान अंग।

इस अंग में ज्ञान मिश्रित अर्थात् ज्ञान सहित भक्ति करने की महिमा वर्णन कीगई है केवल वाचक ज्ञान (कथनमात्र) से सिद्धि और मोक्ष की प्राप्ति नहीं होसक्ती है इसलिये नवधा प्रेमा परा जो तीन प्रकारकी भक्ति है उसके करने सेही इस कलिकाल में जीव जीवनमुक्त हो-जाताहै तीसरी परा भक्तिसे भगवत् प्राप्तिहोकर जीव कृतार्थ होजाता है और जन्म मरण रूप घोर दुखसे छुटकर परमपद प्राप्त करलेताहै यह बात इस अंगमें स्पष्ट करके दिखलादी गईहै॥

शिष्य वचन।

दोहा।

परणम श्रीरणजीत गुरु, बार बार सिरनाय॥
जैसा था यह जगतही, मोकू दिया दिखाय १
रणजीतगुरूतुमवचनसुन, उपज्यो अतिबैराग॥
लोक भोग फीके लगे, मनभयो त्यागही त्याग २

चौपाई।

धन सतगुरु यह मोहि सुनाई। झूठजगत सब दिया दिखाई॥
मैं याकी ओरी नहीं जाऊं। निश्चल हो हरिध्यान लगाऊं॥

दुखकी खान यही जग देखा । झूठा फीका लगा बिसेखा ॥
सोच हिये मैं यही बिचारी । धन सन्तान ब्याहदुखभारी ॥
जगत आंच अब कभी न खैहूं । लोक भोग में मन नहीं दैहूं ॥
सावधान हो हरि पद मांहीं । हित चित राखूंगो वह ठांई ॥
तुम्हरे बचन शीश पर धारूं । घट के बैरी सकल निवारूं ॥
ऐसी उपजी तप कूं जाऊं । पर्वत में जा कुशा बिछाऊं ॥
रहूं कन्दरा ही के मांहीं । खटरस व्यंजन खाऊं नांहीं ॥
सूके पात और फल खाऊं । अपने तन कूं ऐसे ताऊं ॥
करहूं जोग बैठ वा ठौरी । दूजा संग न राखूं औरी ॥
राम रूप कहै अज्ञा दीजै । खुशीहोय मोहि बिदाजुकीजै॥

दोहा ।

तीनों पनमें तप करूं, यही जु मनके मांहि ॥
जंगल पर्बत में रहूं, वस्ती देखूं नांहि ३
चली जु आवै मौतही, कहा भरोसा काल ॥
जग सूं न्यारा ही रहूं, फँदूं न माया जाल ४

गुरू बचन ।

चौपाई ।

चरण दास कहैं धन शिषमेरे । यह बैराग उठो हियतेरे ॥
लोक भोग रस फीके लागे । ऊँचे भाग बड़े ही जागे ॥

दोहा ।

सदा जु मन बैराग था, जाग उठा लहराय ॥
जैसे दारू थी भरी, धरी जामगी आय ५

चौपाई।

लाखन मैं कोई एक दिखावै। जाके मनमें तपकी आवै॥
पै यह समा और ही जानौं। याकूं कलयुग ही पहिचानौं॥
सतयुग जीव हाड के मांहीं। तप करते जा जंगल ठाँई॥
त्रेतायुग में मांस मंझारा। सो भी तप करते अतिभारा॥
द्वापर त्वचा मांहि जी होई। तब तांई तप करते सोई॥
जब से यह कलियुग ही लागा। अन्न विषय जीरहै जु पागा॥
कैसें पात और फल खावै। वेसवाद मन चल चल जावै॥
उन युगमें औरी वृतमानां। उमर बड़ी तन बज्र समानां॥

दोहा।

जोग बराबर चार जग, यामैं संशय नांहि॥
कै पहाड़ मैं जा करो, कैकरोवस्तीमांहि ६
सतसंगत से पाइये, ज्ञानभक्तिअरुजोग॥
सो वस्ती के मांहि है, कटेजु तनमनरोग ७
हितू जान तोसूं कहूं, निश्चयकरहियमांहि॥
सतसंगत हरिभक्तिकर, या सम तपहै नांहि ८
बड़ी तपस्या दया है, बड़ी तपस्या सांच॥
बड़ी तपस्या जानिये, रोके इन्द्री पांच ९
क्षमा शील सन्तोष कूं, बड़ी तपस्या जान॥
रामरूप सोई बड़ा, जोहोनिरअभिमान १०
दूर करन अहंकार ही, सकल तपस्या एह॥
लहै परमगति ब्रह्म हो, रामरूप सुनलेह ११

चौपाई।

कलयुग मे तप और न होई। ऐसा करै जु अचरज सोई॥
बिना साधु और को करै। टेक पकड़ पग आगे धरै॥
आप तिरै औरन कू त्यारै। सकल तपस्या सूं यह भारै॥
ज्ञानं तपस्या सूं अधिकाई। सो उपजै नवधा सूं भाई॥
प्रेम भक्ति नवधा सूं पावै। परमेश्वर ता बस होजावै॥
नवधाकलियुग मांहिं बखानी। बेद पुराणन सूं यौं जानी॥
नवधा कलियुग मैं बनि आवै। अधिक तपस्या सूं फल पावै॥
रामरूप यह हिरदय धारो। चरण दास कहैं बचन हमारो॥

दोहा।

सतगुरु की अज्ञाचलै, कोटि तपस्या जान॥
रक्षक लोक परलोक के, उनहीं कूं पहिचान १२

चौपाई।

अब हम कहैं सोई तुम करो। अवगुन सकल देह के हरो॥
उणतीसौं लक्षण हिय धारो। मन कूं रोक भक्ति में डारो॥
परमेश्वर सूं प्रीति लगावो। तातैं चौथे पद कूं पावो॥
चौथा पद अति है निर्बाना। जहां बसैं मिटैं आवन जाना॥
आवन जान महा दुख भारी। दुख पावत हैं बारम्बारी॥
आवन गर्भ माहिं जब आवै। जठरअग्नितहांअधिकतपावै॥
हाड़ पकैं चमड़ा पक जावै। ज्यौं मधूकडी मांडा लावै॥
देह पके तैं बहु दुख पावै। रामरूप चरण दास सुनावै॥

दोहा।

गर्भ माहिं दुख बहुत हैं; कहि सुन काँपे देह॥
जन्म लेत भी कष्ट है, योनी संकट ग्रेह १३
बीछू एक हजार ज्यों, डङ्क लगै तन मांहि॥
तातैं रोवत भू पड़ा, हरि कोई जानत नाहिं १४

चौपाई।

गवन समय बहुतै दुख लेवै। जब जम आनि दिखाई देवै॥
तन छूटत दुख होवै भारा। रोंम रोंम में कष्ट अपारा॥
पीड़ा सहै बोल नहिं आवै। आपही आप महादुख पावै॥
ह्वां को मित्र कहै जु बाता। पाप पुण्य दोनों हैं साथा॥
रामभक्ति की पूँजी नाहीं। तौ ह्वां आन गहै को बाँहीं॥
तातैं हरि की भक्ति करीजै। तन मन सौंप राम कूं दीजै॥
निर्भय होय भजन मैं अड़िये। मोह जाल मैं नैक न पड़िये॥
रामरूप चरणदास बतावै। ऐसा होय परम सुख पावै॥

दोहा।

करै करावै भजन हीं, भक्तों मैं अधिकाय॥
जाका बदला हरि कहै, मोपै दिया न जाय १५
नाम दान करता रहै, मोकूं दान धरै॥
ऐसे दाता सन्त की, सरवर कौन करै १६
एक करै निसकाम जप, ध्यान करैं मन रोक॥
मुक्ति आदि चाहैं नहीं, नहीं स्वर्ग के भोग १७
उन्हें कहा फल देहुं अब, रहूं बिचार बिचार॥

नारद सूं प्रभु नै कहा, उन सैं भी रहा हार १८
इनहीं को ऋणियां रहूं, नारद निश्चय जान ॥
काहूं भांति न छुट सकूं, मोहि तुम्हारी आन १६
चरण दास यों कहत हैं, रामरूप दे कान ॥
भक्ति करो निसकाम ही, रामनाम कर दान २०
ऐसे तारैं बहुत कूं, कुल की सूक्ष्म बात ॥
उन के जो दर्शन करैं, सोऊ मुक्ति हो जात २१
जैसें एक सपूत की, बहुत कमाई खाँय ॥
रामरूप यों साधु संग, कुली मुक्ति कूं जाय २२
सकल कामना छोड़कर, भक्ति करो निसकाम ॥
आठ पहर करते रहो, दान रामही राम २३

चौपाई ।

आप ध्यान कर और करावो । आप जाप कर और जपावो ॥
पूजा करो और सिखलावो । करो कीर्तन और बतलावो ॥
कथा सुनों और सुनवावो । करो विचार मनुप्य चितवावो॥
बन्दन करो होय दासा तन । देख देख सीखैं सबही जन ॥
हरि कूं आपा अर्पण कीजै । पूंजी डार लाभ यही लीजै ॥
नवधा के सब अंग बताये । सो तुम जग मे घो फैलाये ॥
हरिजन ही कलि मैं उपकारी । दे उपदेश करैं भव पारी ॥
चरणदास के बचन सुनीजै । रामरूप हिय मांहिं धरीजै ॥

दोहा ।

लाख बात की बात यह, कोटि बात की बात ॥

राम भक्ति कीजै सदा, रामरूप दिन रात २४
राम नाम सम ना कछू, जोग जज्ञ तप दान॥
चरणदास दियो भेद निज, रामरूप हिये आन २५
यह शिक्षा मैंने कही, हिरदे में धर लेव॥
परमोधो अपना करो, भक्ति राम की देव २६
जीवनमुक्ता जो भये, रहैं जगत के माहिं॥
सहज करैं शुभ कर्म हों, कछू वासना नाहिं २७
पुरुषों की यहि रीति है, करैं तो शुभ ही कर्म॥
वे कुछ फल चाहैं नहीं, ना कुछ उन के भर्म २८
समझैं पीछै तप करै, कै करै शिष उपदेश॥
बालक कासा खेल ही, कछू न लागै लेस २९
सोनां कसै सुनार ज्यों, यों शिष्य कीजै देख॥
खैंच कसौटी ताय कर, जभी मिलावो भेष ३०

शिष्य वचन।

चौपाई।

यही समझ मेरे मन आई। जो तुम सतगुरु मोहिबताई॥
बचन तुम्हारे हिरदय धरहूं। हरिकी भक्ति सदाही करिहूं॥
रात दिना खाली नहि जैहै। ऐसो जन्म बहुर कब ऐहै॥
कलियुग मैं नवधा ही जानी। सकलशिरोमणिताहिबखानी॥
जासूं प्रेमभक्ति परकाशै। मोकूं और न दूजी आशै॥
निश्चय भई यही बहुभांता। और सकल सूं तोडा नाता॥
कछू कामना फल नहीं चैहूं। हरिकेचरणकमल चित दैहूं॥

रामरूप कहै सुनों गुरू देवा । नीकैं पायो तुम दियो भेवा ॥

दोहा ।

यही मांगूं गुरुदेव जी, महाराज रणजीत ॥
शीष हाथ तुम्हरो रहै, हरि सूं लागै प्रीति ३१

चौपाई ।

ईश्वर भक्ति पियारी लागी । मुक्ति कामना सबही त्यागी ॥
जन्म जन्म यही मांगू दाता । भक्ति मिलै रहूं हरि सूं राता ॥
जब जब जन्म धरूं जगमांहीं । भक्ति बिना कछू चाहूं नाहीं ॥
राज मुल्क अरु द्रब्य ख़ज़ाना । कछू न चाहूं निश्चय आना ॥
अष्ट सिद्ध की चाह न कोई । तुम किरपा बुधि निर्मल होई ॥
कभी कभी मन ऐसी आवै । आपन कूं कैसें करि पावै ॥
को यह जीव कौन मम देहा । कैसे कै भयो जगत सनेहा ॥
रामरूप कहै मोहि बतावो । सतगुरु सबही भर्ममिटावो ॥

गुरू बचन ।

दोहा ।

सतगुरु किरपा संगले, ज्ञान दीप ले हाथ ॥
रामरूप हो चाँदना, सूझ परै सब बात ३२
अज्ञानी कूं साच है, ग्रेह नेह अरु देह ॥
ज्ञानवन्त कूं झूठ है, कहा जु यामें लेह ३३
यह तौ सबही भर्म है, याकूं सांच न मान ॥
जीव सत्य निसचल सदा, ताकी ले पहिचान ३४
जीव न उपजत मरत है, अज अविनाशी एह ॥

जन्मैं मरै पुरान हो, घटै बढ़ै सो देह ३५
देह अपावन है सदा, महा पवित्र जीव ॥
देह नेह के छुटे सैं, यही होत है सीव ३६
आय देह के मध्य ही, भूल गया आप अंग ॥
मानी काया आप कूं, मिल इन्द्रिन के संग ३७
साँचे से झूठा भया, कर काया सूं नेह ॥
होतैं होतैं होगया, आप हो रहा देह ३८

चौपाई।

कभी कहै मैं गोरा काला। कभी कहै मैं बूढ़ा बाला ॥
कभी कहै मैं नारी पुरुषा। कभी कहै मैं हिन्दू तुरका ॥
कभी कहै मैं रोगी सोगी। कभी कहै मैं जोगी भोगी ॥
कभी कहै मोहि जीवन मरना। कभी बतावै आश्रम बरना ॥
कभी कहै मैं ठिगना लांबा। कभी कहै मैं पोता बाबा ॥
कभी कहै मैं बैठूं डोलूं। मौन गहूं कबहूं मैं बोलूं ॥
कभी कहै मैं सोऊं जागूं। कभी डरै मैं कासूं लागूं ॥
चरणदास यह भेद जु खोलै। देह रूप हो आतम बोलै ॥

दोहा।

आपन देही मानियां, यही जगत् की आदि ॥
बैर प्रीति कीनां घना, लागा बाद बिवाद ३९
कुटम्बजातिकुलगोतैंलागि, पसर पड़ा बहुभाँति ॥
घोर अँधेरा होगया, खोई अपनी क्रांति ४०
भूला जीव उपाधि लागि, भया और का और ॥

चरणदास कहैं रामरूप, बिसरा अपनी ठौर ४१

शिष्य वचन

दोहा ।

राम रूप कर जोर कर, अर्ज करै गुरु देव ॥
जीव सीव जैसें भवै, जाका कहिये भेव ४२

गुरु वचन ।

दोहा ।

ईश्वर पोखा जीव ही, या काया के मांहिं ॥
बुरी अँधेरी जानि कै, आवै था वह नांहिं ४३
आज्ञा सूं तन धारिया, वस राचा वा रंग ॥
इन्द्रिन संग सवाद ले, होय गया बेढंग ४४
पहिल पहिल निरलेव था, बिच लागा है लेव ॥
पावै अपनी आदि जब, कृपा करै गुरुदेव ४५
आतम देवैं ज्ञान जब, पावै अपना रूप ॥
इन्द्री बिषय स्वाद तजि, होवै अधिक अनूप ४६
आतम हीं को ज्ञान ले, आतम हीं को ध्यान ॥
आतम ही आतम लखै, जब चलिहै परवान ४७
मन बुधि इन्द्री प्रान कूं, भिन्न जान तजि नेह ॥
आतम मैं रातो रहै, जबहि परम सुख लेह ४८
ज्ञान नीर परताप सूं, बिषय मैल छुट जाय ॥
निर्मल ज्यों का त्यों भवै, जो था आदि सुभाय ४९
सिंह समानों गुरु मिलै, गीदर रीति नसाय ॥

रामरूप यों ज्ञान सूं, भूल जीव की जाय ५०

शिष्य बचन।

दोहा।

धन सतगुरु किरपा करी, मेटे सब सन्देह
रामरूप कहै समभए, कै बन कै निज ग्रेह ५१
निश्चय आई मन विषय, राख लई चित मांहिं॥
सरवण सुनि आनन्द भए, रही न संशय छांहि ५२
अब पूछन चाहूं नहीं, छका हिया थकि बैन॥
तुम्हरे दर्शन के विषय, उरझ रहो मम नैन ५३
तुम मेरे शुकदेव हो, तुमहीं मेरे ईश॥
चरणदास के नाम को, छत्र फिरै मम शीश ५४
अभय दान मोकूं दियो, जम सूं लियो बचाय॥
ज्ञान दियो अपनो कियो, रामरूप बलि जाय ५५
धन्य गुरू रणजीत जी, दयावन्त दातार॥
रामरूप से दीन पर, किरपा बारम्बार ५६
जो वारूं तुम चरण पर, कोटि बार यह शीश॥
तऊ न बदला दे सकूं, सुनि हो मेरे ईश ५७
मेरु जलाय स्याही करूं, घोलूं सागर मांहि॥
वण लेखन धरती लिखूं, तुम गुण नाहिं समांहि ५८
माला तुम्हरे गुणन की, फेरूंगो दिन रात॥
छै ऋतु बारह मासही, मोकूं यही सुहात ५९
तुम्हरी मूरत सोहनी, राख हिये की ठौर॥

ध्यान माहिं मन दे, रहूं, करूं विचार न और ६०
रामरूप निश्चय करी, गुरु सम और न कोय ॥
परमेश्वर की भक्ति दे, डारैं दुर्मति खोय ६१
धन अवसर धन यह घड़ी, सुन हो दीन दयाल ॥
रामरूप निज दास कूं, कीनौं बहुत निहाल ६२

छप्पै ।

ऐसे हो रणजीत जीति माया तुम लीनी ॥
कनक कामनी बली पीठ तिन हूं ने दीनी ॥
भक्ति भाव में सरस दरश हरि ही को पायो ॥
ब्रह्म ज्ञानी परमहँस भेष अद्भुत चलायो ॥
अरु तुम बालक शुकदेव के, तुम्हरी सरवर को करै ॥
रामरूप अति प्रेम सूं, तेरो ध्यान हिरदय धरै १

कुण्डलिया ।

अठारह सै उणतीस का सम्वत था जिह बार ॥
जेठ महीना शुक्क पक्ष द्वादशी शुकर वार ॥
द्वादशी शुकर बार तभी यह पूरण कीन्हौं ॥
पुस्तक सत बैराग मुक्ति का मारग चीन्हौं ॥
जीव चितावन कारणैं, वरणन किया बनाय ॥
जो पढ़ि सुने इस विधि चलै, रामरूप होजाय १

दोहा ।

यह जो कही चितावनी, रामही रूप बखान ॥
पांसै पन्द्रह जानिये, सबै श्लोक परमान ६३

बारहमासा

इस अंग में बारहों महीनों के नाम पर ज्ञान वैराग योग और नवधा प्रेम पराभक्ति से भगवत् का प्राप्त होना वर्णन किया है सब शास्त्रों का सिद्धान्त तत्त्व और जीवन्मुक्त होने के साधन इस एक बारहमासे के पढ़ने से जीव जान सक्ता है और भगवत् को प्राप्त होकर जीवन्मुक्त हो जाता है ॥

राग सूहा बिलावल।

छन्द।

कार कियो विचार मन में जन्म चालो जात है।
दिन कूं धन्धा जगत् केरा सोय खोऊं रात है॥
रैन दिन यों जाय सुख में मौत आवत है चली।
ले अचानक मार कबहूं भूल यह नाहीं भली॥
होय चेतन बड़ो नरतन बार बार न पाइये।
जतन ऐसो करूं पूरो आवागवन मिटाइये॥
जन्म मरण न होत जासूं सोई मारग लीजिये।
रामरूप चरणदास होकर भक्ति हरि की कीजिये १
मास कार्तिक कर्म काटन साधु संगत में गयो।

पूज जिनकूं शीशनायो समझ कर जहां मन दियो ॥
अति उमँग सूं टूट मिलिया दूरकर अभिमानही।
ज्ञान भक्ति अरु जोग हीकी तहाँ लखी मैं खानही ॥
प्रेम उपज्यो चरन लाग्यो भक्त जन अपनो कियो।
बाँह पकरी उर लगायो करी किरपा हित दियो ॥
रामरूप कूं हेत कीनो चरणदासा जान कै।
कही इतही आव नितही टेक पूरी ठान कै २
मंगसर मगन ह्वै जान लागो साधु संगति के महीं।
निशि दिना मन लगे हांई चित न जावे अरु कहीं ॥
होय चैना सुनूं बैना श्रवण सुख पायो घनो।
चाव बाढ़ो मोह भागो नेह मैं हियरा सनौं ॥
भक्ति पौधा उमँग हुलसो बढ़न की आशा भई।
जाति कुल की कानि छूटी लोक लज्जा ना रही ॥
साधु सेवा लगे मीठी भोग फीके लागई।
चरण दासा रामरूपा मिले जागे भागहीं ३
पौष पूरे भाग जागे टेक पकरी यह सदा।
साधु संगत नाहिं छाडूं बाद यह मन सूं वदा ॥
पाँच इन्द्री अधिक सुधरी रंग इन कूं भी लगो।
श्रवणसूं गुणाबाद सुन सुन आनधर्म भ्रम सब भगो॥

रसन गुण गोपाल के गावन लगी परसन भई।
आँख दर्शन साधु के बिन और ना कितहूं गई॥
त्वचा उपजी चाह तप की नासिका हरि पद रती।
चरणदास प्रताप हूये राम रूपा गति मती ४
माह मास बसन्त आयो रंग नवधा को परो।
मन रहै दिन रैन मातो भक्ति नो बिध मैं अरो॥
प्रेम को अंकूर दरशो भई गति कछु औरही।
चरण कमल भगवान के मैं करी अपनी ठौरही॥
अब न चित कहूं अन्त रमैं अचल नित ह्वाँई रहै।
कबहूं न माया पवन लागै स्वाद इन्द्री ना बहै॥
प्रीति नूतन लगी हरि सूं उठत लहरैं नेह की।
रामरूप हो चरनदासा तजूं फाँसी ग्रेह की ५
फाग फूल्यौ रँग्यो नवधा प्रेम बढ़ने ही लगो।
मोह ममता सकल सोई भाव भक्तिही को जगो॥
जब उठैं सब तन रोम सगरें कछू जाड़ो सो झुकै।
नैन बर्षैं होठ फरकैं कण्ठ गदगदही रुकै॥
तब मूंद नैना दर्श प्रीतम भूल आपन कूं रहूं।
फेर सँभलूं पिया पिया ही चैन हिय माहीं लहूं॥
वा समय को सुख जु अचरज प्रेमी हो सोइ जानई।

चरणदास हो रामरूपा भई गति मति हानिही ६
चैत चिन्ता एक हरि की और ना दूजी रही।
भूख अरु गई नींद तन सूं लगन की डोरी गही॥
रुदन कबहूं हँसत कबहूं गाय कबहूं गुण कथा।
होत कबहूं उदास मोमन लग रही है यह व्यथा॥
सोच चित में रहूं निशिदिन नाहिं काहू सें कहूं।
प्रेम पीड़ा उठत भारी जोर ताही को सहूं॥
बिरह ज्वाला अति जलावै वै बुझावैं जिन दयो।
चरणदास रामरूपा बिरह उपजो है नयो ७
बैसाख विरहा पैठ तन में हिये माहीं घर कियो।
सब देहमें परी खलबली उन अमल अपनो करलियो॥
देत दुख बहुभाँति के अँग अंग अति उकलात है।
सहो न जात वियोग प्रीतम गहो आ मम हाथ है॥
घरी घरी मोहिं लगत भारी ढील कैसे कै सहूं।
बिन मिले की व्यथा चिंता कथा यह कासूं कहूं॥
कहूं तो बेदन कौन मेटै विना एक चरणदास के।
रामरूपा भए बौरा जीवत हूं उहीं आस के ८
जेठ जरने लगो तन मन विरह ने दई फूंकि है।
नहीं सँभारी जात मोपै उठत हीये हूक है॥

जब निकस भागों ग्रेह त्यागों फिरो बन बौरातही।
पी पी पुकारूं मग निहारूं ना गिनूं दिन रात ही॥
तबहुवो अधीर सँभार नाहीं घनौं अति ब्याकुलभयो।
जब दीन के दुख हरन सतगुरु दयाकर दर्शन दियो॥
सो रणजीत शुकदेव के जन दास कूं अपना कियो।
रामरूप गरीब कूं तब बहुत ही धीरज दियो ९
साढ़ सरसे उमँग बरषै देन लागो बोधही।
श्याम ढूंढ़े सो तोहिं मैं देख काया सोधही॥
मृग जैसे भया बौरा लपट आई बास ही।
बन बन फिरै कस्तूरि कारण सो वाही के पासही॥
माहिं पावो उलट आवो जब लखो बृजराज ही।
ऐसें ही सब माहिं जानो होंहि पूरण काजही॥
तस जोवे दुख नशावै यों कहा रणजीत ही।
जब रामरूपा हो स्वरूपा रहे दर्शत मीत ही १०
श्रावण जु संशय गयो सब ही दृष्ट खोली ज्ञान की।
तत लखायो कियो तिरपत गई मति अज्ञान की॥
जब भए आनन्द चहूं देसा आप में आनन्द भये।
श्याम सारे में निहारे थोक दुख के सब गये॥
रहा न आपा हुता थापा सहज बृत मेरे रही।

भाव दूजे ना अरूझे सकल चिंता ही गई॥
रामरूपा भए स्वरूपा गुरू रणजीता किये।
गल लगायो दुख मिटायो परमसुख आनन्द दिये ११
धन धन्य भादौं भाव गुरुका रहा मो मन छायके।
विरह छुटायो हरि दिखायो करी गुहार जु आयके॥
कहा अस्तुति करूं उनकी अमर पीव मिलाइया।
दर्श ने ही सुध बिसारी आपकूं नहिं पाइया॥
मुक्त बन्ध का मिटा धोका जतन कोई ना रहा।
रहूं सहज स्वभाव निशि दिन पक्ष मारग ना गहा॥
गया आपा आपदा सब रामरूपा ही भए।
नमो शुक रणजीत जीकूं परम आनन्द जिन दए १२

इति

श्री शुकजन्मलीला।

इस अंगमें श्रीमत् भगवान् वेद व्यासनन्दन जगवन्दन श्री श्रीशुक मुनिराजमहाराजके जन्म की विचित्र कथा जो महाभारत के शान्ति पर्व मोक्ष धर्म में लिखी हुई है उसका भाषानुवाद दोहा चौपाई आदि छन्दों में यथार्थ रूप से ग्रन्थकर्ता ने कथन किया है श्रीमत् जनक विदेह नृपति और श्रीशुकाचार्य्य महाराज का अध्यात्म विद्या का अनुपम सम्बाद सूक्ष्म रीति सें वर्णन किया गयाहै अवश्य पढ़नेके योग्यही है क्योंकि इसके पढ़नेसे आत्मतत्त्व व ब्रह्मविद्या की प्राप्ति सुगम रीति सें प्राप्त होसक्ती है॥

अथ श्रीगुरू चेले का सम्वाद।

शिष्य वचन।

दोहा।

जै जै श्रीरनजीत गुरु, विनय करूं सिरनाय॥
जनमहोन शुकदेव की, लीला मोहि सुनाय १

चौपाई।

श्रीव्यास के सुत शुक सूचे। भक्ति ज्ञान जोग सें ऊंचे॥
शुभ करमनकूं नीकै जानैं। नीकैं अपना रूप पिछानैं॥
विचरत पिरथी पर नित रहैं। त्रिशना जारि आनंद लहैं॥

सर्व शास्त्र नीके जानैं। सब के अर्थन कूं पहचानैं॥
जिनके बचन जगत छुटजावै। करनी करै अभै पद पावै॥
श्रीबिश्नु सम हैं औतारी। सकल रिषिनसे पदवी भारी॥
ऐसे हैं शुकदेव गुसांई। सदा बिराजो मम हिय ठांई॥
कैसे जनम भयो जग माहिं। याको भेद सुन्यों मैं नाहिं॥
कौन भांति अरु को महतारी। यह संसय है मो मन भारी॥
उनकी कथा जु लागै प्यारी। सुनि आनंद हो हिय मझारी॥
ज्यों संतुष्ट हो अमृत पीयै। मैं तिरपत हूं सरवन कीयै॥
चरनदास गुरु बचन तुम्हारे। भरम मिटावन करन उज्यारे॥

दोहा।

रामरूप कहैं गुरू जी, और कहो इक भेव॥
कैसे तप कियो व्यास ने, वर दीनों महादेव २

गुरुवचन।

रामरूप पूछन करी, तुमने जो ये बात॥
मेरे मन की भावती, कहतैं बहुत सुहात ३

चौपाई।

चरनदास कहैं सुन शिष सोई। तप बिन पूरन काज न होई॥
तपसूं बहुत बड़ाई पावै। सब में मुखिया वही कहावै॥
बूढ़ा भये न धन के आयै। बड़ा न होय राज के पायै॥
तुच्छ बड़ाई इनकी जानों। बड़ी बड़ाई पाये ध्यानों॥
सब का मूल तपस्या लीजै। तप सो इन्द्री निग्रह कीजै॥
पाप होय जो इन्द्रिन काजै। इन्द्री रोकैं सब दुख भाजै॥

परमारथ का मारग सूझै। कारज सिद्ध होहिं जो गूझै॥
इन्द्री बसि मन जीता जावै। रामरूप निहचल घर आवै॥

दोहा।

अब सुनि शिष तोसूं कहूं, अद्भुत कथा पुनीत॥
ज्यों भीषम जीने कहा, युधिष्ठिर सूं करि प्रीत ४

चौपाई।

एकही समय व्यास मुनिराई। पुत्र कामना मन में आई॥
यही जु धरि कै मनमें आसा। चलिके गये महादेवके पासा॥
सुमेर शिखापै शिवजी राजैं। पारबती लिये संग बिराजैं॥
अरु उनके सेवक सँग सारे। बैठे थे आनँद में भारे॥
उही ठांव जो व्यास गुसाईं। पुत्तर हेत लगे तप माहीं॥
कठिन तपस्या करने लागे। ऐसा पुत्तर मन में मांगे॥

दोहा।

पृथ्वी सा धीरज धरै, जल सा निरमल सोय॥
तेज अगन सा तासु में, वायु सा व्यापक होय ५
अरु ऐसाही चाहिये, जैसा बड़ा अकास॥
करी तपस्या सौ बरस, मन में धरि यह आस॥६

चौपाई।

जलफल फूल पात नहिं लीन्हा। जबलगपवनअहारहिकीन्हा॥
जहां तपस्या करतेही थे। हां ब्रह्मऋषिअरुराजऋषिथे॥
जम अरु इन्द्र बरुनकूं जानों। वायु कुबेर अगन उसथानों॥
बसु पृथ्वी अरु सूरज चंदा। अरु ह्वांई थे सातों सिन्धा॥

अरु परबत थे नरतन धारे । जहां अप्सरा गंधर्व सारे ॥
अरु चौरासी सिद्ध जहाई । अरु नारद मुनि हुते तहांई ॥

दोहा ।

प्रीत पुष्प माला पहर, ललित गौरजा कंथ ॥
मानों फूली सांझ ही, मध ससि शोभावंत ७
व्यास तपस्या जो करी, बड़ा कष्ट ही धारि ॥
सावधान तामें रहे, गए न मन में हारि ८

चौपाई ।

अरु बल क्षीण हुवा नहिं वाका । तीन लोक भया अचरज ताका ॥
धन धन कहा ऋषी मुनि सारे । जो हांथे सो सबै पुकारे ॥
तेज तपस्या जटा जु चमके । मानों अगन भांतिसी दमके ॥
देख तपस्या ऐसी शंकर । परसन भये बहुतही मनकर ॥
बर देने की मन में आई । व्यास ओर देखा मुसकाई ॥
कहा मनोरथ पूरा कीना । पुत्तर चाहा जैसा दीना ॥

दोहा ।

पूरी करी जु कामना, मैं तोकूं सुत दीन ॥
राम भजन में रहेगा, ध्यान माहिं लौलीन ९

चौपाई ।

महादेवसूं यह बर पाया । व्यास बिदा हो मारग धाया ॥
आ पहुँचे अस्थल के माहीं । फुल्लत भये बहुत हरखाई ॥
सदा मगन आनँद में पागे । निशादिनरहै ध्यान लौ लागे ॥
व्यास देव के तपकी बूझी । सो हमकही बातथी गूझी ॥

शिष्यवचन।

दोहा।

तपकी कही सु मैं सुनी, तिरपत भए जु कान॥
रामरूप इक और भी, पूछे कृपानिधान १०
कौन महीना कौन तिथि, कौन हुता जो बार॥
व्यास ग्रेह कैसे भया, शुकजी का औतार ११

गुरुवचन।

वैसाख महीने मध्य में, मावस तिथि दिन सोम॥
जनम लियो शुकदेवजी, गिरि सुमेरु की भौम १२
डेढ़ पहर दिन चढ़ा था, जब यह हुवा बिचार॥
वेद व्यास के उर विषै, उपजा हरष अपार १३

चौपाई।

तप पाछे केतिक दिन माहीं। होम ठठा श्रीव्यास गुसाईं॥
मावस तिथि दिन सोमहिंवारा। परबी लखियह किया बिचारा॥
होम करन की मन में आई। ताकी सौंज सबै मँगवाई॥
सावधान हो बैठे नीके। मथनेलागे अगन-अरनीके॥
ताही समैं अप्सरा आई। सहज माहिं सुंदर अधिकाई॥
नामघृताची रूप अपारा। व्यासदेव वा ओर निहारा॥
मोहित भए देखि वा नारी। होनहारकी गति ही न्यारी॥
लखा अप्सरा मन में जबहीं। तोती रूप धरा उन तबहीं॥
पलक कटाक्ष काम बस भया। बीज खिसाथांभा नहीं गया॥
बिंद पड़ा अरनी के माहिं। व्यासदेव यहजानी नाहिं॥

दोहा।

फिर अरनी मथने लगे, प्रगटे अगन सरूप॥
मूरति श्री शुकदेव की, नख सिखव्यासहिरूप १४
किशोर अवस्था होगये, तुरतहि ले अवतार॥
अति सुंदर तन सांवरे, मानों कृष्ण मुरार १५

चौपाई।

उहिं गंगा परगट हो आई। रूप नारिके अति छविछाई॥
वाने शुकजी आन न्हुवाये। फूल स्वर्गके पवन बरखाये॥
डंड एक दूजी मृगछाला। नभसे उतरी ही ततकाला॥
आय अप्सरा निरतन लागी। गंधर्व गावन लगे सुभागी॥
जहां दुंदुभी वाजन लागे। लगी संख धुनि होने आगे॥
जितने वाजन थे सो सारे। वाजन लगे सु न्यारे न्यारे॥
पित्तर अरु नारद सु मुनी। हाहा हूहू अस्तुति भनी॥
मगन भये थिरचर जो सबही। रामरूप शुक जनमें जबहीं॥

दोहा।

रीति जनमनेकी करी, पारवती त्रिपुरारि॥
करी बधाई भवन अप, बांधी वंदनवारि १६
इनदर ने वस्तर दिये, शुकदेवजी कूं आय॥
फटैं न जीरन होय ना, मैल नहीं लगजाय १७
और कमंडल काठ का, दिया जु उनके हाथ॥
धन्यसमां धन घोस था, रामरूप धन काथ १८
जिनका दरसन शुभ है, सो पक्षी नभ माहिं॥

दिए दिखाई आय के, चहूं ओर मंडलाहिं १६
तोता हरियल हंस ही, सारस अरु पिकरोर ॥
भांति भांति के और खग, लीलकंठ और मोर २०
जनम देखि शुकदेव का, सभी भये परसन्न ॥
आपस में पक्षी कहे, जै जै जै धन धन्न २१

चौपाई।

जनमत तपओरी मन लाये। जगमें पगन नेक नहिं पाये॥
सुतह सिद्ध भए श्रीशुकदेवा। जानतहुते चारही भेवा॥
सरव शास्त्र अरथ पिछानैं। जैसे व्यासदेव मुनि जानैं॥
बिना पढ़े सबही कुछ जाना। तौभी बृहस्पतिकूं गुरु माना॥
यों विद्या गुरु किया सनेही। बिनगुरु बिद्या फल नहिं देई॥
नहीं तो चाह कहां थी उनकूं। बिद्याही पढ़ने की तिनकूं॥
यातें मरजादा गुरु चीन्हा। बिद्या गुरु बृहस्पतिकूं कीन्हा॥
चार वेद उनसूं पढ़ लीन्हे। सकल शास्त्र पाठजू कीन्हे॥

दोहा।

राजनीत अरु काव्य सब, पढ़ गये रही न तेक॥
फिर गुरु पूजे दइ भेंट ही, अस्तुति करी अनेक २२
फेर तपस्या कूं लगे, पांचों इन्द्री रोक॥
मन दीना भगवान कूं, रहा न हरष न शोक २३
करते थे डंडोत ही, सकल देवता ताहि॥
ऋषि मुनिहू करते हुते, बड़ा जानि करिवाहि २४
जो कारज होता कछू, करते इनसूं बूझ॥

अधिकी थे तप ज्ञान में, बुद्धि बड़ी थी सूझ २५

चौपाई।

और जगत के कारज माहीं। कबहूं चित्त लगाया नाहीं॥
हरिके सुमरन में नित रहते। मोक्षधरम का मारग चहते॥
एक दिना शुकदेव सुभागे। आय पितासूं कहने लागे॥
मोक्ष धर्म मोकूं समझावो। मेरे मन को भरम मिटावो॥
तुम सम और न दीखै कोई। मोक्ष धरमकूं जाने सोई॥
ताते किरपा बेगहि कीजै। मोक्ष धरम का मारग दीजै॥
सीखनकूं हियरो हुलसावै। बारबार मन में यहि आवै॥
ज्ञान अरूपी समझो चाहूं। तातें परमातमकूं पाऊं॥

दोहा।

पुत्तर की अभिलाष ही, सुनी व्यास ही देव॥
जब समझावन ही लगे, मोक्ष धरम को भेव २६

चौपाई।

पहले शासतर जोग सिखायो। बहुरु सांख्य जोग समझायो॥
मत बेदांत दियो समझाई। जिज्ञासी हूए अधिकाई॥
जभी व्यास मुनि ऐसी जानी। श्रीशुक भये ब्रह्मज्ञानी॥
जैसे ब्रंच ब्रह्मकूं जानें। ऐसे ही शुकदेव पिछानें॥
जब कहीं पुत्तर आवो आगे। ढिग बैठाय कहन यों लागे॥
मिथिलानगर जनक जहां राजा। ह्वां तुम जाव मुक्तिके काजा॥
मोक्ष धरम वे नीके जानें। ब्रह्मदरसी ब्रह्मरूप बिधानें॥
सोई समझ सब तोकूं देहैं। किरपा करि संदेह मिटै हैं॥

दोहा।

यह सुनि करि ठाढ़े भये, आज्ञा सिर धर लीन ॥
गिर सुमेरु ते उतर के, गवन नगर कूं कीन २७

चौपाई।

जा पहुँचे नगरी के माहीं। राजा जनक रहेथे ह्वांईं ॥
राज द्वारपै ठाढ़ो भयो। द्वारपाल ने ह्वां जा कह्यो ॥
व्यास पुत्र चलि द्वारे आयो। ठाड़ो है यों जाय सुनायो ॥
जनक विदेह समझ यों भाखो। कही की ह्वांइ ठाढ़ो राखो ॥
सात द्योस शुकदेव गुँसाई। ठाड़ें रहें पोलके ठांईं ॥
राजा जनक नहीं सुध लीन्हीं। परखन कूं ऐसी बिध कीन्हीं॥
अठवें दिन कही मंदर ल्यावो। ठाढ़े रहै तो ना बैठावो ॥
सात द्योस फिर पूछा नाहीं। शुकजीके मन कछू न आई ॥

दोहा।

चौदह दिन गए बीति करि, हुवा पन्द्रवां द्योस ॥
बुलवायो रणवास में, देखन कूं जगहोस २८

चौपाई।

नाचन कूं पातर पठवाई। कह्यो कटाक्ष करो तुम जाई ॥
हेत भाव करि बस में ल्यावो। नाना विधके भोजनख्यावो ॥
सात दिनालों योंहीं कीन्हों। पै मन शुकदेवकूं न लीन्हों ॥
मोहत भये न काहू नारी। हेत भावकरि सब पचिहारी ॥
अरु भोजन दीयो सोइ खायो। अपनी इच्छा नाहिं मँगायो॥
चौदह दिन ठाढे जो बितई। ताको बुरो न मानों चितही ॥

अरु राजा मिहमानी करई । जाको लोभ न मनमें धरई ॥
अस्थिरचित दुखसुख नहिंव्यापो । पवनलगे ज्यों गिरनहिंकोपो ॥

दोहा ॥

दुख सुख कुछ व्यापे नहीं, चित अस्थिर है जौन ॥
रामरूप गिर ना हलैं, आये गये जु पौन २६
जब राजा शुकदेव कूं, देखा बहुत हलाय ॥
पाछे दिन इकीस के, लीन्हों निकट बुलाय ३०

चौपाई ।

नमस्कार पूजा करि हेती । समाचार पूछा हित सेती ॥
कौन कामना मन धरि आये । सो अब मोसूं कहो सुनाये ॥
जत सत सील छिमा में पूरे । ज्ञान ध्यान अरु तप के सूरे ॥
अपने कारज सब तुम कीने । मगनरूप आनँद लौ लीने ॥
बड़ो अचम्भो मोकूं आयो । कौन मनोरथ तुमकूं लायो ॥
तब बोले शुकदेव बिनानी । लज्या लिये मधुरसी बानी ॥
कछू कछू पूछन कू चाहूं । मनमें जो संदेह मिटाऊं ॥
यह संसार भयो काहीं तें । कबलग रहै कहो हाईं तें ॥

दोहा ।

यह जग कैसे बनत है, और समापत होय ॥
यह दुखसुखमनवा जीवकूं, मोहिं बतावो सोय ३१

चौपाई ।

जब कहि जनक सुनो शुकदेवा । एक आतमा अस्थिर भेवा ॥
नित सत जानो भेद जु वाको । काहू बिध करि नाश न जाको ॥

अरु वा छूटि सभी भ्रम जानो। भ्रमहीं तैं यह जंग प्रगटानो॥
जबलग भरम तभीलों भासै। भरम मिटै तैं सबही नासै॥
अरु संसारिन के मन आंधे। भरम आपने दुखसुख वांधे॥
शुकजी कही यह आगेही जानूं। लिखी ग्रन्थन में पहचानूं॥
मेरे भ्रम सूं जग उपजत है। मेरे भ्रमही सू जो खपत है॥
सो कहु यह ऐसे कब लों है। मोहि बताओ यह जब लों है॥

दोहा।

जनक कही मैं जानिया, मत वेदांत निहार॥
ज्ञानी के सतसंग सूं, अंतर कियो बिचार ३२
भांति भांति की सृष्टिही, दीषत है जो येह॥
सुभाव अवस्था एकही, एक वस्तु लखि लेह ३३

चौपाई।

एक कु देखत है जु अनेका। तेरो ही भ्रम तोहि बसेखा॥
या जग कूं तुम यही बिचारो। तेरोहि भ्रम दिखावन वारो॥
जो तोकूं यह देत दिखाई। अपनौं भरम जान ले याही॥
जो यामें संदेह जु कराई। भरम बंध में जानों वाही॥
व्यासपुत्र तुमहो बुधिवाने। हुतो जानबो सो तुम जाने॥
सब इन्द्रिन के रहे न स्वादा। दुख सुख व्यापेनाहि न बाधा॥
जिन कूं ऐसी होवे प्रापत। मुक्त भयो वाको जानो सत॥
मेरो यह भ्रम है अकि नाही। यह दुबधा मत रखि मनमांहीं॥

दोहा।

निहचै करिकै जान तू, यही बात है ठीक॥

यह जग मेरोही भरम, यह विचार ले सीख ३४
तो मन निहचै होय जब, भरम जायगो नाश ॥
जगत नेकहू नां रहै, खुलै तिमिर की गांस ३५
थिरही केवल आत्मा, सतचित आनँद रूप ॥
यही जानिके मौन गहु, होरहु ज्ञान सरूप ३६
कियो जु राजा जनक नें, इंहि भांति उपदेस ॥
रामरूप शुकदेव के, मन को गयो अँदेस ३७
जभी आत्मा रूप में, मगन भये शुकदेव ॥
भरम तिमिर अज्ञान को, रह्यो नेक नहिं लेव ३८
भए अवस्था औरही, रोम रोम आनंद ॥
जीवन मुक्त होगए, रही न दुवधा संध ३६
भूले सब व्योहारही, आपन कू गए भूल ॥
नश गयो सब अहंकारही, ताको रह्यो न मूल ४०
श्रीजनक के वचन सुनि, लियो उपदेस अघाय ॥
जाना मोक्ष सिद्धांत कूं, नीकै समभा आय ४१
थेतो पूरन पहलही, सब विध सबही भाय ॥
सतगुरु इस कारन किया, निहचे कीनां आय ४२
बिन सतगुरु निहचा नहीं, कैसही चातुर होय ॥
केतीही विद्या पढो, भूल मिटै ना कोय ४३
परसन्न होय डंडौत करि, उठ चाले भये भोर ॥
पवन भांति उत्तर दिशा, चले परवतों ओर ४४

चौपाई।

ह्वां सूं उठे पवन ज्यों धाए। बेगहि परबत ऊपर आए॥
ब्यास तपस्या करते पाये। दरसन करि सब अंग निवाये॥
ब्यास उठाय दृष्टि जब देखा। आवत अपना पुत्र बसेखा॥
सूरज अगन तेज ज्यों धरई। बेगही धावत मानो सरई॥

दोहा।

वाकौ तेज न रुकसके, गिरवर तरवर ओट॥
आय पिता के पासही, चरनन में रहे लोट ४५

चौपाई।

पिता उठाय हिंये सूं लाए। दोनों मिल बहुते सुख पाए॥
ब्यास प्यार करि पूछन लागे। समझा सो सब कहु मो आगे॥
जब शुकदेवसभी कुछ कहिया। देखा सुना जनक सूं लहिया॥
भांति सिपनकी रहन बिचारा। तप सेवा करने प्रन धारा॥
ऐसेही महाभारथ माहीं। बिना सुनैं जानै कोइ नाहीं॥
बाजे मूरख बाद वढ़ावैं। बिन जाने कुछकी कुछगावैं॥
अब के द्वापर की यह काथा। महाभारत में है बिख्याता॥
भारत के है परब अठारा। तामें सांति परब बिस्तारा॥
सांत परब मैं मोक्ष धरम जो। ता माहिं यह कथा परम सो॥
बेदव्यास के सुत सुकदेवा। तिनको तो कारन इहि सेवा॥
सोई मोकूं मिले जु आई। जिनकी लीला तोहि सुनाई॥
ऐसे ही है रामदुहाई। ज्योंकी त्यों तोकूं समझाई॥
रामरूप यह निहचे कीज्यो। सांची बात हिये धरि लीज्यो॥

दंतकथा झूठी जग छाई । कहैं कि गर्भ बसे शुक आई ॥
और कहैं बारह वर्ष तांइ । रहे शुकदेव उदर के मांहि ॥
ऐसी चूक करी क्या भारी । सहा अधिक जो दुःख अपारी ॥
मूरख कहते नाहिं लजावै । ईश्वर कूं जो दोष लगावै ॥
उनकी बात सुनो मत प्यारे । वे तो हैं अपराधी भारे ॥

दोहा ।

मोहि मिले शुकदेवजी, तिनकी तो यह बात ॥
गरभ जौंन आये नहीं, निहचे जानों तात ४६
चरनदास यों कहत हैं, रामरूप उरधार ॥
यह लीला गावो सदा, उतरो भौ जल पार ४७

शिष्य वचन ।

धन सतगुरु परमार्थी, चरनदास महाराज ॥
अद्भुत कथा सुनाय के, पुरवै सो मन काज ४८
सबबिधि कियो निहालमोय, कथा सुनाई गूप ॥
बार बार बलिहारहूं, कहै रामही रूप ४९
निहचे जानी सांच मैं, तुम्हरे बचन प्रसाद ॥
सों ले करि हिरदे धरी, नासी भूल अगाध ५०

इति श्रीशुकदेव जन्म लीला संपूरण ॥

साधु समझावन अंग।

इस अंग मैं ग्रंथकरता ने अपने परम धाम पधारने से केई एक वर्ष पहिले अपने धाम जात्रा अर्थात् देहत्याग करके परमधाम जाने का मास और मिती और सम्बत और समय की सूचना करके अपने संत महंतों को सदोपदेश देकर अपने वचनामृत से संतृप्त कर संतोष किया है ये अंग ग्रंथ रचयिता की त्रिकालज्ञता का आदर्शरूप है क्योंकि इन्हों ने भविष्य आगामी होनहार कथन कियाथा ठीक उसही तरह उसही सम्बतसर और उसही मास तिथि मुहूर्त और समय मैं देह त्यागकर परमपद पाया है॥

श्रीहरिः।

अन्त समें साधुसमझावन का अंग।

कुंडलिया।

आवो साधो पास अब नीके जाहु बिराज।
हम जांवें अपधाम कों सब को जै महाराज॥

सबको जै महाराज शोक कुछ करना नांही ।
तुम सब मेरे मांहि वसो मे तुम्हरे मांही ॥
भक्ति भाव गुरु टेक में होके सावहिधान ।
लागे रहियो प्रेमसों रामरूप के ध्यान १

छप्पै ।

मैं लीनों अवतार भक्ति जग में विस्तारन ।
परमारथ के हेत पतित जिय भव जल तारन ॥
सो सब कारज भएहुते परमारथ जेते ।
किये जीव बहु पार पड़े थे भवजल तेते ॥
मोह लोभ हमकों नहीं याही लोक मँझार ।
जैहें अपने धामको होके दसवें द्वार २

कुंडलिया ।

अठारह से सत्तानवें सम्वत तजूं शरीर ।
जेठ सुदी जो द्वादशी ब्रह्म महूरत वीर ॥
ब्रह्म महूरत बीर वार बुद्धवार जु होई ।
उत्तरायन जब भान द्वार दसमें है सोई ॥
संत महंत शिष्य सेवको सवसों कहूं सुनाय ।
हरि सुमरन मनराखियो जगसों मोह उठाय ३

दोहा ।

कुछ इक शामिल कुछ जुदे, कुछ इक राक्षीरूप ॥
ज्यों दीपक जल में कमल, यों रहै रामही रूप ४

कवित्त।

जोग की जुगति करि चाहों तो हजार वर्ष राखों शरीर निज काल सों बचाय के। चाहों तो सहित वपु जाऊं मैं परमपद चाहों तो ब्रह्म बीच जाऊं मैं समाय के॥ चाहोंतो सरूप निजरूप में मिलाय राखों रामरूप होय रहों वही रूप पायके। ऐपै सतगुरु भेद यही तो बतायो मोंहि दसम द्वार छेद मिलूं ब्रह्म बीच जायके॥ ५॥

कवित्त।

राखूं जो शरीर चिरकाल थिर आपनो विशेष करि अंत को सो अंत होय जात है। भाँवें सौ हजार वर्ष भाँवें राखो कोट लक्ष बिनस जाय धूल होय वही एक बात है॥ तातें मन यही धरी इच्छा गुरुदेव फुरी जोग की जुगति करों प्रगट विख्यात है। आप प्रभु आज्ञा दई रामरूप मान लई दशम द्वार प्राण तजों यही मो सुहात है॥ ६॥

इति॥



आमिषनिवारन।

इस अंग में ग्रंथकरता ने जीवहिंसा करके मांस आहार करनेवालों का शास्त्र रीति और युक्ति दोनों तरह से निषेध करके अहिंसा अर्थात् जीव-मात्र पर दया करने और रक्षा करने को परम धर्म वरणन किया है यह कथा महाभारत के दानधर्म पर्वमें भीष्म युधिष्ठिर संवादमें लिखी हुई है इसके पढ़नेसे जीवहिंसा करने की ग्लानि और घृणा उत्पन्न होकर जीव अर्थात् मनुष्य का हृदय दयामय होजाता है यह प्रसंग आद्यो-पांत पढ़नेही योग्य है॥

शिष्यवचन।

दोहा।

व्यासपुत्र शुकदेव जी, तुम पर भये दयाल॥
सबही भेद बताय के, कीन्हों तुरत निहाल १
चरनदास धर नामहीं, कर गहि अपनो कीन॥
अष्टादश षट चार का, भेद तुम्हीं को दीन २
रामरूप दंडवत करै, एहो श्री महाराज॥
कछु कछु शंका मो विषय, दूर करो तुम आज ३

चरनकमल लागा रहूं, सुमरूं तुम्हरो नांव ॥
तुम्हरेही नित ध्यान में, कीनों अपनों ठांव ४

चौपाई ।

बचन तुम्हारे ले हिय धारे । प्रेम भरे मोहिं लागैं प्यारे ॥
करन उजाला घट के माहीं । जिन में टेढ़ बांक कछु नाहीं ॥
सीधे सलिल सांच सुरसरिज्यों । सुनसुन छूटै जमके भैसों ॥
धर्म दृढ़ावन पाप नसावन । निर्मल शुद्धसोमोमनभावन ॥
सुखदाई अमृत ज्यों नीके । शीतल तप्त बुझावन हियके ॥
तुम बचनों बिनऔरनसुनिया । बेद शास्त्र ज्ञानी गुनिया ॥
प्रकट और ध्यान के बीचों । तुम्हरे वचननसूं हियासींचों ॥
रामरूप कछु अर्ज करत है । पूछन की मनमाहिं धरत है ॥

दोहा ।

तुम किरपा मो पै सदा, नीकै जानत चित्त ॥
रामरूप निज दास पर, बहुत तुम्हारो हित्त ५
सकुच न काहू भांति की, पूछत हूं मन खोल ॥
जो जो आवै हिये में, हलकी और अतोल ६
दया बड़ी सबही कहैं, ऋषि मुनि पण्डित तज्ञ ॥
लक्षन दे रक्षा करैं, जो चालै हरि मज्ञ ७
भेद बतावो तासु का, याका संग गहूं ॥
हरि मारग में जो चलूं, हिंसा तकत रहूं ८
ताको नाहीं ज्ञानहीं, जाकी कहा पहिचान ॥
अज्ञान अँधेरे में चलै, कैसे पावै जान ९

भिन्न भिन्न समझाइये, हिंसा के परकार ॥
दया कहो कै भांति की, कीजै घट उजियार १०

गुरुबचन।

दोहा।

भली तु मन पूछन करी, कहूं एक इतिहास ॥
ताकूं सुन उपजै दया, हिंसा जावै नाश ११
महाभारत में यह कथा, दान धर्म पर्व माहिं ॥
भूप युधिष्ठिर पूछिया, भीषम के लगि पाँय १२
ब्राह्मण देवत ऋषि सबै, कहैं दया अधिकाय ॥
हिंसा करन प्रकार के, कहो पिता समझाय १३
हो प्रसन्न भीषम जबै, बचन कहे हर्षाय ॥
जो तोहिं श्रद्धा सुनन की, तौ अब सुन चितलाय १४

चौपाई।

एक तौ हिंसा तन सूं करनी। दूजी वह जो मन में धरनी ॥
अकि मैं वाकूं निश्चय मारूं। सोच करै उसकूं हानि डारूं ॥
तीजी वह जो वचन मँझारा। बाद करत कहै हनूं सँवारा ॥
भक्षण करना चौथी जानौ। याही कूं नीके पहिचानौ ॥
जब लग जीव मारना खाना। मुखसूं कहना मन में लाना ॥
सब प्रकार कूं त्यागै नाहीं। तब लग दया न पूर्ण कहाई ॥
अरु सब धर्म दया के माहीं। दया बिना सब निर्फल जाई ॥
दया मूल सबही की जानौ। सब लक्षण शिरमौरपिछानौ ॥

दोहा।

ज्यों हाथी के पांव में, सब के पांव समाय॥
ऐसै सबही धर्म जो, एक दया के माहिं १५

चौपाई।

दया मूल धर्म जाके डाले। हरे रहैं सब वाके नाले॥
वा बिन सूक बिगड़ सब जावे। हरा नहीं तो फल कित पावे॥
पहिले हिंसा मन सूं त्यागे। वचनो माहि न राखे आगे॥
कर विवेक तन सेती खोवै। तीन भांति हिरदा यों धोवै॥
दया रंग में वाकूं बोरै। तन मन वचन होयगतिओरै॥
रोम रोम में कोमलताई। दिन दिन होती जाय सवाई॥
शुभ कर्मन का उपजे खेता। जब हरि सेती लागै हेता॥
चरणदास कहैं रामही रूपा। दयाशीलदोउ अधिकअनूपा॥

दोहा।

बड़े बड़े जो ऋषि भये, छोड़ा खाना मांस॥
दया गही त्रिविध सहित, जीवन न दीनी तांस १६

चौपाई।

बाजे बस्ती ही में रहे। बाजे तजि जंगल कूं गये॥
वे समझे मन माहीं ऐसे। हमरे बिन्दु भये सुत जैसे॥
जिनके हाड़ मांस अरु लोहू। मींगी त्वचा सबन के होऊ॥
ऐसे सबही जीव पिछाने। अपने पुत्रों की सम जाने॥
उपजी दया जु अधिकसयाने। मांस खान तज दिया घिनाने॥

जिह्वा स्वाद होय बस खावै । मैली बुद्धि हो नर्कही जावै ॥
पहिले आमिख कच्चा लावै । फिर धोके टुक नीक बनावै ॥
जब रांधै तब औरभी नीका । दियै मसाला बहुती ठीका ॥

दोहा ।

वही जु कच्चा मांस था, ना था खाने जोग ॥
रांधे कूं वही जान कै, त्यागै वाका भोग १७

चौपाई ।

याही जन्म आमिष जो खावे । दूजे जन्म नाहिं सुख पावे ॥
ऐसा मांस है देख बिचारे । स्तुति करैं जीभ के मारे ॥
खाये आमिष धर्म न होई । ताहि दृढावैं मूरख सोई ॥
अरु ऐसे बहु धर्मज्ञ भये । बहुतक जीव छुटाय जु दये ॥
बाजे जीव छुटावन काजा । आमिष अपनो दीयो साजा ॥
शेर बाज आदिक जो कहिया । तिनके मुखमें तनगिरसइया॥
सो वे स्वर्ग गये सुख पायो । धर्म कियो सो आगे आयो ॥
यह जो हिंसा चार प्रकारा । जो त्यागै सोइ हरिकाप्यारा ॥
यह तो बड़ा सबन के माहीं । कबहूं पातक लागे नाहीं ॥

दोहा ।

फेर युधिष्ठिर पूछिया, भीषम सूं जु बिचार ॥
बारम्बार तुम कहत हो, दया सर्व का सार १८

चौपाई ।

अरु शास्त्र में ऐसा गाया । आमिष यज्ञ में जोग्यबताया॥
जब लग पित्रों को नहिं दीजै । तबलगखुशी न होहिंकहीजै॥

पितृ अरु देवत के तांई। देना मांस विशेष बतांई॥
अरु तुम निश्चय दया बतावो। सब धर्मों का सार दिखावो॥
तातैं मो मन संशय होई। किरपा करो निवारो सोई॥
भीष्म कही युधिष्ठिर आगे। पुण्य तौ हो आमिषके त्यागे॥
एक समय की कहूं सुनाई। सबही ऋषियोंनिबातचलाई॥
करके बाद जु मथिहित आनी। सो मैं तोसूं कहूं बखानी॥

दोहा।

सहस करे अश्वमेध यज्ञ, मांस तजे एक ओर॥
फल दोनों का एक सा, निश्चय करी करोर १९
एक तो मनु अरु सप्त ऋषि, वालखिल्य मारीच॥
इनका जान अहार ही, सूरज ही की सीच २०
इन सब मिल के यौं कहा, मांस तजै जो लोय॥
मनै करै फिर और कूं, जीव न मारो कोय २१
वह मित्र सब सृष्टि का, सब का रक्षक जान॥
वाकूं कोई न हन सकै, पुरुषन में परधान २२
अरु नारद ऐसे कही, आमिष खाय जु कोय॥
चाहै तन मोटा करूं, वाका भला न होय २३

चौपाई।

अरु बृहस्पति जो यों कर बोला। भेद मांस का उनहूं खोला॥
जिन नर मांस खानतज दीया। मानों कोटि दान जप कीया॥
अरु सबही तप का फल पावै। आप छोड़कर और छुड़ावै॥
पहिले खाया फिर उन त्यागा। तबही तनसूं पाप जु भागा॥

दोहा।

जिननर मननहिं राखिया, मांस खान की बान॥
जानों वाने सबन कूं, दिया जीव का दान २४
औरन ही की देह कूं, जानी अपनी देह॥
मैं डरपूं ज्यों मरन सूं, त्योंही डरपै येह २५
आमिष छोड़न अति भला, सुन हो मेरे मीत॥
शुभ कर्मी धर्मात्मा, जिनकी ऐसी रीत २६
मांस तजन का फल यही, स्वर्गलोक कूं जाय॥
सुख देखै बहु भांति के, ऊंचे मंदिर पाय २७
शुभ कर्मन अरु तपन में, दया शिरोमणि जान॥
जीवन की रक्षा करै, लख जो चारों खान २८

चौपाई।

मांस खाय तिहि राक्षसजानो। छुवै नहीं तो देवत मानो॥
आमिष भक्षै तो हरिजू खीजै। जो छोड़ै तो अतिही रीझै॥
यह तो सृष्टि बनाई वाकी। सुख देवै तो खुशी जु ताकी॥
मांस न पत्थर माहीं निकसै। काठ माहिं वह नाहीं बिगसै॥
जबलग जीव न मारा जावै। तबलग मांस कहांसूं खावै॥
तातें हिंसा बुरी पहिचानो। हिरदे माहिं दयाही आनो॥
निर बैरी जीवन का सोई। वाकूं मारसकै नहिं कोई॥
जंगल अरु पर्वत के माहीं। सांझ दुपहरी नदी ठाईं॥
निर्भय रहै जहां वह जावै। वाकूं बी कोइ नाहिं सतावै॥
चरणदास कहैं रामही रूपा। भीष्म कही युधिष्ठर भूपा॥

दोहा।

बड़ भागी वह जो तजै, मांस खान की रीति॥
वह सबहुन का आसरा, जीवन में परतीति २९
वही छुड़ावै और सूं, जो कोई छोड़ै आप॥
बचन फुरै जो तास का, हिंसा लगै न पाप ३०
जा घट में हिंसा बसै, वाका मीत न कोय॥
बिपता अरु दुख दर्द में, रक्षक कोइ न होय ३१
जैसे सिंह अरु सर्प कूं, दिख पावै जो लोय॥
मारन कूं सब ही चहै, जानत बैरी सोय ३२

चौपाई।

हिंसा का कारन यह जानो। तृष्णा अरुअज्ञानपहिचानो॥
डिम्भ कुसंगत मान बड़ाई। इनहीं सूं उपजे हिय आई॥
अरु मारकण्डेयकी यह साखी। दो बिधि हिंसा एकहीराखी॥
जो कोई जीव आप हत खावै। अथवा कै कोई मोलमँगावै॥
हतै द्रव्य सूं वह अज्ञाना। दोनों का फल एक समाना॥
जो खानेहारा नहीं खावै। तौ बद्धक क्यों छुरी चलावै॥
अरु चारों का फल सम एकै। एक मारै इक रांधै लेकै॥
एक मारनकी आज्ञा देई। चौथा वह जो भक्ष करेई॥

दोहा।

पृथ्वी सोना अन्न जो, देय गऊ का दान॥
इन सें भी फल अधिक हैं, मांस त्याग का जान ३३
कारन जीभ स्वाद ही, जीहति खावै मांस॥

सो प्रानी नर्कै पड़ै, बहुत सहै जम त्रास २५
देवन के हित यज्ञ में, जीव हतै जो कोय॥
वह बी भुगतै नरक ही, पै दुख विता न होय २६
जज्ञ में जीव जु हनत हैं, जिह्वा ही के हेत॥
राखै प्रीति स्वाद सूं, नाम देव का लेत २७

चौपाई।

बरनूं सात कसाई सुनिये। जैसा बोवै तैसा लुणिये॥
एकजु मारन आज्ञा देई। दूजा वह जो बद्ध करेई॥
वेचन लागै तीजा जानौ। मोल जु ल्यावै चौथा मानौ॥
पँचवाँ वह जो सँवारै हितसूं। छठा जु भूनैं रांधै चितसूं॥
सतवां खाय सवादी नीकै। सात कसाई प्रकट ठीकै॥
वेद पुराणन की दे साखी। मांस खान दृढ़ करै अभागी॥
सोवै ब्राह्मण जग के मांहीं। धर्मशास्त्र सूं सनमुख नाहीं॥
मांस खान वे भला बतावैं। बहुत जीव ले नर्कहि जावैं॥

दोहा।

महा दुष्टता हिये में, दया न उनके माँहि॥
रामरूप सूं हित नहीं, चरण दास होंय नाँहि२८
भक्ति तपस्या जो करै, औरन कूं दृढ़ देत॥
हिंसा की वे ना कहैं, दया जु उनका हेत २९

चौपाई।

अरु वे तो जज्ञहूं के मांहीं। जीव हतन आज्ञा दैं नांहीं॥
अरु मोक्ष धर्मवालों यों भाखो। जीव हतनहूं ना राखो॥

कहा कि जो जज्ञ करनउपावै। और वस्तु का पशू बनावै॥
ताकूं होमे यौं जज्ञ करै। जज्ञ फल लहै स्वर्ग पगधरै॥
परा परी सूं यौ चलि आई। धर्म नीक देवन ठहराई॥
एक समय गय नाम जु राजा। रहै चन्देरी शुभ किये काजा॥
गया स्वर्ग मैं पुण्य कमाता। तहाँ ऋषिन मिल पूछी वाता॥
खाना मांस उचित या बरजित। याका उत्तर द्यौ तुम हम हित॥

दोहा।

राजा सुन ऐसै कही, मांस खान है जोग॥
कहत ही पृथ्वी पै पड़ा, लहै न ह्वां के भोग ३०
फेर ऋषियों ने यौं कही, उत्तर देहु विचार॥
तब फिर ऊंही भूप ने, उचित कहो उचार ३१
फिर इतनीके कहत ही, गयो पताले माहिं॥
खोटी साखी जो भरै, सो वह छुट्टै नाहिं ३२
बृहस्पति और अगस्त्य ही, और ऋषी तपवान॥
तिन्हौं जु वन के सब पशू, लिये न जज्ञ मैं जान ३३

चौपाई।

आमिष छोड़न का फल भाखूं। तो सूं कछू भेद नहिं राखूं॥
जैसे गऊ कोटि करी दाना। लक्ष बार त्रिवेनी न्हाना॥
धर्म साथ जिन नीकै कीन्हा। अभय दान जीवनकूं दीन्हा॥
जो कोई मांस तजै नहीं खावे। निश्चय ब्रह्मलोक कूं जावे॥
मांस खान तज स्वर्ग पधारे। तिनके नाम कहूं मैं सारे॥
अम्बरीष राजा कूं जानौं। राजा गय दिलीप कूं मानौं॥

ऋषभदेव अरु कार्त्तवीरज। अनिरुद्धनहुषजुगहिकैधीरज॥
जजात नृग शशि बंधुजिताऊं। कुवलयास जवनास्य बताऊं॥

दोहा।

मानधाता मुचुकुन्द ही, अरु हरिश्चन्द्र कूं देख॥
राजा वसु अरु सिरेजप, अलरक किया विवेक ३४
राजा नल अरु भूप घन, तज्यो मांस को भोग॥
चरणदास यौं कहत हैं, गये ब्रह्मही लोक ३५
अवताई ह्वां रहत हैं, टहल करत हैं देव॥
वहुत सुखी आनन्द में, रामरूप सुन लेव ३६

चौपाई।

मदिरा मास जिन्होंने त्यागा। मानौं वह तप करनै लागा॥
याका फल मैं तोसूं भाखा। वहु भूपनकी दे दे साखा॥
फेर युधिष्ठिर कहने लागे। जगके नर ये बड़े अभागे॥
बड़े निर्दयी भेद न जानैं। पाप पुण्य कूं ना पहिचानैं॥
नाना व्यंजन अरु मिठाई। मेवा तरकारी उपजाई॥
हरिनैं नर के भोजन कारन। कव आज्ञा दई पशू जु मारन॥
तुम सूं सुन मो निश्चय आई। मांस खान है बहुत बुराई॥
जगके नर ये वहु चित लावै। मांस खान मैं स्वाद बतावै॥

दोहा।

कहा वस्तु यह मांस हैं, कौन बस्तु का स्वाद॥
नर जो अंगी करत हैं, करकै वहुत ही वाद ३७
फिर भीष्म ऐसे कही, सुनों भूप प्रवीन॥

इन्द्री स्वाद न बस भये, अज्ञानी बुद्धि हीन ३८
रज बीरज जड़ मांस की, महा अपावन होय ॥
और सबन की नीर जड़, महा पवित्र सोय ३९
कुल स्वाद मैं आँधरे, करैं न नेक विचार ॥
चौके भीतर मांस ले, समझै वहुत अचार ४०
जिनके घर मुरदा रँधै, महा अपावन गेह ॥
ताकूं वे भक्षण करैं, सो चंडाल की देह ४१
रज बीरज से जो भया, दो दिन मैं सड़जाय ॥
उठै महा दुर्गन्ध ही, कृम जहा पड़जाय ४२
देखो ताहि बिचार के, झूठ कही अक सांच ॥
दया बिसारी मूरखों, भूल गर्भ की आंच ४३
समझी जो मैं ने कही, याही मांस की आदि ॥
घीव मसाले के पड़े, ताका होत संवाद ४४
सो तरकारी में पड़े, वहुतै देत सँवार ॥
घीव मसाला स्वाद हैं, नींव माहिं क्यों न डार ४५
देह पुष्ट के करन कूं, मांस खाय जो कोय ॥
ताकूं राक्षस जानिये, रामरूप धृक सोय ४६

चौपाई ।

भूनैं आमिष उठै दुर्गन्धा । तापर भी नहीं समझै अन्धा ॥
करै शिकार जीव हानि ल्यावै । तापर शूरा मरद कहावै ॥
समझै नाहिं हिये के आँधे । इन चालन कर्मों नै वाँधे ॥
आगे बदला देना होगा । जिसने किया सु जैसा भोगा ॥

वाके बदले और न पावै। तन अरु कुटुम्ब जुदाहोजावै॥
ताते सब जीवन हित करिये। दया सार हिये माहीं धरिये॥
जिसने मांस तज्या यौं जानौं। सबही दान दिया जो मानौं॥
रक्षा जीव करै जो कोई। बड़ी तपस्या के सम होई॥
प्रसन्न होय बहुत भगवाना। यही भक्ति यही तप यही ज्ञाना॥
रामरूप सुन कहै रनजीता। भीष्म कही युधिष्ठिर प्रीता॥

दोहा।

जग मैं कोई दानही, जीव दान सम नाहिं॥
जैसै विष्णु धर्म बड़ा, सब धर्मों के माहिं ४७

चौपाई।

कष्ट गर्भ मैं नाना भांती। जठर अग्नि की जारै क्रांती॥
जन्मत कष्ट बहुतही पावै। दुख खै खै कर जगमें आवै॥
रोग आपदा अधिक सतावै। और घनें दुख कहा न जावै॥
तौभी मरण चहै नहिं कोई। जीव प्यारा ऐसा होई॥
तातैं जीव हतन बहुहत्या। शास्त्र साधु सभी कहैं जित्ता॥
कोटि बातका जोड़ लगाया। जीव मारना बुरा बताया॥
तातैं सब जीवन कर हेती। दुख नहिं दीजे तनमनसेती॥
रामरूप यह निश्चय कीजै। मेरे बचन हिये धर लीजै॥

दोहा।

मोहिं कही शुकदेवजी, बार बार समझाय॥
सोई मैं तोसूं कही, दया शील अधिकाय ४८
दान तपस्या जोग जज्ञ, दया मिलै तिहि माहिं॥
तौ फलदायक जानिये, दया बिना कुछ नाहिं ४९

हिंसा की निन्दा करूं, स्तुति दया विनान ॥
कबहूं ओड न आवहीं, कहां लग करूं बखान ५०

छप्पै ।

दया धर्म का मूल दया तप का फलदायक ।
दया ज्ञान का सदन दया लक्षण का नायक ॥
दया पाप कूं हनैं मुक्ति की ठौर बसावै ।
करै हिये कूं शुद्ध नेक जो घट में आवै ॥
और चरणदास तोसूं कहैं रामरूप सुनि लीजिये ।
लख चौरासी जीवकूं दया पाल सुख दीजिये १

दोहा ।

मेरी तेरी गोष्ट यह, पाप मोचन कूं सार ॥
पढ़ै सुनै करनी करै, भवसागर हो पार ५१

शिष्यवचन ।

दोहा ।

जो जो तुम मोसूं कही, समझ धरी मन माहिं ।
सदा रहत हूं आसरे, चरन कमल की छांह ५२

छप्पै ।

जै जै श्री गुरुदेव बड़ी तुम कृपा कीनी ।
मोहिं जान निज दास समझ ऐसी जो दीनी ॥
चरणन लियो लगाय हाथ सिर ऊपर राखो ।
जो जो पूछो भेद खोल के सबही भाखो ॥
अरु तुम साँवत रणजीत हो जोग ज्ञानके भानही ।
रामरूप के तिमिर कूं दूर कियो सब जानही २

पाडिवामाहात्म्य पापमोचनसार।

इस अंग में प्रतिपदा (पड़िवा) अर्थात् प्रत्येक मासकी शुक्लपक्षकी पाहिली तिथि आती है उसके व्रत को पयोव्रत नामसे श्रीमद्भागवत अष्टमस्कंध में श्रीशुक मुनिराज महाराज ने राजा परीक्षित प्रति वरणन किया है कि अदिति कश्यपजी की स्त्री ने इस व्रत को कश्यपजी की आज्ञानुसार किया जिसके करने से श्रीभगवान् ने वामन अवतार धारणकर राजा बलिको छलकर देवताओं को स्वर्ग का राज्याधिकार दिलाया सकाम और निष्काम दोनों तरह के भक्त पुरुषों को इस व्रत का करना योग्य है यह व्रत भोग और मोक्ष दोनों का देनेवालाहै इसकी कथा अवश्य पढ़नीचाहिये॥

श्रीशुकदेवजी सहाय।

अथ श्रीगुरुचेले का संवाद।

शिष्यबचन।

दोहा।

व्यासपुत्र शुकदेव जी, तुम पर भये दयाल॥
सबही भेद बतायकै, कीनौं तुरत निहाल १

चरनदास धरि नामहीं, करगहि अपनों कीन ॥
अष्टादश षटचार का, भेद तुम्हीं को दीन २
रामरूप डंडवत करै, ये हो श्री महाराज ॥
कछु कछु संका मो विषैं, दूर करो तुम आज ३
चरनकमल लागा रहूं, सुमरूं तुम्हरो नांव ॥
तुम्हरेही नित ध्यान में, कीनौं अपनों ठांव ४

चौपाई ।

वचन तुम्हारे ले हिय धारे । प्रेम भरे मोंहिलागें प्यारे ॥
करन उजाला घट के माहिं । जिन में टेढ़ बांक कछु नाहिं ॥
सीधेसलिल सांचसुरसरिज्यों । सुनि सुनि छूटैं जगके भैसों ॥
धरम डिढ़ावन पापनशावन । निरमल सुध सो मोमनभावन ॥
सुखदाई अमृत ज्यों नीके । शीतल तस वुझावनाहियके ॥
तुमबचनौंबिनऔरनसुनिया । वेदशास्त्र अरु ज्ञानी गुनिया ॥
परगट और ध्यानके वीचो । तुम्हरे वचननसूं हियासींचो ॥
रामरूप कछु अरज करत है । पूछनकी मनमाहिं धरत है ॥

दोहा ।

रामरूप पूछन करै, अहो ईश गुरुदेव ॥
पड़िवाही के वरत को, सकल भेद कहि देव ५

अष्टपदी छंद ।

काको है यह वरत कौन विधही करै ।
कहा फलाहर करै ध्यान काको धरै ॥
रहनि गहनि समझाय सकल कहि दीजिये ।

मो मन को संदेह गुरू हरि लीजिये १

गुरुबचन।

धनि धनि रामही रूप भली पूछन करी।
सभी तिथिन को मूल जु यह पहलैं धरी॥
पुरव तिथिन की आदि व्याधि सबहि हरै।
याको वरत प्रधान मुक्ति कारज सरै॥
आदि पुरुष को वरत जु सब के आदि है।
तीनों गुन सूं परै जु रूप अगाध है॥
पयो वरत इहिं नाव श्री भागोत मैं।
अष्टमही अस्कंध कही सब जुगत तैं॥
कश्यपही की नारि अदित्ती नैं कियो।
पड़िवा ही सूं द्वादसी लौं सेवन लियो॥
मोसूं कही सुखदेव दया के भावसूं।
रामरूप तोहि कहूं अधिकही चावसूं २

दोहा।

अब याको कारन कहूं, सुखदेव दिया विचार॥
दित्ती और अदित्ती हैं, कश्यप की दोउ नार ६
भये आदिति सूं देवता, दिति सूं दैयत जानि॥
दोनों में भया बैरही, हुई प्रीति की हानि ७
देवन पै दैयत चढ़े, लिया सुरन कूं घेर॥
जब वे सबही भाजियां, राक्षस दल कूं हेर ८
रूप :वरन कूं फेरकै, गए देवता भाज॥

जब दैयत बलवंत हो, लिया स्वर्ग का राज ९

अष्टपदी छन्द।

भया अदिति शोक ज़ु सुनि व्याकुल भई।
डारो उतार सिंगार ज़ु भौमें पड़ि रही॥
भोजन अरु जलपान ज़ु उन त्यागन कियो।
पुत्रन की गति जानि रोवै सिलगें हियो॥
कश्यप सहज सुभाव ज़ु वा घर आइया।
तिरिया कूं इहि भांति उदास ज़ु पाइया॥
उठ ठाढ़ी कर जोरिकै सीस नवाइया।
कश्यपने गह हाथ ज़ु पास बैठाइया॥
देखिकै वदन उदास ज़ु पूछी बातही।
कुछ काया में कष्ट भयो उतपातही॥
अर्थ धर्म और काम विघन तामें भयो।
कै कोई आय अतीत बिना भिक्ष्या गयो॥
कै कोई ब्राह्मण पूजा सूं गयो हीनहीं।
कै कोई कडुवे बचन दुखायो दीनहीं॥
ग्रहस्त आश्रम के धरम सूं कै बाहर चली।
मोसूं कहो अब सांच सभी बातैं भली २

दोहा।

बचन पुरुष के जब सुने, कही ज़ु अदित्ती बात॥
अर्थ धरम और काम में, सबै भांति कुसलात १०
अतीत ब्राह्मण आईया, तिनकी पूजा कीन॥

ग्रहस्त आश्रम के धरम में, कछू भयो नहीं छीन ११
जो जो धरम सिखाइया, सो मैं लीने धार॥
क्यों न मनोरथ सिद्ध हों, सिरपर तुम भरतार १२
रज तम और सतोगुनी, परजा तीन प्रकार॥
तुम्हरेही मन देह सूं, उपजी सिष्ट अपार १३
तुम तो सबही सिष्ट कूं, करो बराबर प्रीति॥
पै भजते कूंअधिकीभजो, यह ईश्वर की रीति १४
मैं तुमकूं निशिदिन भजूं, पतिबरता ब्रत धार॥
तुमहूं करो सहाय अब, दुख अरु कष्ट निवार १५
शत्रुन में अस्थान ले, मो सुत दिये निकास॥
तेज वड़ाई लक्ष्मी, रही न कोई आस १६
जैसे थे तैसे करो, जब मन आवैं सांति॥
लक्ष्मी अरु अस्थानही, वासूं अधिकी क्रांति १७
मेरा भला विचारिये, जासूं यह दुख जाय॥
मैं अपना बदला लहूं, ऐसा कहो उपाय १८
याहिभांतिजबअदिति ने, करी बिनय बहु बार॥
सुनि कश्यप मुसक्याइया, जग की बुधि निहार १९
कह्यो कि माया बिष्णुकी, परबल अधिक अपार॥
मोह आस अहंकार सूं, बांधो सब संसार २०
कहां तो तन पंचतत्त्व को, कहां मूल परकृत॥
जाके परै जु आतमा, सो वह है पर्म तत २१
को पति पुत्तर आदि दे, सबका कारन मोह॥

याही सूं है प्रीतिही, याही सूं हे द्रोह २२
यह कहिके पाछे कहा, आदि पुरुष भजलेह ॥
जेती मनकी कामना, वह पूरन करिदेह २३
अंतरयामी सबनके, वे ईशन के ईश ॥
दीनानाथ दयाल हैं, भक्त वछल जगदीश २४
फलदायक हरि भक्तिहि, यह मेरी मतिसार ॥
या सम कोइ औरना, देखी हिये विचार २५
सुना अदिति ए सोचिया, कहा जु सीस उठाय ॥
कौन भांति हरि कूं भजूं, कहिये सोई उपाय २६
जासैं सत संकल्प सूं, करै मनोरथ पूर ॥
वही बतावो जो करूं, तासूं दुख हो दूर २७
सुतन सहित में खेद मैं, सोच सोच दुख होय ॥
मो पै हरि परसन्न होंय, बेग कहो विधि सोय २८
कश्यप सुनि मन मगनहो, कहा जु ऐसे बोल ॥
जासूं हरि परसन्न होयँ, कहूं सोई विधि खोल २९
ब्रह्माने मोसूं कहा, सबही विधि समझाय ॥
सो मैं तोसूं कहत हूं, मो ओरी मनलाय ३०
अदिति तिरिया सूं सोई, कश्यप देव भनौं ॥
चरनदास तोसूं कहैं, रामहीं रूप सुनौं ३१

अष्टपदी छन्द ।

कश्यप ने बहु भांति अदिति समझाइया ।
वरत करन की जुगति सभी जु बताइया ॥

सो सुनि पड़िवा बरत अदित्ती ने कियो।
द्वादसी लौं हीं जान जु तप में मन दियो॥
मन राखा हरि ओर बरत करने लगी।
कश्यप ने जो कहा सोई रंग में पगी॥
जो मैं सब विधि कहूं होय बिस्तारही।
जैसें जैसें कियो अदित्ती नारिही॥
सो भागौत के माहिं देख ले चावसों।
अष्टमही अस्कंध के माहीं भावसों॥
ताही के परताप सूं हरि परसन भए।
धरि बावन अवतार जु बलि द्वारे गए॥
पूरन कारज करे अदित्ती माय के।
तीन लोक लिए नाप जु देह बढ़ाय के॥
बलिराजा के छलैं सभी राछस छले।
देव नहीं अस्थान सभी पाये भले ४

दोहा।

ऐसा पड़िवा बरत ही, सब बरतन सिरमौर॥
आदि पुरुप का बरत है, या सम नाहीं और ३२

शिष्यबचन।

पड़िवा ही का बरत यह, द्वादसी लौं चल जाय॥
याका कारन कौन है, सतगुरु मोह बताय ३३

गुरुबचन।

है तौ पड़िवा ही बरत, ताका सेवन कीन॥

ग्यारह दिन पूजन किया, हरिपरसन करिलीन ३४
सभी तिथिन की जड़ यही, पड़िवा याका नाम ॥
बरत करै निहकाम जो, पहुँचे हरि के धाम ३५
पड़िवाही कूं जानिये, सभी तिथिन की आदि॥
फलदायक बहुभांति की, रामरूप सुनि साध ३६
संवत के बारह बरत, करैं सोई फल लेत ॥
अदिति कूं कहे एकठे, वाके आतुर हेत ३७
सदा बरत करता रहै, तजै फलन की आस ॥
वाकी सरबर को करै, होय चरण का दास ३८

शिष्यवचन ।

रामरूप पूछन करै, अहो गुरू रनजीत ॥
भिन्न भिन्न समझाइये, सबही याकी रीति ३९

गुरुवचन ।

रनजीता यों कहत हैं, सुनो रामही रूप ॥
तेरे हित परगट करूं, धराहुता जो गूप ४०
पड़िवा ही के बरत की, चाह उठै मनमाहिं ॥
तौ फागुणसूं लीजिये, चरनकमलकीछांहिं ४१

अष्टपदी छन्द ।

मावसही के द्यौस प्रथम संजम करे ।
सारे दिन हियमाहिं ध्यान हरिको धरै ॥
चौथाई रखि भूष पावे इकबारही ।
हरिकूं पूजन करै हिय में धारही ॥

कड़ुवा बचन कठोर न काहू सूं कहै।
सील दया संतोष छिमा धारैं रहै॥
पंच बिसै मन जाय सँभाल जु लीजिये।
गुरु मंतर की माल पांच जप कीजिये॥
बीत जाय सब द्यौस आवै फिर रातिही।
ऐसे ही रैन बितावैं हरिगुरु साथिही॥
मावस की बिधि कही जु ताहि सँभारिये।
पड़िवाकी अब कहूं सुनौं चित धारिये ५

दोहा।

भोरही उठि स्नान करि, और करैं नित नेम॥
बरत हिये में धारिकै, हरि सूं राखै प्रेम ४२
सबही सूं मन खैंच करि, लावै हरि की ओड़॥
चरनकमल में चित धरै, जगसूं नाता तोड़ ४३
कै मनमें कै प्रतिमां, पूजा भांतिही दोय॥
दोमें एकही कीजिये, जैसी सरधा होय ४४
पहले आवाहन करै, पूजाही के आदि॥
हाथ जोड़ अस्तुति करै, सब अंगों कूं साधि ४५

अष्टपदी छन्द॥

दूध सूं बिष्णु न्हुवाय बसन पहराइये।
फिर कीजै डंडौत अंग सब नाइये॥
सब बिधि पूजा साज करै मन लायकै।
कै गुरुही की करै जु चित्त लगाय कै॥

हरि गुरु दोनों एक जु निहचै जानियो ।
इन विन काहूं आन कूं नेक न मानियो ॥
अनन्य भक्तिका भाव हिय धरि लीजिये ।
फिरि दोऊ कर जोरि के अस्तुति कीजिये ॥
अव मैं करूं वखान जु यों अस्तुति करै ।
जै जै जै तुम नाम सकल पाति गहरै ॥
सब के अंतरजामी सर्व घट माहिं हो ।
माया तुम्हरे संग वंधे कछू नाहिं हो ॥
वासुदेव पर धाम तुम्हें डंडौत है ।
परगट सूक्षम पुरुष तुही जग जोत है ॥
अपने गुण की गिनती जाननहार हो ।
और चौवीसों तत्त्व के साक्षी सार हो ६

अष्टपदी छन्द ।

तीनौं गुण सूं परे तुम्हीं परमातमा ।
ब्रह्मादिक कछू भेद तुम्हारो जानि ना ॥
सदा परम कल्यान जु मंगल रूप हो ।
सब सक्तिन के धारन हार अनूप हो ॥
सब विद्या सब प्रानियों के अधिपत्त हो ।
तुम्हैं करूं डंडौत सदा ही सत्त हो ॥
सब माहीं सब ठौर सदाही भरि रहे ।
अद्भुति रूप वैराट तुम्हीं यह धरि रहे ॥
तीन भांति जहां आनंद करत किलोलही ।

और महा निरलेप अडोल अबोलही ॥
सबके आतम रूप जोगेश्वर ईशहो।
आदि देव नारायन बिसवे बीस हो॥
नील ही मणिसा सुंदर सोहत अंग है।
पीतांबर तन माहिं बिराजत संग है॥
पुरुषन के वरदायक सब फल देतही।
ब्रह्मादिक सब देव पूजैं या हेत ही ७

अष्टपदी छंद।

ताते संत विवेकी करैं जो उपासना।
तिनको काहु भांतिकी होय न त्रासना॥
लक्ष्मी तुम्हरे चरण कमल की बासही।
सूंघो चाहत नित्य करैं यह आसही॥
मोपे परसन होउ श्री भगवानही।
अस्तुति कहा कहसकूं बुद्धि नहिं ज्ञानही॥
फिर परदिछना करैं ऐसे ही भाखिके।
और करैं दण्डोत पगन सिर राखिके॥
चरणामृत करि पान हाथ हिय पै धरैं।
जासूं निर्मल बुद्धि सकल पातक हरैं॥
रामरूप सुनि राखि हिये में प्रीति सूं।
कही चरन ही दास सभी वा रीति सूं॥
शुक्लपक्ष के आदि जो पड़िवा जानिये।
वृत्त करैं पय पान कबहूं नहिं भानिये॥

जो पै निर्जल करै तो फल हो चौगुना।
जाप करै कै ध्यान ठिकाने रख मना ८

दोहा।

ब्रह्मचर्य ही सूं रहे, सोवे भौं के माहिं॥
मिथ्या कडुवा हीं वचन, वादि न बोलैं नाहिं ४६
सब भोगन कूं त्याग कै, होय रामकी ओर॥
जीवन को दुख देय ना, निन्दा ही को छोड़ ४७

चौपाई।

जो कबहूं उद्यापन कीजै। सकल सौंज सजि वामन दीजै॥
पंचाअमृत को जो बनावे। श्रीकृष्णको मन में न्हवावे॥
पूजा करे उमँग मन माहीं। किरपनता हिय लावे नाहीं॥
यथाशक्ति जैसा जो होई। कै राजा कै गरीब कोई॥
नैवेद्य भगवानहि अरपै। सुन्दर पूजा मनमें थैरप॥
जासुं प्रसन्न होइँ भगवाना। देवैं भक्ति हरैं दुख नाना॥
अन्त मुक्तिही कूं पहुँचावे। जनम मरण का रोग मिटावे॥
चरणदास कहैं आगे सुनिये। ताकूं ले हिय माहीं गुनिये॥

दोहा।

ज्ञानवान गुरु पूजिये, करिके सबही साज॥
पार उतारन हारही, जिनकी वड़ी जहाज ४८

चौपाई।

चौकी पर आसन जु बिछावे। तापै सद्गुरु को बैठावे॥
मस्तक ऊपर तिलक चढ़ावे। फूलनकी माला पहिरावे॥

सुन्दर गहना बस्तर आगे। भेंट चढ़ाय प्रेम रस पागे॥
चौदह लोटे जल भरि राखे। बरन मिठाई ऊपर जाके॥
सबपै धरे अँगोछे भीके। फुल्लत होय बहुतही हियके॥
कछू दर्ब सरधा जो होई। यहभी उन पर राखे सोई॥
लोटे तांबे पीतल जेरे। नहीं शक्ति तो माटी केरे॥
करगहि थाल चौमुखा करिये। चन्दनअगरसुगन्धजोधरिये॥
ऐसे साज आरती कीजे। सन्तों सहित प्रदक्षिण दीजे॥
फिर दण्डवत करै ले साथा। गुरु चरणन पर राखे माथा॥
हाथ जोर करि अस्तुति करै। कहै कि मेरे पातक हरै॥
ध्यान तुम्हारो नितही रहै। इत वितको मन नाहीं बहै॥

दोहा।

तुम पाये सब कुछ मिला, रही बासना नाहिं॥
गुरु गोविंद की भक्ति ही, सदा रहो हिय माहिं ४६
जागरन फिर कीजिये, मिल भक्तन के संग॥
मृदंग ताल तम्बूर ही, हरि गुण गाय उमंग ५०

चौपाई।

रामरूप सुन दोयज दिनकी। देय रसोई हरिके जनकी॥
और द्विजन कूं हित सूं न्योते। सबसूं प्रीति करै वह बहुते॥
समय रसोई के जो आवे। उनहूं कूं करिहेत जिमावे॥
जाति बरण कुल कछू न देखै। दे परसाद राम के लेखै॥
दीन अंध अथवा चंडाला। अन्नसूं पूजे हो किरपाला॥
काहू कूं कडुवा नहिं भाखै। एक एक के मनकी राखै॥

ता पाछे सब कुटुँब जिमावै। तिनमें बैठ आपहू पावै ॥
चरणदास अब खोलि दिखावै। पयोबरत करि राम रिझावै ॥

दोहा।

कश्यप सूं कह्यो विरंचि ने, उन कह्यो अपनी नारि ॥
सूक्षम करि मैंने कह्यो, रामरूप हिय धारि ५१
मोसूं कह्यो शुकदेव ने, याको सबै विचार ॥
यह तो तप को सार है, परसन हो करतार ५२
वही नेम तप बरत है, वही जोग जज्ञ दान ॥
जासूं हरि परसन्न होहिं, जगपति कृपानिधान ५३
सो हरि परसन करानि को, पयो वरत यह सार ॥
रणजीता ने ज्यों कह्यो, अपना तोहिं निहार ५४
पढ़ै सुनै जो प्रीति सों, करणी करैं सँभार ॥
पाप भजैं सब देह सूं, पावैं मुक्तिद्वार ५५
चन्द्रकला जैसे वढ़ै, तैसे बुधि परकास ॥
हरि रीझैं अपनाय के, करैं चरन ही दास ५६

दोहा।

जो जो पूछी सो कही, सुनो राम ही रूप ॥
और जो पूछो सो कहूं, परगट हो या गूप ५७

इति श्रीस्वामीरामरूपजीकृतप्रातिपदा-
माहात्म्यं संपूर्णम् ॥

श्रीराधासरसबिहारिणे नमः।



श्रीगुरुदेव अंग

✻ अनेक रागरागिनियों में विरचित है ✻

इस अंग को ग्रंथकर्ता ने अनेक तरह के राग व रागिनियों में श्रीमत् गुरु महाराजकी महिमा व स्तुतिको गायनकर श्रीगुरुदेवको श्रीगोविंद भगवान् से भी विशेष करके वर्णन किया है और श्रीगुरु महाराज की

उत्कंठा (विरह) भावना और महत्त्वको गायन कर लोक परलोक सहायक और सुखदायक श्रीगुरु महाराजको वर्णन किया है श्रीगुरुजन्म बधाईके पद परम गुरुभाव वर्धन करनेवाले अपने प्रेमोद्गार से रचना किये हैं गुरुभक्त पुरुषों को गुरुभक्ति भाव वृद्धि करने वाले श्रीगुरुजन्मोत्सव में प्रेमपूर्वक गाने के योग्य हैं ॥

राग बिलावल ।

नमो नमो गुरुदेवजी मैं शरण तिहारी ॥
चौरासी के जालसूं मोहिं लेहु निकारी ॥ १ ॥
जन्म भये बहुभांति के दुख सहे अनेका ॥
तातें तुम शरणालई दीजे मुक्ति विसेखा ॥ २ ॥
काम क्रोध मोह लोभ का काटो उरझेरा ॥
प्रेम भक्ति हिये में धरो घट होय उजेरा ॥ ३ ॥
रिद्ध सिद्ध मैं ना चहूं नहीं राज प्यारो ॥
दास आपनो जानके भव जल सूं तारो ॥ ४ ॥
चरणदास समर्थ गुरु यह अर्ज सुनीजे ॥
रामरूप आधीन कूं निर्भय पद दीजे ॥ ५ ॥

राग कहरवा।

साधो चरणही दास को इष्ट मेरे॥
बिना चरणदास और मानूं नहीं
परी यही बान सो कहूं टेरे॥ १॥
मूल परकृत चरणदास महालक्ष्मी
चरणही दास सुर आदि सबही॥
गरुड़ चरणदास गनेश चरणदास हैं
चरणही दास हैं सूरससिही॥ २॥
विरंचि चरणदास महादेव चरणदास हैं
चरणही दास नारद गुसाईं॥
व्यास सनकादि अरु मुनी चरणदास हैं
चरणही दास हैं शेष ताईं॥ ३॥
ध्रुव प्रहलाद चरणदास प्रकट सदा
चरणही दास जो प्रेम धारैं॥
चरणहीदास हैं भक्त जितने भये
चरणहीदास आपा सँभारैं॥ ४॥
नामदेव धना क़बीर चरणदासही
नरसिया और जैदेव नामी॥
चार युग माहिं जिन जिन करी भक्तिही
चरणहीदास सूं भये स्वामी॥ ५॥
चरणहीदास को ध्यान हिये में रहो
रामही रूप दोऊ हाथ जोरे॥

चरणहीदास के साथ नितही रहूं
यही है टेक अरु आश मोरे ॥ ६ ॥

राग कडरवा ।

साधो राम रणजीत बिन कौन तारे ॥
कौन पातिक हरै कौन रक्षा करै
कौन सिर कर धरै को उवारे ॥ १ ॥
आन सब तज दियो नाम हृदय लियो
सिमट कर लगोहूं चरण लारे ॥ २ ॥
एक मेरे वही नाहिं दूजो सही
टेक ऐसे गही कर विचारे ॥ ३ ॥
उसी ज्ञान और ध्यान है उसीको
उसीको नाम जो पाप जारे ॥ ४ ॥
वही है इष्ट अरु मीतभी वही है
वही निराधार को है अधारे ॥ ५ ॥
वही है मात अरु पिताभी वही है
वही गुरुदेव सुख दिये सारे ॥ ६ ॥
वही नाते सभी नाहिं न्यारे कभी
वही निश्चय कियो सब विसारे ॥ ७ ॥
रहूं आनन्द में सदा जो निशि दिना
किये दुख दूर जो हुते भारे ॥ ८ ॥
कहै रामरूप सब सांचही मान यों
लोक प्रलोक में वे निहारे ॥ ६ ॥

राग सारंग।

पाये हम गुरु गोबिन्द समान ॥

रूप सलोना सुन्दर सांवल दर्शनसूं कल्यान १
शील दया तन मनके माहीं देत भक्ति को दान ॥
तेजवन्त विख्यात जगत में परमारथ की वान २
ज्ञानवन्त गम्भीर धीर मत जिनके नाहीं मान ॥
सकल आतमा एकही जानै दूजी ना पहिचान ३
गुणातीति रीत जग डारी कियौ वासना हान ॥
महाप्रसन्न सोग नहीं बुद्धि में समझ बड़ी विज्ञान ४
सो गुरु हैं रणजीत मीत हरि जिनको मेरे ध्यान ॥
रामरूप के इष्ट सोई हैं और न कोई आन ५

राग गौरी।

सतगुरु आवो मोरे अंगना ॥

लोक परलोक तुमही हो साथी
कुटुम्ब मित्र कोई और संगना ॥ १ ॥
चौक पुराऊं पटा बिछाऊं
पूरी करो अब मोरी लगना ॥ २ ॥
करूं आरती तन मन वारूं
प्रफुल्लत हो मन मगना ॥ ३ ॥
लगो उमाह सिमट मग जोहूं
वार बार चितऊं सुगना ॥ ४ ॥

ज्यौं ज्यौं ढील लगै आवन में
त्यौं त्यौं जी तरेसे दुगना ॥ ५ ॥
वेगही आवो मोहिं न कुढ़ावो
रात दिना तुम कूं जपना ॥ ६ ॥
जो कुछ हो सो तुम्हीं हमारे
तुम बिन और नहीं अपना ॥ ७ ॥
दर्शन दीजै दुख हर लीजै
अर्ज करूं हो आधीना ॥ ८ ॥
चरणदास रामरूप कहत हैं
चित दे सुनिये परवीना ॥ ९ ॥

राग बिलावल ।

धन धन मुरलीधर बड़भागी ॥
देहुं अशीष होय बन्दीजन
भवन तुम्हारे नव निधि जागी ॥ १ ॥
पुत्र भयो घर तुम्हरे सुनकर
लैन बधाई हम हूं आये ॥
दूब हमारी ले शिर धरिये
बड़े चावही सूं जो लाये ॥ २ ॥
वसुदेव सम तुमहीं कूं जानूं
डहरा जानूं बृज समाना ॥
देवकी सम कुञ्जो कूं जानूं
बालक जानूं सम भगवाना ॥ ३ ॥

ह्यां दूसर ह्वां जादो के कुल
कंस हनौं वा तात छुटायो॥
ह्यां तो बन्ध छुटावन बहुते
भर्म दलन हरिजन होय आयो॥ ४॥
ग्वाल बालकूं ह्वां सुख दीने
दुष्ट पछारे अति बलदाई॥
ह्यां तो भक्ति चलावन कारन
जन्म लियो है कुँवर कन्हाई॥ ५॥
रणजीता कूं मोहिं दिखावो
यही बधाई मैं जो पाऊं॥
रामरूप कह भक्ति राजके
उमंग उमंग नीकै जस गाऊं॥ ६॥

राग बिलावल।

धनि धनि कुञ्जो भाग तुम्हारे॥
जन्म लियो है पतित उधारन
देखोगी अब कौतुक सारे॥ १॥
धर्म बढ़ावन भक्ति चलावन
पाप भगावन स्वामी॥
बिष्णु समान सतोगुन धारै
चहुँ दिशि है है प्रकट नामी॥ २॥
चरणदास हो ईश्वर आये
कोऊ भेद न जानै॥

माया डार दई तुम सब पर
तातैं कोई ना पहिचानै ॥ ३ ॥
मैं तोहिं देहुँ चिताये रानी
नीकै कीजो सेवा ॥
तेरा पुत्र दोऊ कुल तारन
जन्म जन्म के दुख हरलेवा ॥ ४ ॥
पण्डित सोध कही यों ऐसै
शुभ दिन घड़ी बताई ॥
ग्रह पड़े हैं बड़भूपन सूं जन
रामरूप बधाई गाई ॥ ५ ॥

राग मलार ।

सखीरी आज कुञ्जो ग्रह बधाई ॥
मुरलीधर घर बालक जायो धनिधनि भाग बड़ाई १
अक्षत दूब प्रोहित लाये नौबत द्वार धराई ॥
सात सींक ले धरो साथिया वन्दनवार बँधाई २
पत्र लिखन बुलायो पाँडे याको नाम धरीजै ॥
कैसे ग्रह नक्षत्र कैसे नीकै सोध कहीजै ३
सोध सोध और दृष्टि उठाकर ब्राह्मण कहि मुसक्यानौ॥
मनुष्य नहीं कोई यह अवतारी साँच हमारी मानौ ४
ऐसे ग्रह पड़े हैं ऊँचे भूप करैंगे सेवा ॥
छात्रधारी आन नवैंगे यह तौ पुरुष अभेवा ५
जीव उबारन भर्म निवारन जग में प्रकटो आई ॥

है तुलरास नाम रणजीता उपमा कही न जाई ६
प्रागदास सबहूं खुशी होय के दीनै दान अघाई ॥
रामरूप बन्दी जन ठाडौ पावै दर्श बधाई ७

राग मलार।

मनुष्य सब भीतर बाहर बोलैं॥
मुरलीधर घर बालक हूवो मगनभये यों डोलैं १
कोई कह पण्डित कूं ल्यावो मालन दौर बुलावो ॥
भवन भवन और घर घर द्वारे बन्दनवार बँधावो २
मंगल चार जु गावत नारी वाजत नौबत द्वारे ॥
नाई ब्राह्मण भाट डूंमनकी भीर बहुत भई भारे ३
प्रागदास पत्र लिखवायो नाम धरो रणजीता ॥
साठ अठारह धेनु दानदी और द्रव्य बहु दीता ४
ढहरे माहिं पौल पौल घर हुई बधाई सारे ॥
रामरूप या लीला ऊपर तन मन सर्बस वारे ५

राग कान्हरा।

सत गुरु दान अभय पद
दीजिये हो दीजिये।
तुम बिन और कौन उपकारी
किरपा मोपे कीजिये हो कीजिये॥
स्वास अमोल अतोल रतन ए
दिन दिन छिन छिन छीजिये हो छीजिये।

रामरूप की बेदनि यह है रनजीता
सुनि लीजिये हो सुनि लीजिये ॥

राग सारंग।

मोकों गोबिंद सों गुरु प्यारो।
गोबिंद ने गुन संगी कीनो गुरु ने कीनो न्यारो ॥
गोबिंद लोक भोग बिष दीए अरु परलोक बिगारो।
बिषई बंधन काटे सारे गुरु परलोक सँवारो ॥
गोबिंद अर्थ काम मोहिं दीने भौसागर में डारो।
अर्थ काम गुरु मोहिं छुटायो भौ सागरतें तारो ॥
चरनदास गुरु देव दया करि दियो अभय पद भारो।
रामरूप आनंदही पाए बार बार बलिहारो ॥



साधु महिमाअंग

इस अंग में ग्रन्थकर्ता ने साधु और संतों की महिमा को पद रचना करके इस प्रकार से गाया है कि तीनों काल और चारों युगों में चतुर्वर्ग और साक्षात् श्रीभगवान् का साक्षात्कार दर्शन प्राप्त किया है वो केवल साधु महात्मा पुरुषों की सेवा और सत्संगसे ही कियाहै जैसे अनेक लघु दीर्घ नदियां श्रीगंगाजी में मिलकर समुद्र में प्राप्त होजाती हैं इसही तरह यह जीव साधुसंगमें मिलकर श्रीभगवान् करुणा कृपानिधान के सान्निध्य पहुँचकर कृतार्थ होजाता है और पुनरावृत्ति (जन्म मरण) से छुटकर निश्चल परमानन्द सुख पाता है ॥

राग आसावरी ।

बाबा अब सब कुछ हम पाया ॥

साँचे साधु मिले उपकारी नाम धनी चित आया १

तिन सूं मिल दृढ़ता अति उपजी दया क्षमा पहिचानी॥

शील सन्तोष गहे जो गाढ़े छूटी भरम कहानी २
भागी कुबुध सुबुध भई थिरता यह द्रव्य बहुतेरा ॥
अब निर्वैर हुवा मन मेरा आनन्द भये घनेरा ३
साधु अगाध अभय पद दाता मैं तिन कूं शिर नाऊं॥
जन्म मरण की चिन्ता खोई बार बार बलि जाऊं ४
साधु भक्ति मेरे घट आई जब सूं साह कहाया ॥
रामरूप दुख धोय वहाए हरि प्रकट दरसाया ५

राग आसावरी।

जग में सतसंगत सुख सारा ॥

दुख मेटन और भर्म निवारन पाप कटन कूं आरा ॥१॥
जहां तहां को नीर मलीना नाले मिलिया जाई ॥
नाला मिल गंगा के माहीं सो जल गंग कहाई ॥२॥
गुबरीडा संग कियो भँवर को बैठो फूल मँझारा ॥
पुहपन में मिल देवन चढ़िया दूजे सुरसरि धारा ॥३॥
पारस संग लोह भयो सोना सारह काठ तिरावै ॥
पात पलास पान संग करके भूपनके कर जावै ॥४॥
मलियागिरि संगत वर चन्दन होय बास महकावै ॥
त्यौंही पापी नर साधौं संग जन्म मरण विसरावै ॥५॥
रामरूप संग चरणदास के भूल अविद्या खोई ॥
उपजो ज्ञान जीवता नाशी मैं तैं रही न कोई ॥६॥

राग आसावरी ।

जग में सतसंगत फल नीको ॥
चाखत मात्र होत अमर पद दुख मिटावे जीको ॥ १॥
दया धर्म अरु जप तप दाना संजम पूजा सेवा ॥
जो फल इन सबहुन के कीये सो संगत में लेवा ॥ २॥
निर्जल व्रत करे कोई हित सूं अड़सठ तीरथ न्हावै ॥
ब्रह्मादिक सेवत फल होवै सो साधुन में पावै ॥ ३ ॥
काम धेनु अरु कल्पवृक्ष सम साधु संगत है भाई ॥
अमृत रूप वचन सुन तिनके तीनौं ताप नशाई ॥४॥
साधु संगत सुख एक घड़ी जो मुक्ति न तासु समाना ॥
इन्द्रादिक सुख तौ ता आगे कछू वस्तु नहीं जाना॥५॥
चरणदास कही रामरूप सूं यह चितदे सुन लीजे ॥
निज उपदेश यही तोहिं देहूं संगत माहिं रहीजे ॥ ६॥

राग रामकली ।

सीत सन्त का पार उतारै ॥
महाप्रसाद कहत हैं ताकूं बड़भागी कोई वाकूं धारै १
जाकी महिमा नारद जानैं नाभा साख बखानैं ॥
स्वर्गलोक में देवत तरसैं साकत नरकहु क्यापहिचानैं२
शबरी भक्त जान फल खाये जूठे श्रीभगवाना ॥
जाकी साख जगत में फैली गावत सबही गुनीसयाना३
सीत महातम सब से ऊंचा सब तीर्थ शिर मौरी ॥
रामरूप चरणदास जतावैं तापायें होवै बुद्ध औरी ४

राग बिलागड़ा ।

साधो वे हरि जन हरि प्यारे ॥

समदर्शी है आतमज्ञानी राग द्वेष सूं न्यारे १
काम क्रोध नहिं द्रोह काहूं सूं शील शृंगार शृंगारे ॥
उनमत रहैं सदा आनन्द में ग्रह वन दोऊ इकसारे २
इन्द्री बस मन जीत लियो है रामनाम आधारे ॥
दयावन्त संतोषी साँचे अभय दान दातारे ३
जीवनमुक्त फिरैं जग माहीं प्रेम मगन मतवारे ॥
जिन सन्तन की आश करत है अड़सठ तीरथ सारे ४
हरि समान वे चरणदास हैं वेदपुराण पुकारे ॥
रामरूप तिनके चरणन पर तन मन सर्वस वारे ५

राग धनासरी ।

अरे नर जो तुम साधु कहावो ॥

तन मन वचन कर्म जो लागैं तिनकूं क्यों न बचावो १
काया के जो तीन कर्म हैं सो चित दे सुन लीजै ॥
चोरी जारी अरु हिंसाही स्वप्नेहूं नहिं कीजै २
मन के तीन प्रत्यक्ष बखानूं नीके तिन्हैं निवारो ॥
खोटी चितवन वैर भाव ही तीजा गर्व न धारो ३
चारवचन के हितकरसमझो हरिगुण विनाना भाखो ॥
कडुवा झूंठ वचन मत बोलो निन्दा नेक न राखो ४
ये दस महा पाप जो कहिये पकड़ नर्क ले जावैं ॥
रामरूप तू सावधान हो चरणही दास बतावैं ५

राग बिलावल।

ऐसा होय सोई बैरागी ॥

राग द्वेष रञ्चक नहिं जाके
निष्कामी तन मन सूं त्यागी ॥ १ ॥
रिद्ध सिद्ध की चाह न राखै
इन्द्र आदि सुख तृण सम जानै ॥
कंचन कांच रंक राजा कूं
एक भाव एकै पहिचानै ॥ २ ॥
सत्यवादी स्थिर हरि मग में
मुक्ति स्वरूप नहीं कछु आशा ॥
चाह चमारी तजिया सारी
सन्तोषी आनन्द की राशा ॥ ३ ॥
कोमल वचन हृदय शीतलता
दयावन्त सब का उपकारी ॥
समदर्शी दुविधा नहिं चित में
करै हेत सब सूं इकसारी ॥ ४ ॥
काम न क्रोध न मोह न लोभा
गर्व गुमान नहीं उर आनैं ॥
पाँचों इन्द्रिन के रस तज के
अनहद नाद रहत गलतानैं ॥ ५ ॥
सहज सुभाव रमैं जग माहीं
शरण लगै जाही कूं तारैं ॥

कर उपदेश कुकर्म छुटावैं
परमारथ हित जीव उबारें॥ ६॥
ऐसा सन्त कोई कोटिन में
ज्यों शूरा फौजन मँझारी॥
रामरूप चरणदास कहत हैं
और सबही हैं बानाधारी॥ ७॥

(महाप्रसाद पाने के समय की ध्वनि)

जागे आज हमारे भाग। आये संत परम अनुराग॥
मंगल भए गए दुख दूर। भक्ति भंडार भरे भरपूर॥
आए संत करन उपकार। चार पदारथ के दातार॥
संतों के चरनों की धूर। अंजन करिआँजैं हो नूर॥
हरिहरिजनमें अंतरनाहिं। हरिमें संत संत हरि माहिं॥
हैं ए संत धर्म की खानि। तिनपरवारों धन अरुप्रान॥
धनि धनिसंत पधारें आज। निश्चै मिलें श्रीमहाराज॥
पाप सकल वा घरकेजाहिं। हरिकेजनजहांभोजनखाहिं॥
धनिवहदेशकोट अरुगांव। जनमे संत धन्य वह ठांव॥
परमारथ हित हरिके साध। रामरूप मेटें सब व्याध॥

इति॥

भक्तिअंग

इस अंग में श्रीमत् भगवान् करुणाकृपा-निधान की भक्तिकी महिमा और भक्तिसरूप और भक्ति करने की विधि गायन कर भक्तिमान् पुरुषों को ही धन्य कहा है और यह भी भलीभांति से सिद्ध करके दिखादिया है कि श्रीभगवान् को अनेक भगवत् धर्मों में एक भक्तिही परम प्यारी है भक्तिमहारानी के वश होकर भगवान् बार-म्बार भक्त इच्छानुसार इस संसार में नराकार रूप धारणकर भूका भार उतार धर्मकी रक्षा करते हैं और केवल भक्तिही जीवको भगवान् से मिलाकर जन्म मरणरूपी बंधन से छुड़ाकर जीवनमुक्त बनाकर परम धाममें पहुँचादेतीहै ॥

राग कहरवा ।

साधो कीजिये ठाठ संसारमें
भक्तिकौ हूजिये सन्त सावन्त भारी ॥
धरै पग अगम कूं नाहिं पीछे फिरै
तरन तारण बनें टेकधारी ॥ १ ॥
आपना शीश उतार कर हाथ ले
और के मारने काज धावै ॥

जोई सन्मुख अरै तासु को मनहरै
राग की ओर कूं ले लगावै ॥ २ ॥
कवित्त का तीर कटार ले
दोहरा शब्द का सेल गह खैंच मारै ॥
करे घायल तिन्हां होय रक्ष रूघ ना
प्रेमही खेत में लाय डारै ॥ ३ ॥
करै उपदेश कछू और भावै नहीं
राम के ध्यान में रहै लागै ॥
सन्त अरु गुरु हरि एकही जानकै
तिन्हौंके युद्ध सूं नहिं भागै ॥ ४ ॥
साधु पूरा वही अधिक शूरा सही
नर्क सूं जीव कूं काढ़ लावै ॥
होय परमार्थी ना भवै स्वारथी
धर्मके काज कूं बेग धावै ॥ ५ ॥
कामना छोड़के करै नित चाकरी
आठ ही पहर रहै कमर बाँधै ॥
कहैं चरणदास जन रामही रूपसूं
सत्य तरवार ले धरे काँधै ॥ ६ ॥

राग सारंग ।

हरिजी तुम बिन कौन हमारो ॥
जासूं अर्ज करूं मैं अपनी तुमहूं नैन निहारो ॥ १ ॥
कैसैं मुख मोड़ैं बन आवे सनमुख हो अपनावो ॥

मैं पापी तुम पतितउधारन काहेविरद लजावो॥ २॥
भवसागर की तीक्षण धारा तासूं पार लंघावो॥
शरण पड़ेकी लाज तुम्हीं कूं जमभयक्योंनछुटावो॥ ३॥
वेद पुराणनमें लिख राखी साख तुम्हारी साँची॥
चरणलगो अरुनिश्चयआईजब नैनों लखिबांची॥४॥
कर गहि तारो कै ना तारो बैठो नवका तेरी॥
रामरूप चरणदास भयो है सिमिटो बुद्ध सकेरी॥५॥

राग सारंग।

ऐसी तुमही सूं बनि आवै॥

झूठेहू शरणगहे जो तेरी बेगही कष्टमिटावै॥ १॥
नीचन कूं ऊंचो पद दीनों तिरलोकी यश गावैं॥
जब जब भीरपरत सन्तनपर सरगुण तनधर धावै॥२॥
जनके अवगुण देखत नाहीं गुनही कूं हिय लावै॥
लेत सँभार गिरन नहीं देवै बहुत भांति अपनावै॥३॥
कर गहि तारै बेग उबारै बिपता सकल छुटावै॥
रामरूप चरणदासा करकै भवजलपार लगावै॥ ४॥

राग आसावरी।

साधो अविगत की गति न्यारी॥

पंडित गुनीसबही थकरहियाकोइयनपावतपारी॥ १॥
जो ठहरावै सो वह नाहीं देखै सोई झूठा॥
बुधिवानीसूं आगेही आगे यह तो भेद अनूठा॥२॥
जिहिं कारन बहु जोग कमावै ज्ञानी कथै गियानैं॥

कर विचार अनभय जो हारीहारे अधिक सयानैं ॥३॥
नेति नेति जाकूं वेद कहत हैं तेरी तौ बुद्धि थोरी ॥
तातैं समझ भक्तिही कीजै सिमट लगो वा ओरी ॥४॥
जैसा है वैसा वह जानै औरन की गम नाहीं ॥
रामरूप चरणदास कहत हैं मत सोचै मनमाहीं ॥५॥

राग असावरी ।

जब तू दीपक ज्ञान जगै है ॥
उत्तम मध्यम सूझ परैगो तिमिर सभी भगि जैहे ॥ १ ॥
सार असार विचार न तोकूं सबकूं एकही जाने ॥
पाप पुण्य की समझ न आई कैसें कहूं सयाने ॥ २ ॥
भले कर्म तुम सब विसराये खोटे कर्मन पागे ॥
सत्य पुरुष परमातम भूले झूठ जगत सूं लागे ॥ ३ ॥
दया भाव तोसूं यह भापूं सीख हमारी लीजै ॥
बिषय बायु कूं जो कोई काढ़ै ऐसा सतगुरु कीजै ॥४॥
जासूं ज्ञान परापत होवै प्रकटै घट उजियारा ॥
तब सबही जग मिथ्या भापै लखि पाचैतत्त्वसारा॥५॥
चरणदास प्रभुके परतापा भापै रामही रूपा ॥
ऐसे धाम बसेरा पैहो जहां न छाँह न धूपा ॥ ६ ॥

राग परज ।

तुम्हीं सूं लाग हमारी हो ॥
द्वार तुम्हारो तज नहीं जाऊं यह मन धारी हो ॥ १ ॥
बिपत पड़ो कै दुख बहु आव दुष्ट डिगावो हो ॥
तन में रोग सोग अति लागो कै भै लावो हो ॥ २ ॥

रिद्ध सिद्ध की बासना सब चित सूं डारी हो ॥
उन सूं चाह न कोई कीजै जिन सूं यारी हो ॥ ३ ॥
तुम झिड़को कै काढद्यो मैं फिर फिर आऊं हो ॥
होहु कठोर करो अब कैसी कही न जाऊं हो ॥ ४ ॥
चरणदास गुरु सूं सुनी जब तन मन दीना हो ॥
रामरूप हो तुम्हरो दासा तुम रंग भीना हो ॥ ५ ॥

राग सोरठ ।

मैं एक निरंजन ध्याऊँगा ॥
लाभ होय के सर्वस जावो
और न शीश नवाऊंगा ॥ १ ॥
एक ही आश एक विश्वासा
एक ही सूं लव लाऊंगा ॥
एक ही साहिब सिरजनहारा
ताही के गुण गाऊंगा ॥ २ ॥
टेक गही साँचे सांई की
झूठा भर्म भगाऊंगा ॥
धर्मराय की काण न मानूं
ऐसा अदल बिठाऊंगा ॥ ३ ॥
अमर नगर में जाय बिराजूं
निरभय बम्ब वजाऊंगा ॥
रामरूप कहै सुनियो साधो
भवजल बहुरि न आऊंगा ॥ ४ ॥

राग सोरठ।

श्रीकृष्ण कूं भक्ति पियारी है॥

धन आचार रूप विद्या सूं
रीझै नांहि मुरारी है॥ १॥
विप्र सुदामा अतिही निर्धन
ताहि द्रव्य दियो भारी है॥
बधक क्रिया कछु समझै नाँहीं
प्रकट मिलो गिरधारी है॥ २॥
कहो वेद गज नैं कब पढ़िया
ग्राह सूं लियो उबारी है॥
पांच वर्ष की उमर ध्रुव की
ताकूं कियो हितकारी है॥ ३॥
तीन कूब कुब्जा तन मांहीं
सो कीनी प्रभु प्यारी है॥
दास बिदुर की भाजी खाई
रीझन की गति न्यारी है॥ ४॥
उग्रसेन कूं राजा कीनों
डारो कंस पछारी है॥
जहां तहां सन्तन की रक्षा
करी जु आप बिहारी है॥ ५॥
प्रेम प्रीति के बस हैं हरिजी
कहैं चरणदास बिचारी है॥

रामरूप गुरु भक्ता होके
भक्ति हिये मैं धारी है ॥ ६ ॥

राग सारंग।

मेरी दण्डवत करता राम कूं ॥
सहकामी कूं दृष्टि न आवत
सूझ परै निसकाम कूं ॥ १ ॥
जो कोई उनकी शरण सँभारै
लगै नहीं धन धाम सूं ॥
चाह निवारै ममता मारै
बँधै नहीं मोह दाम सूं ॥ २ ॥
वहवी तोरै पार उतारै
सदा छुटावै बाम सूं ॥
अपनावै अरुभक्त बनावै
और लगावै नामसूं ॥ ३ ॥
तन छूटै निजधाम बसावै
और रखै आरामसूं ॥
रामरूपचरणदासकहत हैं
लागारहियो श्यामसूं ॥ ४ ॥

राग मंगल।

रामभक्ति बिन धर्म सबही पाखण्ड हैं ॥
रामभक्ति बिन नग्न तपस्या डण्ड हैं ॥ १ ॥
रामभक्ति बिन दान करै सोई बोवना ॥

राम बिना शुभ कर्म करै अघ धोवना ॥ २ ॥
रामभक्ति बिन तीर्थ फिरन उपाध है ॥
रामभक्ति बिन पूजा सबही व्याध है ॥ ३ ॥
रामभक्ति बिन आसन सब नट बाज़ियां ॥
रामभक्ति बिन मूर्ति खेलन साज़ियां ॥ ४ ॥
रामभक्ति बिन धारण वेप अकाज है ॥
रामभक्ति बिन धुंध जु पाया राज है ॥ ५ ॥
रामभक्ति बिन बुद्धि कहो किस काम की ॥
रामभक्ति बिन सुन्दर काया चाम की ॥ ६ ॥
रामभक्ति बिन नर सब पशू समान हैं ॥
परैं नर्क की खान सहैं जमसान हैं ॥ ७ ॥
सबका एकही जोड़ भजो हरि नाम कूं ॥
रामभक्ति बिन थोथ पचो धन धाम कूं ॥ ८ ॥
रामरूप सुन दासचरण दासा कहै ॥
उत्तम नर सोई जान राम जप मैं रहै ॥ ९ ॥

राग मंगल।

जाति बरण का भेद न जानाजात है ॥
जो कर देखा ज्ञान तो नाहिं दिखात है ॥ १ ॥
पांच तत्त्व गुण तीन सबन में पाइये ॥
वेद पुराणन माँहि सोई ये गाइये ॥ २ ॥
दश इन्द्री तिह माँहि जु परगट देखिये ॥
हाड़ मांस लोहू चाम सबन में लेखिये ॥ ३ ॥

एकही सबकी देह आतमा एक है॥
उपजैं एकही राह बीच नहीं तेक है॥ ४॥
कर्मों ही से ऊंच कर्म सूं नीच है॥
जुदा जुदा होगया ठहर गया बीच है॥ ५॥
रामभक्ति बिन नीच सभी ये जाति हैं॥
जप तप हरिके ध्यान सूं उत्तम गात हैं॥ ६॥
जाति वर्ण कुल गोत न देखैं रामही॥
प्रेमभक्ति वस होय देवैं निज धामही॥ ७॥
कहैं चरण ही दास जु रामही रूप सूं॥
हरिजन अधिकी जान जु इन्दर भूपसूं॥ ८॥

राग झँझोटी।

वन्दे वन्दगी मन्जूर।

कहा भयो जो हुआ मसायखसो
दोसौ का भया जु नायक॥
वड़ा पीर भया हाथी लायक
आगे वाजा तूर॥ १॥
कहा भये जो मौन गहा है
ऊंची टांगैं भूल रहा है॥
पंच अग्नि में भूल रहा है
हरि सुमरण बिन कूर॥ २॥
कहा भयो शिर जटा रखाये
और कहा भयो मूंड़ मुड़ाये॥

बहुतक भाँग धतूरा खाये
अंग रमाये धूर ॥ ३ ॥
कहा भयो तन चन्दन लाये
आँखैं लाल सिन्दूर लगाये ॥
डालि बाघम्बर जगत् डराये
देत जड़ी और मूर ॥ ४ ॥
ग्रह त्याग शस्तर बाँधे
धारा क्रोध भये जो आँधे ॥
धूनी तपी जीव बहु दाझे
मुक्ति पन्थ रहा दूर ॥ ५ ॥
कहा भयो जो नखा बढ़ाई
कान फड़ाये सिद्ध न पाई ॥
जंगम होकर घण्ट बजाई
द्वारहि द्वार विसूर ॥ ६ ॥
कहा भयो ऊंचा कुल पाया
रामभक्ति बिन जन्म गँवाया ॥
चौरासी मैं फिर फिर धाया
बन बन कूकर सूर ॥ ७ ॥
राग रागनी विधि सूं गाई
चतुराई की बात बनाई ॥
प्रेम नगर की राह न आई
कैसे कहूं सऊर ॥ ८ ॥

करहा गज और घोड़ी घोड़ा
राज पाय कियेलाख किरोड़ा॥
जो प्रभु सेती हेत न जोड़ा
तत्त्व डार लिया दूर॥ ९॥
जो हिरदै संतोष न आया
गुरु का निर्मल ज्ञान न पाया॥
मन सूं आपा नाँहि उठाया
न जाना भरपूर॥ १०॥
चरणदास गुरु कहत पुकारे
ज्ञान भक्ति जो हिये में धारे॥
जगत् वासना सबही डारे
रामरूप लहे नूर॥ ११॥

राग सोरठ।

हरि मोहि ऐसा कर वैरागी॥

बाहर ग्रेही सा दरसाऊं अन्तर में रहूं त्यागी॥ १॥
राग द्वेष दोनों छुट जावैं समझूं आतमरूपा॥
हर्ष शोक हिरदय से भागैं व्यापै छांह न धूपा॥ २॥
सांच अलख सूं सहज जगत सूं कोऊ ले वन लागै॥
निरगुण मायाकी मरजादा पहुँचावो तिहिंआगे॥ ३॥
कर्म न बाँधै भर्म न उपजै कोई रहे न आशा॥
चार पदारथमें नहीं अटकूं कर लीजै निजदासा॥ ४॥
कण्ठी प्रीति गले पहिरावो किरपा तिलक लगावो॥
चरणदास गुरु हाथधरो अब रामरूप अपनावो॥ ५॥

राग झँझोटी ।

कीतावों मैं साहिव साहूकार ।
जने ज़ने का कौन दीन है एकही पकड़ा द्वार ॥
पोषै पालै रिद्ध सिद्ध दे सवही को दातार ॥
जगनायक जगदीश विश्वंभर सव जगको प्रतपार ॥
संकट मांहि सहाय वेगहो दीननको आधार ॥
रामरूप सुनि विरद वड़ाई सैंयां सिरजनहार ॥

राग सोरठ ।

प्रभु मैं दीन शरन हूं तेरी ।
तो विन और आसरो नाहीं लाज तुझी कूं मेरी ॥
तन बल हीन दरव कुछ नाहीं ना कोई संग न साथी ॥
एक भरोसो तेरे बलको चितवत हूं दिन राती ॥
दुष्ट नीच पति खोवन लागे खोटी आसा धारैं ॥
वेगही दूर करो मद इनको विघन भजन में डारैं ॥
करैं अनीत नीतकूं मेटैं तन मन के दुख देवा ॥
वेबस फंद परो हूं तिनके तुमहीं हो सुरभेवा ॥
यह भवसागर है भयरूपी छिन छिन में दुख पाऊं ॥
जन रामरूप की करो सहाई निरभै हो गुण गाऊं ॥

राग केदारा ।

सवतैं भाव अधिकी जांन ।
भाव निरगुन भाव सरगुन भाव पद निरवांन ॥
भाव ही सूं दूर गावै भाव नेरे ठांन ॥

भाव सूं सिरसींग हूए भाव दूधा पांन ॥
भाव सतगुरु भावशिष है भाव सिक्षा मांन ॥
भाव सेवा भाव पूजा भाव जप तप ध्यांन ॥
भाव साहिव दास जानैं भाव सूं कल्यांन ॥
भावही सूं भूल आपन भई गोपी कांन्ह ॥
भाव सूं जगझूंठ भासै भाव सत्त बखांन ॥
वरन भेदा गोत कुल सब भाव सूं पहचांन ॥
भाव चुंडत भाव मुंडत भाव फाड़ै कांन ॥
भाव कारन है सबन को भाव ज्ञान अज्ञांन ॥
चरनदासा कहै निहचै भाव चितमें आंन ॥
सुनौं प्यारे रामरूपा भावही परमांन ॥

राग बिहाग ॥

वावा करमनकी गति भारी ।
करम पेच नाना बिध लागे कोई यक छुटैं खिलारी ॥
करम शीश पैं छत्र फिरावैं कर्महीं करैं खुवारी ॥
राजा नहुप स्वर्गपद पायो करमन दीनौं डारी ॥
करम करैं ऊंचे सूं नीचा नीचा ऊंचा होई ॥
तीनौं लोक करम भरमावैं थिरता लहै न कोई ॥
करम किये वद्धक सूं यारी पाप लगो करमाहीं ॥
दूजे जनम लह्यो फल ताको बदला छूटै नाहीं ॥
ताते बुरे करम सब त्यागे भले करैं हरि ध्यावे ॥
रामरूप निष्कर्म होय के मुक्ति पदारथ पावे ॥

राग भैरों ॥

लागत लागत हरि रंग लागा ॥
भागत भागत भै भ्रम भागा ॥
दिन दिन दिन भया दीरघ ज्ञानां ॥
छिन छिन छिन भया छीन अज्ञानां ॥
जानां जानां जीवन अपनां ॥
मांनां मांनां मांनां सुपनां ॥
मेटत मेटत मिटगई ममता ॥
चेतत चेतत चित भई समता ॥
पावा पावत यह सुध पाई ॥
रामरूप बिन और न राई ॥

राग भैरों ॥

धनि घरी धनि घरी धनि घरी सोई ॥
जिन घरी जिन घरी हरिकहनहोई ॥
जाय रे जाय रे जीवन दूरा ॥
गाय रे गाय रे हरि गुन पूरा ॥
घटैं रे घटैं रे घटैं रे पापा ॥
मिटैं रे मिटैं रे मिटैं तिहूं तापा ॥
भई रे भई रे भई सुध काया ॥
गई रे गई रे गई काल छाया ॥
चरनदास गुरु भेद बताया ॥
जन रामरूप परमपद पाया ॥

राग बिहाग ॥

प्रभु जी अब धीरज मन भाई ।

तारण पतित सुन्यो प्रण तेरो वेद पुराणन गाई ॥
अजामील गणिका गढबासा सदना जाति कसाई ॥
वाल्मीक जन्मादि अपावन जिन उत्तम गति पाई ॥
कोऊ दान करे कोऊ तीरथ कोउ निरतै कोउ गाई ॥
मेरे प्राण पतित अतिभारी तू तारण सुखदाई ॥
ना कछु त्याग ग्रहण कछु करहूँ सतगुरु राह बताई ॥
जो चाहे सो करि प्रभु मेरे रामरूप शरणाई ॥

राग कान्हरा ॥

कोइ कोइ है जगमें हरिबन्दा ।

और सभी माया में गाफिल लाग रहे कर्मन के फंदा ॥
वहुतक जायँ गया कूँ दोरैं बिन तकसीर बँधे मतिमंदा ॥
वहुतक डार पगों में रसरी उलटे लटकैं हियेके अंधा ॥
लोभ काज वहु धरणे वैठैं अड़ी लगावैं भूख मरिंदा ॥
वहुतक जलैं तपैं पंच अग्नि चाहे ऊँचे भोग करंदा ॥
वहुतकभटकैं चारों दिशि कोविनमुहारज्योंऊँटफिरंदा ॥
सोधत नाहीं आपनि काया घटमें राजे साहिब जिन्दा ॥
वहुतक मूढ़ वड़ाई कारण वोलैं झूँठ करैं मुख गंदा ॥
वहुतक भगली भेप बनावैं सबसूँ अकस ईरषा निन्दा ॥

बहुतक नर तज सुमरण कूँ पाग गये दुनियाकेधन्धा ॥
रामरूप सांचा पद पाया भरम खोय मन भये अनन्दा ॥

इति ॥



सुमरन अंग।

इस अंग में भगवतके निर्मल और परम पवित्र नामों के भजन सुमरन और जाप करने से सर्व सिद्धि और मोक्ष सहजही में प्राप्त होजाती है इस बात को अनेक युक्ति और शास्त्र प्रमाणों से पदों में बरणन किया है और जीवोद्धार के वास्ते परम सारका भी सार हरि नाम स्मरण को सिद्ध करके दिखला दियाहै कि नामसेही नामी की प्राप्ति होजाती है और ज्ञान विराग जोगसे भी बढ़कर नाम संकीर्तन की महिमा प्रकट करके दिखलाई है कि इस कराल कलिकाल में केवल श्रीमन्नाम के जपनेसेही जीव जीवन्मुक्ति पद प्राप्त करलेता है॥

राग सोरठ वा आसावरी।

साधो रामही राम कहो रे॥
और बात बकवाद बिसारो साँचा नाम गहो रे॥१॥
इकइक घड़ी अमोलक जानों औसर जात बह्यो रे॥
बिना भजन बिरथा मत खोवो नीको दाव लह्यो रे॥२॥
वाद विवाद ईर्षा त्यागो क्या अभिमान ठयो रे॥

बारू के मन्दिर में बसके बहु इतरायगयो रे ॥ ३ ॥
हो निर्बैर गरीबी धारो सब सूं नेह नयो रे ॥
जिन ऐसी दृढ़ता चित आनी साहिब जोग्य भयो रे ॥४॥
आठ पहर हरिही हरि भाषो यह उर माँहि धरो रे ॥
रामरूप कहै या करनी सूं जीतब सुफल करो रे ॥ ५ ॥

राग पूर्वी वा आसावरी।

अरे नर हरि हरि नाम उचारो।
इत उत मत भटको भूतनमें मानों वचन हमारो ॥ १ ॥
आन देव की सेवा थोथी नाहक मत शिर मारो ॥
जो उबरै सो हरिके लारै हरिही कूं चित धारो ॥ २ ॥
जीवत मरत रामही साथी ताकूं क्यों न सँभारो ॥
सिद्ध मुक्तिको दाता हरिजी सबबिधि पोपनहारो ॥३॥
पूजौ मूल सर्ब जिन पूज्यो डाल पात फुलवारो ॥
ऐसे एक रामके पूजैं पूज लियो जग सारो ॥ ४ ॥
सबकी आदि रामही जानौं सबको सिरजनहारो ॥
रामरूप चरणदास कहतहैं भज गोबिन्द सँवारो ॥ ५ ॥

राग काफी।

राम नाम जप एक सब तेरे काज सरैंगे ॥
राम नाम सम धर्म न कोई नाना मत क्यों देखैंगे ॥१॥
भक्ति शिरोमणि मनको मांजन पतित उधारण नाम ॥

पाप जलावन निर्मल करना राख हियेकी ठाम ॥ २ ॥
साधु सन्त सब यही बखानैं निश्चय कियो बिचार ॥
प्रीति बढ़ावन हरि च्योंकावन धर वावन अवतार ॥ ३ ॥
बड़ो पदारथ समझ दियो है कर कर तोकूं प्यार ॥
रामरूप चरणदास कहत हैं प्रभु मोहन ततसार ॥ ४ ॥

राग कान्हरा ।

राम नाम धन सार अरु सब छार समझ ले ॥
जिन जिन द्रव्य जगत् का जोड़ा सो नहीं चाला लार रे १
सोना रूपा मोहर रुपैये बहुत सकेरा भार ॥
सो नहीं संगी सुन हो कुसंगी जन्म दियो क्यौं हार २
वा लोके जो काज न आवै जौन बस्तु किस काम ॥
मंदिर कुटुम्ब रहैं सब ह्यांई संगी यक हरि नाम ३
सुन जग जीया पावो कीया बुरा भला जो बोय ॥
करी कमाई शुभ कर्मनकी लेगया स्याना होय ४
चरण ही दास बतायो मोकूं सो हम कियो बखान ॥
रामरूप कहै समझो चेतो जो कोई होय अजान ५

राग रामकली ।

सकल शिरोमणि नाम बतायो ॥
बेदपुराणन सूं ले साखी सतगुरु सूं सुनदृढ़ मनआयो ॥ १ ॥
जो नर आये जगके मांहीं पाप किये अरु कर्म लगाये ॥
जिनसैं भुगतेगा चौरासी नाम बिना को करै सहाये ॥ २ ॥

जोग करै तौ सञ्जम चहिये कष्ट करै बहुभारो ॥
नाम बराबर तौभी नाहीं जोपै तप कर कर तन गारो ॥३॥
तीरथ बरत करै अति किरपा और करै बड़ दाना ॥
नामबिना सब थोथेहीजानौं सुवटा सैं भजसे पछताना॥४॥
नाम समान नहीं कुछ ठहरे बहुत बिचार बिचारा ॥
चरणदास निश्चयकर दीया रामरूपनैं ले हियधारा॥५॥

राग चरचरी ।

राम जपो राम जपो राम जपो भाई ॥
जमके डण्ड नर्क त्रास वेग छूट जाई ॥ १ ॥
जन प्रह्लाद नाम लेत तुरत ही उबारो ॥
धारि के नृसिंहरूप हिरनाकुश मारो ॥ २ ॥
नाम जपो बाल्मीक भयो ऋषिराजा ॥
अजामील नाम लियो सकल पाप भाजा ॥ ३ ॥
नाम लेत लियो गज ग्राह सूं छुटाई ॥
गरुड़ त्याग धाय आये देर ना लगाई ॥ ४ ॥
नाम लेत द्रौपदी को चीर जो बढ़ायो ॥
दुशासन दुष्ट मूढ़ खैंचते हिरायो ॥ ५ ॥
लियो नाम गणिका निज धाम कूं पठाई ॥
नाम के प्रताप सिला सिन्धु पै तिराई ॥ ६ ॥
नारद मुनि ब्रह्मा शिव नाम के उपासी ॥
नाम के प्रताप ऋद्धि सिद्धि होंय दासी ॥ ७ ॥
बहुत अधम नाम जपत मुक्त हो गये ॥

जगत् व्याध छोड़ जाय पर्म धाम छये ॥ ८ ॥
सतगुरु श्रीचरणदास राम नाम दियो ॥
रामरूप राम जपत रामरूप भयो ॥ ९ ॥

राग गौरी।

सोई भले जिन नाम लिया।
जोग दान सन्ध्या तर्पन शुभ
कारज तिन सर्वस्व किया ॥ १ ॥
सोई बड़ा सोई कुलका ऊंचा
हरिके मारग चित्त दिया ॥
लोक परलोक भई धनि धनिही
उन पुरुषोंका सुफल जिया ॥ २ ॥
पातक थे सो रहन न पाये
निर्मल हुवा शुद्ध हिया ॥
ररा ममा दोऊ अंक रसीले
ताही का रस काढ़ पिया ॥ ३ ॥
अमल चढ़ा तव आनन्द हूये
जन्म मरन तज रहित भया ॥
लख चौरासी बन्धन छूटे
भवसागर का सोग गया ॥ ४ ॥
राम नाम निज मंतर दीनौं
चरणदास गुरु करी मया ॥
रामरूप निश्चय कर धारा

हिरदय उपजा नेह नया ॥ ५ ॥

दोहा।

कर माला मुख जीभ सूं, कौन जपै होय खेद ॥
रामरूप सतगुरु दियो, अजपा जाप अभेद ॥

राग आसावरी।

साधो वह सुमरण है न्यारा ॥
जासु मरण सूं पाप कटत हैं
भवसागर हो पारा ॥ १ ॥
माला कर मुख जीभ न हालै
आपहीं होत उचारा ॥
जाप अखण्ड तार नहीं टूटै
सोहम शुद्ध विचारा ॥ २ ॥
सबही के घट रटना लागी
समझत नाहिं गँवारा ॥
ज्ञान आँख जब सतगुरु खोलै
जानै साधू प्यारा ॥ ३ ॥
आशा धार फिरत बौराना
चहूं दिशि पचहारा ॥
जो खोजा निकटैं ही पाया
दिल अन्दर दीदारा ॥ ४ ॥
चरणदास महाराज दयाकर
भर्म अज्ञान निवारा ॥

रामरूप का धोका भागा
निर्मल भये सँवारा ॥ ५ ॥

राग केदारा ॥

भजि हरि नाम बारंबार।
विमल अमल अनूप रूपमय रस पद निजसार ॥
एक पल्ले वेद चारों दान यज्ञ अचार ॥
एक पल्ले नाम प्रभु को सोध के बहु बार ॥
काल खेदन पाप छेदन कर्म ओछ बिडार ॥
असुर मारन जन उबारन पतित तारणहार ॥
जोग जज्ञ अरु बरत तीरथ तापिया तन जार ॥
सकल विधि कहैं रामरूपा नाम के सब लार ॥

राग केदारा ॥

एजी सुमरिये जगदीश।
हिये लोचन पाय प्रान पोषन ईश ॥
छांड़ दुरमत जगत परमत साध संग निहार ॥
करम काई काट निर्भै उतर भौ जल पार ॥
तज कपट परपंच हिंसा आपदा कूं जार ॥
बोल सत संतोष लेकै शुद्ध हो मन मार ॥
भक्ति बीज न बिनस जैहै कोट जुगन रहांहि ॥
रामरूप सतगुरु बचन कूं गह समझ मनमांहि ॥

राग बिलावल।

भज निरगुन निज नाम रे निर्मल होई॥
आदि अंत सूं रहत निश्चल पद सोई॥
सूखे सरवर ना भरैं ओसन के पानी॥
ऐसी पूजा आंन की बिन सारंगपानी॥
केते तप तीरथ करैं केते पाथर धोई॥
छूछ पिछोरे बावरे कण मिलै न कोई॥
गुरु गोविन्द समान हैं यों निहचै कीजै॥
रामरूप चरन के चरनन चित दीजै॥

राग सोरठ।

मोहिं हरिरस लागा मींठा रे॥
पीवतही आपकूं भूल्यो
जग सुपना सा डीठा रे॥
प्रभु रस अचल अमर अविनासी
और सकल रस फीका रे॥
रामरूप चरनदास दया सूं
निहचै पीवन सीखा रे॥

इति॥

विरह अंग।

इस अंग में भगवत्‌विरह अर्थात् जिसको प्रेम नाम से कहा जाता है और वो प्रेम भगवत्‌प्रेमी जनोंके हृदय में उत्पन्न होकर भक्त जनों की उनमत्त दशा करदेता है उस प्रेम और प्रेमी जनों के लक्षणों को स्पष्टरूप सें पदोंमें गायन कियाहै इस बिरह के अंगके पढ़नेसेही उत्कंठा दशा अर्थात् भगवत् की लगनकी चेष्टा प्रगट होजाती है और अष्ट सात्विकभावोंकी स्फूर्ति होनेसे साक्षात् सच्चिदानन्दआनन्दकंद प्रगट होकर उस प्रेमानुरागी भक्तको हृदयसे लगातेहैं यह विरहअंग अवश्य पाठकरने के योग्यही है॥

राग रेखता।

अरे सुन प्रेमियों यारो इश्क के खेत कूं झारो॥
कि अपनां शीश ह्वां डारो यही महबूबका पाना॥१॥
जैसे मनसूर हूवा था सूली पै जाय मूवाथा॥
गया वह जीत जूवा था सबही जग लोगनेजानां॥२॥
लगन की वाट ऐसी है पतंगा मिलन कैसी है॥
बिछोहा मीन जैसी है सबै विधि देख मरजानां॥३॥
कि पहिले सीख लीजैजा कि पाछै प्रेम कीजैजी॥

कि आया वार दीजैजी दुई का नाँहि ठहरानाँ ॥ ४॥
कहा चरणदास मुरशदनैं पाया जो भेद यह मैंने ॥
लिया सो रामरूपा नें इसी के बीच गल जानां ॥५॥

राग बिहागडा ।

और कछू नहीं चाहिये मोहिं पीव पियारो ॥
जगत् बड़ाई स्वर्गों के सुख सो सब मन सूं डारो ॥१॥
ले पहुँचावो लाल पैं अब यही विचार विचारो ॥
बिरह सताई अति अकुलाऊँ विन दर्शन दुखभारो२॥
भूख लगे नहीं दिन कूं आली निशि कूं पलक न लागै॥
गुण गिनती रहूं श्याम सुन्दर के तलफनी हिये जागे३॥
सुन दूती गुरुदेव पियारे सब कुछ हाथ तुम्हारे ॥
तुम सब लायक सब गुणदायक करधर शीशहमारे ४॥
रामरूप चरणदास तिहारो अब मत नाँहि कुढ़ावो ॥
लाय मिलावो हिया सिरावोवेगही नैन दिखावो॥५॥

राग बिहाग ।

जित मेरो पीव पियारो मोहिं वहां ले डारो ॥
जब सूं बिछरो श्रीनन्दनंन्दन भयो अधिक दुखभारो१
मन तरसे अरु नैन तरसैं क्षीण हुवो तन सारो ॥
हलन चलन सब पौरुष थाके सबही धीरज हारो॥२॥
बिरहा घुण लागो देही कूं तिन्ही कलेजो जारो ॥
याकी औषधि और नहीं है यह तुम करो विचारो॥३॥

प्राण जिवावन मनमोहन हैं और उपाव न कोई ॥
जो तुम सखी सयानी मेरी जतन करो अब सोई ॥४॥
चरणदास मैं तेरी ह्वैहूं मेरी सार करीजे ॥
रामरूप विरहिन यों बोलै दुख हरि सुख याहि दीजे ॥५॥

राग विहाग ।

एजी म्हानैं दर्श दिखावो श्याम ॥
मग जोवत हैं पलपल छिन छिन जपत तुम्हारो नाम ॥१॥
ह्वां जा भूल गये सुध हमरी कुब्जा सूँ रंग मान ॥
हमरे चितकूं लेगये छलके यह क्या कियो सयान ॥२॥
पहिलैं क्यों न विचारी ऐसी लिये पराये प्रान ॥
ह्यां आवत बिगरत क्या थारो कपटी कान्ह सुजान ॥३॥
हो रणजीत लाल प्यारेजी दर्शन दीजे आन ॥
रामरूप ज्यों जल विन मछरी तरफ तरफ हैरान ॥४॥

राग विहाग ।

एजी म्हारी सुध लीजैं घनश्याम ।
हम व्याकुल तुम बिन अतिप्रीतम नेक न मन आराम ॥१॥
विरहा जोर करत है भारी निशि दिन दोभै प्रान ॥
छिन छिन बीतत वर्ष बराबर वेग आवो भगवान ॥ २॥
जैसे चन्द की चाह चकोरी जल बिन तरफै मीन ॥
यों हमरी गति है तुम्हरे बिन ज्यों निधन धनहीन ॥३॥
ऐसी व्यथा बृजकी सखियनकी सुनिये हो नन्दलाल ॥
रामरूप चरणदास के बिछुरे ऐसे हो बेहाल ॥ ४ ॥

राग जैजैवन्ती।

लाल लाल कहती डोलूं लाल कहां पाऊं सखी ॥
ढूंढ़ा सब बन माँहीं सोतो पाया कहूं नाँहीं ॥
तुम मेरी गहो बाँहीं शीश हूं निवाऊं ॥ १ ॥
लाल कूं मिलाय दीजै सरबस मेरो लीजै ॥
बिना दामों दासी कीजै बलि बलि जाऊँ ॥ २ ॥
हाथ जोर ठाढ़ी रहूं दुख सुख सबही सहूं ॥
एक बार यही चहूं नैना जो सिराऊँ ॥ ३ ॥
बिरह मेरी बुद्धि हरी चैन नाँहीं बैठें खरी ॥
व्यथा मोपै ऐसी परी धीर ना धराऊं ॥ ४ ॥
एहो चरणदास स्वामी तुम्हें जानूं निज धामी ॥
लख कर अन्तर्यामी हिया जो दिखाऊं ॥ ५ ॥
अब तुम हाथ धरो मेरी जो तम हरो ॥
रामरूप सुखी करो दर्शकर अघाऊं ॥ ६ ॥

राग मंगल।

हरि प्रीतम के काज फिरूं बन बन महीं ॥
बिन देखे महबूब चैन तन में नहीं ॥ १ ॥
जब लग अंक मिलाय पिया सूं ना मिलूं ॥
शीतलता नहीं होय बिरह ज्वाला जलूं ॥ २ ॥
व्याकुलता अतिघनी धीर नहीं इक छिना ॥
जोबन बीत्यो जाय अफल प्यारे बिना ॥ ३ ॥

पोथी कथा पुराण बहुत चित दे सुनी॥
तस मिटी नहीं कोय जात निशि दिन भुनी॥ ४॥
तीर तुपक तरवार शेल सब को सहै॥
कठिन इश्क को घाव चैन छिन ना रहै॥ ५॥
चितवत हूं चहुं ओर दर्श कब दे पिया॥
जे नित साँई संग धन्न उनका जिया॥ ६॥
भूख प्यास अरु नींद सकल मेरी गई॥
तरफत हूं विन पीव सूक पीरी भई॥ ७॥
अहो लाल रणजीत महर अब कीजिये॥
रामरूप की पीर बेग हरि लीजिये॥ ८॥

राग मंगल।

राम विरह की कसक उठै दिन रैनहीं॥
तन मन व्याकुल अधिक नहीं छिन चैनहीं॥ १॥
छिन बैठूं छिन उठूं धीर ना पल घरी॥
रोम रोम उकलाव बेग सुध ल्यो हरी॥ २॥
एक वार कर मया लगावो अंगही॥
फिर कबहूं ना तजूं पिया तो संगही॥ ३॥
जुगन जुगन की चूक गुनह नख शिख भरी॥
तुमहीं बकसनहार तेरी खोटी खरी॥ ४॥
टुक कीजै जो महर नजर भर देखिये॥
जन्म सुफल मम होय भाग धन लेखिये॥ ५॥
अब गह लीजे बाँह लाल समरथ धनी॥

निशि दिन दाझी मरूं विरह ज्वाला घनी ॥ ६ ॥
तजी लोक कुलकाण जगत की फाँसही ॥
बँधी प्रेम की डोर विरह की गांसही ॥ ७ ॥
मन में मिलन उमाह चाह छवि रामही ॥
रामरूप कूं देवो दर्श सुखधामही ॥ ८ ॥

राग रेखता ।

अरे लालन मिलन की बात लिख भेजो,
नहीं हम पर जफा होगा ॥
जो कुछ दम रह गया तन में,
सो वह वी फिर फना होगा ॥ १ ॥
अरे लालन करी तुमने फरामोशी,
निहायत हमसेति प्यारे ॥
कि ऐसी संगदिल साजी का,
तुमकूं क्या नफा होगा ॥ २ ॥
अरे लालन कियाथा अहद जो तुमने,
रहो उस कौल पर कायम ॥
हमारे बेकरारीका दर्द,
जबहीं शफा होगा ॥ ३ ॥
अरे लालन न जानौं जीवते हम कूं,
बिरह की लगरही आतिश ॥
इसी आतिश बढ़ीहीका,
मिटानां मुशकिला होगा ॥ ४ ॥

अरे लालन तपन मेटो हमारी,
जो सवाब होवै तुम्हारे पर ॥
नहीं जल बल सभी तन मन,
कि आखिर कोइला होगा ॥ ५ ॥
अरे लालन लगी है तेग़ जिस दिल कूं,
तुम्हारे इश्ककी कारी ॥
कि मरने जीवने सेती,
मगर वह लादवा होगा ॥ ६ ॥
अरे लालन नहीं है चैन पल छिन जो,
कहै रामरूप बिन देखें ॥
हमैं दर्शन सों सुख होवै सो,
वह दिन कौन सा होगा ॥ ७ ॥

राग रेखता।

सजन तुम क्यों कमर बाँधी,
मेरा दिल कत्ल करने कूं ॥
तेरी बाँकी अदा सेती,
हुवा बेहाल मरने कूं ॥ १ ॥
नज़र भर देखना तेरा,
करै नहीं ताब तन मेरा ॥
रहूं तुझ दर्द मैं घेरा,
सदा दुख पीर भरने कूं ॥ २ ॥

इश्क शमशेर तेरी जो,
मुझे काफी वही है सो ॥
न जाऊं भाग तुम सूं तौ,
डरूंनां शिर उतरने कूं ॥ ३ ॥
सिना पलकैं तेरी खंजर,
जिगर मैं ज्यों लगे जमधर ॥
हुवा हूं मैं फिदा तुझ पर,
सीनैं वा सीनैं लरने कूं ॥ ४ ॥
मेरे हक मैं तुझे भावैं,
गुजर मत जिस तरैं आवै ॥
अगर यह जी निकस जावै,
उजर किस बात डरने कूं ॥ ५ ॥
लगाई प्रीति तुम सेती,
हक़ीक़त सब कही जेती ॥
अर्ज रामरूप की एती,
महर कर धीर धरने कूं ॥ ६ ॥

रेखता ।

हुई घर आशिकों शादी सनम का लख नज़ारा है ॥
कमल दिल खिल गये सारे नजर आई बहारा है॥१॥
कभी की इन्तजारी थी बिरह की पुर खुमारी थी ॥
निहायत बेक़रारी थी दया कर गम निबारा है॥ २॥
दर्श का सुख हुवा भारी तप्त जो मिट गई सारी॥

किया जब सर्व बलिहारी दुई दुख दूर डारा है॥ ३॥
दिया मुर्शद ने यह जो सुख कहीं ढूंढ़ा न पाया दुख॥
लखा महबूब कूं सनमुख भया आनँद अपारा है॥४॥
नसी कुलफत जिगर दूरा बसी उलफत हिये पूरा॥
समाया नूर मैं नूरा सोई रामरूप प्यारा है॥ ५॥

राग भैरों।

एहो मोहन प्यारे सुन जानी मेरी बातरियां॥
हमतौ तुम्हरे लीयैं तरसैं तुम नहीं लावो खातरियां १॥
हमतौ मुग्ध अयानी सजनी तुमतो राचे चातुरियां॥
रामरूप व्याकुल मोहनबिन बेगमिलो तुमआकरियां२

राग सोरठ।

दया कर दीजे हो दीदार।
बिन देखे चित चैन नहीं है वेग महर अब कीजे हो॥
याद तुम्हारी हिया जरावै दुख दूना तन छीजे हो॥
नजर निहारूं डगर पियारे कब वह छबिलखिजीजैहो॥
रामरूप है व्याकुल बिरहिन लाल अरज सुन लीजैहो॥

राग टौना।

किन कीनौं री टौना मेरे सुन्दर श्याम सुजान पै॥
रातों उझक उझक उठत है दौरत है तज भोना॥ १॥
सखी सखी कह कबहूं पुकारे कबहूं रहै गह मोना॥
यह ब्रजभूषण जगको दीपक है मम प्रान सलोना॥२॥
रामरूप जशुमत नहीं जानैं एही प्रेम ठगोना॥

राग टौना।

यह जग को री टौना अरी मनमोहन घनश्याम हैं॥
मुरली बजाय गाय लीला कर मोहे तीनों भवना॥१॥
शिव ब्रह्मा जाको ध्यान धरत हैं तावसजलथलपवना॥
चन्द सूर जाके आधारे करत रहत हैं गवना॥२॥
रामरूप सुर नर मुनि प्यारो जशुमतजी को छौना॥

राग बिहाग।

लालजी प्रीति न दुरै दुराई।
हिरदे की नैनन आ झलकी लखगये लोग लुगाई॥
अग्नि नेह तृण सम तन माहीं प्रेम न धुवां छिपाई॥
मुख बीड़ी आंखों का अंजन मिंहदी की ललियाई॥
कैतो प्रीतकी रीत बनैगी कै जग की चतुराई॥
प्रीत अरु लाज दोऊ नहीं निबहें ज्यों रविमें सितलाई॥
हरि प्यारे सूं सनमुख मिलना है जीका सुखदाई॥
लोगों के कहने सूं क्या है प्रभु चाहिये मगनाई॥
तनमन धन तीनों बिन वारे रस नहिं पाड़ि है आई॥
रामरूप प्रीतमकी छवि लख कुल की काण गवांई॥

राग पूर्वी।

मेरे परी प्रीति गल फांसी।
तन भयो छीन हीन भये नैना प्राण भये निरस्वासी॥
मैं तो मारी मरूं बिरह की लोगन भावै हांसी॥
पीव लखन को पैंड़ो न्यारो क्या हो न्हाये कासी॥
निशिदिन नामजपौं पिया तेरो तो बिन आन न भासी॥
रामरूप चरणदास पियारो नेह घटै अविनासी॥

इति॥

योग अंग ।

इस अंग में अष्टांगयोग की युक्ति और आसन संयम प्रत्याहार ध्यान धारणा समाधि आदिक का पदों में वरणन किया है और योगीराज अष्ट सिद्धि और अनहद नाद के श्रवण का आनंद और नासिका अग्रभाग से भृकुटी त्रिकुटी भ्रमर-गुफा और ब्रह्मरंध्र द्वारा गगनमंडल में पहुँच कर ज्योतिरूप तथा सहस्र दलकमल पर श्रीगुरु परमात्मा और अमर लोक का साक्षात् अनुभव करता है ये सब वृत्तांत पदों में गायन किये हैं इस अंग के पढ़ने से योग का सारांश और सिद्धांत मालूम होसक्ता है योगाभ्यासी पुरुष को ये पद परम उपयोगी हैं ॥

राग कड़खा ।

साधो जोगकी जुगति सूं ब्रह्म होवै ॥
मिटै अहंकार व्याध छुटै सबै
सुन्नही सेज पर जाय सोवै ॥ १ ॥
अडिग आसन कियैं पीठ जग कूं दिये
पवन के तुरी असवार होई ॥

नेम जम फौज सावन्त संजम वड़ा
भक्ति छत्तर वना शीश सोई॥ २॥
खड्ग वैराग और क्षमा की ढाल गहु
शील का सेल नीके सभारै॥
संतोष कमान कूं लेहु चढ़ायकै
दीन कटार कटि मांहिं धारै॥ ३॥
बाट मांहीं खड़े वहुत दुर्जन अड़े
तिन्हों कूं मार कर पन्थ धावै॥
सिद्ध मग में मिलैं गिरैं पावों तलै
उन्होंकी ओर चितना लगावै॥ ४॥
पाँच गढ़ तोड़ कर जाय छठवें वसैं
न्हाय संगम विषय जोति परसैं॥
अमी रस पान कर कर्म की हानि कर
अमर होवै नहीं काल गिरसैं॥ ५॥
फेर आगे चलैं ध्यान जो नां हलै
सहसदल कमलपर गुरु विराजै॥
देय परदक्षना पगन कूं पूज कर
सुनै चित लाय नौवत वाजै॥ ६॥
सुन्न समाधि लग भाव दूजा नसै
आतमा होय परमात्म देवा॥
वही रणजीत पद पहुँच ठाला भवै
रामही रूप निर्मल अखेवा॥ ७॥

राग बिलावल।

गगन मण्डल में अलख जगाव रे॥

जब जोगी जानूं मैं तोकूं
सुन्न सिखर पर जा मठ छाव रे॥ १॥
पहिले संजम साध जुगत सूं
प्रान अपान की सन्ध मिलाव रे॥
भूचरी मुद्रा जासूं कहिये
कमल कमल पर पवन चढ़ाव रे॥ २॥
चाचरी मुद्रा नैन मँझारी
दिष्ट नासिका पै ठहराव रे॥
अचरज कौतुक बहु दरसावैं
रिद्ध सिद्ध लखि करले चाव रे॥ ३॥
खेचरी मुद्रा रसन बढ़ावै
भवँरगुफा में जाय फिराव रे॥
अमृत उतरै पीव मगन हो
जोति खुलै जहां दर्शन पाव रे॥ ४॥
अगोचरी मुद्रा श्रवण बासा
शब्द सुरति की गांठ लगाव रे॥
परमहंस अनहद कूं जानौ
अनहद मिल अनहद होजाव रे॥ ५॥
उनमुनी मुद्रा दशवें द्वारे
लगै समाधि सकल बिसराव रे॥

सिध साधक दोऊ करनी त्यागें
रहै न कोई दूजा भाव रे ॥ ६ ॥
पाँचों मुद्रा ये तुम पहिरो
झूठी मुद्रा खोल बगाव रे ॥
ज्ञान जटा शिर ऊपर राखो
मुक्ति पन्थ कूं मन ले धाव रे ॥ ७ ॥
या साधन कूं कर हित सेती
जीव ब्रह्मकी दुई मिटाव रे ॥
रामरूप चरणदास कहत हैं
जब जोगेश्वर साँच कहाव रे ॥ ८ ॥

राग मल्लार।

जुगत सूं चल मन गगन मँझारी ॥
सबही साथ समेट आपनो ले संग पाँचों नारी ॥ १ ॥
बारह मास जहां घन घोरें बर्षत है नित मेहा ॥
खिम् खिम् बिजरी सुख उपजावे ऐसो है वह गेहा ॥ २ ॥
उदय न होंहि जहां शशि सूरज दोनों बिन उजियारा ॥
समांहीं समां जहां काल नहीं हैं अमृत फल सुखभारा ॥ ३ ॥
जग बिसरावे वह पद धावै परमातम होय जावै ॥
बड़े बड़े जोगी जतन करत हैं बड़ भागी कोई पावे ॥ ४ ॥
गुरु पहुँचावैं तोही पहुँचै और थके थकि जावे ॥
रामरूप कहै ये मन तोकूं चरणदास समझावे ॥ ५ ॥

राग मलार।

मन रे तू काहे परो जग भेषा॥

यह तौ नगर बिगानौं तज कै चल बस अपने देशा॥१॥
काल पाय कोई ह्वांसूं छूटे आय रहे या नगरी॥
जन्म मरण दुख सुख ह्यां भारी भय उपजावन सगरी॥२॥
अब तौ गुरु ने ज्ञान दियो है जान लियो घर अपनो॥
ह्वांके बन्धन सबही छोड़ो आप थाप अरु थपनो॥३॥
ह्यां जीवातम हंस कहावो नाना बिध तन धारो॥
ह्वां निजरूप वही परमातम आनन्द आनन्द भारो॥४॥
जग वस्तुन सूं चित्त उठावो और भुलावो देहा॥
चरणदास कहैं रामरूप सूं करि निश्चय हरि नेहा॥५॥

राग काफी।

साधो भाई झिलमिल नूर निहारा है॥

सत्तगुरु मोकूं कला बताई जब निरखी गुलजारा है॥१॥
कोटि भानु सूं अधिक उजेरा जग मग जोति अपारा॥
सदा अखण्डित अनहद बाजै ऐसी नौबत द्वारा है॥२॥
ताके निकट बहत है निशि दिन तिरवेनी की धारा॥
स्वेतद्वीप जहाँ नगरी साधो रंगमहल चमकारा है॥३॥
तामें एक सिंहासन ऊपर राजे पीव हमारा है॥
चेतन पुरुष महल है चेतन चेतन बाग बहारा है॥४॥
फल अरु फूल लगे सब चेतन चेतन सबै पसारा॥

पाँच तत्त्व गुण तीन नहीं ह्वां ताको वार न पारा है ॥५॥
इक रस धाम विपत नहीं पइये तीन लोक सूं न्यारा ॥
काम क्रोध नहीं भूख न प्यासा नहीं संशय संसाराहै ॥ ६॥
सोई जन जाय लहै वा पदकूं धड़सूं शीश उतारा ॥
चरणदास गुरु कृपा कीनी परसा अविगत प्याराहै ॥ ७॥
रामरूप भया आनन्द आनन्द रहा न और विचाराहै ॥

राग सोरठ ।

देखा काया महल तमाशा हो ॥

अचरज और बहुतही निरखे पाया ब्रह्मविलासा हो॥१॥
आसन पद्म अडिग चित कीनों नासा आगे नैना हो ॥
जो कुछ दरसा कहा वखानूं गूँगे कीसी सैना हो ॥ २ ॥
वहाँ सूं आय हिये के अन्तर धुनि घर सेवन कीन्हा हो ॥
कमल खिला परगास हुवा जव पुरुष पुरातम चीन्हाहो ॥३॥
भ्रकुटी मैं जव ध्यान लगाया जगमग जगमग जागाहो॥
दीपमाल तारोंकी पांती मोतियन का झड़ लागाहो ॥ ४ ॥
भवँरगुफा मैं जोति स्वरूपी तिरवेनी अस्थाना हो ॥
वहां जा न्हाया जोग जुगति सूं किया अमीरस पानाहो॥५॥
चक्र सहस दल श्वेत वरन है जित सतगुरुका वासा हो ॥
पूजनकर चरणन मन दीना छोड़ जगतकी आसा हो॥६॥
अलख लखा और नोबत बाजी सबही भ्रम तम नासाहो ॥
रामरूप चरणदास दया सूं रहा न कोई सांसाहो ॥ ७ ॥

राग सोरठ।

चल पीजे अमीरस प्याला रे।

गगनमण्डल में वासा कीजै हूजै अतिमतवाला रे॥१॥
तिरवेनी में नित अस्नाना सोहं सोहं माला रे॥
विना घीव जहां जगमग जोति पहुँचे ना वहां काला रे॥२॥
मान सरोवर अमृत भरिया मोती चुगै मराला रे॥
अनहद शब्द महाकौतूहल सुन सुन होहि निहाला रे॥३॥
सहस कमलदल दीप पुरुष को जित कीजै धर्मशाला रे॥
सिद्ध साधक दोऊ करनी त्यागैं हो वैठैं जहां ठाला रे॥४॥
लगै समाधि व्याधि जहँ नाहीं छूटै जग जञ्जाला रे॥
रामरूप चरणदास दया सूं होय मुक्त तत्काला रे॥५॥

राग सोरठ।

साधो अजब अचम्भा देखा।

पाँचों नारी उलट पलट कर वही पुरुष के भेषा॥१॥
उलटा कूंग्रा उलटी नेजू उलटी जल की धारा॥
पीवनवारा उलट चला है सकल वासना हारा॥२॥
अग्नि जलै पानी के माहीं विना नैन जहँ सूझै॥
गुर्गम होय सबै गति पावै विन गुरु गम क्या बूझै॥३॥
चन्द सूरज जहां पहुँचे नाहीं अद्भुत अधिक उजाला॥
जहां जीव सूं ब्रह्म होत है छूटैं जगत तिमाला॥४॥
चरणदास महाराज दया सूं अचरज भेद निहारा॥
रामरूप कहै देखो साधो चिड़िया बाज पछारा॥५॥

राग सोरठ ।

साधो देखा अचरज भारी ॥

पांच सर्प मुख दादुर भखिया पुरुष बरा चढ़ि नारी ॥१॥
मूसे पकर बिलाव सिंहारो मृग ने चीता खायो ॥
उलट सिन्धु गङ्गा मैं आवै बांझ बाल सुत जायो ॥ २ ॥
बहरा सुनै आँधरा देखै लूला दौरत धाया ॥
रैयत बाँध भूप कूं डन्डै चेले गुरु समझाया ॥ ३ ॥
बाज डरै चिड़िया के भय सूं पिता पुत्र कूं त्यागे ॥
सास बहू के पैर लगत है सिंह गऊ से भागै ॥ ४ ॥
सोवै साह चोर दे चोकी वस्तु जान नहिं पावै ॥
रामरूप सोइ ज्ञानी पण्डित याका अर्थ बतावै ॥ ५ ॥

दोहा ।

मैं बालक हूं ब्रह्म का ब्रह्म ही मेरी जात ॥
ब्रह्म ही सूं उत्पति हुवा ब्रह्म ही माहिं समात ॥

राग सोरठ ।

सांचा सो ब्राह्मण कहलावै ॥

आशा तृष्णा होम हिये मैं मन देवत ठहरावै ॥ १ ॥
गायत्री अजपा कूं जानै त्रिकुटी भूमि लिपावै ॥
लकड़ी कर्म एकठी करके पावक ज्ञान जलावै ॥ २ ॥
षट कर्मों को साध सबेरे संजम सदा सँवारे ॥
पाठ करै अस्तुति ईश्वर की सबही पाप निवारे ॥ ३ ॥
पढ़ै बिचारै चित में धारै औरन कूं समझावै ॥

नीकी भांति ब्रह्म पहिचाने सो ब्राह्मण हो जावे ॥ ४ ॥
रामरूप चरणदास कहत हैं ऐसा ब्राह्मण हूजे ॥
होय पुरोहित अलख पुरुष का मांग अमीरस पीजे ॥५॥

राग सोरठ।

साधो सो जोगीश कहावे ॥
काया नगरी बस कर सगरी पूरा अमल कमावे ॥ १ ॥
बाँधे मूल वाप कूं जीतै प्रान अपान मिलावे ॥
दो दल जीत चढ़ै गढ़ ऊपर निर्भय वम्ब बजावे ॥ २ ॥
जहां जाय दुर्जन सब हनि कै प्रथमैं संजम साधै ॥
हृदय कमल में वासा लेकर पावै अनहद नादै ॥ ३ ॥
पहिल कमल सैं पवन उठावै दूजे कमल फिरावै ॥
तीजे कमल में सीधी करके चौथे माँहि चढ़ावै ॥ ४ ॥
पँचवें में लेजाय जुगत सूं छठवें जोति जगावे ॥
जाय समावै सतवें माँहीं भवजल बहुर न आवै ॥ ५ ॥
जोग सिद्ध सोई जन जानों गगनमण्डल घर छावै ॥
रामरूप चरणदास कहत हैं काम धनी के आवे ॥ ६ ॥

राग सोरठ।

साधो यह रजपूती मेरी।
काम क्रोध सिंह दोनों मारूं शील क्षमा गऊ घेरी ॥ १ ॥
मोह लोभ हैं अति बट मारे इन कूं हन सुख पाऊं ॥
सत्य संतोष गढ़ी जहां बाँधूं निर्भय राह चलाऊं ॥ २ ॥

पाँच मवासे गुरु मग तोडूं इनका खोज मिटाऊं ॥
निष्कण्टक करूं भूमि आपनी काया नगर बसाऊं ॥ ३ ॥
सावधान हो तुरी पलानूं चाबुक ज्ञान लगाऊं ॥
आदि पुरुष की करूँ चाकरी मुक्ति जगीरी खाऊं ॥ ४ ॥
चरणदास गुरु किरपा करके ठाकुर सूं जु मिलायो ॥
रामरूप है सन्मुख ठाढ़ो पूरा पटा लिखायो ॥ ५ ॥

राग परज।

खेल मन दो दल माँहीं हो।

कायर हो नहीं भागिये ऐसा समाजु नाहीं हो ॥ १ ॥
सन्मुख हो ठहरे रहो जब शूर कहावो हो ॥
खड्ग गहो ततसार का सब साल भजावो हो ॥ २ ॥
अनहद जब बाजे बजें जब सुरत धसावो हो ॥
संग बिबेक लिये रहो महामोह नशावो हो ॥ ३ ॥
निश्चल कर कर राज कूं निर्भय पद पावो हो ॥
परमातम के रूप हो वा माँहि समावो हो ॥ ४ ॥
चरणदास गुरु ने कहा जब मैंने जाना हो ॥
रामरूप कहै ये मन तोसूं सोई बखाना हो ॥ ५ ॥

इति।

वैरागअंग।

इस अंग में संसार जो साकार रूप से प्रतीत होरहा है इसको मिथ्या और नाशमान और महाअसार वरणन कर सतकर्म और सुमरण भजन का करनाही सब से श्रेष्ठ कहा है इसके पढ़ने से जीवका अज्ञान नष्ट होकर हृदय में वैरागरूपी भान प्रकाशमान होकर सारासार का सत्य विचार चित्त में स्थिरभाव से जम जाता है और जगत् के विषयभोगों से विरक्त रहकर अपने मनुष्य जन्म को जगदाधार परमात्मा के सुमरण भजन ध्यान आश्रय से सफल करलेता है यह अंग सज्जन पुरुषों के अवस्य ही अवलोकन करने योग्य है॥

राग बिलावल।

सतगुरु शरणे आय के हरि सुमरण कीजै॥
पाप उपाधि जगत् की सबही तज दीजै॥ १॥
तू गाफिल जो हो रहो चेतै क्यों नाहीं॥
आयु तुम्हारी जात ज्यों तरुवर की छाँईं॥ २॥
जब ऐहैं जमकिंकरा बहु त्रास दिखावै॥
जिनके सुख तू फँस रहो कोई नाहिं छुटावै॥ ३॥
तातैं अबही समझ रे सुन बात हमारी॥
ऐसी मनुष देह कूं मत खोय अनारी॥ ४॥

सन्तन की सेवा करो सतगुरु का ध्याना ॥
रामनाम मुख सूं रटो तज आन जपाना ॥ ५ ॥
चरणदास प्रताप सूं रामरूप त्रितावै ॥
जो ये तीनों विधि करै निर्भय पद पावै ॥ ६ ॥

राग भैरों।

रामनाम लीजै जग त्यागिये बखेरा ॥
जन्म तो विहानो जात चेत रे सवेरा ॥ १ ॥
भोर ओस मोती ज्यों अञ्जली को पानी ॥
स्वप्न ख्याल देख कहा हो रहा गुमानी ॥ २ ॥
माल मुल्क सेना यह शोभा दिन चारी ॥
अन्त कूं न संग कोई मात पुत्र नारी ॥ ३ ॥
स्वार्थ के साथी सब जीवत का नाता ॥
करता कूं छोड़ कूर किरतम सूं माता ॥ ४ ॥
रावण से वीत गये कनक कोटिधारी ॥
भीष्म अरु द्रोण कर्ण लिये काल मारी ॥ ५ ॥
तेरी तौ अल्प आयु तापर अंकड़ाई ॥
बुदगल ज्यों विनश जाय तेरो तन भाई ॥ ६ ॥
पाछे पछितैहै जब करिहै जमख्वारी ॥
पकड़ बांध लेहैं देहैं नर्क त्रास भारी ॥ ७ ॥
गाफिलता दूर करो सुमरण कूं लागो ॥
चेतन को ध्यान धरो भर्म भाव त्यागो ॥ ८ ॥

कहत चरणदास सुनो रामरूप प्यारे ॥
तजिकै असार जगत् होहु वेग न्यारे ॥ ६ ॥

राग धनाश्री ।

ए मन सुमर सिताबी राम ॥

मौत चिंत निशि दिन हिये राखो सबही सुधरैं काम॥१॥
झूठ कपट कर धन बहु जोड़ा संग न चलै इक दाम ॥
कुटुम्ब मित्र मैं अधिक पियारी सोउ न साथी बाम ॥ २ ॥
जप तप शुभ कर्मन का द्रव्य जो याही लोक कमावे ॥
जब वा लोक सिधारन होवे तब वहां काम जु आवै ॥ ३ ॥
धन जोबन सम्पत सुख जानो बादर केसी छाया ॥
ठहरी नां सबही पछिताने पाछे धूप जराया ॥ ४ ॥
हरि की भक्ति सदा सुखदाई चरणहीदास कहावो ॥
रामरूप निश्चय यह करके चरणकमल चित लावो ॥ ५ ॥

राग धनाश्री ।

तेरो अन्त समय नहिं कोई ॥

आपही आवै जाय अकेला यह निश्चय कर लोई ॥ १ ॥
पाप पुण्य दोऊ संग चलत हैं दुख सुख देवैं सोई ॥
नर्क स्वर्ग येही भुगतावैं मैं कह दीने दोई ॥ २ ॥
कह समझाया खोल दिखाया कर तेरे मन होई ॥
दोनों का फल आगेही आवे छूट सकै नहिं जोई ॥ ३ ॥
जिन चेता किया हरि सूं हेता जगत प्रीति सब खोई ॥
आतम सूं परमातम हूये आशा तृष्णा धोई ॥ ४ ॥

चरणदास कहैं रामही रूपा हिरदय नाम धरोई ॥
बिपत छुटावन पार लगावन सांची भक्ति करोई ॥ ५ ॥

राग सारंग ।

सब कोऊ पूछत हैं कुशलात ॥

देह धरी जब कुशल कहां है बहुत लगे उत्पात ॥ १ ॥
जल डोबै और अग्नि जलावै और शस्त्र की घात ॥
डारै तोड़ पशू जंगल का भीत तलै दबजात ॥ २ ॥
काटै सांप जहर कोइ देवै अरु घोड़े की लात ॥
नाना रोग लगे काया कूं दिवश मरै के रात ॥ ३ ॥
ठग फांसी दे मग में मारैं मनकी मन रहजात ॥
जम ले जावै मार चलावै तकत रहैं पितु मात ॥ ४ ॥
कुशल हुती जो जन्म न होता कै सन्तन के साथ ॥
रामरूप चरणदास कहत हैं कै सुमरण परभात ॥ ५ ॥

राग सारंग ।

जगत में अपना कोई न होय ॥

भज भगवान आन कूं त्यागो खोट कपट सब खोय ॥ १ ॥
जो तेरा तू वाहि न जानैं झूठो संग कियो ॥
सो नहीं संगी अन्त समय में क्या तैं परन लियो ॥ २ ॥
मनुषा देही जन्म पदारथ छिन छिन जात चली ॥
शिरपर मौत खरी न पहिचानै यह नहीं बात भली ॥ ३ ॥
पल पल डरिये पाप न करिये चेत सँभार यही ॥
पाई देहा हरि सूं नेहा नीकी समझ सही ॥ ४ ॥

तोहि सुनाऊं सोवत जगाऊं सुमरण धन्धे लाग॥
रामरूप चरणदास कहत हैं जब हौं ऊंचे भाग॥ ५॥

राग सोरठ।

कछु कर ले जन्म चलाजावै॥
मनुष देह दुर्लभ जग मांहीं बड़े बड़े पुरयन सूं पावै॥ १॥
याको यही उपाव करै अब हरिपद पंकज चितलावै॥
राम नाम कूं दृढ़कर पकड़ै आन देव सब बिसरावै॥ २॥
अनन्य भक्ति गोबिन्द कूं प्यारी बेद पुराणन में गावै॥
गुरु उपदेश साधुकी संगत निश्चयकर मन पतियावै॥ ३॥
गई सो गई अब राख रही कूं जगत् ओर सूं फिर आवै॥
चरणदास के चरणन लागो रामरूप बिन मत ध्यावै॥ ४॥

राग सोरठ।

भइया जात है आयु बिहाई रे॥
झूठे सुख में कहा लुभानो दोदिन की ठकुराई रे॥ १॥
थोरो सो जीवन है जगमें तूं क्यों ढीलो भाई रे॥
जब जमदूत आन पकड़ैंगे तब कछु नांहिं बसाई रे॥ २॥
अबहीं दाव भलो है तेरो बात सबै बनि आई रे॥
पूरे गुरु की शरण आय के करले सुफल कमाई रे॥ ३॥
साहिब सेती नाता जोड़ो दुनियां देहु गँवाई रे॥
रामरूप चरणदास चितावैं भवसागर तिरजाई रे॥ ४॥

राग सोरठ।

प्राणी तेरा कोई नहीं है रे जगमें क्यों बृथा दिन खोवै॥

पिये विषय की मदुवा प्यारे मोह नींद मत सोवै ॥ १ ॥
जवानी जोश दुपहरी कासा छिन एक माहिं ढलावै ॥
करै सिंगार सँवारे देही आखिर खाक समावै ॥ २ ॥
एते पर ठानैं मगरूरी अकड़ा डोले भारी ॥
तजिके भक्ति जगत में मांतो दुर्मति हिरदय धारी ॥ ३ ॥
जम सूं चोट परैगी गाढ़ी तब कुछ बोल न आसी ॥
फूलो फूलो कहा फिरत है सब शेखी झड़जासी ॥ ४ ॥
मेरा मेरा कर क्या भूला सब ह्यांई रहजैहैं ॥
धन परिवार फौज गज घोड़े कछू न साथ चलैहैं ॥ ५ ॥
चेत बिचार तजो गाफिलता चरणदास चितावै ॥
रामरूप ले नाम शितावी आयु बिहाई जावै ॥ ६ ॥

राग सोरठ ।

कोई तेरा भाग जगाहै रे अब के मनुष्यरूप तन पायो ॥
पूर्व जन्म कियो पुण्यभारो सोई उदय होय आयो ॥ १ ॥
तैं नहीं जानौं भयो अयानों तातैं बिरथा खोवै ॥
सन्त जगावैं तू नहीं चेतै नींद अविद्या सोवै ॥ २ ॥
आयु तुम्हारी दौरी जावै बिन लगाम ज्यों घोड़ा ॥
महा अपबल थँभे न थाँभी सकै नहीं कोई मोड़ा ॥ ३ ॥
मान हमारी ले हिय धारी करो राम सूं नाता ॥
शिरपर बैरी काल निहारै करै अचानक घाता ॥ ४ ॥
लख चौरासी भरमत भरमत ऊंची पाई बारी ॥

डिगै गिरै तो फिर कब पहुँचै हो मत मूढ़ अनारी ॥ ५ ॥
साधु संगत हरिभक्ति सँभारो यही लाभ अब लीजै ॥
रामरूप चरणदास कहत हैं निजपुर में घर कीजै ॥ ६ ॥

राग काफी ।

क्या तू करै गुमान ॥

पुतले कागज केरे अग्नि जलावै पानी ओरै एक पलक में हान १
उम्र नहीं कछु मन्दर साजै सीसा नींव गलाय ॥
लाख वर्ष की थापन थापै आप नहीं ठहराय ॥ २ ॥
ठहरत ना क्योंहीं ठहराई छाँहि चलीही जाय ॥
अँजली में पानी ज्यों छीजै मोती ओस बिलाय ॥ ३ ॥
जोबन को कछु गर्व न कीजै मृगतृष्णा को नीर ॥
कहाँ गये अभिमानी राजा बड़े बड़े शाह अमीर ॥ ४ ॥
देखत देखत बिगस गये हैं जिन को नाँव न ठाँव ॥
रामरूप चरणदास कहत हैं अस्थिर हरि को नाँव ॥ ५ ॥

राग काफी ।

जग का सुख है दिन दोय कहा भूला भाई ॥

भोग किये तृष्णा अति बाढ़ी तृप्त भया नहिं कोय ॥ १ ॥
तरसत गया जु आया सोई मन समझ बिचारा सोय ॥
आशही आश धरत मृत्यु आई पछितानां दिया रोय ॥ २ ॥
सन्तोष बिना थिर नेक नहीं तू बिरथा भटकै लोय ॥
आव सिमट अपने ही माँहीं सब दुख जावैं खोय ॥ ३ ॥
इन्द्री परबल हों रस दीये अरु रोकैं छीणही होय ॥

गहिकर सार असार बिसारो निज घर पहुँचो जोय ॥४॥
प्रेम भक्ति हिये माँहि रखो अब रसना हरिगुण पोय ॥
रामरूप चरणदास कहत हैं सकल वासना धोय ॥ ५ ॥

राग ललित ।

क्या सोचत है वारम्बार ॥

बेगही हरि सुमरण हिये धार ॥ १ ॥
गुरुकी शरण शितावी लीजै सतसंगतमें हित चित दीजै ॥
साकत नरको साथ न कीजै ए मन तोसूं कहूं पुकार ॥ २ ॥
रामभक्ति विन सुख नहिं पैहो जमके द्वारे बाँधे जैहो ॥
चौरासी में फिरि फिरि ऐहो तामें है अति दुःख अपार ॥३॥
माता पिता भ्रात सुत नाती माल मुल्क कोइ चलै न साथी॥
शिरपर आवतहै वही राती संग न चालैं धन अरु नार ॥४॥
ज्यों पानी मैं नाव चलतहै पेट माँहि ज्यों अग्नि बलत है ॥
धूप लगै ज्यों बर्फ गलत है यों तुम्हरे तनका व्यवहार ॥५॥
इतने पर तू कहा भुलानो कर अभिमान रहै बौरानो ॥
चलो जातहै जन्म सिरानो आपनही तू देख विचार ॥ ६ ॥
चेत चेत मत होहु अयानो अपने कर्ता कूं पहिचानो ॥
बचन बेदके निश्चय मानो मुक्तिहोनकी राह सँभार ॥ ७ ॥
चरणदास गुरु देव चितावैं मोहनींद से टेर जगावैं ॥
परमारथकी ओर लगावैं रामरूप चल वाट निहार ॥ ८ ॥

राग ललित ।

रामनाम है सुमरण सार ॥
सो जप उतरो भवजल पार ॥ १ ॥
काल खड़ो शिर ऊपर तेरे तू अजान भयो कछू न हेरे ॥
जग जंजाल परो तू घेरे क्यों नहिं अपनी करै सँभार ॥ २ ॥
जन्म जन्मकी चूक न जानी हो रहो तू मूरख अज्ञानी ॥
रामभक्ति तैं ना पहिचानी चौरासी में होगा ख्वार ॥ ३ ॥
जाति वर्ण कुलकाम न आवै जाको तू अभिमान दिखावै ॥
सत्संगत कूं बुरा बतावै भूला फूला फिरै गँवार ॥ ४ ॥
पर नारी की चाह धरत है परधन काजै कपट करत है ॥
देख बिरानी बहुत जरत है तेरी क्या गति होयगी यार ५ ॥
जन्मपदारथ योंहीं खोवै तज शुभ कर्म पाप ही बोवै ॥
कहो कुशल कबताईं होवै आखिर जम देवैंगें मार ॥ ६ ॥
बात हमारी सतकर मानों हरि की मूरत हिरदे आनों ॥
पाँचों रोक करो सांइ ध्यानो यही धारना निश्चयधार ॥ ७ ॥
मोकूं गुरु चरणदास बतायो परमारथ की राह लगायो ॥
सो नर तोही कूं समझायो रामरूप यों कहे पुकार ॥ ८ ॥

राग जैजैवन्ती ।

मेरो कहो मान मन हरि गुण गावो भाई ।
काहे कूं जन्म खोवो मोहनींद काहे सोवो ॥
साधु संग पाप धोवो ऐसी जो उपावो ॥ १ ॥

ऐसे दिन फेर नाहीं सब सुख तन माँहीं ॥
आयु जो चली ही जाई रहै पछितावो ॥ २ ॥
यही उपदेश लीजै बुद्धि हरि सौंप दीजै ॥
जग सूं न प्रीति कीजै आपा मोड़ लावो ॥ ३ ॥
यही तौ सयान तेरा अब नहीं कीजै बेरा ॥
भजन करीजे नेरा ढील ना लगावो ॥ ४ ॥
कहैं चरणदास गुरु ध्यान धरो हरि हरि ॥
रामरूप जावो घर फिर नहीं आवो ॥ ५ ॥

राग रेखता ।

कि दुनियां सरबसर फ़ानी हियेके चश्म सूं जानी ॥
बड़ों ने साँच ना माँनी भये हैं छोड़के न्यारे ॥ १ ॥
कि फारिग आपकूं कीना कि मारग रामका लीना ॥
कि शिर उस राहमें दीना हुवे जो मर्द वे भारे ॥ २ ॥
कि आशिक रब्बके हूये कि जीवत समझकर मूये ॥
मिटे सब भाँति के दूये अपन इस खेल मैं हारे ॥ ३ ॥
हूवे लाहूत के बासी कटी जग जाल की फाँसी ॥
भये वे आप अविनाशी जन्म अरु मरण सबडारे ॥ ४ ॥
गुरु चरणदास यों भाषा दिखाया मुक्ति का नाका ॥
हकीकत भेद ना राखा लखा रामरूप ने सारे ॥ ५ ॥

राग सोरठ वा केदारा ।

जगमें जन्म बारम्बार ॥
बिना गुरु के ज्ञान मूरख सहैं जम की मार ॥ १ ॥

कबहूँ जल का जीव होनौं लाख बर तन धार॥
दश लाख पक्षी जौनमें भ्रमताही फिरत उजार॥ २॥
कबहूं हो कृमि कीट भाई लाख ग्यारह बार॥
बीस लख लहै थावर काया पावै दुःख अपार॥ ३॥
पशू की फिर जौन हो लख तीस हैं विस्तार॥
लख चार मनुषा योनि हैं यों कहत बेद पुकार॥ ४॥
यह ठाट जेता जगत में हैं खान जा की चार॥
एक हरिके नाम बिन पड़े आवागवन मँझार॥ ५॥
ऐसें भ्रमत सदा जुग जुग चेतै नाँहिं गँवार॥
वे शरम के शरम नाँहीं मानैं नाँहीं हार॥ ६॥
चौरासी लख भुगत के तैं पायो नर तन सार॥
जो कबहूं अब चूक है तो होयगा बहु ख्वार॥ ७॥
ढूंढ़ सतगुरु करो बेगी लगो ताके लार॥
शरण गहे की टेक पकड़ो सो उतारै पार॥ ८॥
चरणदास कलि में पतित तारन लियो है अवतार॥
रामरूप कूं जान अपनो कियो भवजल पार॥ ९॥

राग केदारा व सोरठ।

जगमें लगी आवा जाय॥

कर्म बाँधे जीव सबही तिहूं पुर भटकाय॥ १॥
लख चौरासी योनि में फिर बहु झकोरे खाय॥
वासना की गाँठ लागी छुटन को न उपाय॥ २॥
जीत इन्द्री करो मन बस बिपय त्यागो धाय॥

शुभ कर्म कर फल निवारो भक्ति उपजै आय ॥ ३ ॥
करत नवधा नेम निशि दिन नेह डोर लगाय ॥
फेर प्रेमा होय परगट आपा आश नशाय ॥ ४ ॥
फिरै मतवारो जगत में कर्मकार बहाय ॥
तन छुटै धर दिव्य देही अमर लोक बसाय ॥ ५ ॥
लहै निज आनन्द अतिही रामरूप कहाय ॥
कहन कूं चरणदास दूजो भवै एकै भाय ॥ ६ ॥

राग कान्हरा।

भोंदू निर्फल जन्म गँवायो ॥
ज्यों ज्वारी ने सरबस हारो यों यह तनतैं वृथा बितायो १
बालकपने मुग्ध आनन्दमें बिना समझ खेलो अरु खायो ॥
सत्संगत हरिभक्ति न जानी झूठ कुटुम्ब सूं हेत बढ़ायो २
जवानी पन जोवन मदमातो नारीही के नेह लुभायो ॥
बिषयन के रसमें अति पागो तातैं प्रभुको नाम भुलायो ३
बृद्ध भये चिन्ता भई बहुती जरा रोग अँग माहीं छायो ॥
इन्द्री थकीं पौरुष सब थाके तऊ न जगसूं मोह छुटायो ४
चेतो नाहिं कबहूं नर मूरख जग संग रहो जगत मनभायो॥
रामरूप चरणदास कहत हैं नर्क परो जब वहु पछितायो ५

राग कान्हरा।

अब पछिताय कहा बनि आवै ॥
जीवत अवधि अफल तैं खोई अब कैसे जमत्रास नशावै १

कुटुम्ब मित्र अपने कर जानैं हितसूं तिनके माहिं फंसायो॥
हरि ओरी कूं सुरत न दीनी तातैं नर्क पड़ो दुख पायो २
पर काजै बहु पाप कमाये मूल काट डाली जल दीनों॥
जन्म कुकर्मन ही में खोयो भूल कबहूं शुभ कर्म न कीनों ३
झूंठ कपट छल मक्कर बनाके तन अभिमान बढ़ायोभारो॥
ताको फल अब लेह अयानैं जो तैं जब प्रभु नाहिं सँभारो४
रामरूप चरणदास कृपा सूं बारम्बार पुकार चितावै॥
मुये न संगी कोई किसी का जैसी करनी करै सु पावै ५

राग ख्याल।

बिन सुमरण नर मूढ़ घना दुख पावेगा॥
दिना चार को चाव जगत को फिर पाछै पछितावेगा॥१॥
जवानी जोबन मैं जो भूला बिरथा जन्म गँवावेगा॥
तनसूं जीव निकस जब जैहै तब कुछ ना बनि आवेगा॥२॥
अब तू फंसा विषयसुख माहीं चौरासी मैं जावेगा॥
मारैंगे जम चोट गज़ब की वहां तोहिं कौन छुटावेगा॥३॥
कर सतसंग भजन गोबिन्द का आवागवन नशावेगा॥
रामरूप चरणदास कृपातैं अगम देश को धावेगा॥४॥

राग ख्याल।

हरि सुमरण की वार भली बनि आई है॥
मृत्युलोक मैं वासा हूवो मनुषा देही पाई है॥१॥
ले जो लाभ लियो जाय तौ सूं विधिना खूब बनाई है॥
ऐसो जन्म बहुर कब पैहो साधु वेद यों गाई है॥२॥

झूठो माल मुल्क परिवारा झूठी ममता माई है ॥
झूंठो सब जगको व्यवहारा दोऊ लोक दुखदाई है ॥ ३ ॥
झूंठे माँहि फँसे मत कबहूं यामैं तेरी भलाई है ॥
आदिपुरुष परमातम भजले जिन यह सृष्टि उपाई है ॥ ४ ॥
चरणदास सतगुरू कृपा कर साँची भक्ति बताई है ॥
रामरूप ले धरो हिये मैं ज्यों होवै मुक्ताई है ॥ ५ ॥

राग सारंग ।

प्रानी तू क्यों माँता धनधाम ॥

यह माया तो काम न ऐहै जब जैहै जम गाम ॥ १ ॥
धर्मराय जब लेखा लेगा क्या देवैगा दाम ॥
यहाँ कुछ सुकृत नाँहि कमाया खाय फुलाया चाम ॥ २ ॥
वा दिन की सुध राख पियारे मत हो नमकहराम ॥
बड़ भागन सूं नर तन पायो मत खोवै बेकाम ॥ ३ ॥
जो दम ले सो हरि सुमरण में जो चाहे आराम ॥
आवागवन की डोरी टूटै लहै मुक्ति विश्राम ॥ ४ ॥
ये तो सब स्वारथ के साथी मातु पिता सुत बाम ॥
रामरूप चरणदास कहतहैं जगहित तज भज राम ॥ ५ ॥

राग काफी ।

साधो भाई झूठा जगत पसारा है ॥

गुरु प्रताप जान मैं पाई सब मिथ्यात् विकारा है ॥ १ ॥
अज्ञानी नर साँच माँन कर पड़े मोह की धारा ॥

चेतत नाँहि अचेत न प्राणी शिरपर काल दहाराहै ॥ २ ॥
धाम द्रव्य में लाग रहे सो जैहै जमपुर द्वारा ॥
अन्त काल कूं कोइ न किसीका सकल कुटुम्ब परिवाराहै ३
जीवत सब स्वारथ के साथी मातु पिता सुत दारा ॥
स्वप्ने कासा ख्याल बना है तापर फँसा गँवारा है ॥ ४ ॥
तज हरि नाम विषय सूं पागो कैसें उतरै पारा ॥
चरणदास सतगुरु उपकारी कहत पुकार पुकारा है ॥ ५ ॥
रामरूप साँचे सूं राचो छाड़ भर्म जंजारा ॥

राग सोरठ वा आसावरी।

साधो नारी नैं जग बाँधा ॥
जल जल मरैं पतंग के नाँई समझत नाँहीं आँधा ॥ १ ॥
हाड़ मांस नाड़ी और लोहू नख शिख मैल विराजे ॥
महाअशुच है नर्क निशानी तापर सठ नहीं लाजे ॥ २ ॥
मूतधार में फँसा गँवारा बीड थूक नित चाटै ॥
खोवै मणी ज्योति सब सुखकी हरि गुरु से चितफाटै ॥ ३ ॥
भटकत फिरै त्रिया के कारण जित तित सूं धन लावै ॥
तन मन वचन लगो वाही सूं रामभक्ति बिसरावै ॥ ४ ॥
ऐसी है यह मोहनी मूर्ति ताके सब बस परिया ॥
रामरूप चरणदास कहत हैं को इक साधु उबरिया ॥ ५ ॥

राग बरुवा।

तेरे शिरपर वैरी काल तू गाफिल कैसा रे ॥
घड़ी पलक का नाँहि भरोसा तक मारै ततकाल ॥ १ ॥

ऐसे तो नित नाँहि निभैगी सुख सम्पत संजोग ॥
आखिर जम सूं रार मड़ैगी पाप लगाया रोग ॥ २ ॥
नर तन लाल अमोलक पायो सार न जानी कूर ॥
पशू ज्यों पेट भरन सूं काजा खोय दिया सब नूर ॥ ३ ॥
मूरख नींद घनेरी सोवै घर की सुध न सँभाल ॥
निवड़ गई सब जमा गाँठ की होय गया कंगाल ॥ ४ ॥
हो होशियार समझ मन बौरे कहैं चरणदास दयाल ॥
रामरूप हरि नाम नफा ले छाड़ि जगत जंजाल ॥ ५ ॥

राग बरुवा ।

तेरी छिनभंगी है देह समझ मन बौरा रे ॥
हाड़ चाम की झूंठी काया मत फूलै कर नेह ॥ १ ॥
बड़े बड़े ऋषि मुनि अरु जोधा जर बर होगये खेह ॥
तू तो अलपजीव मत मन्दी क्या तेरो उनमेह ॥ २ ॥
रावण कुम्भकर्ण हरिनाकुश तिन सम ना कोइ वीर ॥
सो भी कालबली ने मारे रञ्चक रही न धीर ॥ ३ ॥
जोगी सिद्ध समाधी केते बैठे मन कूं जीत ॥
वे भी भये खाक की ढेरी मोत महाभयभीत ॥ ४ ॥
जो उपजै सो सबही बिनसै रहा नहीं थिर एक ॥
रामरूप सोई बड़ भागी हरि सुमरण गही टेक ॥ ५ ॥

राग झँझोटी ।

क्यों गाफिल रे प्रानी तोहिं कालबली छिन छिन तकै १ ॥

यह चहुलर दिन चार पाँच की तापर भया गुमानी ॥
राजा राणां शाह वादशाह देखत गये बिलानी ॥ २ ॥
जोम अकड़ राखै मत बोरे यह दिन दोकी जवानी ॥
रामरूप नहीं स्वांग भरोसा क्यों न भजै हरिदानी ॥ ३ ॥

राग झँझोटी।

क्यों भूला रे भूला तू स्वप्ने का सुख देखके ॥ १ ॥
यह माया कहो भई कौन की ताहि पाय जो फूला ॥
मेरी मेरी कर वहु प्रानी गये सबै रल धूला ॥ २ ॥
खोटे कर्म कुपंथ में पगकै सदा नर्क में झूला ॥
रामरूप कहै दयाभजन विन खोय चला सब मूला ॥ ३ ॥

राग बरुवा।

करना है सो करले प्यारे अवसर बीत्यो जावे है ॥
पल पल तेरी आयु घटत है वह दिन नेरे आवे है ॥ १ ॥
स्वांस वाणवें क्रोड़ खजानां छिन छिन माँहि घटावे है ॥
काल भूपकी फिरै दुहाई निशि दिन चोट चलावैहै ॥ २ ॥
बूढ़ा बाला कोइ न छोड़ा सब कूं चुग चुग खावे है ॥
राव रंक की काँण न मानै पलमें खोज मिटावै है ॥ ३ ॥
रावण से को वीज न राखो तू क्या जोम दिखावे है ॥
रञ्चक सुख में फूला डोलै जमके हाथ बिकावै है ॥ ४ ॥
यह जग मृगतृष्णा को जल है ताकूं कहा लुभावै है ॥
साँचा रामनाम चित धरले जन रामरूप चितावै है ॥ ५ ॥

राग बरुवा ।

मैं मैं मैं मैं छांड़ दिवानें मानी जन्म गँवाया है ॥
जिन जिन मान कियो जग माँहीं आखिर कूं दुख पाया है ॥ १ ॥
मान कियो हरिनाकुश अतिही अपना उदर फड़ाया है ॥
जन प्रहलाद दीन कूं हरिने हित सूं कण्ठ लगाया है ॥ २ ॥
रावण मानी गरद करानी गढ़ कोटों की माया है ॥
विभीषण ले मिलो गरीबी सो लंकेश कहाया है ॥ ३ ॥
दुर्योधन शिशुपाल मानकर कुल का नाश कराया है ॥
पण्डू विदुर करी आधीनी तिहूं लोक यश छाया है ॥ ४ ॥
मान करंते सबही हारे तप अरु तेज घटाया है ॥
रामरूप सतगुरु के शरणें बचा परम सुख पाया है ॥ ५ ॥

राग झँझोटी ।

कोई दिन नेकी कर सुख जीजे ।

बदी बुरी है नर्क निशानी भली भलाई लीजे ॥ १ ॥
छांड़ ईर्षा अकस दिला सूं खुदी गुमान न कीजे ॥
जवानी जौस सदा थिर नांहीं छिन छिन छिन तन छीजे २
ज्ञान गरीबी में चित धारो सबही कूं हित दीजे ॥
रामरूप कहै मन शुध करके नाम पियाला पीजे ॥ ३ ॥

राग काफी ।

करनी करले रे करले रे प्रानी तोहि टेर चितावें ।

खबर नहीं है घड़ी पलक की कब चलना होजाई ॥
खड़ा खड़ी कछू नाँहि बनेगा अब सूं चेतो भाई ॥ १ ॥

यह अवसर फिर मिलन कठिन है ऐसी मनुषा देही ॥
सो बिरथा मत खोवे प्यारे सुमरो रामसनेही ॥ २ ॥
धन दारा सुत सकल कुटुम्बा ये स्वारथ के साथी ॥
जब जम कण्ठ गहेंगे तेरा कोई न मीत संगाती ॥ ३ ॥
जमा गँवाई कुबुध खेल में नफा कहां सूं लेगा ॥
धर्मराय माँगैगा लेखा तहाँ जबाब क्या देगा ॥ ४ ॥
तातें समझ शरण ले हरि की साधु संगत चित दीजे ॥
रामरूप यों जन्म सुफलकर दोऊ लोक सुख लीजे ॥ ५ ॥

राग बिहागरा।

अरे नर हरि सुमरण कर ले रे।

जग में रच्यो पचे दिन राती सोई दगा तोहि दे रे ॥ १ ॥
मैं मेरी ममता में भूला सो तेरे काम न आवे ॥
जा दिन हंस पयाना कर है सबै धरा रह जावे ॥ २ ॥
काहू जोड़े अर्ब खर्ब लों काहू लाख किरोड़ा ॥
सुई समान हुवा नहीं संगी दोड़ घनेरी दोड़ा ॥ ३ ॥
भूमिपती गजपती कहायो बाँके कोट चिणाये ॥
जब जमकाल बुलावा भेजा तब कुछ काम न आये ॥ ४ ॥
वेगही चेत समझ मन भाई तज दे झूंठा दावा ॥
रामरूप संग नाम खर्च ले नातर हो पछितावा ॥ ५ ॥

राग सोरठ।

अब तू नीरारे नर चेत।

दिन दिन आवत मौत नजीकें छिन छिन घटत शरीरा रे॥

आगे लेखा देना होगा मत कर पाप अधीरा रे ॥ १ ॥
जग स्वादन में कहा गँवावै जन्म अमोलक हीरारे ॥
रामरूप कहैं सुख चाहै तो भजले हरि बल बीरा रे ॥ २ ॥

रेखता।

हरदम सुमर महबूब कूं मुशकिल शवद आसा ॥
अज़ तुफैले नाम ओमन बावरे बावरे सिफ्त दर दुनियां १
रहु करार अपने के ऊपर मुस्तकीम मुदाम ॥
शिकममें जो कुछकहा मन बावरे बावरेविर्द करि सो नाम२
जान ख्वाब खयाल आलम ओर जाहु जलाल ॥
यक बलहजे साअ़ते मन बावरे बावरे ओर हो अहवाल ३
सब तरफ से खैंच दिल कूं हो मुकाबिल यार ॥
खुद फना होज़ातमें मन बावरे बावरे मिल रहो एकसार४
पूछना कर मुरशदे कामिल सूबे बिस्वास ॥
दीद दोस्त जमाल रामन बावरे बावरे राख ऐसी आस५
रामरूप स्वरूप में रहु लीन आठो जाम ॥
सोग संशय खोय के मन बावरे बावरे तहां कर विश्राम६

इति ॥

ज्ञान का अंग।

इस अंगमें जीवात्मा जिस तरह से ब्रह्मभाव को प्राप्त होकर स्वस्वरूप और परस्वरूप परमात्मा को जानकर ब्रह्माकार वृत्तिसे ध्यानद्वारा अनेक अद्भुत चमत्कार और आनन्द अनुभव करलेता है उसका सविस्तार परमसार वर्णन किया है ये अंग अद्भुत ढंगका अवश्य पढ़ने योग्य है॥

राग कड़खा।

साधो जीव सूं ब्रह्म होजाय ऐसैं॥
गुरु दियो ज्ञान लियो आप कूं जान हीं
भेड़ गति छोड़ भयो सिंह जैसे॥ १॥
मोह ममता गई बुद्धि निर्मल भई
हुवो प्रकाश तिम अन्ध जाई॥
मिटो अहंकार जब मान छूटे सबै
गई तब रात दियो दिन दिखाई॥ २॥
भरम भय ना रहा त्रास जम का गया
दुई इच्छा नहीं रही कोई॥
बीच ही बीच मैं भूल लागी हुती
सँभल सोई भया पहल होई॥ ३॥
रहै जग माँहि व्यापै कछू नाँहि हीं

पाप अरु पुण्य दोऊ लगैं नाँहीं ॥
आप कूं थाप था थाप कूं सर्वथा
सो रहा नाँहि वाके जु माँहीं ॥ ४ ॥
जीव मति उठ गई ब्रह्म एकै सही
लहर आपै हुई निरा पानी ॥
दास रामरूप रणजीत गुरु एकही
दूसरा नाँहि कोई रहा आनी ॥ ५ ॥

दोहा ।

ज्यों बालक कूं देत भय, ले हाऊ को नाम ॥
रामरूप त्योंहीं जगत्, नाँव न गाँव न ठाम ॥
एक ब्रह्म ही ब्रह्म है, अमर अखण्डत ठोस ॥
रामरूप एक रस सदा, कहूं न दुतिया दोस ॥

राग भैरों ।

आनन्द करो मगन मन मेरे जगत नहीं तिरकाला ॥
परमातम हीं दर्शन लागो मिटो भर्म जंजाला ॥ १ ॥
रसरी परी अँधेरे माँहीं साँप भर्म सूं माना ॥
कर उजियारा लखी जेवरी सब डर तुर्त बिलाना ॥ २ ॥
सीपी देख दूर सूं चमकत रूपा तक के धावैं ॥
निकटैं जाय निरख जब चीन्है झूंठ जान फिर आवैं ॥ ३ ॥
चरणदास गुरु निश्चय कहिया नहीं नहीं जग नाहीं ॥
रामरूप निर्मल ही चेतन जड़ता नां तिह माँहीं ॥ ४ ॥

राग भैरों।

बहु खोजा मैं ज्ञान समझ कर जगत नेक नहीं पाया॥
ज्यों कदली के पात उतारत पेड़ दृष्टि नहीं आया॥ १॥
पाला देखा बहुत सोधकर कहूँ न पाया पाला॥
ऐसे ही संसार नहीं है एकही ब्रह्म रसाला॥ २॥
जैसे फेन तरंग बुदबुदा जल सूं नाहीं न्यारा॥
त्योंही आतम माँहि जगत यों कञ्चन मुहर प्रकारा॥ ३॥
अरु ज्यों हींग कपूर देखले वास जुदी नहीं कोई॥
चेतन अद्वै शुद्ध सत्य में रामरूप नहीं दोई॥ ४॥

राग मालश्री।

मैं नांहीं मैं नाँहिं तुही तुही तूही है।

जन्म मरण जमदण्ड न मोकूं ना काहू को भय॥
मैं हूं तो मोकूं कछु व्यापै मैं भया तुझ मैं लय॥ १॥
पूंजी गये लाभ कहां पइये स्वर्ग फलन की आस॥
जब मैं आप गँवाया तो मैं सब सूं भया निरास॥ २॥
जो था सो भया गुरु किरपा सूं बिचका गया उपाध॥
आप हुते जब दुख सुख लहते अब छूटी दोऊ व्याध॥ ३॥
तन्धन दीखै मुक्ति न चाहूं आस बास गई खोय॥
चरणदास रामरूप भये हैं होनी होय सो होय॥ ४॥

राग मालश्री।

घट घट व्यापक राम वही अविनाशी है।

पाँच तत्व गुण तीन परे ही निर्विकार निर्लेव॥

सत्‌चित आनन्दरूप विराजे अक्रिय अलख अभेव ॥ १॥
निरालम्भ निर्बान आन बिन निर्द्वन्दी निर्बन्धु ॥
बरन कहन तामें नहीं पइये सकल जगत् को कन्द ॥ २ ॥
लीला करन सबन को दृष्टा आप अदृष्टि रहै ॥
नाना रूप धरै अरु खेलै माया नाँहिं गहै ॥ ३ ॥
ऐसा ही स्वामी अन्तर्यामी चरणही दास कहै ॥
रामही रूप सुनौ निश्चय कर आदिही अन्त वहै ॥ ४ ॥

राग सोरठ ।

साधो मैं अपना हरि देखा ॥

एक अखण्ड खण्ड नहीं तामें भापे रूप अनेका ॥ १ ॥
है बहु रंग रंग नहीं कोई निराकार आकारा ॥
नारि पुरुषको भेष न दीखै अचरज अलख अपारा ॥ २॥
वाकूं रात दिना कोई नाहीं अवधि काल अस्थाना ॥
माय बाप बिन अधिक लाड़ला ताके लाभ न हाना ॥३॥
नीचै नीचै ऊपर ऊपर दहनैं दहनैं बावैं ॥
मध्य रहै सो भी वह आपै ज्ञानदृष्टि सूं पावैं ॥ ४ ॥
चरणदास महाराज दया सूं रामरूप ने जाना ॥
उठी उमंग मगन हो मन में जब यह भेद बखाना ॥ ५ ॥

राग आसावरी ।

साधो ऐसा धाम हमारा ॥

जहाँ न बिद्या बेद बिबादा निर्द्वन्दी निर्धारा ॥ १ ॥

जहाँ न किरपा कर्म न भोगी नर्क न स्वर्ग पसारा ॥
आसन सञ्जम जहाँ न साधन ज्ञान न ध्यान विचारा ॥२॥
जन्म न मरण जान नहीं आवन ना तप नेम अचारा ॥
पाप न पुण्य नहीं जमका भय निर्भय देश निरारा ॥ ३ ॥
बन्ध मुक्ति का जहाँ न धोका नाँ वहाँ तिमिर उजारा ॥
भूल न चेत खोवन नहीं पावन गुरुशिष्य ना व्यवहारा ॥४॥
वार न पार नहीं हद कोई भेष बरण सूं न्यारा ॥
सदा अखण्ड नहीं वहाँ खण्डित है निर्बान अपारा ॥ ५ ॥
जहाँ अविगति रणजीत गुशाईं अति निर्मल दरबारा ॥
रामरूप जहाँ बसै निरन्तर दुविधा दुई निवारा ॥ ६ ॥

राग झँझोटी।

अजर अमर बर पाया वो लाल ॥

बर पाया वो प्राणपियारा अद्भुत सुन्दर तेज विशाल ॥१॥
मैं वलिहारी अपने गुरु के सांचा पीव मिलाया वो ॥
जोग जुगत सूं जो था दुर्लभ सो वह दृष्टि लखा वो ॥ २ ॥
अविनाशी जुग जुग नितही है जहां तहां छवि छाया वो ॥
मैं न डराऊं सदासुहागिन निश्चल शीश गुँथाया वो ॥३॥
तुरिया पदसा भवन अटलहै जित बालम गल लाया वो ॥
वह मैं दोऊ एक भये हैं आनन्द अधिक बधाया वो ॥४॥
रामरूप चरणदास दया सूं आवागवन नशाया वो ॥

राग झँझोटी ।

सतगुरु नगर लखाया वो जोर ॥
नगर लखाया वो अजब अनूठा निपट अटपटी है वह ठौर ॥१॥
वा नगरी के द्वार न कोई वे पर्वान बताया वो ॥
काम क्लेश न व्याधा रञ्चक ना कछु गया न आया वो ॥२॥
जिह कारण बहु जोग करत हैं तप तीरथ तन ताया वो ॥
ध्यानी ध्यान धरत ही हारे ज्ञानी अन्त न पाया वो ॥३॥
ऋषि मुनि देवत खोजत थाके कोऊ थाह न लाया वो ॥
सतही सत है पार न जाको समझ समझ छकछाया वो ॥४॥
कह न सकूं मनही मन हुलसूं ज्यों गूंगे गुड़ खाया वो ॥
शुक रणजीत गुरु मम पूरे जित रामरूप बसाया वो ॥५॥

राग कड़खा ।

दीद बे दीद बे दीद जो करत है
दीद की बात क्या सहल जानी ॥
शीश कूं काट गुरुदेव चरणों धरे
तबै तू होय निर्वान ज्ञानी ॥ १ ॥
बाद बिबाद बहुद्वन्द करता फिरै
धार अभिमान बहुचित्त माहीं ॥
अगम का देश गुरु ज्ञान बिन दूर है
साख शब्दी कथैं सिद्ध नाहीं ॥ २ ॥
काम अरु क्रोध की चोट नीचैपरा
मोह अरु लोभ का लगा फन्दा ॥

ब्रह्म का दीद किस भांति सूं होयगा
पांच ही विषय तोहिं किया अन्धा ॥ ३ ॥
अकस हिंसा घणी कुबुध तन मन बसै
तास पर दीदही दीद गावै ॥
यों नहीं जानता खोट इतने भरे
कौन विध दीद वहां जाय पावै ॥ ४ ॥
होय निर्वैर अहंकार कूं त्याग दे
शील सन्तोष उर लाय भाई ॥
मिलै पूरा गुरु भर्म कूं मेट कें
ज्ञान की दृष्टि सूं दे दिखाई ॥ ५ ॥
नूर झिलमिल तहां दीद ऐसा भवै
आदि मध्य अन्त नहीं थाह कोई ॥
कहै रामरूप चरणदास का बालका
जीव अरु सीव मिल एक होई ॥ ६ ॥

राग कड़खा।

साधो सुन्न वे सुन्न वे सुन्न ही सुन्न है
सुन्न बिन नाहिं कछु और दूजा ॥
होत झिलमिल तहां सुन्न का नूर है
सुन्न के चाँदने सुन्न सूझा ॥ १ ॥
सुन्न पूर्व दिशा पश्चिमैं सुन्न है
उत्तरा दक्षिणा सुन्न होई ॥

तलै ऊपर सबै सुन्न पूरन सदा
दूर अज्ञान कर देख सोई ॥ २ ॥
सुन्न का बुदबुदा अण्ड यह होरहा
फेर सुन्न माहिं मिल जाय भाई ॥
वेद कत्तेब ए बीच मैं थकि रहै
सुन्न की थाह कोई नाहिं पाई ॥ ३ ॥
थके जोगीश अरु मुनी ध्यानी सबै
उरेही उरे की कहैं गाई ॥
दास रामरूप चरनदास प्रताप सूं
सुन्न मैं जाय के लौ लगाई ॥ ४ ॥

राग कड़खा ।

साधो अजबही अजबही अजब महबूब है
अजब दीदार मैं खूब पाया ॥
दई गुरु सैन मोहिं निकट ही सूझिया
लखा जो भेद नहीं जाय गाया ॥ १ ॥
झिलमिली झलक सूं परे इक नर है
तासु कूं देख मैं अति लुभाया ॥
अनन्त त्रिदेव तहां खड़े लोचैं सदा
अजब दरबार वह नज़र आया ॥ २ ॥
भया निहाल मैं निरख वा देश कूं
दिया उठाय अज्ञान थाना ॥

गया डर काल का त्रास जम की मिटी
नर्क और स्वर्ग कूं तुच्छ जाना ॥ ३ ॥
रहूं आनन्द मैं पाय निज पीव कूं
आठ ही पहर हाजिर हजूरा ॥
हुवा मुखत्यार जो महर प्रीतम करी
तोड़ के फन्द दुख किये दूरा ॥ ४ ॥
रूप अलेख जहां लेख लिख ना सकै
भेष अरु बरण सूं सदा न्यारा ॥
पांच तत्त्व तीन सूं परे निर्वाण पद
बसै रणजीत रामरूप प्यारा ॥ ५ ॥

राग कड़खा।

ए जी भलेजी भलेजी भले सतगुरु बली
भर्मकपाट सब तोड़ डारे ॥
नज़र भर देख निहाल पल में किया
भया आनन्द अचरज निहारे ॥ १ ॥
परी गम अगम की पाय प्रीतम लिया
जाय मुजरा किया महल माँहीं ॥
अजब दरबार जहाँ सन्त अनगिनत हैं
सोग संताप व्याधा जु नाहीं ॥ २ ॥
नूरही आप और नूर दरबार है
नूरही सन्त जो निर्विकारे ॥

नूरही नूर सब ठौर भरपूर है
नूर में नूर है खेल सारे ॥ ३ ॥
जाति अरु वर्ण की अटक सबही गई
नेम आचार थोथा पसारा ॥
काल की फाँस ना कटै इन बात सूं
उलझिया भरम में जगत सारा ॥ ४ ॥
ज्ञान के चाँदने सूझ ऐसी भई
कोटि जुग पहलकी अब बखानी ॥
कहै रामरूप चरणदास प्रताप सूं
जहाँ भू तेज नहीं पवन पानी ॥ ५ ॥

राग सोरठ ।

साधो वह निर्गुण पद झीना ।
पहुँचेगा कोई अकल कला सूं ज्ञानी जन परवीना ॥ १ ॥
पक्षी खोज मीन का मारग विरले काहूं चीना ॥
चींटी चढ़ै न राई ठहरे सैल सलहली बीना ॥ २ ॥
कुरसी दूर डगर है भारी बाँका महल नवीना ॥
मन बारीक करै तब दरसै वेरंगी रँग भीना ॥ ३ ॥
पंच अग्नी तप तीर्थ न्हाया काया कूं दुख दीना ॥
पच पच मुये बहुत नर मूरख कछू न हासिल कीना ॥ ४ ॥
सतगुरुसे न और है भाई जहां नहीं गुण तीना ॥
रामरूप तज झूठी आसा वा पद में लवलीना ॥ ५ ॥

राग रेखता।

आशिक हुवा हूं उसका जु नजरों से दूर है॥
साया जिसी का यह जग जो कुछ जहूर है॥ १॥
जो है खयाल वहम फ़हम सूं परे सनम॥
मुरशद की सैन वैन सैं हाज़िर हुजूर है॥ २॥
औसफा उसकी जात का क्योंकर करें बयान॥
क्या ताब है किसी में अकल क्या शऊर है॥ ३॥
तिस बेचगून यार पै मैं सब हुवा निसार॥
दिल जान उस सनम पै मेरा चूर चूर है॥ ४॥
यह काम आशक़ी का सुनौ रामरूप सूं॥
पहिले फ़ना जो होय तौ फिर वह भी नूर है॥ ५॥

राग सोरठा।

जमसूं नाहिं डरूंगा रे अब मैं सुन्न शहर घर छाया॥
अचरज धाम काल नहिं ज्वाला जहां न व्यापै माया॥१॥
सतगुरु सैन देत ही पहुँचे लखत अचम्भा आया॥
भूल सूं जानत थे कछु औरे अजब राम दरसाया॥ २॥
बे परवान सदा और सारें अमर अडोल अभेषा॥
निर्भय भये गये भय सबही जब निर्गुण पद देखा॥ ३॥
क्रिया कर्म कौन अब साधे मनकी शंका भागी॥
आनन्द माहिं फिरूं मतवारा सहज गगनधुनि लागी॥४॥
जाकूं लोग दूर बहुगावैं सो गुरु निकट बताया॥
रामरूप चरणदास दया सूं धोखा सबै गँवाया॥ ५॥

राग जंगला ।

सतगुरु दीनों ज्ञान भया उजियारा है ॥
सूझ परा आतम पद झीना मिटा भरम अँधियारा है ॥१॥
भटकत फिरे बहुत विधि जगमें तीर्थ बरत आचारा है ॥
बिन भेदी कुछ भेद न पाया कीना पवन अहारा है ॥२॥
करके जोग कर्म खट साधे सूक गया तन सारा है ॥
जतन किये काया बहु धोई नाहिं मिला दिलदारा है ॥३॥
जब सतगुरु भेटे कृपा कर मन का धोका टारा है ॥
रामरूप भया आनन्द आतेही लख अचरज गुलजारा है ॥४॥

राग आसावरी ।

वह पद परसे बिरला कोई जहां सेवक सेव्य न दोई ॥
पवन न परसै जल ना सरसै ऐसा साहिब सोई ॥
बुद्धि बिचार सके नहिं ताको सुरत न सकै समोई ॥
सुर नर मुनि धर ध्यान हिराये वेद कहैं मत थोई ॥
चरणदास गुरु पूरा परसे सब जग मुक्ता जोई ॥
नीरस भी पाला नहिं रंचक रामरूप शिप सोई ॥

राग सोरठ ।

रे मन चल बस वा पद माहीं जहां बिघन कलेश जो नाहीं ॥
जहां जाति अरु बरण नशाहीं जहां न धूप न व्यापै छाहीं ॥
जहां रजनी होय न भोरा वह अबरण श्याम न गोरा ॥
जहां ज्ञान न ध्यान समाधी जहां पूरण पुरुष अनादी ॥

जहां भूल नहिं चेता जहां न एक अनेका ॥
जहां पाप पुण्य नहिं दोऊ जहां उपजे मरे न कोऊ ॥
जहां दुविधा दुई बिसारै जहां इकरस सदा निहारै ॥
जहां आप आप नहिं दूजा जहां पूजक आपहि पूजा ॥
जहां रामरूप लखि सोई जहां आप आपही होई ॥

राग गौरी ।

वह पद सगुराजन कोइ पावे ।
निगुरा दशौं दिशा में भरमें ताको नज़र न आवै ॥
ज्यों दीपक उजियार मंदिर में यों सब अन्तर साईं ॥
कूपछांह माया यों दरसे रहत कूपही मांहीं ॥
ना कहिं जाना ना जल न्हाना करना बरत न पूजा ॥
ज्ञान विचार बिसारै आपा तासूं हरि नहिं दूजा ॥
तन झूंठा अरु मन भी झूंठा झूंठा ज्ञान बिज्ञाना ॥
रामरूप चरणदास कहत है सांचा रहै निदाना ॥

राग बिलावल ॥

भोर भया गुरु ज्ञान का जागा मन मेरा ।
रैन अविद्या घट गई मिटा भरम अंधेरा ॥
ज्यों जागे सोई लखै जाग्रत व्योहारा ।
सूतो जग सुपनो सबै बिन ज्ञान बिचारा ॥
जीव खोज जाग्रत मिटै मन इन्द्री तीसा ।
बाहर भीतर एक सा दरसै जगदीशा ॥

साध निकट रिधसिध कहा जीवन वहु वरपा ।
चरणदास कहि रामरूप सो तू हो रहु हरिका ॥

राग वरवा ।

दूजा दूजा न्यारा नाहीं रे ।
नाभिकमल कस्तूरी महकै ॥
दूर दिशा मृग वोरा भट के ।
भरम फिरे मन माहीं रे ॥
शीशमहल में श्वान जो आया ।
अपनी छाया देख रिसाया ॥
भूस भूस मर जाई रे ।
रामरूप तज मन की आशा ॥
आपहि साहिव आपहि दासा ।
पूर रह्यो सब ठाहीं रे ॥

राग सोरठ ।

हमारे ज्ञान गढ़ वंका ॥
भर्म गोला नाहिं लागै नाम का डंका ॥ १ ॥
क्षमा के जहां वुर्ज हैं गम्भीरता खाई ॥
शुभ कर्म का अमर कोटा बना अधिकाई ॥ २ ॥
सत्य अरु सन्तोप के पट धर्म का द्वारा ॥

काम क्रोध अरु मोह का दल सर्व पचहारा ॥ ३ ॥
जमवली की ना बसावै अमरगढ़माहीं ॥
रामरूपा भये निर्भय काल गम नाहीं ॥ ४ ॥

राग सोरठ।

सो हरिके सन्त हैं शूरा ॥
भर्म गढ़ छिन माँहिं तोड़ा ज्ञान के पूरा ॥ १ ॥
पाँच दुर्जन मार काढ़े मन कियो चूरा ॥
पकड़ इन्द्री कैद कीनी भये सुख रूरा ॥ २ ॥
चाह मारी डिम्भ भागो छल तजो मूरा ॥
त्याग और वैराग बल सूं किये दुख दूरा ॥ ३ ॥
परम पदमें वास कीनौं परस निज नूरा ॥
रामरूप रणजीत दीनों भक्ति का तूरा ॥ ४ ॥

राग बसन्त।

ऐसा रचिया साहिब अगम खेल।
पाँच वर्ण को रंग मेल ॥ १ ॥
श्याम सबज और सुर्खरंग रंग सफेदमें बहुत रंग ॥
जर्द रंग पर मचीधूम खेलन लागे सखी सूम ॥
पानी पावक एक द्वार ना भवै वा सकै जार ॥
पवन चलै ना हलै पात सब मिल खेले एकसाथ ॥

बिष अमृत का एक राह आठो जाम बहै प्रवाह ॥
नावह मिलैं न विछुरै कोय मरन जीव सांच न सोय ॥
अद्भुतलीला कही न जाय सिंह स्यालके बँधो पाय ॥
चरणदास गुरु दियो भेद रामरूप मन मिटे खेद ॥

इति ॥



बसन्त होली।

इस अंगमें ग्रंथकर्ता ने सगुण निर्गुणस्वरूप परमात्मा के भाव और ज्ञान बैराग उपदेशात्मक बसन्त और होली रागरागनियों में परमानन्द के प्रगट करनेवाली प्रभावशाली निराले रंग ढंग की रचना की हैं सज्जन पुरुषोंको अवश्य पढ़कर परमानन्द लाभ प्राप्त करना चाहिये ॥

राग बसन्त।

आई अजब रंगीली ऋतुबसन्त घरमें पायो अपनोकन्थ ॥
चावन खेलूं कर उछाह बहुत दिनोंका था उमाह ॥
सबै सौंज बनिआई मोहिं प्रेमबढ़ो मन मगन होय ॥
चहूं दिशि फूले हितके फूल दुबिधा दुर्मति मिटी शूल ॥
सखियनकी मतिभई और तज उपाध रही अपनी ठौर ॥
सकल बिकल नहीं हर्ष शोक मन चञ्चलकी रही न रोक ॥
जहाँ ब्रह्म जहाँ चला जाव मुक्ति होने थाका उपाव ॥
रही न आस कोई काम चरणदास भये आप राम ॥
ज्ञान रंग बाढ़्यो अपार रामरूप जित तित निहार ॥

राग बसन्त।

यह बसन्त रे यह बसन्त कोई पूरा जाने साधु सन्त ॥
पारब्रह्म पूर्ण खिलार ताको सूझै नहिं वार पार ॥

चलत चलत मन गयो हार बुद्धि वानी थाको विचार ॥
श्वेत श्याम नहीं पांचों रंग और न दुतिया कोई संग ॥
रूप नाव नहीं ताके छाँहि तीनों गुण कामें समाहिं ॥
ओर छोर नहीं जाको मध्य वेहद जो कहूं होय हद्द ॥
देश काल नहीं तातो शीत एकरस चेतन गुणातीत ॥
मोहिंयहअचरजदीनोंलखायअरुदेखतहीरहो अतिअघाय
वलिहारी गुरुचरणदास करी रामरूप की पूरी आस ॥

राग वसन्त।

सोई साधु रें सोई साधु।

साधो ऐसें खेलै सोई साधु अन्तर सुध अरु मत अगाध ॥
हरिके सौंहीं मँडेजाय अरु चरणकमल पूजे अघाय ॥
नेमही चन्दन ले घसाय और रहनी केशर हित मिलाय ॥
सांच वचन सोई फूलमाल चर्च चढ़ावें हो निहाल ॥
नख शिख गोविन्दकूं निहार तन मन अपनों डारे वार ॥
प्रभु रीझैं जव गहैं हाथ प्रेम भिगोवैं सकल गात ॥
इत उत होवें सदा संग वढ़त वढ़त वाढ़ै ऐसो रंग ॥
जव शोभा पावै तीन लोक अरु जन्म मरणको मिटै शोक ॥
चरणदास गुरु दई सुनाय रामरूप खेलो चितलाय ॥

राग वसन्त।

मेरे ऐसो खेल अव खेलै कौन लख चौरासी भ्रमै जौन॥१॥
नर्क द्वार अव नाँहि जावै जमकी मार कहु कैसे खावै॥२॥

मन सकुचै तन अति डराय तातैं सत्संगतमें मिलोआय॥३॥
वहुत फिरो तिहूंलोक मांहिं नैकहूं स्थिरता पाई नाँहि॥४॥
कष्टसहे दुख अतिअपार यातैं सतगुरु शरणैं लगोहार॥५॥
पूरे गुरु मेरी गही बांह और चरणकमल की करी छाँह॥६॥
जाप बतायो रामनाम मेरी भवसागर सूं रहो न काम॥७॥
ज्ञान जोगकी दई नाव और कही चढ़ पार जाव॥८॥
रामरूप हो चरणदास तू रहियो या जग सूं उदास॥९॥

होरी राग काफी तथा विहाग।

मेरी होरी हो तोसों खेलूंगी रे खेलूं मनमान कांन॥
वहुत दिननसों निकस जात हो अव नहिं देऊंगी मैं जांन॥
फेंट पकड़ ठाढ़ो करि राखों अरु देऊं गारी दांन॥१॥
मुख मीड़ों अरु चोवा चरचों अरु देऊं ताना तांन॥
मनभायो सोई अव करिहों तोड़ोंगी कुल कांन॥२॥
फागुनके दिन वीते जात हैं मोहिं तिहारी आंन॥
रामरूप मोहन प्यारे पर वारूंगी तन मन प्रांन॥३॥

होरी राग धनाश्री।

होरी मचरही साधो भवसागर के माहि॥
वहुत दिनन सूं राच रही है मूर्ख लिपटे जांहि॥१॥
चहूं दिशि उड़त गुलाल भर्म को तिमिर रह्यो है छाय॥
तिन तिन की अँखियन में पैठो सोई गये अँधियाय॥२॥

खेलत काम ओट नारिन की नाना विधि रंग डार ॥
सन्मुख भये भिगायें सबही बहुत किये वै ख्वार ॥ ३ ॥
और क्रोध ने धूम मचाई काले कपड़े धार ॥
जो नर वासूं मिलकर खेलै सो गये नर्क मंझार ॥ ४ ॥
लोभ ने सबकी मति हरलीनी धरवाये बहु स्वांग ॥
घर घर नाचत मर्कट ज्यौं शीश नवाये आंग ॥ ५ ॥
खेलत मोह महा दुख लीयें पिचकारिन की मार ॥
चावन भीगे समझत नांहीं ये जगके नर नार ॥ ६ ॥
खेलत गर्व सर्व के माहीं हूं हूं करत फिरैं ॥
अभिमानी की मुक्ति न होवे जमके त्रास भरैं ॥ ७ ॥
रामरूप हरि ओरी चालै कर कै उमँग हुलास ॥
या होरी सूं बाँचै सोई कहैं चरण ही दास ॥ ८ ॥

होरी राग धनाश्री ।

होरी खेलिये नर मिल साधौं के संग ।
निष्कामी हो सनमुख हूजै लेकर हित को रंग ॥ १ ॥
उनहीं मैं मिल हो हो होरी करके प्रेम उमंग ॥
वे निशिदिन हरिही सूं खेलत नितही फाग अभंग ॥ २ ॥
रैन सबन की दिवश बनावैं चलैं जु उलटी चाल ॥
जग सूं उलट पलट हरि सौंही फँसैं न माया जाल ॥ ३ ॥
सदा मगन आनन्द मैं माते दीनौं सोग निवार ॥
तन मन भेट कियो प्रीतम की निर्भय भये अपार ॥ ४ ॥

ऐसे सन्तन सूं मिल होरी खेलो जी सब कोय ॥
चरणदास सूं नेह लगावैं रामरूप ही होय ॥ ५ ॥

होरी राग धमाल।

साधू खेलैं यह होरी मान लगावैं हरि ओरी ॥ १ ॥
तन मन सौंप दियोहै प्रभुकूं सुरत सुहागिन जित जोरी ॥
सब सुख त्याग भये बैरागी विभव जगतकी उनछोरी॥२॥
भरम गुलाल उड़ावत निशिदिन प्रेममाँहि जो बुधि बोरी ॥
बाढ़ो रंग संग सब छूटे होत चली कछु गति ओरी ॥ ३ ॥
चरणदास सूं ठाकुर हूये जानत ना दुनियां भोरी ॥
रामरूप त्रिगुण के ऊपर जाय बसे हैं वा ठौरी ॥ ४ ॥

होरी राग धनाश्री।

होरी आइया साधो सरस रस बोरी ॥
मो पहिले ये पाँच सहेली इनकी गति भई ओरी ॥ १ ॥
नो रंग घोल दिये सतगुरु ने दशवें प्रेम झकोरी ॥
खेलत रहूं सदा प्रीतम सूं होरी होरी होरी ॥ २ ॥
उड़त गुलाल भर्म भय भारी भई निर्मल मति मोरी ॥
चोवा चाह रही नहीं कोई अपनौं श्याम गहोरी ॥ ३ ॥
आनन्द मंगल घरही माँहीं अब न फिरै बुद्धि दौरी ॥
निर्भय होय भक्ति मैं राची कर पर शीष धरोरी ॥ ४ ॥
रामरूप चरणदास दया सूं रस पीवत निशि भोरा ॥
सुख आये दुख सबही भाजे छुटगयो नेम निहोरी ॥ ५ ॥

बहुअंगबाणी ।

इस अंग में ज्ञान ध्यान योग विराग और उपदेश मनशिक्षादिक मिश्रित अंगों के भावोंपर छप्पै छन्द कवित्त सवैया झूलना अरिल्ल दोहा चौपाई सोरठा कुंडलिया आदिक में अनेक रीति से परम उपयोगी मनोरंजन रचना किये हैं इसके पढ़ने से सज्जन पुरुषों को शिक्षामृतरूपी परमानन्दलाभ की प्राप्ति पूर्णरूप से होसक्की है ॥

दोहा ।

सम्प्रदाय शुकदेव की, आचारज रणजीत ॥
द्वारे निकस अनेकही, भक्तिप्रकट कर दीत १

छप्पै ।

जै जै श्रीशुकदेव सम्प्रदा तासु कहाई ।
भगवत धर्म बखान जगत में भक्ति चलाई ॥
शिष्य कियो रणजीत सर्व गति ईश अचारज ।
भये अभय बहु जीव सबन के सारे कारज ॥
यह सम्प्रदाय पाँचवी द्वारे हैं बहु भांतिही ।
रामरूप लागो शरण जब मन आई शान्तिही ॥

सोरठा ।

सम्प्रदाय को नाम, शुक रणजीत सांवत विदित ।
वार बार बलि जाव, रामरूप कहै भक्ति अति ॥

दोहा।

गुरु बिन भर्म न भाजई, हिये न आवै ज्ञान॥
रामरूप हरि ना जपै, भूंस मरै ज्यों श्वान २
गुरू बचावै नर्क सूं, गुरू मिलावै राम॥
रामरूप गुरुदेव बिन, लहै न सुखका धाम ३
पूरे गुरु के मिलतही, औरै गति होजाय॥
ज्यों पारस के परसतें, लोहा हेम दिखाय ४

कवित्त।

अँधरा होय गुरू आप अँधरे का गहै हाथ दोऊ चलैं बाट सो तौ भेरे पर जात हैं। पाहन की नाव करै सारवा बीच धरे कोटि कोटि जतन किये पार ना लगात है॥ कीचड़ सूं भरै पाय कीचड़ही सूं धोवै ताहि जल के बिना धोये कबहूं नाहीं उतरात है। कहत श्री चरणदास सुनों रामरूपदास सतगुरु के बिना ज्ञान कर्म ना कटात है॥

सतगुरु बिन ज्ञान ना बिना ज्ञान सूझै ना सूझै नर अंधे अज्ञान कूप बूड़त है। भटकतही फिरते हैं पाहन अरु पानी में नर्क चौरासी सूं कैसे कर छूटत है॥ साधुन को संग तजैं हीये अभिमान सजैं काम क्रोध लारलियैं पाप सदा लूटत है। कहत जन रामरूप बड़ेही अयाने लोग सतगुरु की शरण जाय साहिब नाहिं ढूंढ़त है॥

छप्पै।

सतगुरु पूरा वही बिना करनी जो तारै।

लेवै शीश अकोड़ वेग भवसिन्धु उवारै ॥
ज्यों धीवर वैठाय नाव में करिदे पारा ।
कछू न लावै जोर तहां जो चढ़नेहारा ॥
ज्यों शूरा की डगर में धाड़ी का भय नाहिं ।
रामरूप यों पहुँचे है पूरे गुरु की बांह ॥

दोहा ।

निश्चय कर गुरु कूं जपो, ध्यान करो मन माहिं ॥
रामरूप सतगुरु बड़े, ले पहुंचै गहि बांह ५
चरणदास रणजीत ही, भक्त राज महाराज ॥
चतुर नाम परसिद्ध है, जनके सारत काज ६

मनहरन छन्द ।

ईश्वर उदार गुरु परम दयाल सो तो करत निहाल अति अन्तहकरन सूं । जगत छुटाय भय भर्म मिटाय देत राखत अलग जमदण्ड की जरन सूं ॥ अहं निवार के अविद्या निकास मन ब्रह्म वनायो अपसंग शरण सूं । ऐसे रणजीत गुरु पाय जन रामरूप रहित भयो जु अब जन्म मरण सूं ॥

सवैया ।

आनँद रूप लखे रणजीत रहैं जु सदा आनन्दस्वरूपा ।
आनँद माहिं बसैं निर्द्वन्द उपाध नहीं जहां छांह न धूपा ॥
आनँद देत रहैं सबकूं जु सुधारस वचन सुनाय अनूपा ।
जनरामहीरूपशरणागतहीजाकेदोऊबरावररङ्कअरुभूपा ॥

दोहा।

जप तप अरु जग द्रव्य ही, जो कुछ शिष्य कमाय॥
भाग जु दशवां गुरू कूं, दीजै शीश नवाय ७
जप में तप में द्रव्य में, कबहुँ न आवे टोट॥
दिन दिन विरधै अधिकही, रहै धरम की ओट ८

छप्पै।

दान करत धन बढ़ै जगत में शोभा पावै।
ज्यों कूवें का नीर निकसतें अति सरसावै॥
सांझ भोर जो दुहे गऊ दूधा बहु देवै।
दिना बीस नहिं दुहे फेर कहो किससे लेवै॥
ज्यों कपास तीजे दिवस नहिं चुगे तो छीजिये।
रामरूप धन धरम विन विरथा जायपतीजिये॥

कवित्त।

करनी सूं राजा अरु रङ्क भवै करनी सूं करनी सूं नर्क जाय खावे जम मार है। करनी सूं स्वर्ग शिव विरंचि लोकवास लहै करनी सूं विष्णुधाम पावै ततकार है॥ करनी सूं जोगेश्वर ईश्वर समान बनै रिद्धि सिद्धि करामात करनी के लार है। करनी सूं जीव भ्रम छूटि होत रामरूप कहत गुरु चरणदास करनी हीं सार है॥

दोहा।

रामरूप के रूप में, सब जग होत बिलात॥
ज्यों मकड़ी सूं तारही, उपजत फेर समात ९

झूलना ।

नर मूढ़ भरम जानत नहीं वहुसाख पुरानकी लावदाहै ।
उस देशकी कुछ खवर नहीं पाप पुराय कूं झूंठ वतावदाहै ॥
रसभेद लखा न स्वम्र माहीं सुन सुनके स्वाद सुनावदाहै ।
रामरूप कहै जु विचार देखो यह फोकट ज्ञान कहांवदाहै ॥
ब्रह्म को वात वनाय कहै तत्त्व भेद कछू नहिं जानताहै ।
सीख श्लोक कवित्त पढ़ै सव एकही एक वखानता है ॥
मनमाहिं भरम अनेक परे वाहर चतुरता ठानता है ।
रामरूप कहै नर अज्ञानी फिर ज्ञानी अपने कूं मानताहै ॥
वंसी वट्टके तट्टसे नट्टरूपी ओढ़े पियरे पट्टको आंवदाहै ।
सोहे शीश मुकुट्ट लकुट्ट लिये टेढ़ी तानसूं वैन वजांवदाहै ॥
वांकेवैनकी कोर मरोर चितै चटपट्ट के चित्त चुरांवदाहै ।
ऐसासोहनामोहनालालप्याराराम रूपकेजियमें भांवदाहै ॥

दोहा ।

रामरूप सिद्ध साधु मैं, दीप भानु अन्रेश ॥
सिद्ध उधारै एक दो, साधु उधारै देश १०
फलनिमित्त हरिकूं भजै, धन पुत्रनकी आस ॥
रामरूप वे भक्त ना, स्वारथही के दास ११
स्वर्ग आदि के फल तजैं, भजैं निरञ्जन नाम ॥
रामरूप साँचे भक्त, पावैं प्रभुको धाम १२

कवित्त ।

स्वारथ की माता अरु पिता है स्वार्थ को,

स्वार्थ के सुत पुत्री स्वारथ की बाम है।
स्वार्थ के भाई अरु मित्र है स्वारथ के,
नाती अरु गोती कूं स्वारथ सूं काम है॥
स्वारथ की बहिन भूवा भानजी है स्वारथकी,
स्वारथ के सबही जो चाहैं धन धाम है।
कहत रणजीत रामरूप सूं साँचों,
परमारथ के सतगुरु बतावैं मग राम है॥

कुण्डलिया।

रामरूप कहै जगत मैं सब स्वारथ के मीत।
अपने सुख के कारने करैं बहुत ही प्रीत॥
करैं बहुत ही प्रीत मोह के भाव दिखावैं।
जग मैं देह फँसाय राम सूं हेत छुटावैं॥
पञ्च विषय की चाट दे करवावैं अनरीत।
रामरूप कहै जगत मैं सब स्वारथ के मीत॥
चेतै क्यों न अचेत नर तो शिरपै रिपुकाल।
छिन मैं मार गिरावसी बाँधि लेह जम साल॥
बाँध लेह जम साल त्रास दै नर्क मँझारा।
सकल कुटुम्ब परिवार नहीं रक्षक उँहवारा॥
वेग सँभारो राम कूं झूंठा जग का हेत।
रामरूप कहै क्या पगो चेतै क्यों न अचेत॥
देह गेह मेरो कहै मेरो सब परिवार।
माल मुल्क मेरो कहै मेरे सुत अरु नार॥

मेरे सुत अरु नार मोहिं देखै ही जीवें ।
मो पैं अरपैं प्रान मेरे बिन जल नहीं पीवें ॥
मेरो मेरो मान सठ सहै काल की चोट ।
रामरूप कहै मोहवस चिणैं पाप का कोट ॥
मेरा मेरा कर मुये हरिनाकुश से भूप ।
दुर्योधन रावण गये जो थे बली अनूप ॥
जो थे बली अनूप लिये सब काल पछारी ।
कछू न चाला साथ फौज हाथी अम्बारी ॥
धरा ढका यहांई रहा सब जगका व्यवहार ।
रामरूप कहै बहु मुये ममताही के लार ॥
शब्दौं मारे सब तजा भरथरी गोपीचन्द ।
राज त्याग बिरक्त हुये गाये गुण गोविन्द ॥
गाये गुण गोविन्द नाम का निश्चय आया ।
सतगुरु दीनौं भेद भरम सब दूर वहाया ॥
रामरूप कहै तनक सुख तजै न मूरख अन्ध ।
शब्दौं मारे सब तजा भरथरी गोपीचन्द ॥
करैं कड़ाका कड़कसूं जिन त्यागो जग जान ।
पिया प्याला झिलमिला गगनमाहिं गलतान ॥
गगनमाहिं गलतान चढ़ी अलमस्त खुमारी ।
कायर-तो क्या सहै चोट फाके की मारी ॥
कै छोड़ै बैराग कूं कै उठ माँगे जाय ।
रामरूप की भक्ति में कोइ विरला ठहराय ॥

रोटी कपड़े कारणैं जो कोई होय अतीत।
वासूं पूरी ना परै आखिर करै अनीत॥
आखिर करै अनीत नहीं हरिका मग जोवै।
पञ्च विषय के साथ अवधि खोवै पर खोवै॥
कै तो धन इकठा करै कै घर घेरै जोय।
रामरूप कहै साँचही वासूं भक्ति न होय॥
या कलियुग के राज में वड़ी तपस्या एक।
जीभ त्वचा कूं वस करै रामनाम की टेक॥
रामनाम की टेक पकड़ हो भवजल पारा।
मिटैं जमों के त्रास लहै निज मुक्ति द्वारा॥
मनुषा देही पाय के अब मत चूको दाय।
थोरी सी करनी किये रामरूप होजाय॥

छप्पै।

रामत के दुख सुख सहै कोई बिरला साधू।
क्षमा शील सन्तोष त्याग में होय अगाधू॥
कहीं भोजन वहु भाँति महल ऊंचे में बासा।
कहीं फाका कहीं चणे कहीं बैठन का साँसा॥
कहीं कि आदरभाव वहु कहींकरै कोई बादही।
दोऊ समय दृढ़मति रहै रामरूप सो साधुही॥
कबहुँ पहर दिन चढ़े खीर पकवान मिठाई।
कबहुँ दुपहरी मिलै दाल रोटी मन भाई॥
कबहुँ पिछले पहर साँझ कबहूं आधी राता।

कबहुँ चाव कबहुँ नहिं सदा आनन्द में माता ॥
यों हरिजन हर आसरे जो निःस्पृह संत हैं ।
रामरूप संतोष धन सोई बड़े महन्त हैं ॥

दोहा ।

कराठी माला तिलक कूं, निन्दत है शैतान ॥
साँचा धर्म छुटाय के, दैंह सेख का ज्ञान १२

छप्पै ।

ये कलियुग के साधु जगत में सिद्ध कहावैं ।
चौका क्रिया तजैं स्वच्छता कूं बिसरावैं ॥
घर घर मांगै जाय झूठ के टुकड़े खावैं ।
यह फकर की रहस्य सबनके हिये दृढ़ावैं ॥
श्वान कागकी मति लई तापर हंस कहावई ।
रामरूप कहै आलसी भिष्टख चाल चलावई ॥

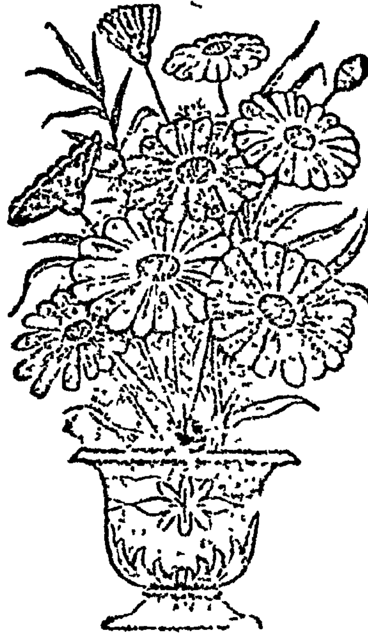
कवित्त ।

अग्नि माहिं जरिये अरु डूब मरिये नीर मध्य, जंगल में जाय सिंह डर जहाँ रहीजिये । बम्बई ढिंग बैठ जे अरु लाव दुख सहार लीजै, भरके जो उदर अधिक विष कूं बी पीजिये ॥ शस्त्र कूं झेल जे मतंग मस्त सौंह जइये, बीछूको डङ्क लगवाय अंग लीजिये । एते दुख सहिये यौं रामरूप कहत ओछे, मूर्ख को संग जो पै घरी हू न कीजिये ॥

कुण्डलिया।

बाजे नर डिम्भी महामूरख मूढ़ गँवार।
साखशब्द कूं काटकर करैं बिष्णुपद त्यार॥
करैं विष्णु पद त्यार तासु कूं अनभय ठानैं।
साधुन के ढिग आय वाद की बात बखानैं॥
ऐसे कपटी स्वारथी कभी न उतरैं पार।
रामरूप यों कहत हैं दोऊ लोकमें ख्वार॥
होय विष्णुपद और का धरैं और का नाम।
रामरूप कहे चोर वे बसैं जमपुरी गाम॥
भक्ति करैं कोइ सूरमा मोह लोभ को त्याग।
काम क्रोध तज हर भजें जिनके ऊंचे भाग॥
जिनके ऊँचे भाग सोई निज नाम उचारैं।
शील क्षमा उर धार जगतजंजाल बिसारैं॥
पीठ फेर भागे नहीं आगे ही कूं पाँव।
बाना नाहिं लजावहीं रामरूप से राव॥
रामरूप के शब्द का लागै तीर दुसार।
रहे न आपा आपदा भाजैं कुबुधि विकार॥
भाजैं कुबुधि विकार वासना दुरमत खोवे।
जनम मरण दुख छूट अमरपद बासा होवे॥
कायरकी तो गम नहीं कोइ सूर सहै ललकार।
रामरूप के शब्द का लागै तीर दुसार॥

इति॥



आगम परीक्षा।

इस अंगमें छाया पुरुष (बिराट पुरुष) के ध्यान करने से भूत भविष्य वर्तमान तीनों काल और हानि लाभ जन्म मृत्यु काल अकाल का सम्यक् प्रकार से ध्यानी पुरुषोंको त्रिकालज्ञता प्राप्त होजाती है और इसही ध्यानके परमप्रभाव से परमात्मा की सायुज्य मुक्ति मिल जाती है बिचारपूर्वक इसका पठन करके धारना करने से सर्वज्ञता शक्ति प्राप्त हो जाती है॥

अष्टपदी छन्द।

अद्भुत पूरण पुरुष गगन मैं देखिया॥
हानि लाभ गुण सबही कहूं जु बसेखिया॥
नील बरण का जो कबहूं दर्शन पावई॥
अल्प अवधि होय मृत्यु हानि कछु आवई॥
श्याम वर्ण वा पुरुष कूं देखैं जो कभी॥
एक महीना बीत मौत आवै तभी॥
हरा वर्ण जो देखै अति बिकराल ही॥
छठै महीनें ताकूं खावै काल ही॥
लाल वर्ण टुक छोटा जो वाकूं लखै॥
दिन पन्द्रह के माहिं काल उस कूं भखै॥
बीच हिये दीखै छेद दुसारही॥
तौ भारी षट मास मैं होय आज़ार ही॥
जो कबहूं दहनी बाँह दृष्टि नाहीं परै॥
तौ जानौं यह बात प्रात निश्चय मरै॥

बाईं बाँह बिना जो कबहूं देखई ॥
तो कछु अपने अंग की हानि बिसेखई ॥
अरु जो दहनी टांग नज़र आवै नहीं ॥
जो वाको होय मित्र काल खावै तहीं ॥
बावैं पांव बिना जु कबहूं दीखै वही ॥
त्रिया की होय हानि बात सत्य है यही ॥
कम्पत छाया जो नर कबहूं ताकई ॥
राजभंग अरु अचरज बहुत दिखातई ॥
अरु जो छाया दृष्टिपरै कबहूं नाहिंहीं ॥
निश्चय ही मर जाय घड़ी एक माहिंहीं ॥
जो अकाश के मध्य दीखै वहु दूर ही ॥
धन की कछु एक हानि होय बुद्ध कूरही ॥
निर्मल अति बिन मैल लखै वा पुरुष कूं ॥
धन सम्पत हो अधिक भगावै दुःख कूं ॥
जो दीर्घ ही रूप जु वाहि बिलोकई ॥
सुन्दर पुत्र होय सोग कूं सोखई ॥
धड़पै दीखै नाहिं कबहूं जो शीशही ॥
तो षट मासकी अवधि जु बिस्वे बीसही ॥
मुयें मुक्ति होयही किये या ध्यान के ॥
ज्यों जल मिल होय एकरूप भगवानके ॥
एते गुण वा पुरुष के खोल दिखाइया ॥
जो जानें सो कह भिन्न भिन्न गाइया ॥
चरणदास गुरुदेव यह भेद बताइया ॥
रामरूप उरधार के शीश नवाईया ॥

शब्दबावनी ।

इस अंग को श्रीस्वामी रामरूपजी महाराज मुक्तिमार्ग ग्रन्थकर्ता के परम प्रिय शिरोमणि प्रतापी शिष्य श्रीस्वामी सिद्धरामजी महाराजने रचनाकिया है जिसमें दोहा चौपाई छप्पै छन्द कुंडलिया कबित्त झूलना सोरठादिक जिन्होंने नामरूप लीला धामकी उपासना और अगुन सगुन स्तुति विनय आदिक पद अनेक राग रागनियों में परम उपयोगी परोपकार निमित्त और भक्तिभाववर्द्धन निमित बावन छन्दों में और पदों में साररूप से ज्ञान वैराग्य प्रेमा भक्तिको सरल सूक्ष्म रीति से कहा है ए शब्दबावनी परम पावनी अतिशय सुहावनी मनभावनी प्रेमरंग बरसावनी भगवत्छबि दरशावनी परमानंद सुखसरसावनी आद्योपान्त पढ़ने के योग्यही है ॥

श्रीमन्निकुंजविहारिणे नमः ।

श्रीमत स्वामी रामरूपजी महाराजके शिष्य श्रीसिद्धरामजीरचित ।

दोहा ।

परम गुरू चरनदासजी, करूं बन्दना तोहिं ॥
चरनकमल की छाहिं मैं, वासा दीजै मोहिं १

आदि पुरुष परमात्मा, चरनदास महाराज ॥
सिद्धराम कहैं मनुष तन, धरा प्रमारथ काज २
चरणदास परमार्थी, सिद्ध रामविख्यात ॥
ज्ञान भक्ति वैराग्य जोग, बांटैं दिन अरु रात ३
चरणदास पूरनब्रह्म, सब घट रहे समाय ॥
भक्ति चलावन सिद्धराम, जगमें प्रगटे आय ४
भाल तिलकअरुपीतपट, सुन्दर महा अनूप ॥
जो धारन करैं सिद्धराम, पड़ै न भव के कूप ५

छप्पै ।

अजर अमर जगदीश जगत पति सब के करता ।
ईश्वर असुर संहार सकल विश्वहू के भरता ॥
भक्तबछल भगवान दीन के दुःख निवारन ।
अभय करन भय हरन दास के कारज सारन ॥
ऐसे सतगुरु रामरूप अति अगाध सबसूं परै ।
सिद्धराम कर जोर के बार बार वन्दन करै ॥

दोहा ।

मानसरोवर के निकट, पोखर कौन प्रवाह ॥
सिद्धराम सतगुरु मिलै, तो फिर गुरु क्या चाह ६
गरज कहा दरयाव कूं, घरौं पिलावन जाय ॥
जोकोइ प्यासा सिद्धराम, आपहि पीवै आय ७
सांचा सतगुरु त्याग के, झूठा गुरु करैं और ॥
सिद्धराम कहैं मूढ़ वै, बसैं नरक की ठौर ८

सांचा सतगुरु करत हैं, झूठे गुरु कूं त्याग ॥
सिद्धराम यों कहत है, सोई नर बड़ भाग ९
साधौं के दरशन किये, उज्ज्वल होवे बुद्धि ॥
हरिके निरमल नाम की, सिद्धराम हो शुद्धि १०
साधौं के दरशन किये, जनम मरन छुटि जाय ॥
सिद्धराम गर्भवास में, बहुर बसे नहिं आय ११
साधौं के दरशन किये, जम की होय न त्रास ॥
सिद्धराम करि प्रीति सूं, मन में गह विश्वास १२
साधौं के दरशन किये, होय पाप की हानि ॥
सिद्धराम करि प्रीति सूं, मन में निश्चय ठानि १३
ब्राह्मण कुल में जनम हो, छहौं करम ता माहिं ॥
सिद्धराम वह श्वपच तुल, जो हरि भक्ता नाहिं १४
जन्म होय चंडाल घर, नहीं षट कर्म पिछान ॥
जो हरि भक्ता सिद्धराम, अधिक विरंचिसूं जान १५
दादू धुनां आमेर का, काशी जुल्हा कबीर ॥
कमीण जाति ऊंचे भये, सिद्धराम भजि रघुबीर १६
जा घर सेवन साध की, नहीं भाव परतीत ॥
सो घर बम्बई सांप की, सिद्धराम सै भीत १७
जा घर सेव न साध की, नहिं आदर बिसराम ॥
सो घर मढ़ी मसांन की, सिद्धराम किस काम १८
सतसंगत में आय के, कहैं अकस की बात ॥
सिद्धराम यों कहत हैं, सो नर दोज़क जात १९

सत संगत में आय के, तजैं राग अरु दोप ॥
सिद्धराम यों कहत हैं, सो नर पावत मोप २०
शुभ करमन कूं त्याग के, खोटे करम कमाहिं ॥
बहिस्तछांड़िकहैंसिद्धराम, चपरे दोजक जाहिं २१
मात पिता सुत नारि कुल, सब जोनों के माहिं ॥
मनुषजनमबिनसिद्धराम, हरि सुमरन हो नाहिं २२
काम क्रोध मोह लोभ गर्व, पांचों बड़े परेत ॥
सिद्धराम आठों पहर, तन मन कूं दुख देत२३
काम प्रेत परवल महा, वस में नाहीं होय ॥
गुरु किरपा सूं सिद्धराम, जीतै बिरला कोय २४
क्रोध प्रेत कूं वस करैं, एक आध कोइ सूर ॥
बड़े बड़े जोधा सिद्धराम, मारि किये सब चूर २५
मोह प्रेत की कैद में, पड़ा सर्व संसार ॥
सिद्धराम हरि जन बचे, सतगुरु वचन विचार२६
लोभ प्रेत के जाल में, हिरन गर्भ ब्रह्मण्ड ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश लौं, सिद्धराम भरैं दंड २७
गर्व प्रेत सब सूं बड़ो, बदै न काहू और ॥
धन जोवन सुत नारिका, सिद्धराम करि जोर २८
पांचौं प्रेतों संग रहैं, इन्द्री पांच चुड़ेल ॥
गुरु गोविंद सूं सिद्धराम, होन न देवें मेल २९
जो कबहूं सतसंग में, छिन इक बैठै जाय ॥
बौरा करिकै सिद्धराम, लेजा तुरत उठाय ३०

साहिव साहूकार ने, भेजे जग के माहिं॥
भक्ति वणज कूं सिद्धराम, और काज कूं नाहिं २१
आये थे ह्यां लाभ कूं, चाले मूल गँवाय॥
सिद्धराम हरि साह सूं, कहा कहैंगे जाय २२
हरिहिरा वणजा नहिं, पूंजी करी ख्वार॥
मुशकिल होगी सिद्धराम, लेखा देती वार २३
काया कोठी साह की, जामें वस्तु अपार॥
सौदा कीजै सिद्धराम, वीती जाय वहार २४
सतगुरु कूं तनमन दिया, लीन्हा राम बिसाहि॥
जमका भै नहीं सिद्धराम, कभी न टोटा खाहि २५
साहिव शरनि विसारिके, आन शरनि में जाहिं॥
सिद्धराम वे मूढ़ नर, मिश्रीतजखलखाहिं २६
आन देव सूं वँध रहे, हरि गुरु सों गये छूट॥
भूत भये सो सिद्धराम, सव जग लीना लूट २७
आन देव पूजत फिरें, सिरजनहार बिसार॥
सिद्धराम वे जाहिंगे, बांधे जम के द्वार २८
आन उपासी मूढ़ नर, करै न हरि सूं हेत॥
सिद्धराम वे जाहिंगे, दोज़क कुटुँव समेत २९

कुंडलिया।

काल किसान दोउ एक से पालैं अपना जान।
काल देह अंत खायगा लुणै ज्यों खेत किसान॥
लुणै ज्यों खेत किसान निश्चय कीजे यह भाई।

तो काहे कूं डरै खाय जब काल ही खाई ॥
भोजन बस्तर का फिकर तज भजि सिरजनहार ।
प्रालब्ध में सिद्धराम जो कुछ सदा तयार ॥

कवित्त ।

ज्ञान ध्यान समझत नाहिं उरझ रहे विषै माहिं कहैं हम हैं गुसांई आदि भेष म्हारो है । मांस मदिरा पान करैं शस्तर बांध मारैं मरैं पाप सूं न नैक डरैं नेम धर्म्म हारो है ॥ जटा और नख बढ़ावैं अंग में भभूत लावैं मालकूं दिसावर जावैं ल्याय बेचे प्यारो है । झूंठ बोलें आठों जाम द्रव्यही सूं राखैं काम सांचीकहै सिद्धराम बृथा भेषधारो है ॥

अथ शब्द लिख्यते ।

आरती ॥

आरती सिरजनहार तुम्हारी । करैं भक्त जो हैं अधिकारी ॥
ब्रह्मा रुद्र गणेश इंद्रादिक । ध्रू प्रहलाद शेशसनकादिक ॥
नारद व्यास बसिष्ठ शुकदेवा । मोरध्वज हरिचंद मैत्रेवा ॥
हनूमान अम्बरीप बिभीपण । अजामील बालमीकबिचक्षण ॥
बिप्र सुदामा जनक बिदेही । गोप गोपिका परमसनेही ॥
रामानंद रैदास कबीरा । धना त्रिलोचन काल्हू कीरा ॥
नामदेव पीपा जैदेवा । सैन सदन कर्म करि सेवा ॥
रांका बांका मीराबाई । सेऊ सम्मन प्रीति लगाई ॥
चरनदास महाराज बिख्याता । तुलसीनरसी हरिरँगराता ॥

कहूं कहांलौं नांव न आवैं। अनगिन भक्त गिने नहिंजावैं॥
रामरूप सतगुरु निजधामी। जैजै सिद्धराम के स्वामी॥

आरती पीछे की धुन।

जै जै जै राधे गोविंद जै जै जै बृन्दावनचंद ॥
जै जै जै श्रीजनक नरेश जीवनमुक्ति दुख सुख नहीं लेस॥
जै जै जै जै नै वेदव्यास जै जै जै शुक मुनि चरनदास॥
जै जै जै रामरूप दयाल सिद्धराम कूं कियो निहाल॥

राग कड़खा।

साधो राम ही रूपसूं नेह मेरा।
राम ही रूप को ध्यान निशि दिन हिये
राम ही रूप का रहूं चेरा॥
आदि अव गति सो तो ब्रह्म रामरूप ही
पुरुप प्रकृति रामरूप होई।
अहं औ पंच तत्त्व गुन तीन
मन इन्द्री प्रेरक रामरूप जोई॥
विरंचि हो उतपतै रुद्र हो संहरै
विष्णु होय विश्व कूं भरै पोपै।
होय दिनकर चतुरमास वरपा करै
फेर अष्टमास जल कूं जु सोपै॥
पाप के भार सों मही व्याकुल भई
रामही रूप की शरन धाई।

अहो महाराज अब कृपा करि दुख हरो
राम ही रूप जब हुये सहाई ॥
राम ही रूप धर्मराय चित्रगुप्त हो
पाप अरु पुण्य का करै लेखा ।
राम ही रूप अपने पराक्रम सूं
रखी ठहराय पृथ्वी व शेषा ॥
दशौं दिश दशौं दिगपाल रामरूप ही
कोटि तेतीस रामरूप जानौ ।
जलबिषैं थलबिषैं गिरिबिषैं तरुबिषैं
रामही रूप विराट मानौ ॥
गुप्त अरु प्रगट सब राम ही रूप है
डरे अरु परे सब ठौर माहीं ।
राम ही रूप को भेद दुरलभ महा
लखै कोई गुरुमुखी बिमुख नाहीं ॥
श्रीचरनदास के दास हो औतरे
भक्ति की करी जग में बड़ाई ।
सोई रामरूप सिद्धराम के उरबसो
सदा आनंद दुबधा गँवाई ॥

राग भैरों ।

सुमरण पारब्रह्मकाकीजैं । मनकी दुबधा सब तज दीजे ॥
अगम अगोचर दिष्टि न आवै । अपरमपार पार नहिंपावै ॥
सदा सनातन अलख अरूपा । सत्तचिदानंद परम सरूपा ॥

निराकार निर्गुन अबिनासी। थावर जंगम में परकासी ॥
अषैअमूरतअबिगतिस्वामी।अमरअखंडअचलनिजधामी
ज्योंकाज्यों कुछहुवा न होई।आपही आप और नहीं कोई॥
रामरूप सब ठौर विराजैं। सिद्धराम निर्भै हो गाजैं॥

राग सोरठ।

म्हारे सतगुरु रामरस प्यायाहो।
पीवत ही भया अति मतवारा आनँद माहिं समायाहो॥
सोई पिया ब्रह्मा शिव नारद ध्रू प्रहलाद अघाया हो ॥
हनूमान अम्बरीप बिभीषण पीपा चित्त लगाया हो ॥
शेश सुदामा धना तिरलोचन नामा छकि छकि पाया हो॥
सैंना सदना माधो तुलसी सूरदास हुलसाया हो ॥
मुरार मलूक रैदास कबीरा नरसी जैदेव ध्याया हो ॥
कालू कूबा रांका बांका सेऊ सम्मन चाख्या हो ॥
करमैती करमा अरु मीरा स्यौरी सरस सुहाया हो ॥
अमर हुवा जिन हितकर पीया जन्म मरन बिसराया हो॥
चरनदास महाराज पियासो श्रीशुकदेव छकाया हो ॥
सिद्धराम सोइ निशि दिन पीवत रामरूप दरशाया हो ॥

राग मंगल।

आन धरम को छांड़ि भजो करतारही।
ज्यों पतिबर्त्ता बधू भजै भरतारही॥

अपने पति कूं त्याग और चित लावई।
सो बिबचारन नारि नहीं सुख पावई॥
पुरुषकरै नहीं प्रीति जगत औगुन धरै।
यों हरिकूं बिसराय आन भजि दुख भरै॥
रामभक्ति करि पतित तिरे अनगिन कई।
आन उपासी तिरा क्या कहो किन सही॥
बोवै पेड़ बंबूल आंब खायो चहै।
सरिता कूं कहै तिरन पूंछ गांड़र गहै॥
सिंह शरनि कूं छांड़ि शरनि जा स्याल की।
खरपै हो असवार मूढ़ तज पाल की॥
ऐसे नर अज्ञान नरक क्यों ना परैं।
सांचा पीव बिसार आस झूठी धरैं॥
सिद्धराम तजि आन सुमर इक रामहीं।
रामरूप कहैं बेग चढ़ो निज धामहीं॥
सतगुरु की ले सीख छांड़ि अभिमान हीं।
सतसंगत करि बास होय कल्यानहीं॥
आन देव सब त्याग सुमर भगवानहीं।
ज्यों चातक सर त्याग बूंद करैं पानहीं॥
सीप समंदर माहिं सदा निशि दिन रहै।
स्वातिबूंद सूं प्रीति सिंधुजल परिहरै॥
सिंह चरत नहिं घास जो भूख सतावई।
बिन आमिष नहिं खाय प्रान क्यों न जावई॥

ब्रह्मा शिव सों नाहिं वड़ा कोइ देव है।
हिरनाकुश रावन करी तिन सेव है॥
कछू हुवो नहिं काज भये बहु ख्वार ही।
जाचिक सूं नहिं भरत जाचिक भंडारही॥
बिभीषण अरु प्रहलादके राम अधारही।
श्रीनरसिंह रघुनाथ किये भव पारही॥
सतगुरु रामहि रूप यों मोहिं वताइया।
सिद्धराम भजि राम भजि राम परम पद पाइया॥

राग बसन्त।

सखी अब के आयो नीको फाग।
खेल पिया सूं जागे भाग॥
गुरु दूती की शरण आव।
तन मन धन जाकूं चढ़ाव॥
जात बरन का त्याग मान।
दुविधा दुरमत सकल भान॥
कहैं सतगुरु सों करि सिंगार।
ज्यों रीझ मिलै बालिम सँवार॥
बांह पकड़े अपनावै तोय।
सदा सुहागनि जब तू होय॥
शिव नारद अरु ध्रू प्रहलाद।
कबीर नाम देव बहुत साध॥

अलख निरंजन पायो कंथ।
गिनूं कहां लौं नाहीं अंत॥
बिरह बिथा का गया सोग।
हरि प्रीतम सैं हुवा जोग॥
आठ पहर निशि दिन बिलास।
जम किंकर की मिटी त्रास॥
रामरूप स्वामीदयाल।
जिन जनम मरन दुख दिये टाल॥
सिद्धराम सखी करी।
चरनकमल के राखी पास॥

होरी राग धनाश्री।

होरी खेलिये सखी सत संगत में आय।
नरतन फागुन बहुर न पावै सो यह वीत्यो जाय।
मोहनींद सूं जागि सुहागनि अपनों पीव रिझाय॥
जो सोवन में खोवै बौरी फिर पाछे पछिताय।
क्षमा अबीर संतोष अरगजा नौधा रँग बरसाय॥
चोवा चाह राखि बालम की और सब चाह गँवाय।
गोरी होरी खेल सदा यह धन धन धन्न कहाय॥
रामरूप सिधराम सखी कूं जब लेवैं अपनाय ११

होरी।

हरि प्रीतम संग खेलिये रसरंग भरी होरी हो।
पीव सूं मान न कीजिये सुनि गाफिल भोरी हो॥

जाति वरन कुल गोत में क्यों पगरही बौरीहो।
धन जोवन दिन चार को आयुरदा थोरी हो॥
छिमा शील संतोष कूं धारन करि गोरी हो।
सर्म सकुच तजि जगत की आ बालम ओरी हो॥
झूठ कपट छल बलम कर सबकूं दै छोरी हो।
बांह पकड़ि ढिग राखिहैं फिर नाहिं बिछोरीहो॥
रामरूप महाराज सूं रहिये कर जोरी हो।
सिद्धराम धनि धनि कहैं ह्यां ह्यां दोऊ ठौरी हो १२

राग झँझोटी।

मैं तो तेरे नाम को बिसवासी।
अर्थ धर्म काम मोक्ष पदारथ इनको नाहिं उपासी॥
आसन साधि समाधि न लाई वेद पढ़ो नहिं कासी।
वानप्रस्थ अरु ग्रस्ती नाहिं नहिं ब्रह्मचर्य सन्यासी॥
तीरथ वर्त दान नहिं कीनां नहीं तपावनवासी।
दूधाधारी मौनी नाहीं नाहीं जती उदासी॥
और धर्म सब दुखके दाता नाम तेरा सुखरासी।
सिद्धराम कूं यही दान द्यो रामरूप अबिनासी १३

राग परज।

सुने तुम पतित उधारन हो।
कहो ढील कैसे करी अब हमरे कारन हो॥
कै तो ठौर वैकुंठ में होवैगी नाहीं हो।
कै वैसी सामर्थ्य नहीं हरि तुम्हरे तांहीं हो॥

चोर जार झूठो महा नखसिख औगुनगारा हो ।
अरु पापी हलके तिरे मैं पापी भारा हो ॥
अधम उधारन नाम है तो मोहिं उधारो हो ।
नातर अपने विरद कूं तुम अबही हारो हो ॥
भवसागर गहरो वहै बूड़त ता माहिं हो ।
रामरूप सिद्धराम की गहि लीजे बाहीं हो ॥१४॥

राग परज ।

गहो हरि बांह हमारी हो ।
बूड़त हूं भवसिंधु में किय खोट अपारी हो ॥
मैं पापी औगुन भरा विषय भोग अहारी हो ।
तुम तो बकसनहार हो यह साखि तुम्हारी हो ॥
पतित उधारन कहत हैं सब ही नर नारी हो ।
अपने बिरध सँभारिये दीनानाथ मुरारी हो ॥
बालमीक अजामीलही अरु गणका तारीहो ।
स्यौरी सदना सैन से बहु कीने पारी हो ॥
सिद्धराम जन करत है विनती बारम्बारी हो ।
रामरूप महाराजजी मेरी करो सँभारी हो ॥ १५॥

राग काफी ।

मेरा साहिब सुघड़ सुजांन निमानि यों दासांनहो ।
मैं बलहीन दीन सब विधसों द्वारपड़ी तैंड़े आन ॥
असी भरोसा सदा तुसाड़ा सुन गल साड़ी कान ।
सिद्धराम प्रभु शरनि तुम्हारी अपनी करि मैं नूं जानि१६

राग काफ़ी।

मेरे गुनहही माफ करि हरि प्यारे।
मैं तो खानेजाद तुम्हारी यह सुनिये अर्ज हमारी॥
मुझे राखो चरनौं लारे जब याद तुम्हारी आवै।
मोहिं और न कछू सुहावै द्यो दर्शन नंददुलारे।
हिये प्रेम पीठ अति भारी तन मनकी सुरति बिसारी॥
दुख जाय न सांझ सँवारे रामरूप मिहर अब कीजे।
सिद्धराम कूं शरनैं लीजे तुम पतित उधारनहारे॥ १७॥

राग काफ़ी।

प्रभु तुम दिल की जाननहार।
तुम सैं छिपा कछू नहिं प्यारे गुन औगुन जु हमार॥
कामी कुटिल किरोधी लोभी नख सिख भरे बिकार।
अंतरजामी सब तुम जानो आदिपुरुष करतार॥
करम करूं निशि दिन डूबन के कैसै उतरूं पार।
सिद्धराम कूं जान आपनों ज्यों जानौं ज्यों तार॥ १८॥

राग भैरूं।

साध पधारे जागे भाग करि दरशन मन दुबधा त्याग।
हाथ जोर परकरमा दीजै तन मन धन न्योछावर कीजे॥
चोवा चंदन अगर मिलाव मस्तक ऊपर तिलक चढ़ाव।
पान फूल फल जो कुछ होय हरख मान पूजा करि सोय॥
पद प्रछाल धन भाग विचार फिर अचवनकर निश्चयधार।

करि दंडौत परम सुख पाय तीन ताप का दुख मिटजाय॥
बार बार मुख अस्तुति भाख भक्त जनों की देदे साख ।
जा घर भोजन पावैं साध मंगल करैं हरैं सब व्याध ॥
हरिगुन संत एक करि जान पाला ओला जल पहचान ।
परमारथ कारण औतार लोक प्रलोक सुधारनहार ॥
अधम उधारन दीनदयाल शरनागति जीवन प्रतिपाल ।
रामरूप गुरुचरनसरोज आठ पहर निशिदिन जहां मौज ।
मुक्तिकरन काटन जमफंद सिद्धराम कूं सदा अनंद ॥ १९ ॥

इति श्रीभक्तभाव का अंग संपूर्ण ॥

राग धनाश्री ।

तुम सुनियो हरि के साध शब्द इक प्रेम का ।
विरहन प्रीतम मिलन कूं मनमाहिं उमाहै हो ॥
कब दर्शन दैं श्याम सदा चित चाहै हो ।
प्रेम किया गोपाल सूं बृजनारिन विख्यात ॥
गोपाल प्रेम बसि होयकै जी खेले उनके साथ ।
भूली जग व्यौहार सब अब कछू न सुहावै हो ॥
भूख प्यास गई खोय नींद नाहिं आवै हो ।
गोपीचंद अरु भरथरी भये प्रेम में चूर ॥
राजसिंहासन त्यागकैजी शिर में डारी धूर ।
तूही तूही रटना लगी सुन नंददुलारे हो ॥

तुम बिन जीवन नाहिं प्रानपतिप्यारे हो।
अधम शाह मुलतान का प्रेम खड्ग की धार॥
अठार लाख ताजीं तजेजी सोलह सहस तजी नार।
करो मेहर तजि कहर कूं मैं शरनि तुम्हारी हो॥
दीजै सब करि मांफ जो चूक हमारी हो।
किया प्रेम मनसूरने जब पाया दीदार॥
अनलहक छाड़ा नहीं जी रहे बहुत झख मार।
विरहन प्रीतम सूं कहै यह बिनती मेरी हो॥
मुझसी औगुन गारि कूं राखो प्रभू चेरी हो।
प्रेम माहिं मीरापगी तजी कुटंब की लाज॥
सिद्धराम रामरूप सूं जी प्रेम लगे सुखसाज॥ २०॥

राग काफ़ी।

अनीमन मोहानी वो मनमोहन बनवारी।
मंद मंद मुसकाय सांवरे प्रेमफांस गल डारी॥
बिन दरशन सांनू चैंन नहीं छिन बांकी चितवन प्यारी।
घरसूं आंगन आंगन कूं घर तड़फ तड़फ जिंदजारी॥
चंदकी चाह चकोर कूं जैसे जल बिन मीन दुखारी।
स्वाति बूंद कूं रटत पपीहा सो गति भई हमारी॥
साड़े परि जादू कुछ कीना नंदनंदन गिरिधारी।
बौरी हुई हुणिख वरन तनकी गुरुजन लाज निवारी॥
बिरहआगिन निशिदिन रहे लागी कब आमिलै बिहारी।
रामरूप मोहन की छबिपर सिद्धराम बलिहारी॥ २१॥

राग बिहाग।

तुम कुं न पीड़ हमारी लालजी तुम कुं न पीड़ हमारी।
स्वारथ के साथी मनमोहन निपट कपट की यारी॥
फिरैं दिवानी खबर न तनकी लोकलाज सब डारी।
तुम कुं दोष कहा कहि दीजे मरै देवकी मारी॥
झूठी पाती लिख लिख भेजो कुबजा लागै प्यारी।
काटे ऊपर नोन लगावो ऐसी रीझ तुम्हारी॥
किये बिलास रास में प्यारे सो सब दिये बिसारी।
रामरूप घनश्याम लाल पै सिद्धराम बलिहारी॥ २२॥

राग काफ़ी।

मेरो मन मोहि लियोरी आली कृष्ण कुँवर बलवीर॥
बंसी बजाय कियो कछु टौनां होगई निपट अधीर॥
डारि ठगैरी करि दई बौरी व्याकुल भयो सरीर॥
बिन मनमोहन चैन नहीं अब ज्यों मछली बिन नीर॥
नंद नंदन कीनी बस माहिं मारि प्रेमको तीर॥
आठौं पहर सदा निशिबासर मिटैं न उरकी पीर॥
है कोई सखी श्याम की प्यारी मोहिं बँधावैं धीर॥
सिद्धराम कूं बेग मिलावो रामरूप हरि हीर॥ २३॥

राग काफ़ी।

हेली नैना रहे लुभाय हेली श्याम सजन के दरश कूं॥
खाय न पीवै उनमनीरी अरी हेली ग्रहबन कछु न सुहाय॥

विरह भुवंगम ने डसीरी अरीहेली व्यापी लहर सरीर ॥
गारुड़ पढ़ हारे गारडू जाय न मनकी पीर ॥
मन मोहन मनमोहि लियोरी अरीहेली मेरोवसनहीं कोय॥
प्रेम फंद में आयरी भाग लिखा सोई होय ॥
सदा लगन लागी रहैं अरी हेली आठ पहर निस भोर ॥
सिद्धराम कूं दरस द्यो प्रीतम नंद किशोर ॥ २४ ॥

राग विहाग।

मैं विरहन भई वावरी प्रीतम विन सजनी ॥
मग जोवत सब द्यौस वितायो वीत चली अब रजनी ॥
लोक लाज कुल शंका नाहीं तिण ज्यों तोड़ि वगाई ॥
हिरदै करक नींद नहीं आवै कब मिल हैं सुखदाई ॥
ना जानौं वालिम मन क्या है मोहिं न परत पिछानी ॥
हमरी अवस्था होरही ऐसी ज्यों मछली बिन पानी ॥
खान पान सब फीके लागैं मन व्याकुल अति भारी ॥
डिग मग पैर खबर नहीं तनकी सुधि बुधि सबै बिसारी ॥
दरसन द्यो रामरूप पियारे तुम विछुरन दुखदाई ॥
सिद्धराम दरसन का प्यासा और न कछू सुहाई ॥ २५ ॥

राग विहाग।

अब सुधि लीनीं वालिमा आली अब सुधि लीनीं ॥
विरह छुटाई गलै लगाई निज करि अपनी कीनीं ॥
जनम जनम का विछड़ा प्रीतम भाग वड़े सूं पाया ॥

देखत ही दुख मिटगये सारे रोम रोम सुख छाया ॥
आठ पहर निस दिन रहैं सँगही दिलवर प्रान पियारा ॥
अरस परस करूं दर्स सदाही इकपल होय न न्यारा ॥
निर्गुन सेज महासुखदाई पिया संग रली मनाऊं ॥
गया बियोग संजोग भया अब बार बार बलिजाऊं ॥
अजर अमर है कंथ हमारा रामरूप सुखदाई ॥
सिद्धराम सखी सदा सुहागनि बालमके मनभाई ॥ २६ ॥

राग सोरठ।

थाकी छवि नीकी लागै छैहो ब्रजराज ॥
रूप रावरो निरख हरख हो धनि धनि धनि दिन आज ॥
सदा बसो निस दिन अब हिरदे रामरूप महाराज ॥
सिद्धराम यह प्रीति नई नित दुख मेटन सुखसाज ॥ २७ ॥

इति प्रेमप्रतीत का अंग संपूर्ण ॥

राग बिलावल।

हरि सुमिरन करि चेत रे जिन करै अबेरा।
गफलत में नहीं सोइये जागन की वेरा ॥
क्यों भूला संसार में करि मेरा मेरा।
जैसे सुपना रैन का यों जगत बसेरा ॥
जैसे मोती ओस के बालू का डेरा।
मृगतृष्णा को नीर ज्यों ऐसे तन तेरा ॥
कुटंब दर्ब मंदर घने बहु चेरी चेरा।

ए संगी दिन चार के झूठा उरझेरा ॥
साध संगति हरिभक्ति करि तजि जगत बखेरा।
रामरूप सिद्धराम कूं कहैं समझ सँवेरा ॥ २८ ॥

राग बिलावल।

चेत वेग हरि नाम ले जाय उमर बिहाई।
वार वार नर देह ना वड़ भागन पाई ॥
लेखा मांगैं जम वली दम दम का भाई।
मनुष जनम कूं पाय के क्या करी कमाई ॥
जव कुछ ज्वाव न आय है किये पाप अघाई।
ताते अवही समझ करि देखोंटगँवाई ॥
अपना कीया आपही भुगतै हां जाई।
कुटंब मित्र सव ह्यां रहें कोई सँग न चलाई ॥
रामरूप सतगुरु कहें हित सूं समझाई।
सिद्धराम भजि रामकूं तजि जग दुखदाई ॥ २९ ॥

राग वरुवा।

हरि सुमिरन करि चेत सितावी आयु बिहाई जावैरे।
वड़े भाग मनखा तन पायो सतगुरु कह समझावै रे ॥
मेरा मेरा मानि पिरानी क्यों जग में उरझावै रे।
ना कोई तेरा तू न किसीका नाहक जनम गँवावैरे ॥
मात पिता दारा सुत नाती जिनसूं प्रीत लगावैरे।
अंत काल सव रहजां ह्यांई कोई न संग चलावैरे ॥

पकड़ि बांध जमले जायँ तुझकों जब कहु कौन छुटावैरे।
धर्मराय तब लेखा करिकै कर्म किये भुगतावैरे॥
साध संगाति सतगुरु की सेवा रामनाम लौ लावैरे।
सिद्धराम रामरूप कहतहैं भौजल वहुर न आवैरे॥२०॥

राग जंगला ।

सिरजनहार विसार दिवाना क्यों जगमाहिं भुलानारे॥
आखिर तुझकों चलना ह्यांसूं मतकरि खुदी गुमानारे॥
हिरनाकुस बरले ब्रह्मासूं बहु अभिमान वढ़ायारे॥
मेरा नाम जपो कहै सब सूं आखिर उदर फड़ायारे॥
रावन मौति करी बस अपने कूये में लटकाईरे॥
बीस भुजा दससीस गये कहां जाकी खबर न पाईरे॥
पीर पैगम्बर ऋषि मुनि देवत सब ही कालगिरासारे॥
जोगी जती तपी संन्यासी अंत मरन का सांसारे॥
दंतवक्र सिसपाल कंस से मौति गर्द किये सारारे॥
सिद्धराम रामरूप कहत हैं अविचल राम पियारारे॥२१॥

राग केदारा व सोरठ ।

रे नर सुमिर सिरजनहार ।

फेर औसर नाहिं ऐसो मानुषा अवतार॥
काल बैरी फिरैं सिरपरि लेत कबहूं मार।
करत क्यों न बिचार मन में होत तन जल छार॥
मात पिता सुत नारि भ्राता करैं जिनसूं प्यार।

अंत समै सब रहैं ह्यांई कोई न जावै लार॥
पकड़ जम ले जाहिं तुझकूं डारैं नरक मँझार।
चेत अजहूं समझ मूरख कहा मान हमार॥
रामरूप चरनदास के तू बचन हिरदे धार।
सिद्धराम हरिनाम जपकै उतर भौजल पार॥३२॥

राग केदारा व सोरठ।

रे नर सुमिर ले गोपाल।
उमर बीती जात पलपल आवत छिन छिन काल॥
कुटंब सब ही स्वारथ साथी मात पिता सुतबाल।
मुये संगी नाहिं तेरे करत क्यों न सँभाल॥
चौरासी में भरमत भरमत पायो नरतन लाल।
बिना सतगुरु परप नाहीं हो रहा कंगाल॥
साधु संगति करि पियारे छांड़ि जग जंजाल।
कागगति कूं मेट हरिजन करत बेग मराल॥
कहैं बारम्बार टेरैं रामरूप दयाल।
सिद्धराम हरि नाम सुमिरै सोई होय निहाल॥३३॥

राग सोरठ।

नरहरि बिन कोई न तुम्हारारे॥
कुटुम्ब मित्र स्वारथ के साथी मात पिता सुत दारारे॥
मेरा मेरा करि मत भूलै झूठा सकल पसारारे॥
थिर नहीं रहा नर रहसी कोई जिन जग में बपुधारारे॥

सीसा कांच कागज की छागल ऐसैं तन व्योहारारे ॥
बिगसजाय छिन में थिर नाहीं जल बलके हो छारारे ॥
प्राण पुरुस जब करत पयाना कोई न जावै लारारे ॥
अपने सुख कूं रोवत सब ही वाकी सुध न सँभारारे ॥
छांड़ि जगत कूं हरि सुमिरन कर मत ना करैं अवारारे ॥
सिद्धराम रामरूप कहत हैं ज्यों हो भौजल पारारे ॥२४॥

राग सोरठ।

नर गोविंद नाम न जानारे ॥
मोह लोभ में निस दिन पागो दारा सुत हित ठानारे ॥
बिसै भोग कूं अधिक लुभायो सतसंगति अलसानारे ॥
बड़े भाग सूं यह तन पायो जानी न सार अयानारे ॥
दियो गँवाय अफल तैं बौरे जम के हाथ बिकानारे ॥
नरक भुगति चौरासी भरमैं लहै न ठौर ठिकानारे ॥
बिन हरिभक्ति सहै दुख अनगिन कालकरै घमसानारे ॥
जनम मरन की कटैं न डोरी भटकत फिरैं दिवानारे ॥
धूंवे के बादल ज्यों देही तापर अति इतरानारे ॥
जगत जाल मैं फँसो चावसूं नेक न राम पिछानारे ॥
साध संगति सतगुरु के सरनैं निहचै करि हरि ध्यानारे ॥
सिद्धराम रामरूप कहत हैं पावैं पद निर्वानारे ॥ २५ ॥

राग भंडार।

सुमिर सिरजनहार कूं नर छांड़ि जग सूं नेह ॥

गफलत तज हुसियार हो मन बावरे२ बहुर न मनखा देह॥
त्याग खुदी गुमान दिल सूं अहं अरु अभिमान॥
साहिब की करि बंदगी मन बावरे बावरे॥
मिटैआवनजानगर्भबासमें किये कौल प्रानीसोगया तू भूल
आया था ह्यां लाभ कूं मन बावरे क्यों गँवावे मूल॥
करो हरदम याद हरि की उमर बीती जाय॥
छिन पलक की खबर नाम न बावरे काल मारे आय॥
रामरूप मुरसद यों कहैं अब समझ मूढ़ अजान॥
सिद्धराम चित चेत कै मनबावरे बावरेसीखसतगुरुमान३६

राग परज।

प्रानी क्यों भक्ति बिसारी हो।

दो दिन का सुख बावरे दौलत सुत नारी हो॥
गर्भ बिषै दुख पायकै किये कौल करारी हो।
प्रभुजी मोहिं उवारिये रहूं सरनि तुम्हारी हो॥
ह्यां आके सब भूलिया भया बिसै अहारी हो।
तेरी क्या गति होयगी करैं खोट अयारी हो॥
चित्रगुप्त जो लिखत हैं पाप पुन्य सँभारी हो।
धर्मराय जब न्याव करि देवै दुख भारी हो॥
छप्पनत्रास जुदे जुदे भुगतत हो धारी हो।
फिर चौरासी में पड़ैं कहा ऐसी बारी हो॥
भलो दांव अब के बनो मत चूक अनारी हो।
सिद्धराम सूं कहत हैं रामरूप पुकारीहो॥ ३७॥

राग परज।

मनुस तन बहुर न पावै हो।
हरि सुमरन की बार है सतगुरु समझावै हो॥
मेरा मेरा मान क्यों जग में उरझावै हो।
उमर बिहाई जात है पाछे पछतावै हो॥
धन जोबन थिर ना रहै काहे गर्वावै हो।
जैसे रंग पतंग का नाहीं ठहरावै हो॥
मात पिता सुतनारि सूं बहुप्रीति बढ़ावै हो।
हरिसा हितू बिसार कै विषै और लुभावै हो॥
रबिसुतका डर ना करै बद अमल कमावै हो।
पकड़ बांध जम लेचलैं जब कौन छुटावै हो॥
रामनाम भजि आन तजि रामरूप बतावै हो।
सिद्धराम हिरदे धरो आवागवन मिटावै हो॥ ३८॥

राग सोरठ।

मुसाफर कर चलने की त्यारी।
चेत सिताबी ढील नहीं कीजै हरिजन कहत पुकारी॥
ह्यां तेरा कोई नहीं प्यारे मात पिता सुत नारी॥
पचिपचि मरै जिन्होंके कारन मूरख मुगध अनारी॥
बिषमी गैला निपट दुहेला हो हुसियार सँवारी॥
चलना तुझकूं दूर दिवाने पल पल होत अवारी॥
पांच मवासी निस दिन लूटैं महा अपर बल भारी॥

गठी अपनी चौकस करिले जाय न वस्तु तुम्हारी ॥
अमर नगर में चल बस भाई सतगुरु सँग रखवारी ॥
सिद्धराम रामरूप कहत हैं बहुर न ऐसी बारी ॥ ३९ ॥

राग ख्याल ।

यह संसार सराय यामें नहीं भुलना है ।
रैन बसेरा है मन मेरा भोर भये उठि चलना है ॥
मात पिता दारा सुत नाती माल मुलक घर सुपना है ॥
सुखमें सबकोइ करत खुसांमद दुख में ना कोई अपना है ॥
लख चौरासी रस्ता माहीं उपजि उपजि फिर खपना है ॥
राव रंक कहैं सभी मुसाफर कहिं रोवना कहिं हँसना है ॥
मैं मेरी तजि मान बड़ाई झूंठी जगकी रचना है ॥
रामरूप कही सिद्धराम सूं सांचा हरिहरि जपनाहै ॥ ४० ॥

राग सोरठ ।

सौदागर सौदा करले भाई ।
भूला फिरे जगत में भोंदू जनम अकारथ जाई ॥
पूरन भाग जगा कोई तेरा मनुषा देही पाई ।
हरि सुमिरनकरि चेतासितावी क्यों तैं ढील लगाई ॥
भक्ति वणिज कूं भेजा हरिने जाकी याद न आई ।
हासिल कछू किया नहीं गाफिल उलटी जमा गँवाई ॥
लेखा देतैं ज्वाब न आवै खोटी करी कमाई ।
जमज़ालिम जब मारन लागैं हरिबिन कौन सहाई ॥
रामरूप गुरु कहत पुकारैं बारम्बार सुनाई ।
सिद्धराम भजि राम पिआरा जातहै आयु बिहाई ॥ ४१ ॥

राग झँझौटी ।

काजी हककूं पहचान ।

मुरग़ कबूतर तीतर मोरा । करै जिभै दिखलावै ज़ोरा ॥
इन्हौं गरीबौं कहु क्या चोरा । साहिब आगे न्याव निदान
बकरा मृग मारि करै रोज़ा । सिरपर धरा पाप का वोझा
पढ़ै निवाज काटि के मौजा । उठबैठ क्यों होय हैरान ॥
मोलबीहाफिज़ भया ख़लीफ़ा । कहापैगम्बरसो नहीं सीखा
क्षुधावंत कूं दे नहीं भीखा । करता फिरै खुदी अभिमान॥
दूध दही घृत अमृत जाका । गोवर मूत पवित्तर ताका ॥
बछा भार उठावै वाका । जाकूं हिंदू तुरक समान ॥
गुणदाता सबको सुखदाई । काहूसैं नहीं करैं बुराई ॥
जाका क्यों हूजै दुखदाई । पूज नीक दुनियां दरम्यान ॥
कहैं हलाल किया जो भाई । है हिजाव जाका अधिकाई॥
बेद कुरान कहैं सब गाई । यह मजहब नहीं मुसलमान॥
मक्कै जा हाजी कहलाया । दिलका धोखा नाहिं गँवाया॥
मसले कहि कहि लोग रिझाया।तसवी हाथ विषै का ध्यान
जन जमीनजर मनमें भावै । दया धर्म हिरदे नाहिं आवै ॥
सिद्धराम रामरूप बतावै । काजी सुनों नहीं हत कान ४२

इति त्याग बैराग का अंग सम्पूर्ण ।

राग मङ्गल ।

सतगुरु की ले सरनि करो हरि ध्यान ही ।
काम क्रोध मोह लोभ विड़ारो मानही ॥
त्याग जगत की गैल अमर पद कूं चलो ।

कागनकी मति छोड़िं साध संगति रलो ॥
उत्तम है निज नाम रटन निस दिन करो ।
सोहं सोहं होय सुरति हिरदे धरो ॥
जित अनहद का देस बास ह्वां किजिये ।
झिलमिल जोति अपार निरख सुख लिजिये ॥
आगे सुन्न अस्थान काल को भै नहीं ।
परमहंस कोई संत जु पहुँचत है तहीं ॥
रामरूप गुरुदेव लखायो देस है ।
सिद्धराम रल मिले रहो नहीं भेस है ॥ ४३ ॥

राग क़ाफ़ी ।

देखा अजब तमासा जोर अगिनि जल माहिं लगी ॥
तेल वाति बिन दीपमालिका बिन सूरज भया भोर ॥
गूंगा राग छतीसौं गावैं बहरा सुन सुख पावै ॥
पिंगल निरत करै अति छवि सों आंधा लख मुसकावै ॥
ऊपर कूप तलै खड़ी मालन बिन नेजू जल काढ़ैं ॥
सींचै वेल फलै बिन फूलौं जड़ काटे सूं बाढ़ैं ॥
सुता पिता की जोय भई जहां माकूं पूत खिलावै ॥
समझैगा कोई संत विवेकी मूरख भेद न पावै ॥
मुरदे मौति करी वस माहीं बाड़ि खेत कूं खाई ॥
सिद्धराम या पद की करनी गुरु रामरूप बताई ॥ ४४ ॥

राग सोरठ ।

म्हारे सतगुरु जुगति बताई हो ।
औघट घाट चले बिन पैरौं जहां काल नहीं खाई हो ॥

प्रथम मूल बंध कसि दीनो उलटी पवन चढ़ाई हो ।
षट्कवल औंधे किये सूधे जब आगे गम पाई हो ॥
इड़ा पिंगला मार्ग थाके सुखमन सहज समाई हो ।
भँवर गुफा में अजब तमासा सोभा कही न जाई हो ॥
कई कोट रविसिस परकासे दीपमाल दरसाई हो ।
झुक रही घटा दामिनी दमकैं अमृत झड़ी लगाई हो ॥
सहस कंवल दल सेत सिंहासन तेज पुंज छवि छाई हो ।
अनहद नाद झरै बहु भांती सुन्न धजा फहराई हो ॥
जहां सतगुरु रामरूप विराजैं सिद्धराम मिले जाई हो ।
पाय अमरपद आनंद हूये आवागवन मिटाई हो ॥ ४५ ॥

राग जैजैवंती ।

गगन मंडल की सैल गुरु गम कीनी भाई ॥
देखा अद्भुति खेला जीव सीव हुवा मेला ॥
जहां नहीं राति द्यौस लखी छवि झीनीं ॥
बाजै अनहद तूरा सुनैं कोई साधू पूरा ॥
रागदोष नास भये ध्यान सुरति दीनी ॥
इंद्री मन कैद किये बिषै भोग त्यागदिये ॥
कर्म की काटी बेड़ी पैनी ज्ञान छैनी ॥
जनम मरन नासो आपही में आप भासो ॥
सोई रामरूप जानौं बोध बुधि भीनी ॥
जीव भाव मिटा दूजा एक ब्रह्म सारै सूझा ॥
सिद्धराम हूवा जब नित्य आतम चीन्हीं ॥ ४६ ॥

राग केदारा।

जोगी जुगति सूं मन जीत।
पांच दस नौ तीन बसकरि त्याग जगसूं प्रीति॥
टेक टोपी सीस परि धरि नाहिं करि फिर दूर।
आड बंध कोपीन जतसत नाद अनहद पूर॥
दया धर्म आधीनता तप फाहुड़ी कर माहिं।
मान हिंसा मोह ममता स्वान काठैं नाहिं॥
भक्ति चोला छिमां सेली सील मुद्रा धारि।
ज्ञान पत्तर समझ झोलीभीखअलख दीदार॥
समता सांच संतोप चंदन खौर मस्तक लाय।
सिद्धराम रामरूप सतगुरु दीनी जुगति बताय॥४७॥

इति योग ध्यान का अंग संपूर्ण॥

दोहा।

स्वर्ग मृत पाताल में, फिरैं मुक्ति के चाय॥
सिद्धराम ज्यों किरमपै, चींटी लिपटी आय १

रेखता।

महबूब खूब दिल के दरम्यान यारो पाया॥
मेहरबांन मुरसद हुये चश्म खोल जब लखाया॥
हरदम हिजूर अब जहूर नजर आया॥
तमाम जाकी रोशनी कुरान बेद गाया॥
आपने ही माहिं आय मौला दरसाया॥
वाहद वाहद वाहद हुई खतरा सब गँवाया॥

मिटी विरह आतिशलाहूत में समाया ॥
आव का हुबाव जैसैं आव में विलाया ॥
रामरूप अनलहक जहां तहां छाया ॥
सिद्धराम अमर सदा नूरतै जकाया ॥ ४८ ॥

राग काफ़ी ।

साहिब सदा हिजूर पियारे साहिब सदा हिजूर ॥
एक पलक कभी होय न न्यारा क्यों भरमतहै दूर ॥
जैसैं मृगनाभ कस्तूरी जुस्त नमायदतूर ॥
ऐसे बिन मुरसद नहीं पावत रहत विसूर विसूर ॥
अबिनासी घटघट में वासी दसौं दिसा भरपूर ॥
राई सम कहीं ठौर न खाली जाकूं लखत न कूर ॥
रामरूप सतगुरु किरपासूं पाया आनँद मूर ॥
सिद्धरामभयादरसदिवानाभिलमिलभिलमिलनूर ४६

राग ख़्याल ।

है दिलमें दिलदार भरम तजि करि दीदार ।
सब संसार भरम में भूला बिरला जाननहार ॥
हिंदू तुरक दोऊ गफलत में दूर बतावैं सिरजनहार ॥
दिलवर यार बसै दिल भीतर बाहर ढूंढै मुगध गँवार ॥
है नजदीक दूर कहैं जाकूं जलपाहन में फिरैं खुवार ॥
घरमें बस्तु धरी नहीं पावै जबलग हो नहीं महरमकार ॥
रूप रंग सूरति नहिं सुरत्ति घटघट व्यापक अपरमपार ॥
सिद्धराम ने रामरूप की चहुँदिस देखी अजवबहार ॥ ५० ॥

रेखता।

लखी गुरु सैन मैं भाई दुई मिट एकता आई॥
हुवा सुख परम अधिकाई गया दुख दूर सारा है॥
न पार बिज्ञान परकासा अविद्यातिमिर सबनासा॥
जहां तहां ब्रह्महीं भासा भरम अज्ञान जारा है॥
पाया अब आपमें आपा गई जो बिरहकी तापा॥
थका जब पुण्य अरु पापा मिला प्रीतम पियाराहै॥
जहां मैं तू नहीं दोई चेतन जड़ भिन्नता खोई॥
रही ना वासना कोई छुटा जप तप अचारा है॥
अजब यह देसहै भीना गुरु रामरूप कहि दीना॥
निरख सिद्धराम लौलीनासदा एकरस बहाराहै५१

राग काफ़ी।

एजी सब जग आतमरूप लखि मन दुबधा हो भागी॥
सतगुरु मेहर करी जब मुझपर ज्ञान कला घट जागी॥
कहीं ब्रह्मा कहीं विष्णु महादेव कहीं गिरही बैरागी॥
कंचन भूषण कंचन समझ भया अनुरागी॥
सदा मगन इकरस नित आनंद सहज रहैं लौलागी॥
संसै सोग रहा नहीं कोई मैं मेरी सब त्यागी॥
डरै परै भीतर अरु बाहर रामरूप बुधि पागी॥
सिद्धराम यह देस अटपटा लखैं कोई बड़भागी॥५२॥

राग झँझौटी।

घट में देख लेवो गुलजार।
इतवित कूं भटकै क्यों बौरा। जल पाहन सूं करत निहौरा॥

तप अरु जज्ञ किये नहीं सूझे । ये सब ही उर ले व्यौहार ॥
मुसलमान मक्के कूं धावैं । हिन्दू दौड़ि द्वारिका जावैं ॥
काबादेर का मज़हब राखैं । इन बातौं नहीं होय दीदार ॥
मुश्क रहैं ज्यों आहूतन में । भेद न जानैं ढूंढ़ैं वन में ॥
कंठ माहिं कंठमाला भूला । मूरख नर यों बिना बिचार ॥
लड़का लिये गोद में नारी । दिया ढँढोरा नगर मँझारी ॥
जब पाया तब ढिग ही पाया । नाहक ढूंढ़ा सहर बजार ॥
रामरूप सतगुरु दियो ज्ञाना । झूठा तजि सांचे कूं माना ॥
आपहीआप जहां तहां प्रीतम ॥ सिद्धराम लखि अजब वहार

राग सोरठ ।

अब जम क्या करेगा मैं तो चरनदास का पोता ।
ऊंचे संग ऊंचा ही हूवा लिया ब्रह्म में गोता ॥
ज्ञान भान परकास भया जब गया तिमिर जो होता ।
अनभै शब्द सुनाय जगाया जनम जनम का सोता ॥
देत सैन बंधन सूं छूटा ज्यों पिंजरे का तोता ।
निर्भै भये अमर पद पाया गया नरक दुख भोथा ॥
रामरूप गुरुदेव दया सूं तजा भर्म कुल थोथा ।
सिद्धराम सोई अब हूवा आदि निरंजन जोथा ॥ ५४ ॥

दोहा ।

जो पढ़ै सुनै शब्द बावनी, उपजै हरि सूं प्रीति ॥
दोऊ लोक ह्यां हां सुखी, जम कूं लेवै जीति ॥

इति श्रीमहाराजस्वामीरामरूपजीके दास महंत महाराज सिद्धरामजीकृत शब्दबावनी संपूर्ण समाप्त ॥

इश्तिहार ॥

भक्तिसागर ॥

विदित हो कि, यह पुस्तक अद्वितीय व अनुपम होकर कवि, सन्त, महन्त व सज्जनों के लिये उपयोगी है जिसको सर्वविद्याविलासी भगवत्पदारविन्दोपासी, स्वधर्मसुखराशी भगवद्भक्ताग्रगण्य बालरूप परमहंसमार्गानुगामी श्रीस्वामी शुकदेवजी के शिष्य श्रीचरणदासजी ने निर्मित किया है जिसमें आनन्दकन्द व्रजचन्द श्रीकृष्णचन्द की जन्मभूमि की प्रशंसा व चरित्र तथा अमरलोक अखण्डधाम की प्रशंसा व गुरुशिष्यसंवाद में जहाजरूपी धर्म से भवसागरतरणतारण, अष्टांगयोग व प्रत्येक आसनों के अलग २ नियम व असार संसारसागर से उत्तीर्ण होने के लिये समस्त संदेहों की निवृत्ति व काम, क्रोध, मद, मोह और लोभादि की तुच्छता दर्शाय भगवद्भक्ति होने के लिये अनेक उपाय व क्षमा, दया, शील, संतोष, धर्म, सुकर्म आदि की सुलभ २ रीतियां अनेक प्रकार की छन्दों में वर्णित हैं इस पुस्तक को अवश्य देखना चाहिये अहो प्रेमीगणो ! इसके स्वीकार करने में विलम्ब नहीं करना चाहिये अग्रे किमधिकम् बहुज्ञेष्वित्यलम् ॥
